कहानीकार

अमरकान्त

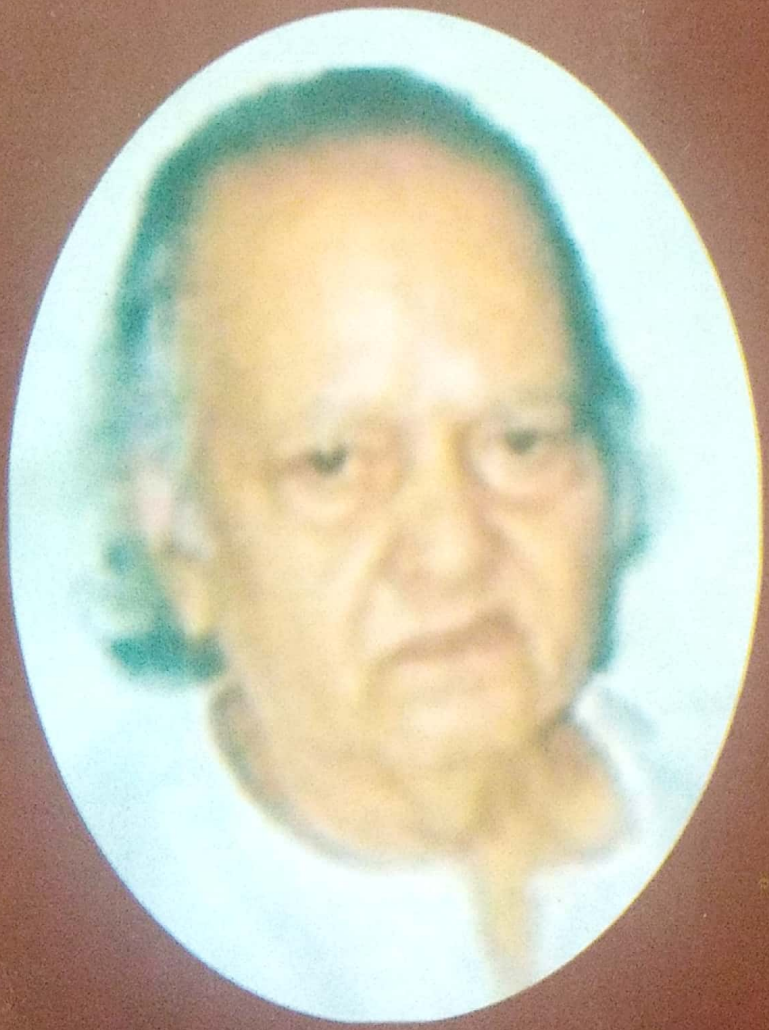

डॉ. सुभाष जाधव

Scanned by CamScanner

मूल्य – पाँच सौ रुपये मात्र

पुतस्क	:	कहानीकार अमरकान्त
लेखक	:	डॉ0 सुभाष जाधव
प्रकाशक	:	विद्या प्रकाशन
		सी–449, गुजैनी, कानपुर –22
		दूरभाष : (0512) 2285003
		मो० : 09415133173
संस्करण	:	प्रथम, 2012
शब्द सज्जा	:	शिखा ग्राफिक्स, जूही, कानपुर
मुद्रक	:	श्री पूजा आफसेट, नौबस्ता, कानपुर
जिल्दसाज	:	तबारक अली
मूल्य	:	500/–
ISBN	:	978-93-81555-14-9

KAHANIKAR AMARKANT

`By- Dr. Subhahs Jadhav

Price : Five hundred only

Scanned by CamScanner

अनुक्रमणिका

अमरकांत का रचना संसार	13–22
अमरकांत की कहानियों में चित्रित परिवेश	23–79
अमरकांत की कहानियों में चित्रित मध्यवर्ग	80–232
उपसंहार	233–238
परिशिष्ट	238–240

Scanned by CamScanner

डॉ0 सुभाष जाधव

आत्मज: श्री दलसिंग जाधव

जन्म : 04 अगस्त 1974

मसई, तालुका अंबड, जि. जालना (महाराष्ट्र)

शिक्षा : एम.ए.एम फिल. पीएच.डी., सेट.

भाषा : हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी

रुची : सामाजिक कार्य

अन्य : विभिन्न राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय पत्र पत्रिकाओं में शोध लेख प्रकाशित तथा राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय संगोष्ठियों में प्रपत्र वाचन एवं सहभाग।

सम्प्रति: अधिव्याख्याता,हिन्दी विभाग, संत रामदास महाविद्यालय, घनसावंगी जि. जालना (महाराष्ट्र) 431209

सम्पर्क : 'जाधव निवास' प्लाट नं.31 नुतन वसाहत, अंबड, जि जालना (महा०) 431209

Scanned by CamScanner

2012-13

ISBN No.978-81-922966-4-7

INFLATION AND INDIAN ECONOMY

चलनवाढ आणि भारतीय अर्थव्यवस्था

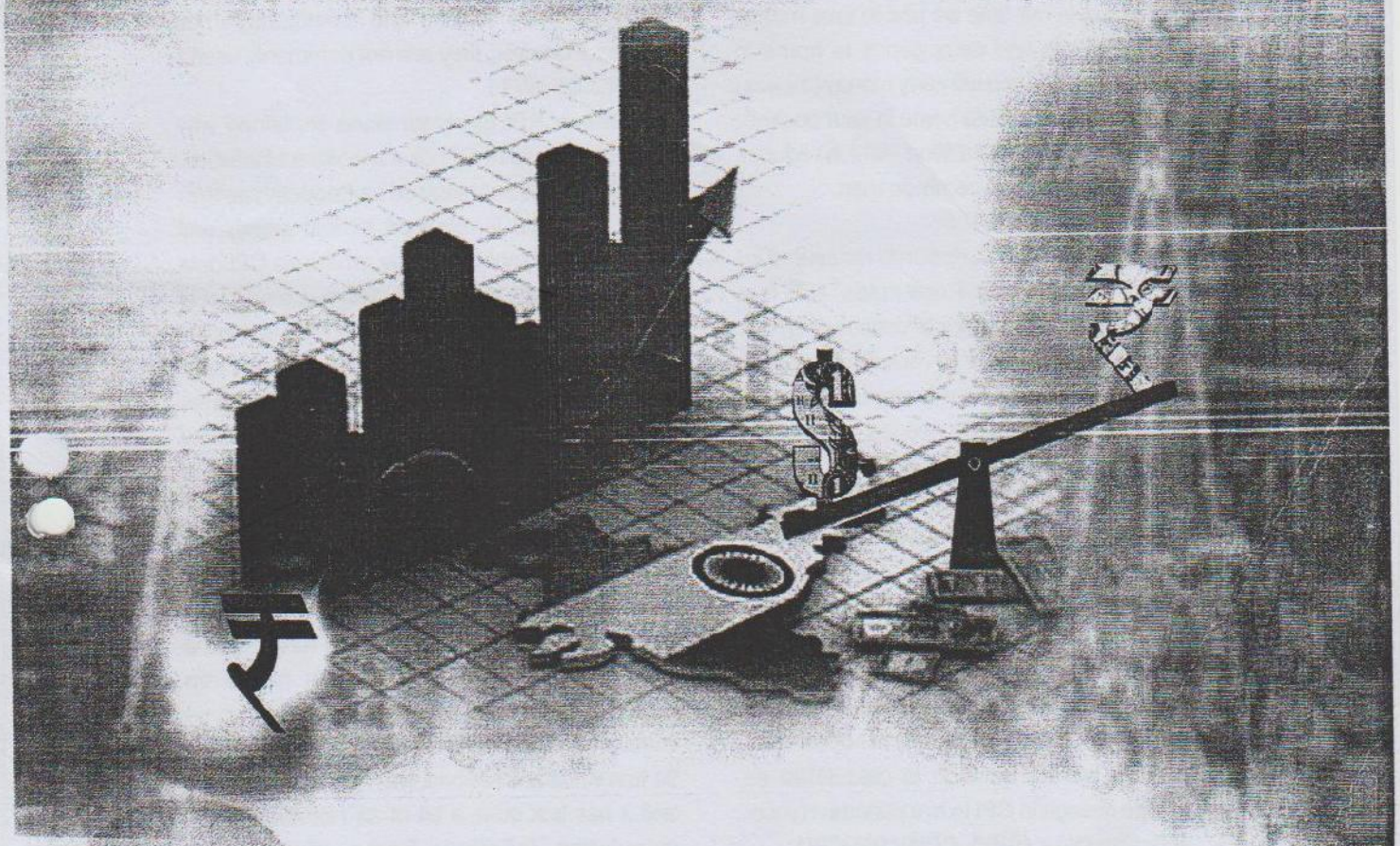

:: Edited by ::

DR.MAHESH P.DESHMKH

Head : Department of Economics

SHRI SIDDHESHWAR MAHAVIDYALAYA,

Majalgaon - 431131 Dist.Beed

 ISBN No.978-81-922966-4-7

35 : INFLATION : ITS CAUSES & EFFECTS ON THE ECONOMY

Dr. Raut Radheshyam K.

INTRODUTION :

Inflation is a rise in the general level of prices of goods and services in an economy over a period of time. Inflation can also be described as a decline in the real value of money—a loss of purchasing power in the medium of exchange which is also the monetary unit of account and the monetary store of wealth. When the general price level rises, each unit of currency buys fewer goods and services. A chief measure of price inflation is the inflation rate, which is the percentage change in a price index over time.

When I was a kid my grandparents used to tell me – "Son, in our time we use to take money (paisa) in pockets and carry goods to home in bags. But in your age you will carry money (rupees) in bags and carry goods to home in your pocket". He was so right! This is inflation –which reduces the purchasing power of common man.

MEASURING INFLATION :

In major economies, inflation is measured by CPI, which is Consumer Price Index. CPI is a measure of the average price of consumer goods and services purchased by households. The percent change in the CPI is a measure of inflation. Two basic types of data are needed to construct the CPI: price data and weighting data. The price data are collected for a sample of goods and services from a sample of sales outlets in a sample of locations for a sample of times. The weighting data are estimates of the shares of the different types of expenditure as fractions of the total expenditure covered by the index. These weights are usually based upon expenditure data obtained for sampled periods from a sample of households.

In other words, Inflation is calculated as percentage change in CPI in two periods. Hence,

Inflation (%) = (CPI2- CPI1)*100/CPI1

Where, CPI1 = CPI in the previous period and
CPI2 = CPI in the current period

India uses a different price index called the Wholesale Price Index (WPI) to calculate the rate of inflation in our economy. It is quite similar to Consumer Price Index, but uses whole sale prices instead of retail consumer prices. WPI is the index used to measure changes in the average price levels in the wholesale market. Data on 435 commodities is tracked through WPI, in India, which is an indicator of movement in prices. I share the common view of other economists who believe WPI, as a measure of inflation, is flawed. India should switch to CPI, which has been adopted by most developed countries.

There are several other ways of measuring inflation as well. They are GDP price deflate, Producer Price Indices and Commodity Price Indices. However, they are not commonly used.

FLAWS OF WPI :

Former RBI governor once explained why India does not use CPI as a measure of inflation. The CPI data is not released as frequently as WPI data. WPI data is released almost weekly and sometimes at most biweekly, where as CPI data is released once in a month. There is also a lot of lag in collating all the CPI data. There is another problem with the CPI data in India. We don't have a single CPI data, but four different CPI figures relating to agriculture goods, urban manual labor and non-urban labor etc. There is no discipline in when these different figures are released and with what frequency. So government of India has a genuine reason in not going for CPI based inflation.

WPI based calculation is full of flaws. WPI is supposed to measure impact of prices on business. But we use it to measure the impact on consumers. The WPI that was constituted in 1993-94 has virtually remained unchanged since then, and it has lost quite a bit of its relevance while calculating inflation. Some of the WPI commodities include coarse grains that go into making of livestock feed but they continue to be considered while measuring inflation. The sole reason why many unimportant commodities continue to remain included is possibly because data on their prices was available!

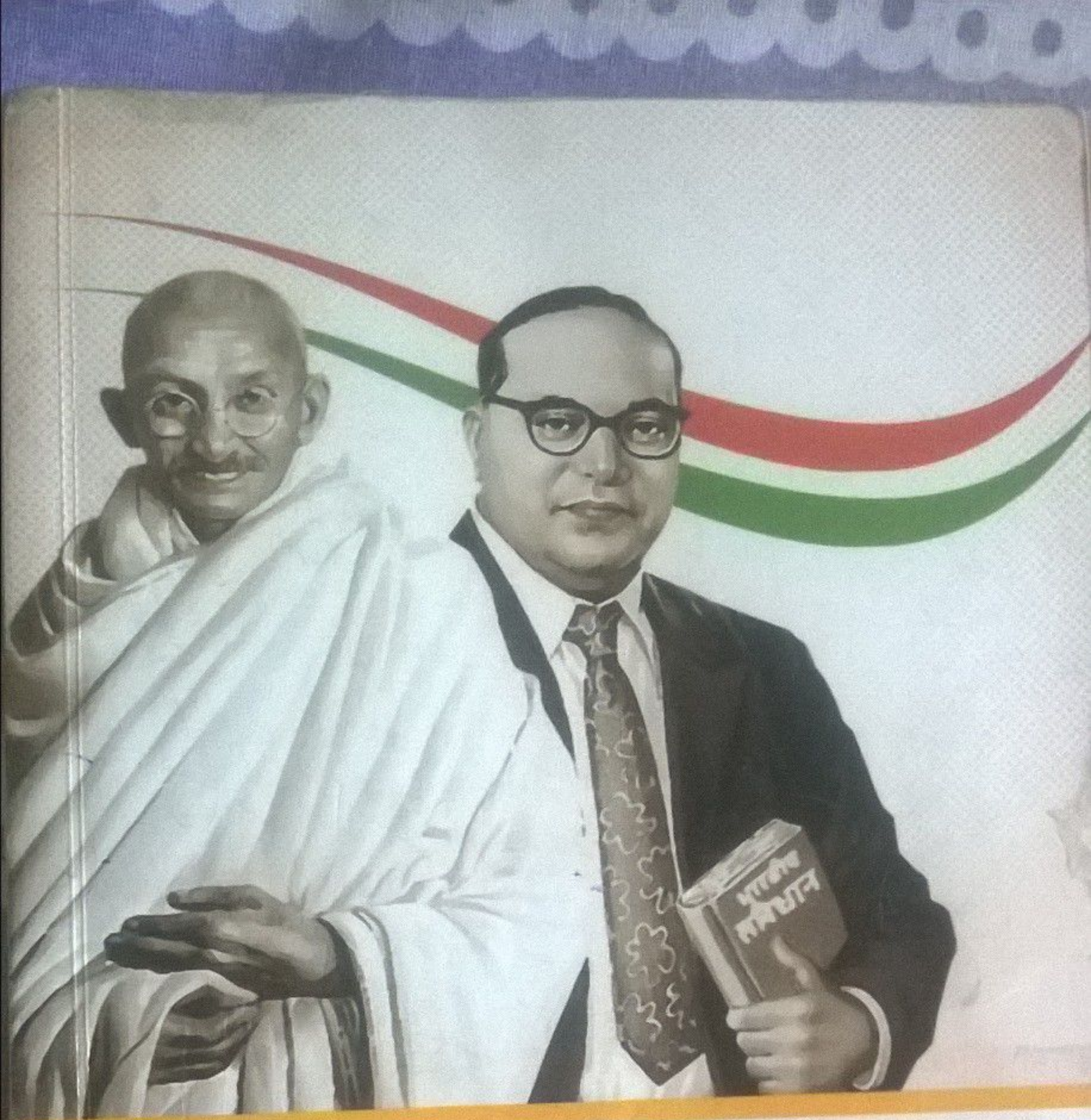

म. गांधी आणि डॉ. आंबेडकर

विचारधारा

डॉ. व्ही.व्ही. भास्कर

अथर्व

डॉ. बी. आर. आंबेडकर : जातीव्यवस्था आणि राष्ट्रवाद

– अवचार गजानन (सहा. प्राध्या. / राज्यशास्त्र विभागप्रमुख)
संत रामदास कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, घनसावंगी, जि.जालना.

२० व्या शतकाच्या सुरुवातीस वसाहतवादाचा खात्मा करण्यासाठी आर्थिक प्रभुत्वशाली वर्ग हिंदू राष्ट्रवाद्यांना येऊन मिळाल्यामुळे सामाजिक आणि आर्थिक प्रश्न जाणीवपूर्वक मागे रेटून निव्वळ राजकीय राष्ट्रवादाचे गठन करताना स्वातंत्र्य आंदोलन पुढे रेटले गेले. तथापि, शोषित-वंचित समाज घटकांचा स्वमुक्तीचा आक्रोश बंद करणे शक्य नसल्याने पुढे गांधीजींनी नैतिक आणि आध्यात्मिक पातळीवर सामाजिक राष्ट्रवादाची जोड राजकीय राष्ट्रवादाला दिली. वसाहतवाद विरोधी लढ्यात भारतातील सर्व परस्परविरोधी समाजघटकांना एकत्रित आणण्यासाठी याशिवाय गांधीजीपुढे दुसरा कोणताही पर्याय नव्हता.

डॉ. आंबेडकरांच्या मते, साम्राज्यवादी राज्यकर्त्यांनी स्वातंत्र्यपूर्वकाळात पादाक्रांत केलेल्या सर्व महत्त्वाच्या जागा साम्राज्यशाहीच्या उच्चाटनानंतर आर्थिक प्रभुत्वशाली घटक आणि हिंदूतील मध्यम अभिजनवर्ग यांना संयुक्तिकरीत्या पादाक्रांत करावयाच्या होत्या. सामाजिक आणि आर्थिक समतेच्या अनुपस्थितीत उदारमतवादी लोकशाही यशस्वी होऊ शकणार नसल्याची खंत डॉ. आंबेडकरांच्या मनात होती. त्यांच्या मते, विषमतामूलक सामाजिक आणि आर्थिक संरचना तशीच ठेवून राजकीय स्तरांवर स्वतंत्र भारताच्या घटनेने शोषित जनसमूहांना समतेचे आश्वासन दिले आहे. देशाचे भावनिक ऐक्य स्वातंत्र्य, समता, बंधुता, न्याय या तत्त्वातूनच साकार होऊ शकते आणि हे ध्येय साध्य करण्यासाठी सामाजिक समता निर्माण करण्यास्तव जातीअंताचा कार्यक्रम डॉ. आंबेडकरांनी महत्त्वाचा मानला. भारतीय राष्ट्रवादासमोर जातीव्यवस्थेचे गंभीर आवाहन असल्याचे मत हिरीरीने डॉ. आंबेडकर पुढे करतात.

भारतीय राष्ट्रवादाचे गठन करण्यासाठी भारतीय इतिहासाची भौतिक मीमांसा करताना आर्य, द्रविड, मंगोलियन आणि सिंथीयन या चार वंशाच्या लोकांच्या रक्ताच्या आणि संस्कृतीच्या सरमिसळमधून प्रस्तुत भारतीय समाज साकार झाल्याचे मत मांडतानाच यातून भारतीयांची एक वैशिष्ट्यपूर्ण संस्कृती साकार झाल्याचे मत नोंदवतात. या संक्रमण प्रक्रियेमध्ये अगोदर वर्णव्यवस्था आणि नंतर वर्णव्यवस्थेच्या विघटनातून उतरंडीच्या विषमतेवर आधारलेली जातीव्यवस्था अस्तित्वात आल्याची डॉ. आंबेडकर सांगतात. मानवी स्वभाव आणि प्रवृत्तीविरुद्ध

Theories of Identity in Human Rights and Dr. B. R. Ambedkar's Thoughts

Editor
Dr. S. B. Bhagat

मानवाधिकार और जातिप्रथा

प्रा. जी.आर. अवचार
संत रामदास महाविद्यालय, घनसावंगी, ता. घनसावंगी, जि. जालना

आधुनिक युग संविधानवादी तथा प्रजातंत्र का युग हैं। प्रत्येक राज्य अपनी प्रगती का आलेख उच्चतम दिखाने के लिए अपने नागरिकों को अधिक से अधिक अधिकार प्रदान करने का प्रयास करता हैं। लेकिन केवल लिखित रुप से अधिकार प्रदान कर देना ही पर्याप्त नहीं होता अधिकारों की सार्थकता तब होती हैं, जब राज्य उनके उपयोग के लिए समुचित वातावरण मानव को कानुनों की अनुपालना के लिए नैतिक रुपसे तैयार करें।मानवाधिकार से तात्पर्य मानव के उन न्यूनतम अधिकारों से हैं, वह प्रत्येक व्यक्ति को अनिवार्य रुप से प्राप्त होने चाहिए, क्योंकि वह अधिकार किसी की देन नहीं होते; वह तो प्राकृतिक होते हैं। मानव की गरिमा को बनाये रखने के लिए आवश्यक हैं। मानवाधिकार का संबंध मानव की स्वतंत्रता, समानता एवं गरिमा के साथ जीने के लिए स्थितियाँ उत्पन्न करने से होता हैं। मानवाधिकार ही समाज में ऐसा वातावरण निर्माण करते हैं जिसमें सभी व्यक्ति समानता के साथ निर्भिक रुप से मानव गरिमा के साथ जीवन कायम कर पाते हैं। ऐसी स्थिती ना होने पर प्रसिद्ध फ्रान्सीसी दार्शनीक जीन जैक्स रुसो ने अपना प्रसिद्ध ग्रंथ 'सोशल कांट्रेक्ट' में लिखा है, ''मनुष्य स्वतन्त्र पैदा हुआ हैं, परन्तु हर जगह वह जंजीरों से जकडा हुआ हैं।''[1] समाज में अव्यवस्था, शोषण तथा असमानता के बंधनों से जकडे हुए जनसाधारण की स्वतन्त्र होने की और स्वाधीनता, स्वतन्त्रता तथा समानता का उत्तम जीवन प्राप्त करने की आकांक्षा को व्यक्त करता हैं।

प्रो. लास्की ने अपनी 'लिबर्टी इन द मॉडर्न स्टेट' इस ग्रंथ में लिखा हैं, ''अधिकार सामाजिक जीवन की वे परिस्थितीयाँ हैं, जिनके विना सामान्यतः कोई व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का पूर्ण विकास नहीं कर सकता।''[2]

मानवाधिकार शब्द की विश्व में कोई एक स्वीकृत परिभाषा नहीं मानी जा सकती हैं। यद्यपि यह संकल्पना उतनी ही पुरानी हैं जितनी की प्राकृतिक विधि पर आधारित प्राकृतिक अधिकारों का प्राचीन सिद्धांत हैं।

मानवाधिकारों की राह

मैग्नाकार्टा[3] : ब्रिटेन के राजा जॉन और सामंतो के बीच यह ऐतिहासिक समझौता १५ जुन, १२१५ में हुआ। मैग्नाकार्टा के अनुसार बृहत परिषद की स्थापना की गई। कुल ६३ अनुच्छेदों में से ३९ वे अनुच्छेद से ही सामान्य नागरिक को राजा के विशेषाधिकार को नियंत्रीत करने का स्वातंत्र्य प्राप्त हुआ।

बिल ऑफ राइट्स[4] : सन १६८९ में ब्रिटेन राजा को क्रांती के जरिए हटाने के बाद क्रांतिकारियों ने 'बिल ऑफ राइट्स' (अधिकार घोषणापत्र) जारी किया, जिसमें नागरिकों के न्यूनतम अधिकारों का वर्णन किया गया।

अमेरिकी क्रांति : अमेरिकी क्रांतिकारीयों ने ४ जुलाई, १७७६ को मानव की स्वतंत्रता घोषणापत्र जारी किया, ''हम इन सत्यों को स्वयंसिद्ध मानते हैं की सभी मनुष्य समान उत्पन्न हुए हैं तथा परमात्मा ने उन्हें कुछ ऐसे अधिकार प्रदान किए हैं जो किसी भी अवस्था में उनसे छिने नहीं जा सकते। इस प्रकार के अधिकार मुख्यतया ये हैं – जीवन का अधिकार, स्वतंत्रता का अधिकार तथा आनंद प्राप्ती का अधिकार।''[5]

मानवाधिकार घोषणापत्र :

द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात आन्तर्राष्ट्रीय चार्टरों और अभिसमयों में 'मानवाधिकार' की उत्पत्ती नये रुप में हुई। तत्कालीन अमरीकन राष्ट्रपती रुजवेल्ट ने १६ जनवरी, १९४१ में काँग्रेस को संबोधित करते समय 'मानव अधिकार' का शब्द प्रयोग प्रथम किया था। जिसमें उन्होंने वाक् स्वातंत्र्य, धर्म स्वातंत्र्य, गरीबी से मुक्ती, भय से स्वातंत्र्य इन चार मूलभूत स्वतंत्रताओं का जिक्र किया था। उसी समय बाद में रुजवेल्ट और ब्रिटेन के प्रधानमंत्री चर्चिल ने अटलांटिक घोषणापत्र जारी करते हुए कहा, ''स्वातंत्र्य से हर जगह मानव अधिकारों की सर्वोच्चता अभिप्रेत हैं। हमारा समर्थन उन्हीं को हैं, जो इन अधिकारों को पाने लिए या बनाए रखने के लिए संघर्ष करते हैं।''[6] इस घोषणापत्र के मुताबिक १९४६ में श्रीमती एलीनर रुजवेल्ट की अध्यक्षता में मानवाधिकार आयोग बना। सितंबर १९४८ में आयोग ने मानवाधिकार घोषणापत्र का प्रारुप संयुक्त राष्ट्र महासभा को सौंपा। महासभा ने १० दिसंबर, १९४८ को मानवाधिकारों के घोषणापत्र को स्वीकार कर लिया।[7]

भारत में मानवाधिकार का संघर्ष : सीएलयू : भारत में नागरिक आंदोलन की शुरुआत आजादी से पहले ही हो गई थी। १९३६ में जयप्रकाश नारायण की पहल पर 'सिविल लिबर्टीज युनियन' का गठन हुआ। आजादी के बाद सीएलयु निष्क्रिय हुआ। परिणामस्वरुप 'सीएलयु' का अस्तित्व ही खत्म हुआ।

राष्ट्रीय चर्चासत्र

विद्यापीठ अनुदान आयोग आयोजित

जयभवानी शिक्षण प्रसारक मंडळ, गेवराई संचलित

कला व विज्ञान महाविद्यालय

शिवाजीनगर गढी, ता.गेवराई जि.बीड

ISBN 978-93-81921-35-7

उत्तम कांबळे : व्यक्ती आणि वाङ्मय

दि. २८,२९ डिसेंबर २०१२

* मुख्यसंपादक *
प्राचार्य डॉ.विश्वास कदम

सहसंपादक
प्रा.रमेश रिंगणे

संपादक
प्रा.डॉ.सदाशिव सरकटे

एका स्वागताध्यक्षाची डायरी : मार्गदर्शी डायरी

प्रा.डॉ. प्रल्हाद होंडे
मराठी विभाग प्रमुख
संत रामदास महाविद्यालय, घनसांवगी
जि. जालना.

मराठी साहित्य आणि संस्कृती यांच्या इतिहासात साहित्य संमेलन हे महत्वाचे आहे. सांगली येथे ८१ वे अखिल भारतीय मराठी साहित्य संमेलन भरण्याचा मान मिळाला होता. या संमेलनाचे स्वागताध्यक्षपद उत्तम कांबळे यांनी भूषविले. स्वागताध्यक्षपदाची सूत्रे हाती घेतल्यापासून संमेलन पार पडेपर्यंत घडलेल्या घटना प्रत्येक दिवशी उत्तम कांबळे यांनी रोजनिशी प्रमाणे डायरीत लिहिल्या आणि त्यातून एका स्वागताध्यक्षाची डायरी हे आत्मकथन पर पुस्तक जन्माला आले.

सांगलीत साहित्य संमेलन असल्यामुळे स्वागताध्यक्ष हे आर.आर. पाटील होणार हे लोकांनी गृहीत धरले होते. त्याप्रमाणे १४ ऑक्टोबर २००७ रोजी सांगलीतल्या साहित्य संमेलनाच्या तयारीसाठी आर.आर.पाटील यांनी बैठक बोलावली होती. त्या बैठकीत राजकारणी माणसांच्या सक्रिय सहभागामुळे संमेलने सातत्याने वादळी ठरतात. स्वागताध्यक्षपदावर साहित्यिकच आला पाहिजे. उत्तम कांबळे पत्रकार साहित्यिक आहेत. या परिसराशी त्यांचे नाते आहे. त्यामुळे एक चांगला माणूस म्हणून मी त्यांची स्वागताध्यक्षपदी निवड करतो. असे सांगितले. आर. आर. पाटील (आबा) यांनी जाहिर केल्यावर गोंधळ सुरू झाला. त्यांच्या चाहत्यांना हा निर्णय आवडला नाही. आणि या निर्णयाची उत्तम कांबळे यांना कसली सुद्धा माहिती नव्हती. प्रसारमाध्यमांचे प्रतिनिधी त्यांची प्रतिक्रिया विचारण्यासाठी त्यांच्याकडे आले, तेंव्हाच त्यांना कळाले. मात्र हे पद स्विकारण्याआधी त्यांनी सकाळ चे प्रमुख अभिजित पवार, समीक्षक तारा भवाळकर, म.द. हातकणंगलेकर, डॉ. रावसाहेब कसबे, डॉ. आ.ह.साळुंखे, वामन होवाळ व घरच्या मंडळींशी चर्चा केली आणि काय करावे असे विचारले तेंव्हा सर्वांनी होकार दिला. परंतु माध्यमांत मात्र या संदर्भात खूप वेगळ्या प्रतिक्रिया उमटल्या होत्या. एका दलित साहित्यिकाला स्वागताध्यक्षपद देऊन आर.आर. पाटलांनी राजकीय खेळी केली, इथपासून ते खैरलांजी हत्याकांडाची तीव्रता कमी करण्याचा प्रयत्न असे या प्रतिक्रियांचे स्वरुप होते. परंतु उत्तम कांबळे यांनी ही डायरी सुरू झाल्यापासून संपेपर्यंत केवळ घटनांच्या नोंदी त्यांनी केलेल्या आहेत. त्यावर त्यांनी आपली प्रतिक्रिया नोंदवलेली नाही, किंवा भाष्य देखील केलेले नाही व हेच खरे या डायरीचे वैशिष्ट्ये आहे.

उत्तम कांबळे यांनी १४ ऑक्टोबर २००७ ते २४ जानेवारी २००८ रोजी संमेलनाची सांगता होईपर्यंत तब्बल शंभर दिवसांची डायरी नित्यनेमाने लिहिण्याचा परिपाठ ठेवला व संमेलनानंतर ही डायरी प्रकाशित केली. संमेलनाच्या आयोजनातील एकूण अडीअडचणींची आणि महामंडळाच्या कार्यपद्धतीची, कार्यालयीन व्यवस्थेची आणि कार्यकर्त्यांच्या स्वभाववृत्तींच्या वैचित्र्याची, स्थानिक राजकारणाची आणि लेखककवींच्या आत्मभानाची नानाविध रुपे या डायरीतील साध्या साध्या नोंदीमधून प्रकट होतात आणि मराठी वाङ्मयीन संस्कृतीच्या एकूणच बऱ्यावाईट अवस्थेची जाणीव करुन देतात.

संमेलनाच्या आयोजनाबद्दल प्रत्येक वर्षी हजारो रसिक, साहित्यिक संमेलनाला उपस्थित राहतात, व जे कानी पडेल ते सुवचन-सुभाषित-सुजनवाक्य म्हणून प्रमाण

मानतात. त्यामुळे तर संमेलनाभोवती तेजोवलय सळाळताना दिसते.

उत्तम कांबळे यांची अर्पण पत्रिका महत्वाची आहे. जसे या पुस्तकास महत्व आहे तसेच या अर्पण पत्रिकेला महत्व आहे ते आपल्या अर्पणपत्रिकेत म्हणतात, ही डायरी म्हणजे साहित्य संमेलनाच्या इतिहासात महाराष्ट्राचे (तत्कालीन) उपमुख्यमंत्री आर.आर. पाटील यांनी केलेल्या अभूतपूर्व त्यागातून जन्माला आलेलं एक अक्षर फूल! ते मी त्यांनाच अर्पण करतो आहे. अभिमानानं. अशा छोट्या छोट्या पण मार्मिक अवलोकनांनी या डायरीची वाचनीयता वाढवली आहे. व विविध मानवी स्वभावविशेषांचेही दर्शन घडवले आहेत.

आर.आर. पाटील यांनी स्वागताध्यक्ष म्हणून उत्तम कांबळे यांचे नाव पुढे करतानाच म्हटले होते, कांबळे पत्रकार आहेत; साहित्यिक आहेत. सांगली जवळच्या शांतिनिकेतनमध्ये त्यांचे शिक्षण झालेआहे. याशिवाय ते सांगलीजवळच असलेल्या शिरनुप्पी गावातील, कर्नाटकातील आहेत. अत्यंत खडतर प्रवास करीत ते पुढे आलेआहेत. त्यांचा प्रवास मी जवळून पाहिला आहे.

दै. लोकमत, महानगर, पुढारी, यासारख्या वृत्तपत्रांनी अग्रलेखाद्वारे आपापल्या राजकीय भूमिकेनुसार या निवडीचा अन्वयार्थ लावला. मात्र राजकारण्यांकडे अडकलेले स्वागताध्यक्षपद खुले होते आहे. स्थिरावलेली परंपरा मोडण्याचे धाडस आर.आर. पाटील यांनी दाखवले आहे. अशी भावना उत्तम कांबळे यांनी व्यक्त केली आहे.

स्वागताध्यक्ष या नात्यांनी वेगवेगळ्या संकटांना तोंड देत संमेलनाच्या दिवशी भाषण करायला उभे राहिल्यावर आपली मन:स्थिती काय झाली याचे प्रांजळ व पारदर्शी वर्णन कांबळ्यांनी केले आहे. स्वागताध्यक्ष म्हणून मी बोलायला उठलो. पुन्हा एकवार गर्दी डोळ्यात भरून घेतली. आर. आर. यांच्यावर नजर टाकली. मला भरून आले. आणखी काही क्षण त्यांच्याकडे पाहत राहिलो असतो, तर रडायलाही आलं असतं. मी नजर बाजूला वळवली, गर्दीवर खिळवली आणि भाषणाला सुरूवात केली.

जिथं आर.आर. यांनी बसायला हवं होतं. तिथं आपण आपण बसत आहोत. ही जाणीव त्यांनी अखेरपर्यंत जागृत ठेवली आहे. आर.आर. पाटील यांचा चेहरा एकवेळा निरखून पाहिला. आनंदानं आणि सुगंधासह.... म्हणजे ही अर्पणपत्रिका अर्थातच खूप बोलकी आहे. उत्तम कांबळे यांनी आर. आर. पाटलांच्या त्यागाला केलेला सलाम आहे. अर्पणपत्रिके नंतर त्यांनी आभारपत्रिकाही प्रसिद्ध केली आहे. या पत्रिकेत सकाळ वृत्तपत्र समूह राजन गवस, वसंत भोसले, किरण जोशी, नितीन रिंढे, कविवर्य नारायण सुर्वे वाचनालय, दत्तात्रय ठोंबरे, त्यांच्या पत्नी लता व मुले चार्वाक आणि आशय यांचाही उल्लेख केलेला आहे. त्यांच्या मनातील या सर्वांबद्दलची कृतज्ञता बुद्धी या पत्रिकेतून आपणास दिसते.

उत्तम कांबळे यांच्या या डायरीतल्या नोंदीवरून संमेलनांच्या सांस्कृतिक आणि वाङ्मयीन प्रभावाचे भिन्न-विभिन्न पैलू अभावितपणे समोर येतात.

कोल्हापूरहून श्रीराम पचिंद्रे यांचा फोन आला. ते चांगले कवी आहेत. त्यांचं नाव निमंत्रित कवींच्या यादीत नव्हतं. नवोदितांच्या संमेलनामध्ये येण्यास नकार देत त्यांनी धिक्कार केला होता. (पा.नं. १००)

संमेलन स्थळाला सुरूवातीला क्रांतिवीर वसंतदादा पाटील साहित्य नगरी असं नाव होतं. आता त्याचा वसंतदादा साहित्य नगरी असा शॉर्टकट कसा झाला, असा प्रश्न एकाने विचारला. अर्थात, तो पत्रकारच होता. मी त्याला म्हणालो, जाऊ दे आता या विषयावर चर्चा नको. (पा.नं. १०१)

सुरक्षाव्यवस्थेचा एक अधिकारी आला आमचे पाचशे जवान आहेत. त्यांच्या व्यवस्थेसाठी खोल्या मिळतील का असे त्याने विचारले. मी कपाळावर हात मारून घेतला. (पा.नं.१०२)

जादा मंडप, जादा खर्च करण्याच्या आमच्या तयारीमुळे जादा परिसंवाद उभे राहणार होते. पण त्यातही महामंडळ आपल्या ओळखीपाळखीचे वक्ते घुसवू लागले. त्यांच्या चेहऱ्यावर आनंद दिसत होता. लहान मुलांसारखा निगर्वी, विचारशून्य असा चेहरा वाटत होता.... आर.आर. माझ्यापेक्षा जास्त राबले होते. पण माझ्यापासून दूर बसणार होते. प्रतिष्ठेच्या, मानापमानाच्या जगापासून दूर.... मानसात.... जिथं त्यांनी आपला प्रवास सुरू केला होता त्या ठिकाणी.

त्यांच्याबद्दलची कृतज्ञता व्यक्त करणे हा वैयक्तिक व भावनिक भाग झाला, पण उत्तम कांबळे त्यांना वेगळ्या उंचीवर नेऊन सामाजिक परिणाम देऊ इच्छित होते. ते म्हणाले, माझी एकच विनंती आहे की, उद्याच्या येणाऱ्यांनी कृष्णाकाठी आर.आर. पाटलांच्या रुपाने उगवलेल्या त्यागाच्या झाडाला जरूर आदर्श ठेवावा. शक्य तर त्यांच्या पावलांवर पाऊल टाकावं, ही एक माफक अपेक्षा घेऊन आपल्या स्वागतासाठी मी उभा आहे.

संमेलनाबद्दल कोणाची काहीही मते असली तरी स्वागताध्यक्ष म्हणून उत्तम कांबळे यांनी घेतलेल्या कष्टांबद्दल कोणालाच शंका नव्हती, पी.बी. पाटील तर त्यांना पन्नास हजार रुपये बक्षीस देऊ इच्छीत होते, पण ते न घेवून त्यांनी आणखी एक चांगला पायंडा पाडून आर.आर. पाटलांनी केलेली निवड सार्थ करुन दाखविली आहे.

शेवटी २४ जानेवारीच्या शेवटच्या नोंदीत उत्तम कांबळे म्हणतात दोन महिन्यांच्या काळात कृष्णामाईनं आणि कृष्णामाईसारखं काळीज घेवून आर.आर.नी किती धीर दिला म्हणून सांगू.... सुर्व्यांची कविता मला आठवू लागली.... एकटाच आलो नाही युगाची साथ आहे.... मला युगाची साथ आहे की, नाही माहीत नाही. पण मी त्या युगाच्या खांद्यावर नाचतोय.... बागडतोय.... माझी ही डायरी ही युगाची एक साक्षीदार....

AVCHAR G. R.
Lect. & Head Dept. of Pol. Sci
S. R. College, Ghansawangi
Dist - Jalna.

एका स्वागताध्यक्षाची डायरी : मार्गदर्शी डायरी

प्रा.डॉ. प्रल्हाद होंडे
मराठी विभाग प्रमुख
संत रामदास महाविद्यालय, घनसांवगी
जि. जालना.

मराठी साहित्य आणि संस्कृती यांच्या इतिहासात साहित्य संमेलन हे महत्वाचे आहे. सांगली येथे ८१ वे अखिल भारतीय मराठी साहित्य संमेलन भरण्याचा मान मिळाला होता. या संमेलनाचे स्वागताध्यक्षपद उत्तम कांबळे यांनी भूषविले. स्वागताध्यक्षपदाची सूत्रे हाती घेतल्यापासून संमेलन पार पडेपर्यंत घडलेल्या घटना प्रत्येक दिवशी उत्तम कांबळे यांनी रोजनिशी प्रमाणे डायरीत लिहिल्या आणि त्यातून एका स्वागताध्यक्षाची डायरी हे आत्मकथन पर पुस्तक जन्माला आले.

सांगलीत साहित्य संमेलन असल्यामुळे स्वागताध्यक्ष हे आर.आर. पाटील होणार हे लोकांनी गृहीत धरले होते. त्याप्रमाणे १४ ऑक्टोबर २००७ रोजी सांगलीतल्या साहित्य संमेलनाच्या तयारीसाठी आर.आर.पाटील यांनी बैठक बोलावली होती. त्या बैठकीत राजकारणी माणसांच्या सक्रिय सहभागामुळे संमेलने सातत्याने वादळी ठरतात. स्वागताध्यक्षपदावर साहित्यिकच आला पाहिजे. उत्तम कांबळे पत्रकार साहित्यिक आहेत. या परिसराशी त्यांचे नाते आहे. त्यामुळे एक चांगला माणूस म्हणून मी त्यांची स्वागताध्यक्षपदी निवड करतो. असे सांगितले. आर. आर. पाटील (आबा) यांनी जाहिर केल्यावर गोंधळ सुरू झाला. त्यांच्या चाहत्यांना हा निर्णय आवडला नाही. आणि या निर्णयाची उत्तम कांबळे यांना कसली सुद्धा माहिती नव्हती. प्रसारमाध्यमांचे प्रतिनिधी त्यांची प्रतिक्रिया विचारण्यासाठी त्यांच्याकडे आले, तेंव्हाच त्यांना कळाले. मात्र हे पद स्विकारण्याआधी त्यांनी सकाळ चे प्रमुख अभिजित पवार, समीक्षक तारा भवाळकर, म.द. हातकणंगलेकर, डॉ. रावसाहेब कसबे, डॉ. आ.ह.साळुंखे, वामन होवाळ व घरच्या मंडळींशी चर्चा केली आणि काय करावे असे विचारले तेंव्हा सर्वांनी होकार दिला. परंतु माध्यमांत मात्र या संदर्भात खूप वेगळ्या प्रतिक्रिया उमटल्या होत्या. एका दलित साहित्यिकाला स्वागताध्यक्षपद देऊन आर.आर. पाटलांनी राजकीय खेळी केली, इथपासून ते खैरलांजी हत्याकांडाची तीव्रता कमी करण्याचा प्रयत्न असे या प्रतिक्रियांचे स्वरुप होते. परंतु उत्तम कांबळे यांनी ही डायरी सुरू झाल्यापासून संपेपर्यंत केवळ घटनांच्या नोंदी त्यांनी केलेल्या आहेत. त्यावर त्यांनी आपली प्रतिक्रिया नोंदवलेली नाही, किंवा भाष्य देखील केलेले नाही व हेच खरे या डायरीचे वैशिष्ट्ये आहे.

उत्तम कांबळे यांनी १४ ऑक्टोबर २००७ ते २४ जानेवारी २००८ रोजी संमेलनाची सांगता होईपर्यंत तब्बल शंभर दिवसांची डायरी नित्यनेमाने लिहिण्याचा परिपाठ ठेवला व संमेलनानंतर ही डायरी प्रकाशित केली. संमेलनाच्या आयोजनातील एकूण अडीअडचणींची आणि महामंडळाच्या कार्यपद्धतीची, कार्यालयीन व्यवस्थेची आणि कार्यकर्त्यांच्या स्वभाववृत्तींच्या वैचित्र्याची, स्थानिक राजकारणाची आणि लेखककवींच्या आत्मभानाची नानाविध रुपे या डायरीतील साध्या साध्या नोंदीमधून प्रकट होतात आणि मराठी वाङ्मयीन संस्कृतीच्या एकूणच बऱ्यावाईट अवस्थेची जाणीव करुन देतात.

संमेलनाच्या आयोजनाबद्दल प्रत्येक वर्षी हजारो रसिक, साहित्यिक संमेलनाला उपस्थित राहतात, व जे कानी पडेल ते सुवचन-सुभाषित-सुजनवाक्य म्हणून प्रमाण

भारताचा भूगोल

डॉ. एस.व्ही. ताठे
डॉ. एस.बी. जाधव
डॉ. व्ही.ए. देशमुख

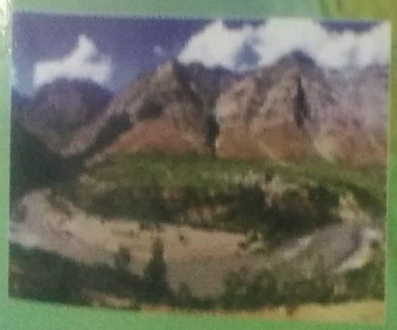

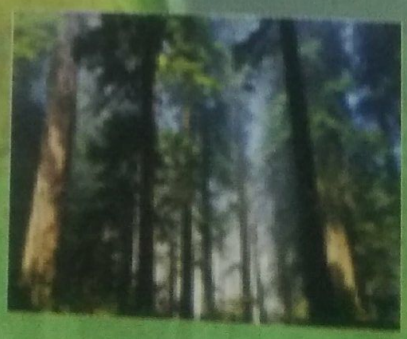

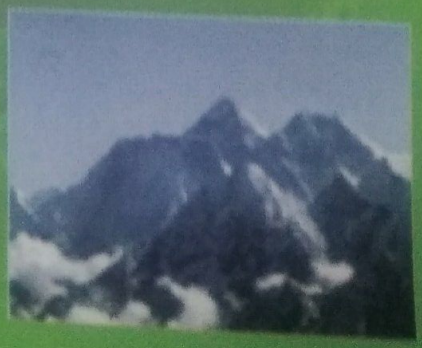

डॉ. एस.व्ही. ताठे

डॉ. एस.बी. जाधव

डॉ. व्ही.ए. देशमुख

भौगोलिक दृष्टिकोनातून भारताचा विचार केल्यास अतिशय वैविध्यपूर्ण भारताची प्राकृतिक रचना असून येथील हवामान मोसमी प्रकारचे आहे. भारताचे स्थान उष्ण कटिबंधात असून वैविध्यपूर्ण प्राकृतिक रचनेमुळे जगातील सर्व प्रकारचे हवामान आपणास भारतात पहावयास किंवा अनुभवास मिळते. याचाच परिणाम येथील वनस्पती, प्राणी, लोकसंख्या, उद्योगधंदे इत्यादींवर झालेला आढळून येतो.

सदर पुस्तकात भारताची प्राकृतिक रचना, नदीप्रणाली, हवामान, मृदा, नैसर्गिक वनस्पती, शेती, खनिज संपत्ती, लोकसंख्या, उद्योगधंदे इत्यादींविषयी सखोल भौगोलिक मांडण्याचा प्रयत्न 'भारताचा भूगोल' या ग्रंथात डॉ. ताठे, डॉ. जाधव, डॉ. देशमुख यांनी केलेला आहे.

ISBN 93-81948-44-6

9 789381 948446

चिन्मय प्रकाशन, औरंगाबाद.
संपर्क : मो. ९८२२८७५२१९

मुस्लिम समाजातील राजकीय विचारवंत व मुस्लिम समाजाच्या विकासासाठी प्रशासनाची भूमिका

संपादक
डॉ. नितीन एन. आहेर
प्रा. वैशाली एस. पेरकं

डॉ. नितीन एन. आहेर

पूर्ण नाव : डॉ. नितीन नामदेवराव आहेर

शिक्षण : एम.ए.(राज्यशास्त्र), बी.पी.एड्., पीएच.डी.

अध्यापन अनुभव :
- मागील तीन वर्षापासून पदवी पातळीवरील अध्यापनाचा अनुभव.
- आंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय संशोधन पत्रिकेमध्ये शोध निबंध प्रकाशित.
- आंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय चर्चासत्रांमध्ये शोध निबंध वाचन.
- शाळा महाविद्यालयातील प्रबोधनपर व्याख्याने.
- राष्ट्रीय सेवा योजनेत सहकार्यक्रमाधिकारी म्हणून उल्लेखनिय कामगिरी.
- 'राममंदिर-बाबरी मशिद विवाद' पुस्तक प्रकाशित.

प्रा. वैशाली एस. पेरके

पूर्ण नाव : प्रा. वैशाली शेषराव पेरके

शिक्षण : एम.ए.(लोकप्रशासन), एम.फिल, सेट, नेट, पीएच.डी. (कार्यरत)

अध्यापन अनुभव :
- पाच वर्ष पदवी पातळीवरील अनुभव.
- एम.फिल लघु संशोधनासाठी यु.जी.सी.द्वारा राजीव गांधी नॅशनल फेलोशीप प्राप्त.
- आंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय संशोधन पत्रिकेमध्ये शोध निबंध प्रकाशित.
- आंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय चर्चासत्रांमध्ये शोध निबंध वाचन.
- शाळा महाविद्यालयातील प्रबोधनपर व्याख्याने. महाविद्यालयीन पातळीवर वाद-विवाद, वक्तृत्व व
- सांस्कृतीक कार्यक्रमात पारितोषीक.
- राष्ट्रीय सेवा योजनेत महिला कार्यक्रमाधिकारी म्हणून उल्लेखनीय कामगिरी.
- इन्सा राष्ट्रीय पुरस्काराने सन्मानित.

मुस्लिम समाजातील राजकीय विचारवंत मौलाना आझाद यांचे कार्य व योगदान

डॉ. आर. एन. मोरे (राज्यशास्त्र विभागप्रमुख),
संत रामदास महाविद्यालय, घनसावंगी, जि. जालना.
प्रा. वाय. एन. मोरे (हिंदी विभाग)

आधुनिक भारतीय विचारवंतामध्ये मुस्लीम विचारवंतांनी लक्षणीय योगदान दिले आहे. भारतात ब्रिटीश साम्राज्याचा विस्तार झाल्यानंतर मुस्लीम समाजात उमटलेली प्रतिक्रिया सर्वसाधारणपणे हिंदू समाजातील प्रतिक्रियेप्रमाणेच होती. ब्रिटीश राजवटीत ज्याप्रमाणे जहाल व मवाळ दृष्टिकोन असणारे नेते हिंदू समाजात अस्तित्वात होते. त्याचप्रमाणे मुस्लीम समाजात जहाल व मवाळ गट उदयाला आले. नेमस्त किंवा मवाळ मुस्लीम नेत्यांचा गट हा आधुनिक पाश्चात्य शिक्षण पध्दतीचा आणि विचारसरणीचा पुरस्कार करणारा पण राजकीय सुधारणांच्या बाबतीत ब्रिटीश सत्तेचा कट्टर विरोधक असणारा, पण त्याचबरोबर सामाजिक सुधारणांच्या बाबत प्रतिगामी, ईस्लामी धर्म परंपरेचा समर्थक असा कडवा धर्मनिष्ठ गट होता. १९व्या आणि २०व्या शतकात उदयाला आलेल्या या मुस्लीम विचारवंतामध्ये मौलाना अब्दुल कलाम आझाद यांचे स्थान मात्र इतर मुस्लीम विचारवंतापेक्षा वेगळे आहे. त्यांनी 'कुराण' आणि अन्य इस्लामी धर्मग्रंथांच्या बुध्दिनिष्ठ आणि चिकित्सक अभ्यासक केला होता. ते कुराणावर आत्यंतिक निष्ठा असणारे सच्चे मुसलमान असले तरी त्यांची त्याविषयीची दृष्टी धर्मदुराग्रही, परंपरावादी, कर्मकांड अराधनेच्या बाह्य रुपांना महत्व देणाऱ्या मुल्ला मौलवींच्यापेक्षा भिन्न होती. ते मानवी स्वातंत्र्यास माणसाचा मुलभूत हक्क मानीत होते आणि राष्ट्रीय स्वातंत्र्यासाठी संघर्ष करणाऱ्या काँग्रेस संघटनेवर त्यांचा विश्वास होता.

कार्ये :

१९०८ मध्ये वडिलांच्या मृत्युनंतर त्यांनी इराण, इजिप्त या देशांना भेटी दिल्या. त्या देशात स्वातंत्र्यासाठी चाललेल्या संघर्षानंतर त्यांनी मुसलमानांना स्वातंत्र्य आंदोलनापासून अलिप्त न राहता सक्रिय झाले पाहिजे, अशी त्यांची भूमिका होती. "१९१२ मध्ये भारतात आल्यानंतर त्यांनी 'अल हिलाल' या नावाचे साप्ताहिक सुरु केले. मुस्लिम बांधवांना स्वातंत्र्य लढ्यात भाग घेण्याची प्रेरणा देणे हा साप्ताहिकाचा उद्देश होता."[१] या जनसंपर्काच्या माध्यमाद्वारे त्यांनी ब्रिटीश सरकारवर ताशेरे ओढले. त्यामुळे साहजिकच ब्रिटीशांनी साप्ताहीकावर बंदी घातली. बंगाल सरकारने आझादाच्या जहालवादी विचारांमुळे त्यांच्यावर बंदी घातली. त्यांनी बंगाल सोडल्यानंतर बिहार प्रांतात उलेमांना संघटीत करण्याचा प्रयत्न केला. परंतू त्यांना उलेमांकडून अपेक्षित प्रतिसाद मिळाला नाही. त्यांच्या कार्याची शिक्षा म्हणून त्यांना नजरकैदेत ठेवले. १९२० मध्ये त्यांची सुटका झाल्यानंतर त्यांचा गांधींशी संपर्क आला. गांधींच्या कार्यात त्यांनी सक्रिय सहभाग घेतला. त्यांची भाषणे राजद्रोही ठरविण्यात येऊन त्यांना एका वर्षाची शिक्षा झाली.

"१९२३ च्या दिल्ली येथे झालेल्या विशेष अधिवेशनाचे ते अध्यक्ष झाले. माझ १९३० मध्ये त्यांनी सविनय चळवळीत भाग घेतल्याने त्यांना सहा महिन्यांची शिक्षा झाली."[२] सन १९४० मध्ये झालेल्या राष्ट्रीय काँग्रेसच्या अध्यक्षीय निवडणुकीत मानवेंद्रनाथ राय यांचा पराभव करुन ते निवडून आले होते. यावरुन त्यांची लोकप्रियता आणि काँग्रेसमधील स्थान लक्षात येते. हेही सत्य नाकारता येत नाही की, काँग्रेसलाही मौलाना आझाद सारखा समन्वय असणारा आणि मुस्लीमांचे प्रतिनिधीत्व करणारा खरा चेहरा दिसला होता. त्यांची हिंदू-मुस्लीम एकतेचा काँग्रेसवर प्रभाव होता. म्हणून १९४० मध्ये ते पुन्हा काँग्रेसचे अध्यक्ष झाले. त्याच वर्षी सरकार विरोधी भाषण केल्याने त्यांना १८ महिन्यांच्या कारावासाची शिक्षा झाली. त्यानंतर १९४२ मध्ये "भारत छोडो" आंदोलनात सहभाग घेतल्याबद्दल ३ वर्षे स्थानबध्द करण्यात आले.

"१९४० ते १९४६ ही सहा वर्षे आझाद काँग्रेसच्या अध्यक्षपदी होते."[३] सन १९४५ मध्ये सर्वपक्षीय सीमला परिषदेत काँग्रेसचे प्रतिनिधीत्व केले. कॅबिनेट मिशन शिष्टमंडळ समवेत झालेल्या चर्चेत आझाद यांनी पाकिस्तान निर्मितीच्या मागणीला विरोध केला. विभाजनवादी प्रवृत्तीतून मुस्लीमाचे भले होणार नाही अशी त्यांची धारणा होती. म्हणून त्यांनी नेहमी पाकीस्तानच्या निर्मितीला विरोध केला. मुस्लीम लीगच्या विभाजनवादी प्रवृत्तीवर टीका करीत, मुस्लीम लीगच्या भूमिकेला नाकारले.

६

महात्मा गांधी आणि ग्रामीण विकास

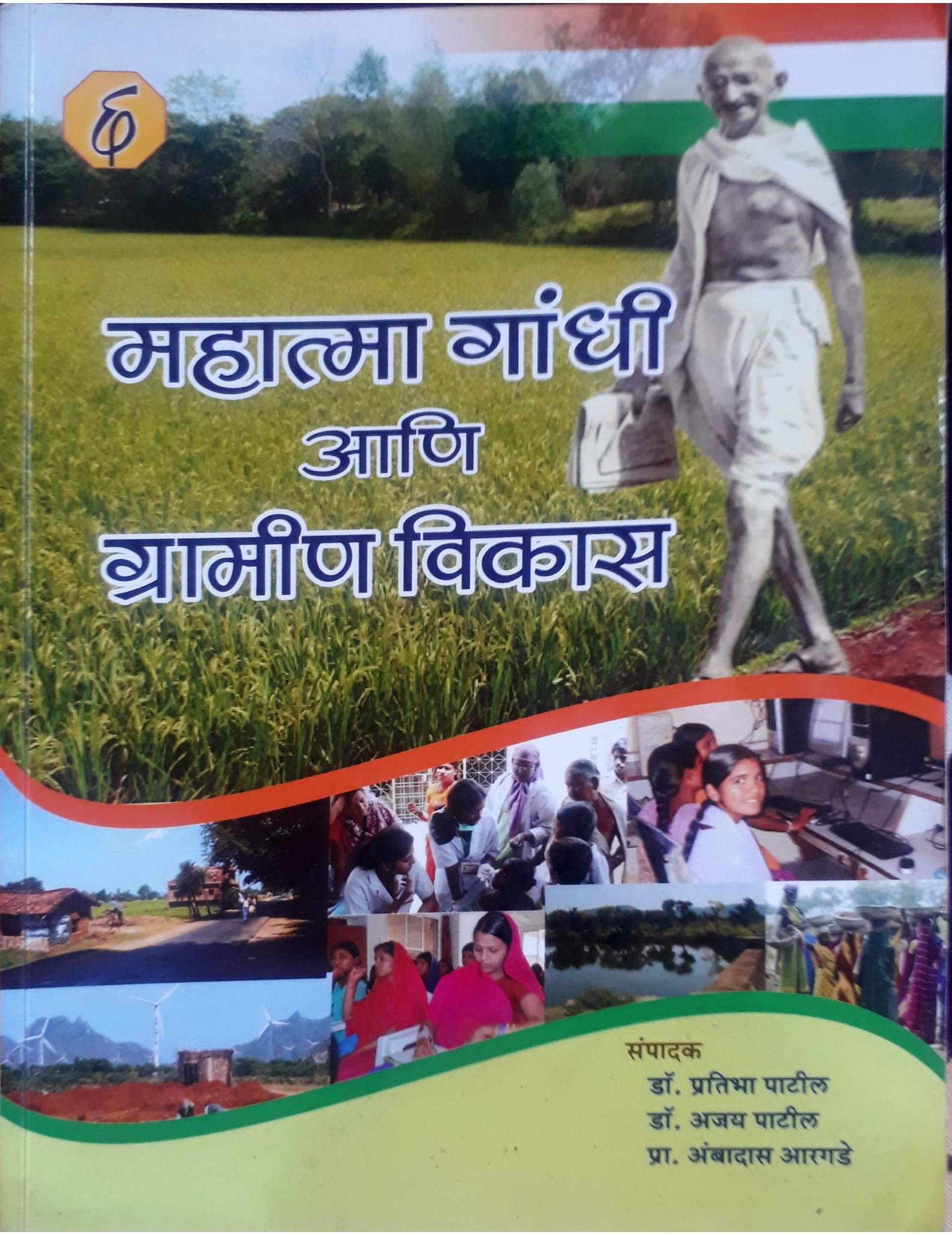

संपादक
डॉ. प्रतिभा पाटील
डॉ. अजय पाटील
प्रा. अंबादास आरगडे

मला असा भारत निर्माण करावयाचा आहे की जेथे गरिबातील गरीब माणसांना हा आपला देश आहे व त्याची जडणघडण करण्यामध्ये आपला वाटा आहे असे वाटेल, जेथे लोकांमध्ये उच्च - नीच वर्ग नसतील व जेथे सर्व जाती जमातींचे लोक गुण्यागोविंदाने एकत्र नांदतील. अशा भारतामध्ये अस्पृश्यतेसारख्या व नशापानसारख्या कलंकाला जागा नसेल. स्त्रियांना पुरुषांच्या बरोबरीने हक्क प्राप्त होतील. जगातील इतर देशांशी आपले स्नेहांचे संबंध असतील, कारण आपण त्यांना लुबाडणार नाही किंवा आपण कोणाकडून लुबाडले जाणार नाही. त्यामुळे आपले सैन्यबळ अतिशय मर्यादित असेल.

माझे भारतासंबंधीचे स्वप्न हे असे आहे.

हीच माझ्या भारताची सुंदर प्रतिमा आहे,

हाच माझ्या स्वप्नातला भारत आहे.

- महात्मा गांधी

एज्युकेशनल पब्लिशर्स ॲण्ड डिस्ट्रीब्युटर्स
पोस्ट बॉक्स नं. 131, गोकुळवाडी, औरंगपुरा,
औरंगाबाद-४३१००१. फोन : ०२४०-२३२९२०४
मो.: ९४२१३००३६, ९९७००६७९७१
ई-मेल : educationalpub@gmail.com

ISBN 978-93-80876-09-2

महात्मा गांधीजींच्या राजकीय-सामाजिक विचारांतून ग्रामीण विकास

डॉ. राजेंद्र मोरे
प्रा. यादव मोरे

प्रस्तावना :

महात्मा मोहनदास करमचंद गांधी यांचे स्थान भारतातच नव्हे तर जगात अद्वितीय होते. हे गांधीचे टिकाकार मान्य करतात ते प्रामुख्याने अध्यात्मवादी व मानवतावादी विचारवंत म्हणून ओळखले जातात. धर्म आणि राजकारण यांचा सुंदर समन्वय साधून त्यांनी राजकारणाला व्यवहारिक अशी नवी अध्यात्मवादी दृष्टि दिली. मानवता हा त्यांचा केंद्रबिंदू असून मानव मुळातच चांगला असतो. यावर त्यांची नितांत श्रध्दा होती. साध्य आणि साधन सूचिता हा त्यांचा विचारांचा गाभा असून अन्यायाचा प्रतिकार सत्य, अहिंसा व सत्याग्रहाच्या मार्गाने करता येतो. हे त्यांनी आपल्या विचारातून व कृतीतून दाखवून दिले.

भारतामध्ये आधुनिक दृष्टिकोनातून विकेंद्रीकरणाच्या चर्चेला सुरुवात झाली. तेव्हा भारतात ब्रिटीशांची सत्तेची चौकट मजबूत झाली होती. त्यांनी केंद्रीकरणावर अधिक भर दिला होता. स्वातंत्र्य चळवळीतील नेत्यांना ब्रिटीशांचा दृष्टीकोन लक्षात आला होता. "महात्मा गांधीनी विकेंद्रीकरणाचे प्रारुप मांडून स्वावलंब आणि स्वायत्त खेडे हाच केंद्रबिंदू मानला होता. विनोबा भावेंनी सर्वोदय चळवळ स्थानिक साधण्याचे आणि त्यातून ग्रामीण विकास करण्याचे उद्दिष्ट ठरले होते. त्याचप्रमाणे जयप्रकाश नारायण यांनी समाजवादी लोकशाही स्वयंशासित आणि स्वयंनिर्णयी समाजाचा संकल्पना मांडली. एम.एन. रॉय यांनी पुरोगामी मानवतावादी विचार मांडून 'लोकसमित्याद्वारे' सत्तेचे परिणामकारक विकेंद्रीकरण करण्याची गरज सांगितली."[१] त्यातुन लोकनिर्वाचित जबाबदार शासन पध्दतीचा उदय झाला.

लोकांच्याप्रती जबाबदार असलेल्या निर्वाचित स्थानिक स्वराज्य संस्थेचा उदय युरोपमध्ये झाला. भारतात स्थानिक स्वराज्य संस्थेची सुरुवात ब्रिटीशांनी केली. "भारतातील आधुनिक स्थानिक स्वराज्य संस्थांचा जनक लॉर्ड रिपन यांना मानले जाते."[२] या संस्थांचा भारतातील इतिहास पाहता १६८७ साली मद्रास शहरासाठी पहिली स्थानिक स्वराज्य संस्था स्थापन करण्यात आले. त्यानंतर १७९३ मध्ये मद्रास, कलकत्ता बॉम्बे या तीन शहरासाठी पालिका प्रशासनाची निर्मिती करण्यात आली. त्यानंतर १८४२ च्या 'बंगाल ॲक्ट' नुसार पालिका प्रशासनाचा विस्तार करून जिल्ह्याच्या ठिकाणी लागू करण्यात आला.

स्वातंत्र्यानंतर भारताची राज्यघटना तयार झाल्यानंतर घटनेतील मार्गदर्शक तत्वांत स्थानिक शासनाचे संघटन आणि त्यांच्या कार्यासंबंधी कलम-४० अन्वये राज्यांना पंचायत राजव्यवस्था निर्माण करण्याची जबाबदारी सोपविण्यात आली यातून ग्रामीण विकासासाठी तीन पातळ्यांवर स्थानिक स्वराज्य संस्था विकसित केल्या गेल्या.

महात्मा गांधीची ग्रामीण विकासाबाबत व्यापक दृष्टिकोन दिसून येतो. त्यांच्या विचारांचा प्रभाव ग्रामीण विकासावर झालेला आहे. स्वतंत्र भारताची राज्यघटना तयार करतांना मार्गदर्शक तत्वांत गांधीवादी विचारधारा आढळून येते. भारत स्वातंत्र झाल्यानंतर गांधींच्या विचारधारतेतून पंचायत राज्याची स्थापना झाली. पुढे पंचायत राज्याला घटनात्मक दर्जा देऊन पंचायत राजच्या माध्यमातून ग्रामीण विकासाला चालना देण्याचा प्रयत्न झाला. तसेच उपेक्षित लोकांना सत्तेत भागीदारी मिळाली. गांधींजी आणि ग्रामीण विकास या अंगांनी अभ्यास करतांना त्यांची ग्रामीण विकास संदर्भात राजकीय आर्थिक दृष्टीकोनाचा अभ्यास करतांना त्यांचा हा दृष्टीकोन कितपत योग्य होता. स्वातंत्र्योत्तर भारतावर त्या धोरणाचा कितपत प्रभाव पडला आहे. तसेच विविध अंगांनी कसा परिणाम झाला याचा अभ्यास करून चिकित्सक अध्ययन करण्याचे ठरले आहे.

ISBN: 978-81-927093-4-5

अंजुमन खैरुल इस्लामद्

पूना कॉलेज
ऑफ आर्टस, साइन्स व कॉमर्स,

कैम्प, पुणे – 411001, महाराष्ट्र

020-26454240, फैक्स - 020-26453707 www.akipoonacollege.ac.in

ज्ञान - विज्ञान विमुक्तये

हिंदी कथासाहित्य में स्त्री विमर्श एवं आदिवासी विमर्श

(इक्कीसवीं सदी के संदर्भ में)

दि. 27-28 फरवरी 2015

संपादक

डॉ. जी. एम. नाज़िरुद्दीन

डॉ. मो. शाकिर बशीर शेख

डॉ. बाबा शेख

हिंदी विभाग द्वारा

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, UGC, WRO, Pune

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

22	डॉ. सविता लोंढे	हिंदी उपन्यासों में नारी विमर्श	65
23	डॉ. सीमा तुकाराम जाधव	समकालीन संदर्भ में स्त्री विमर्श	76
24	शेख हुसैन मैनोद्दीन	इक्कीसवी शती के हिंदी उपन्यास में स्त्री विमर्श	69
25	डॉ. शोभा दिव्यवीर	हिंदी उपन्यासों में स्त्री विमर्श	71
26	कदम सुभाष मारूती	'गिलिगडु' उपन्यास में स्त्री विमर्श'	75
27	प्रा. सौ. सुनिता रविंद्र सूर्यवंशी	कमल कुमार के उपन्यासों में नारी विमर्श	77
28	डॉ.सूर्यवंशी रंजना कृष्णा	हिंदी उपन्यासों में नारी विमर्श	81
29	वर्षाली म्हस्के	तापसी उपन्यास में स्त्री विमर्श	83
30	डॉ. लावणे विजय भास्कर	विरांगना झलकारी बाई उपन्यास में स्त्री विमर्श	85
31	डॉ. संतोष रामचंद्र आडे	मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में स्त्री विमर्श	88
32	प्रा. भील अंजीर नथ्थू	'नारी विमर्श की अंगार दहकती कहानी 'बीहड'	91
33	श्रीमती आशा मेहर	हिंदी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श	93
34	भूपेन्द्र कुमार देवांगन	हिंदी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श	95
35	प्रा.चाटे तुकाराम वैजनाथ	हिंदी कहानी में स्त्री विमर्श	97
36	चेतना राजपूत	बदलते वक्त के साथ बदलती गई तस्वीर ज़माने की..	98
37	डॉ. प्रतिभा धारासूरकर	हिन्दी कहानियों में स्त्री विमर्श	101
38	डॉ. क्षमा शुक्ला	आजादी का प्रतीक 'खुली खिड़कियाँ	104
39	डॉ. ओमप्रकाश शर्मा	हिंदी कहानियों में स्त्री–विमर्श	106
40	डॉ. शुभदा सुधीर मोघे	मन्नू भंडारी के कथा संसार में स्त्री विमर्श	109
41	डॉ. सिध्देश्वर गायकवाड	सूर्यबाला के साहित्य में नारीवाद	111
42	डॉ. गजानन सुखदेव चव्हाण	'तीन निगाहों की एक तस्वीर' संग्रह में स्त्री विमर्श	113
43	डॉ. रेखा गाजरे, अमोल पाचपोळ	स्त्री विमर्श संकल्पना एवं स्वरूप	115
44	डॉ.गजाला वसीम अ.बशीर शेख	ममता कालिया की कहानियों मे नारी चेतना	118
45	प्रा. संसारे ज्योती उत्तम	दलित कहानियों में स्त्री विमर्श	121

SrNo(11) 2012-13

Asian Journal of Chemistry; Vol. 24, No. 12 (2012), 5723-5726

ASIAN JOURNAL OF CHEMISTRY

www.asianjournalofchemistry.co.in

Dielectric Relaxation Study of Polar Liquids Using Time Domain Reflectometry Technique†

PRASHANT SONWANE[1,*], SIDDHARTH KAMBLE[2] and P.W. KHIRADE[2]

[1]Department of Physics, Sant Ramdas College, Ghansawangi-431 209, India
[2]Department of Physics, Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad-431 004, India

*Corresponding author: E-mail: dr.ptsonawane@gmail.com

AJC-11740

Complex permittivity of binary mixture of 2-methoxyethanol-propanol mixture for various temperatures was obtained in the frequency range of 10 MHz to 10 GHz using the time domain reflectometry technique. The static dielectric constant (ε_s) and relaxation time (τ) have been obtained from complex permittivity spectra using non-linear list square fit method. This values are used for the calculation of access permittivity ε_∞, excess inverse relaxation time $(1/\tau)^E$, Kirkwood correlation factor (g^{eff}) Bruggeman factor (Γ_B) and thermodynamic parameters. On the basis of above parameters, information on the molecular structure and dynamics of the mixture have been discussed.

Key Words: Dielectric constant, Time domain reflectometry, Kirkwood correlation factor, Bruggeman factor, Thermodynamic factor.

INTRODUCTION

The study of dielectric relaxation of liquids gives the important information about molecular structure, molecular interaction between components of solutions, dynamics and kinetics of the solution. Since, the molecular response is in microwave region, most of the measurements are carried out in microwave region to know the liquid properties. The dynamic and kinetic properties of liquid are generally carried out in dilute solution with non-polar solvent, using frequency domain technique. To study the dielectric properties of the solution of polar liquids in polar solvent, the most reliable technique is time domain technique. The time domain reflectometry technique developed by Cole *et al.* gives the dielectric relaxation properties of the solution over wide range of microwave frequencies. This time domain reflectometry technique has been used in present study to find the dielectric relaxation properties of binary mixture of polar liquids[1-5].

EXPERIMENTAL

Time domain reflectometry set up and data acquisition: The complex permittivity spectra of the samples were studied using time domain reflectrometry method[6,7]. The Hewlett Packard HP 54750 sampling oscilloscope with HP 54754A time domain reflectometry plug -in module was used. A fast rising step voltage pulse of about 39 ps rise time generated by a pulse generator was propagated through a coaxial line system of characteristic impedance of 50 Ω. The transmission line system under test was placed at the end of the coaxial line in the standard military application coaxial cell connecter with 3.5 mm outer diameter and 1.35 mm effective pin length. All measurements were done under open load conditions. The change in the pulse after reflection from the sample placed in the cell was monitored by the sampling oscilloscope. In this experiment, a time window of 5 ns was used. The reflected pulses without sample R_1 (t) and with sample R_x (t) were digitized in 1024 points in the memory of the oscilloscope and transferred to a pc through 1.44 MB floppy diskette drive. A temperature controller system with a water bath and thermostat has been used to maintain the constant temperature within the accuracy limit of 273 ± 1 K.

Data analysis: The time dependent data were processed to obtain complex reflection coefficient spectra $\rho^*(\omega)$ over the frequency range from 10 MHz to 20 GHz using Fourier transformation[8,9] as:

$$\rho^*(\omega) = \left[\frac{c}{j\omega d}\right]\left[\frac{p(\omega)}{q(\omega)}\right] \quad (1)$$

where, $p(\omega)$ and $q(\omega)$ are Fourier transforms of $[R_1(t)-R_x(t)]$ and $[R_1(t) + R_x(t)]$, respectively. C is the velocity of light, w is angular frequency and d is the effective pin length and j = root (-1).

The complex permittivity spectra $\varepsilon^*(\omega)$ were obtained from reflection coefficient spectra, $\rho^*(\omega)$ by applying a

†Presented at International Conference on Global Trends in Pure and Applied Chemical Sciences, 3-4 March, 2012; Udaipur, India

आदिवासी साहित्य आणि लोककला

संपादक

डॉ. शत्रुघ्न फड

अनुक्रम

- स्वागत / अकरा
- संपादकीय / पंधरा
- बीजभाषण - श्री. गणेश देवी / सतरा

१. भारतीय आदिवासी समाज - बदलती आव्हाने आणि दृष्टीकोन - उषाकिरण आत्राम / २१
२. आदिवासी साहित्य, संस्कृती आणि अस्मिता - श्री. वाहरू सोनवणे / २३
३. आदिवासी अस्मिता - श्री. सुन्हेरसिंह ताराम / २५
४. आदिवासी साहित्याची प्रेरणा, भूमिका आणि वाटचाल - श्री. लक्ष्मण टोपले / २७
५. आदिवासी अस्मिता आणि साहित्य - प्रा. माधव सरकुंडे / २९
६. आदिवासी ठाकर आणि त्यांचे कलाजीवन - श्री. मा. रा. लामखडे / ३१
७. मराठी साहित्यातील आदिवासी स्त्रीचित्रण - डॉ. तुकाराम रोंगटे / ३३
८. आदिवासी साहित्याची सामाजिकता - प्रा. डॉ. माहेश्वरी गावित / ३५
९. ग्रामोत्सवातील नृत्यनाट्य : बोहाडा - डॉ. प्रकाश खांडगे / ३७
१०. आदिवासी लोककलांमागच्या धारणा व प्रेरणा - श्री. मुकुंद कुळे / ३९
११. आदिवासी साहित्य आणि स्त्रीजीवन - प्रा.डॉ. सिसिलिया कार्व्हालो / ४१
१२. आदिवासी सिद्दींची गुजराती धमाल - प्रा. डॉ. गणेश चंदनशिवे / ४३
१३. आदिवासींचे लोकमानस - डॉ. साहेब खंदारे / ४५
१४. आदिवासी साहित्य आणि जागतिकीकरण - प्रा. डॉ. वैजनाथ अनमुलवाड / ४७
१५. कुसुम अलाम यांच्या कवितेतील आदिवासींचे अस्तित्व... - प्रा. दामोदर मोरे / ४९
१६. आदिवासी लोककला - डॉ. संजय लोहकरे / ५१
१७. गोंड आदिवासी लोककलेचे स्वरूप आणि वास्तव - प्रा. संयुक्ता थोरात / ५३
१८. जागतिकीकरण आणि आदिवासी - डॉ. सुरेखा रोंगटे-घारे / ५५
१९. जागतिकीकरण आणि आदिवासी कविता - डॉ. गोविंद काजरेकर / ५७
२०. आदिवासी साहित्याच्या प्रेरणा - प्रा. डॉ. ज्ञानेश्वर वाल्हेकर / ५९
२१. आदिवासी साहित्याची सामाजिकता - प्रा. डॉ. उद्धव थोरवे / ६१
२२. आदिवासी साहित्य आणि लोकजीवन - डॉ. यशवंत सोनुने / ६३
२३. आदिवासींचे लोकनृत्य : एक शोध - डॉ. अनिरुद्ध मोरे / ६५
२४. पिंगुळीच्या ठाकर आदिवासींच्या लोककला - प्रा. डॉ. बाळकृष्ण लळीत / ६७
२५. खडी गंमत : विदर्भीय लोककला - डॉ. एन. व्ही. चिटणीस / ६९
२६. पारंपरिक आदिवासी नृत्यातील परिवर्तने - प्रा. डॉ. जयंत शेवतेकर / ७१
२७. आदिवासी कविता आणि लोकजीवन - प्रा. कल्याणी शेजवळ / ७३
२८. खानदेशातील लोकदेवता आणि लोकजीवन - प्रा. डॉ. शशिकांत पाटील / ७५
२९. आदिवासी ठाकरांचे लोकजीवन - प्रा. डॉ. उमेश मुंढे / ७७
३०. आदिवासी साहित्याच्या प्रेरणा - प्रा. गंपू लहाने / ७९
३१. जव्हार परिसरातील आदिवासींच्या लोककला - प्रा. प्रज्ञा श्री. कुलकर्णी / ८१
३२. आदिवासी साहित्य आणि नक्षलवाद - प्रा. मोक्षदा वि. मनोहर / ८३

२८. खानदेशातील लोकदेवता आणि लोकजीवन

- प्रा. डॉ. शशिकांत पाटील

अहिराणी बोली प्रदेशात परंपरागत पद्धतीने चालत आलेल्या काही चालीरिती आणि संस्कार-सोहळे परंपरने जतन करून ठेवलेले आहे. विधिपूर्ण लोकजीवन ओव्यांच्या माध्यमातून प्रकट केलेले आहे. या लोकसाहित्याचा विकास आणि जपणूक अशाच लोकजीवनातून झालेली असते. खानदेशातील अहिराणी ओव्यांतून या जीवनाचे बदलते रूप आणि प्रासंगिक घटना आलेल्या आहेत. यातून लोकजीवनातील बदलत्या परंपरांचा परिचय आपल्याला होत असतो.

गुलाबाई :

स्त्रियांच्या वाणीतून या गीतांची निर्मिती झालेली आहे, स्त्री ही सर्जकतेचे प्रतिक मानली जाते. म्हणून स्त्रियांच्या जीवनाला ऐतिहासिक संदर्भ आहेत. 'गुलाबाई' हा उत्सव खानदेशात जसा साजरा केला जातो तसाच महाराष्ट्रात साजरा केला जातो. या उत्सवाला महाराष्ट्रात 'भुलाबाई' या नावाने ओळखतात. पौराणिक कथेप्रमाणे शंकर-पार्वतीचे भांडण होते आणि शंकर रागाने अरण्यात निघून जातात. त्यांचा शोध घेण्यासाठी पार्वती भिल्लीणीचे रूप धारण करते. याच भिल्लिणीचा अपभ्रंश लोकगीतातून 'भुलाबाई' झाला असावा आणि याचेच रूप खानदेशात पार्वतीला 'गुलाबाई' आणि शंकराला 'गुलोजी' असे म्हटले असावे.

शंकर-पार्वती यांचा स्नेह म्हणून हा उत्सव साजरा होत असल्याने आरास मांडून या सणाची शोभा वाढविली आहे. हा सण स्त्रियांचा असल्याने सासर-माहेराचे संदर्भ या उत्सवाच्या निमित्ताने ओलेले दिसतात. या उत्सवात प्रामुख्याने आनंदनिर्मिती हा प्रमुख उद्देश मानला जातो. याविषयी मात्र कोणताही विधी सांगितलेला नाही; तर अतिशय आनंदी मनाने बाल, किशोरी आणि युवा मुली या उत्सवात सहभागी होतात आणि आनंदाची उधळण करतात. या उत्सावासंबंधी निर्माण झालेल्या आणि पिढी परपिढी संक्रमित झालेल्या ओव्यांसंदर्भात डॉ. ममता इंगोले म्हणतात, 'कुटुंब आणि समाज यातील नातेसंबंधाच्या अतिशय तरल भावछटा या गीतांतून आढळतात. ही गीते कृषिप्रधान जीवनव्यवस्थेच्या काळात निर्माण झाली असली, तरी त्याचे जतन करताना महाराष्ट्रातील लेकीसुनांनी आपल्या कुचंबलेल्या मनाचा हळवेपणा, रंगवलेले स्वप्ने त्याचे रंग भरून दिलेले आहेत. तसेच सासरी होणाऱ्या छळाचे, गुदमरलेल्या श्वासाचे, होणाऱ्या घुसमटीचे चित्र रेखाटले आहे.' स्त्रीमनातून निर्माण झालेल्या या गीतांनी स्त्रीजीवनातील अनेक भावस्पर्शी भावना आणि संवेदना यांची उकल केलेली आहे.

या उत्सवासंदर्भातील गीतांतून स्त्रीसर्जकतेवर आणि शंकर-पार्वती यांच्या सांसारिक जीवनासंदर्भात अधिक माहिती आणि लौकिक जीवनातील देवत्वाचे स्थान स्पष्ट झालेले

ISBN 978-93-82504-02-3

अल्पसंख्यांकांचे विचारविश्व

● संपादक ●

डॉ. गजानन पांडुरंग जाधव

प्रा. संतोष शिवाजीराव देशमुख

अनुक्रमणिका

दलित साहित्य : प्रश्न आणि समस्या
प्रा.डॉ. भारत हंडिबाग प्रा. बिभीषण कांबळे 1
मुस्लिम अल्पसंख्यांक चर्चाविश्व : नागरिकत्व, राष्ट्रवाद, आणि दहशतवाद
डॉ. सदाशिव हरिभाऊ सरकटे 6
अल्पसंख्यांक (मुस्लीम) समाजाच्या समस्यांचे बदलते स्वरुप
डॉ. राजेखान शानेदिवाण 9
अल्पसंख्यांक अभिव्यक्ती : भाषा आणि साहित्य
डॉ.मीनाक्षी देव (निमकर) 13
अल्पसंख्याक अभिव्यक्तीः भाषा आणि साहित्य
डॉ.प्रेमला अल्लडवाड (मुखेडकर) 16
अल्पसंख्यांक मुस्लीम समाजाची लोकसाहित्यातून अभिव्यक्ती
प्रा.डॉ.शशिकांत पाटील 20
व्यंकटेश माडगूळकर यांच्या ग्रामीण कथेतील मुस्लिम जीवनाचे चित्रण
प्रा. डॉ. सुनीता सुळेकर 23
दलितांची सांस्कृतिक अभिव्यक्ती : एक संघर्ष
डॉ. आशा मुंडे 26
मुस्लिम अल्पसंख्यांक चर्चाविश्व : नागरिकत्व, राष्ट्रवाद आणि दहशतवाद
डॉ. धोंडीराम संभाजी वाडकर 29
अल्पसंख्याक समाजाच्या समस्यांचे बदलते स्वरुप : (दलित साहित्य : प्रश्न आणि समस्या)
डॉ. मंदाकिनी कुलकर्णी 32
अल्पसंख्यांक : भाषिक राजकारण आणि मानवाधिकार
(कर्नाटकातील मराठी भाषिक अल्पसंख्यांकसंदर्भात)
प्रा. डॉ. दत्ता पाटील 36
एक दुर्लक्षित मुस्लिम मराठी संतकवी-शहामुनी
डॉ.सुशीला सोलापुरे 39
दलित साहित्यातून अभिव्यक्त झालेले दलित जीवन-
डॉ. सुरेश पैठणकर 43
दलित साहित्याचे वेगळेपण
प्रा.संतोष देशमुख
डॉ.गजानन जाधव 47

अल्पसंख्यांक मुस्लीम समाजाची लोकसाहित्यातून अभिव्यक्ती

प्रा.डॉ.शशिकांत पाटील

लोकसाहित्य हे त्या त्या कालखंडाची समाजसंस्था आणि संस्कृती यांना सोबत घेऊन संक्रमित झालेली असते त्याच पद्धतीने समाजजीवन हे त्या त्या समाजाचे प्रदर्शन करीत असते. समाजाचा एक भाग कुटुंबव्यवस्था असतो. मुस्लीम लोकसाहित्यातून त्या त्या प्रदेशातील कुटुंबव्यवस्था ओव्यातून आलेली असते. डॉ. लता लांजेवार म्हणतात, "समाज जीवनाचा कौटुंबिक जीवन हा मुलाधार आहे. समाजाचा महत्त्वाचा घटक असलेल्या प्रत्येक व्यक्तिची जडण घडण प्रथम कुटुंबात होते. घरातील वातावरण व मोठ्यांकडून मिळालेली शिकवणीची, संस्काराची शिदोरी बरोबर घेऊनच प्रत्येकाच्या सामाजिक जीवनाला सुरुवात होत असते. यामुळे कौटुंबिक जीवन जेवढे निर्मळ, उदात्त तेवढेच सामाजिक जीवन समृद्ध व लोकहितेंशी राहील." याच अनुषंगाने मुस्लीम स्त्रीचे जीवन संस्काराने समृद्ध बनलेले आहे. लहानपणापासून आपल्या सासरी जाण्यापर्यंत माहेरचे संस्कार आणि त्यात सासरच्या संस्कारांची साथ तेथील कुटुंबव्यवस्थेचा एक भाग बनते म्हणून आपल्या ओव्यांमधूनही परंपरांचा आणि रुढींचा प्रत्यय येतो. मां-बाप,भाई-बहन या विषयाने येणाऱ्या ओव्या किंवा अनेक नात्यांना घेऊन आलेल्या ओव्या त्यांचे कौटुंबिक स्थान दर्शवत असतात. माहेराचे अस्तित्त्व मायबाप असे पर्यंत असणे, भावजाईचा परकेपणा, बापाचे कितिही प्रेम असले तरी जावयाच्या हाती आपली लेक सोपवणे, सासरी राहून भाऊ-बहिण यांची सातत्त्याने येणारी आठवण, कुटुंबसंस्थेतील अनेक नात्यांची एकमेकाभोवती असणारी भावनिक गुंतवणूक आणि एकमेकांप्रती असणारा जिव्हाळा प्रकट होतो.

कुटुंबसंस्था नात्यापुरता सीमित राहत नाही तर त्यातील जवळ असणारी शेजी म्हणजेच शेजारी असणारी सईबहिण यांना कुटुंबससंस्थेत सामावून घेते. समाजजीवनाच्या या निर्मिती आणि अतूट बंधनाबद्दल डॉ. द. ता. भोसले म्हणतात, " मुठभर माणसे एकत्र राहिल्याने समाज तयार होत नाही. त्याला कळप म्हणावा लागेल. कळप वेगळा आणि समाज वेगळा. समाज निर्मितीसाठी काही नियम असतात, मूल्ये असतात, कर्तव्य असतात. माणसा माणसात भावनिक स्वरुपाचे जिव्हाळ्याचे नाते तयार व्हावे लागते. माणसे आतून बाहेरुन जोडली गेली तरच तो समाज तयार होतो. अन् अशा समाजामुळेच मानवाचे संरक्षण होते. श्रमाची विभागणी होते. संकटावेळी पाठबळ येते. आणि माणसाचे एकलेपण कमी होते." समाजाच्या निर्मितीनंतर समाज एक कुटुंब बनते. आंतरीच्या ओलाव्याने ते एकमेकांशी जोडले जातात. माणसांच्या नात्यांना हे जोडले जाणे जास्त जाणवते. भाऊ-बहिण, लेक-मायबाप, यांचे जोडले जाणे हे उत्कृष्ट समाजाचे प्रतिक मानले जाते. 'नाती-गोती' यासंदर्भाने आलेल्या मुस्लीम ओव्यांच्या आधारे नात्यांचे संरक्षण झालेले दिसते. म्हणून या ओवीगीतांतून जिव्हाळा, भावनांची खळबळ, निर्मळपणा आणि निर्वाज्यता हे गुण सामावलेले दिसतात. सासरी एकटी न राहता माहेरच्या आठवणी घेऊन ही अनामिका माहेरची माणसे जवळ करते तर कधी कधी सासरलाही माहेर मानून कुटुंबाची एकसंघता दर्शविते.

भारतातील आधारभूत संरचना : स्वरूप व प्रभाव

संपादक :
डॉ. विश्वास कदम

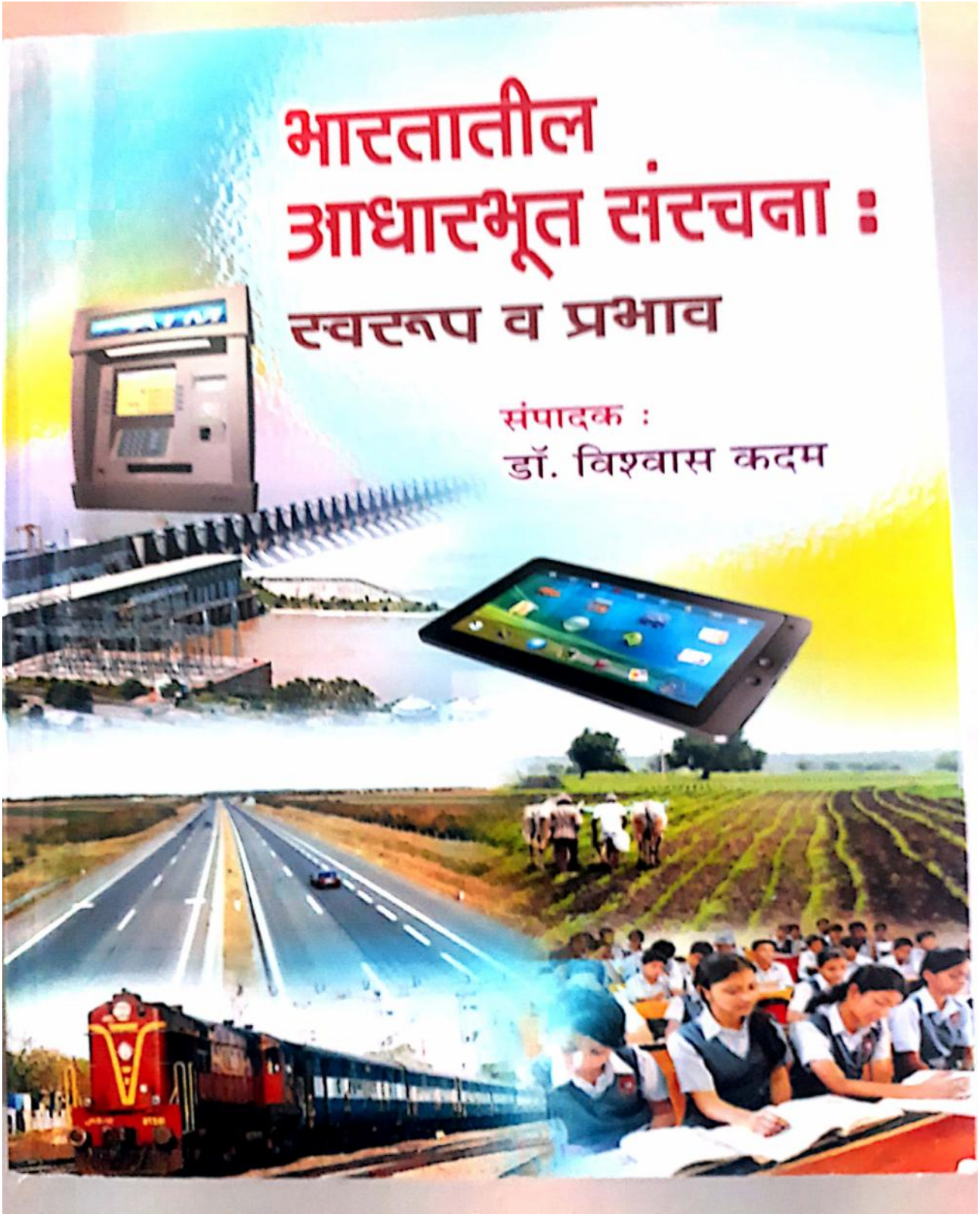

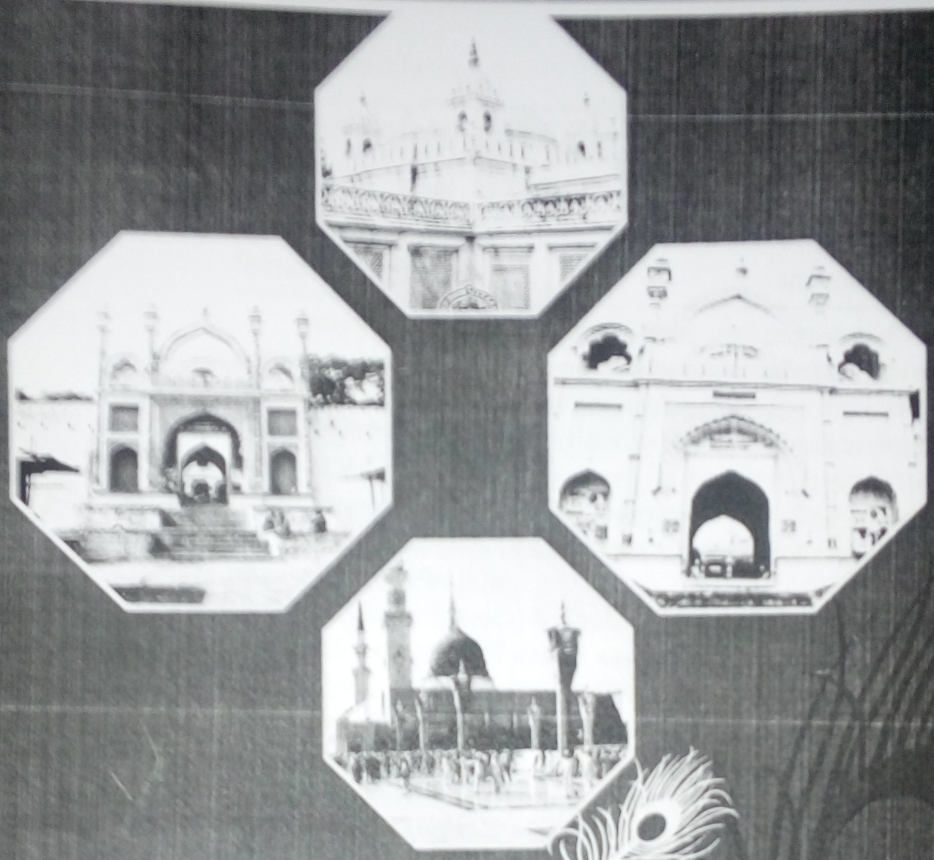

सूफी साहित्य: स्वरूप आणि शोध

■ संपादक
डॉ. ताहेर एच. पठाण
प्रा. अर्चना सोनवणे (काटकर)

ISBN-978-81-925358-9-0

ISBN-978-81-925358-9-0

महाराष्ट्रीय धर्मसंप्रदाय आणि सूफी संत शेख महंमद

प्रा. रमेश बा. रिंगणे
कला व विज्ञान महाविद्यालय,
शिवाजी नगर, गढी

डॉ. प्रल्हाद होंडे
मराठी विभागप्रमुख,
संत रामदास महाविद्यालय, घनसावंगी

"महाराष्ट्र ही संताची भूमी आहे" हे ऐकत ऐकतच आपण आपला आजपर्यन्तचा जीवनानुभव घेत आहेत. ज आणि मृत्यू या दोन घटनेतील अंतर कापण्यासाठी माणूस काहीना काहीतरी दृष्टीकोन बाळगत असतो. यानुसारच त्याच जगण्याची जीवन पद्धती ठरते आणि अशा जीवन पद्धतीला एक सामुहिकता प्राप्त झाली तेंव्हा कुठे संस्कृती विकसीत हो असते. या महाराष्ट्र संस्कृती घडवण्यात, तिला एक निर्णायकत्व देण्यात या संताचा फार मोलाचा वाटा आहे म्हणू 'महाराष्ट्र ही संताची भूमी आहे' असे आपण म्हणतो. या काळातील भक्ती चळवळीने सर्वधर्म समभाव, समाजप्रबोधन उ्देश साध्य करण्यात फार मोलाचे काम केले. महाराष्ट्राला संताच्या भूमिका आणि तत्व - विचार धारेने एक नवा आया मिळाला. केवळ धार्मिकच नव्हे तर सामाजिक स्तरावर याचा प्रत्यय नंतरच्या काळात महाराष्ट्राकडून भक्तिच्या माध्यमातू अख्खा भारत भर पसरलेला दिसेल.

मध्ययुगीन मराठी संताच्या वैचारिक धारणेने वाङ्मयात सुद्धा समृद्धता आणली आणि मुळात मराठी भाष मराठी संस्कृती याच विचारावर परिपुष्ट झाली. यात विविध संप्रदाय आणि संताचे योगदान लाभले आहेत. नागेश संप्रदाय महानुभाव संप्रदाय, वारकारी संप्रदाय, नाथ संप्रदाय, दत्त संप्रदाय इ. संप्रदायांनी मराठी भाषा माध्यमातून बहूज समाजाला ज्ञान प्राप्तीची मार्ग मोकळा केला. मध्ययुगीन काळ अत्यंत धकाधकीचा होता. दारिद्र्य, अंधश्रद्धा यांनी सगळीक अक्षरक्षः धुडगुस घातला होता. सामाजिक विषमता, विविध धार्मियांच्या तत्वज्ञानातील वेगवेगळा गोंधळ, कर्मकांड र सर्वांमुळे सर्वच्या सर्व समाज अडगळीत अडकला होता. सर्व सामान्य माणूस धर्माच्या नेमक्या हेतू पासून दुरावला जा होता. अशातच विविध संप्रदायांनी लोकभाषेचा स्वीकार करून धर्मामृताचा कलश सर्व सामान्यांच्या ओजंळीत ओतायल सुरूवात केली आणि याच प्रयत्नातून मराठी भाषा वेगवेगळ्या आविष्कारातून साकार व्हायला लागली. सर्वसामान्य माणू या मराठी भाषेच्या विचार सौंदर्याने कधीही न उलगडणाऱ्या अध्यात्माचा पदे; ओवी कवणे, अभंग, कीर्तने, स्तवने, इ.न लोक जागर करू लागला.

विविध संप्रदायाचा संबंध हिंदू, मुस्लीम, वीरशैव, जैन,इ धर्मांशी येतच होता. म्हणूनच वारकरी, नाथ, दत्त महानुभाव व सूफी अशा विविध पंथानी सर्व धर्मातील सर्व जातीतील लोकांना मुक्त प्रवेश, साध्या आचाराची देणगी दिल याचाच परिणाम म्हणून महाराष्ट्राच्या सर्वच्या सर्व खेड्या पाड्यासहीत शहरामध्ये वेगवेगळ्या जातीचे, अनेक धर्मा अनेक पंथाचे लोक 'गुण्या गोविंदाने' म्हणजेच त्यांच्या त्यांच्या विचार सुत्राना प्रत्यक्ष आचारणात आणून इतरांना त्या त्रास तर होणार नाही याच खात्रीने आणि विश्वासाने जीवन चालू लागले. तेंव्हा कुठे या मराठवाड्यात हे सर्व लो समन्वयात्मक भूमिकेने का वागतात याचा उलगडा होतो. म्हणूनच आजचा हा महाराष्ट्र - पुरोगामी महाराष्ट्र म्ह ओळखला जातो. एवढेच नव्हे तर समता स्वातंत्र्य, बंधुता आणि मानवतावाद या जीवन मुल्यांची रूजवणूक झाली ती या महाराष्ट्रात जातीभेद, कर्मकांड, अंधश्रद्धा यांना तिलांजली देऊन जो महाराष्ट्र आज सामंजस्यपूर्ण रितीने साऱ्या जगा समन्वयाची ओळख करून देतो, ती केवळ आणि केवळ या नाथ, दत्त, वारकरी, महानुभाव, सूफी विविध धर्म संप्रदाय स्वतःच्या वैचारिक आचारणाने जीवन निष्ठेला दिलेल्या व्यवहार्यपणामुळे, सर्वसामान्य बहुजन समाज केंद्र स्थानी मानल्या अशा विविध वैशिष्ट्यांना महाराष्ट्राच्या मातीत रूजवल्यामुळे 'महानुभाव पंथाने फार मोठी आध्यात्मिक क्रांती घ आणली. स्थान परत्वे देव-देवता, उपासना यांच्यात असणारी भिन्नता दूर सारून एकेशवरवाद निर्माण केला' मराठी ग पायाभरणी केली. तर 'वारकरी संप्रदायाने पंढरीच्या तीरावर चंद्रभागेच्या वाळवंटात सर्व जाती धर्मांना हरीनामाच्या ग बुरसटलेल्या कल्पनांना छेद देत भक्तिच्या माध्यमातून लोकशाहीचा अनुपम सोहळा साजरा केला'.

'जैन धर्मीय संताचे योगदान तर मराठी साहित्याच्या प्रारंभापासूनच लाभलं आहे. मराठी भाषेच्या उतपत्तीचा घेताना सहाय्यभूत ठरणाऱ्या ज्या साधनांचा आपण उल्लेख करतो त्यातील अनेक साधन जैन धर्मीय संताची आहेत की शिलालेख, ताम्रपट, ग्रंथ, इ. ही झाली भारतीय संप्रदायातील मराठी भाषेतील योगदानाची नोंद पण भारता आलेल्या खिस्ती व इस्लाम धर्मियांनी मराठी साहित्याच्या अभिवृद्धी व विकासाला मोलाचा हातभार लावला

यातलाच एक सूफी संप्रदाय होय. मुळातच भक्ती चळवळ ही भारताच्या दक्षिणेमध्ये स्फुरण पावली आणि तिने उत्तरेकडे प्रयान केले. याचे आद्यश्रेय संत नामदेवाकडे जाते. संत कबीरा सारख्या इतर अनेक कवींनी ही परंपरा हिंदीत रुजवली. जातीभेद, कर्मकांड, धर्म यांच्या पलीकडे जाऊन मानवता, विश्वात्मकता दृढ करण्याचा प्रयत्न केला.

महाराष्ट्रात 'ज्ञानाचा एका, नामयाचा तुका' या म्हणीला जोडूनच 'कबीराचा शेका' असही म्हटल जातं हे शोधलं ते पु.म.पठाण यांनी 'मुसलमान (सूफी) संताचे मराठी साहित्य' या ग्रंथात वारककरी संप्रदाय आणि सूफी संप्रदाय यांचे संबंध परस्पर पुरक आहेत. सर्वसमावेशक्ता, निर्गुणता, आत्मा जीवन, धर्म, इत्यादी दोहोंच्या मतात जास्तीची भिन्नता दिसणार नाही. म्हणूनच महाराष्ट्राची भूमी आणि माणसे यांच्या अंतरमनावर मुसलमान संतकवीचा प्रभाव आपल्याला दिसतो. कबीराचे दोहे आणि तुकारामाचे अभंग या महाराष्ट्राला सारखेच वंदनीय आहेत. मग महाराष्ट्रात सूफी तत्वज्ञानाला एकरूप व्हायला जास्त वेळ लागला नाही याचे प्रतीक म्हणजे गावोगाव असणाऱ्या 'पीर' शी सर्व धर्मियांची असलेली समन्वयात्मक भक्तिभावना, सूफी संप्रदायाच्या अनेक विचारधारा आहेत. यापैकी कादरी परंपरेतले संत शेख महंमद.

सत् चांद बोधल्याचे कुळी शेक
महंमदांनी चर्चिला विवेक ||

गुरूपरंपरा व्यक्त करतानाच संत शेख महंमद संत एकनाथांशी पर्यायाने महाराष्ट्राशी संप्रदायीक जवळीकता सिद्ध करतात. एकनाथाच्या भारूडात आलेला मलंग, फकीर, हजरतमौला, इ.च्या वरूनही सिद्ध होते. योगसंग्राम, पवन विजय, निष्कलंक प्रबोध, भक्तिबोध, आचारबोध, अशा रचनामधून संत शेख महंमद यांनी आपला सामाजिक उद्बोधनपर ठसा उमटवला आहे. ज्याची नोंद संतनामावळ्यात, मराठी वाङ्मयोतिहासात आवर्जुन घेतल्या जाते. मुलतः उदारमतवादी विचारधारेने प्रभावित असणाऱ्या मुस्लिम धर्माशी संबंधित असणारा सूफी संप्रदाय महाराष्ट्रात, मराठवाड्यात, संत शेख महंमदांच्या कर्तृत्वाने रूजला तो संतमेळ्याच्या वर्णभेद, जातिभेद यांच्या अमान्यतेमुळे, भक्तिच्या माध्यमातून स्वतःचा उद्धार करण्याच्या स्वातंत्र्यामुळे, आध्यात्मिक समतेच्या पुरस्कारामुळे. संत शेख महंमदाची सर्व रचना ही लोकोद्धारासाठीच होती. 'परमतत्व जाणून घ्यायचे असेल तर मन हे महत्वाच साधन आहे. पण मनाला अंकित ठेवून विवेक सदैव जागा पाहिजे. तेंव्हा विवेकाला सद्गदित करून - संवेदनीय बनवनारा गुरू पाहिजे' असा मौलिक सल्ला योगसंग्राम मध्ये येतो.

'वो मन वाचे अगोचरू | ज्याचे मन त्यासि साक्षात्कारू |
येरास टकमक विचारू | सद् गुरूविण||'

हिंदू आणि मुस्लिम या दोन प्रकारच्या वेगवेगळ्या प्रवृत्ती आहेत. त्यांची परिमाणे वेगवेगळी आहेत. पण परिणाम एकच आहे. हे सांगताना संत शेख महंमद म्हणतात.

'श्रीकारि ॐ नमो जी नारायण |'
'या अल्ला' म्हणती यवन ||

संत शेख महंमद यांच्या 'योगसंग्राम' मध्ये ते 'अध्याया' ऐवजी प्रसंग वर्णितात माणसाच्या मनाचा कोतेपणा एकंदर समाजाच्या स्थितीलाच विघातक ठरत असतो. त्यातूनच एक विकृती तयार होते व समाज व्यवस्थेला हादरे देत निघते, याचे एक विदारक सत्य ते आपल्या एका रूपाकाने यथार्थ मांडतात.

शरीर जे नामे रंगले मुसलमान |
ते शरीर पूजिले पीर म्हणोन ||
मृत जाल्या चाले महिमान |
यालागि शुभ आचारावे ||

या ठिकाणीतर घाव घालतानाच शेख महंमद उदात्त जीवन मुल्यांचे दर्शन घडवतात.

अहंकार - टोणगा अक्कल सुरी |
विवेके कापून भक्षण करी ||
उन्मनी - मशिदीत नमाज गुजारी |
त्या बोलिजे मुलाणा ||

[illegible] परिस्थिती व समाज पाहिल्यांवर स्वतःच्या मनाला भांडत, स्वतः निपक्षपणे त्यावर मार्मिक असे भाष्य [illegible].

ऐसी सद्गुरू ईश्वरी | भक्तीची प्रेमकळा |
स्वये शेख महंमद केला निरवाळा ||

आपल मत ठणकावून सांगण्यासाठी शेख महंमद असंख्य दृष्टांत देतात, व रूपक योजनाही करतात. या सर्वांचा अभ्यास केल्यावर कळते की, ज्ञानदेव , तुकाराम, चोखोबा, ई. वारकरी संताशी शेख महंमद यांचे किती वैचारिक साधर्म्य आहे. भक्तिचा व ज्ञानाचा समन्वय साधण्याचा हा संताचा जाणीवपूर्वक अट्टाहास योगसंग्राम मध्ये अविरत वाहताना दिसतो.

पवनविजय, निष्कलंक-प्रबोध, भक्तिबोध, आचार बोध, इत्यादी रचना ही केवळ आणि केवळ जनहिताच्या कळवळ्या पोटीच प्रसवली.

बरवा जालो मुसलमान | नाही विटाळी आठवण
होतो भटेसी मुलाणा | अभिमान जातो पतना,

'भारूड' अशा रूपकात्मक रचनेमध्ये ही त्यांनी आपला पारिभाषिक हातखंडा चालवला आहेच. त्यांनी तेली, पांगुळ, वणजारा इत्यादींना बोलके करून योगाभ्यास सुद्धा प्रकट केला.

शीघ्र जागा रे पहिला प्रहारा |
दीप आहे तो करा, वारा सारा |
ना तरी पडेल चौऱ्याशी अंधारा ||
शेख महंमद वासुदेव खरा |

हा शेख महंमद रूपी वासुदेव भावनात्मक होऊन जनमानसातील अपप्रवृत्ती वर धाव घालतो. 'भारूडा' सोबत त्यांनी 'दकिखनी रचना' परिभाषा-कोश, ग्रामीणातील प्रतिमासृष्टी ही उभी केली.

पहा एंरडी भरली असे तैले
तीस काय करतील मोगऱ्याची फुले ?

अशा प्रकारे संत्य शेख महंमद यांनी महाराष्ट्रातील सूफी परंपरेला एक उच्च अधिष्ठान प्राप्त करून दिले. आदिकाळ यादवकाळापासून सुरू झालेल्या समाजाप्रतीच्या कळवळ्याला एक नवा झरा सूफी च्या माध्यमातून मराठी संत मेळ्या दाखल झाला संताच्या वैश्विक, मानवतावादी, दृष्टीकोनाला सूफी संत शेख महंमद यांनी ही पाठबळ दिले. ऐवढेच नव्हे त विविध संप्रदायातील, विविध धर्मातील जे काही वैर, भेद आहे ते नष्ट करून सामजंस्यपूर्ण सलोखा तयार व्हावा अ निर्भेळ इच्छेपोटी समन्वयातून एकात्मता मांडणारा हा संत शेख महंमद सूफी संप्रदाय आणि मराठी संत साहित्याती वेगळा अवलिया होय.

भूता परस्परे पडो मैत्र जीवांचे | दूरितांचे तिमीर जाहो |
विश्व स्वधर्मसूर्य पाहो / प्राणिजात ||

ही इथल्या संताची वैचारिक अधिष्ठानरूपी भूमिका सर्वच्या सर्वच संप्रदायात होती. धर्म कोणताही असो सर्व कल्याणाची एक वाक्यता तर सगळ्यात आहे मग त्यासाठी संतानी अंगिकारलेली एकात्म भावना महत्वाची आहे. म संत शेख महंमद यांचा हा सांस्कृतिक ठेवा मराठी वाङ्मयात, या महाराष्ट्रात नव्हे तर जागतिक पातळीवर मोलाचा ठ

संदर्भ ग्रंथ :-

1) मुसलमान (सूफी) संताचे मराठी साहित्य - डॉ. यू. म. पठाण
2) आधुनिक मराठी वाङ्मयाची सांस्कृतिक पार्श्वभूमी - डॉ. नरेंद्र मारवाडे
3) हिंदी साहित्य का इतिहास : डॉ. माधव सोनटक्के
4) यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ नाशिक - क्रमिक पुस्तके.
5) प्राचीन मराठी वाङ्मयाचा इतिहास - ल. रा. नसिराबादकर

❑❖❑

AVCHAR G. R.

Research Streams in Arts

Research Streams in Commerce & Management

Research Streams in Science & IT

ISSN 2230-7850

Impact Factor 2.1506 (UIF)

RNI MAHMUL/2011/38595

D.G. Tatkare Mahavidyalay
&
Indian Streams Research Journal

Jointly Organizes

National Level Conference

on

Research Streams in Arts
Research Streams in Commerce & Management
Research Streams in Science & Information Technology

Dated 2nd, 3rd, 5th March 2014

Mangaon Shikshan Prasarak Mandal's

D.G.TATKARE MAHAVIDYALAY

Arts, Science, Commerce, IT and Management
Mangaon 4021014 Dist.- Raigad, Maharashtra
(Affiliated to University of Mumbai)

Convenor
Dr. Sharad S. Phulari
Principal

Co- Convenor

Arts
Prof. Acharya R.M.
Prof. Pandey J.R.
Dr. Lokhande T.S.

Science/IT
Prof. Sajid Shaikh
Prof. Take S.S.
Prof. Mapkar A.Y.
Prof. Rawoot A.U

Commerce/Mngt.
Prof. Dalvi A.D.
Dr. Bhaig Mirza

INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL

Content

ISSN NO:-2230-7850

Sr. No	Title and Name of The Author (S)	Page No
1	GEOGRAPHICAL STUDY OF WATER HYACINTH (JALPARNI) IN RANKALA TALAV, KOLHAPUR (MAHARASHTRA) Prof. Anand. K. Gaikwad and Prof. Ramhari. J. Bagade	1
2	A STUDY OF CHANGING SEX RATIO PATTERN IN RATNAGIRI DISTRICT Dr. Anita Awati	5
3	AGE-SEX STRUCTURE OF DODE GURJAR COMMUNITY OF JALGAON DISTRICT OF MAHARASHTRA Asst. Prof. Arun Muralidhar Patil	10
4	ANALYTICAL STUDY OF CBO & TOURISM DEVELOPMENTS IN RATNAGIRI DISTRICT Chandrashekhar Salunkhe and Dr.Anita Awati	19
5	PROBABILITY ESTIMATES OF WEEKLY RAINFALL OF PUNE DISTRICT Dr. D. G. Mane and Prof. Nahire Dinesh Jagannath	27
6	A DISTRIBUTION OF MORTALITY IN MARTHWADA REGION A COMPARATIVE STUDY Dr. Jadhav S. B.	36
7	A GEOGRAPHICAL REVIEW OF DISTRIBUTION OF POPULATION IN BEED DIST.OF MAHARASHTRA Asst. Prof. Kendle V. N. and Dr. Khade Sominath S.	42
8	ANNLYSIS OF GROUND WATER QUALITY; A CASE STUDY OF JALNA CITY, DIST: JALNA OF MAHARASHTRA. Prof. Dr. Khade Sominath S. and Asst. Prof. Kendle Vijay N.	46
9	APPLICATION OF REMOTE SENSING AND GIS IN CORAL REEFS Prof Khandare D. G.	49
10	TOURISM DEVELOPMENT IN AURANGABAD DISTRICT (MS) Dr. Tathe Sarjerao Vishwanath and Dr. Khandebharad S.A.	51
11	A GEOGRAPHICAL STUDY OF TRIBAL SUB-PLAN AREAS IN PUNE DISTRICT-MAHARASHTRA Khile Swati Udhavrao	55
12	THE SPATIAL PATTERN OF SEX RATIO IN RAIGAD DISTRICT OF MAHARASHTRA Dr. P. J. Hajare, Dr. Hemant Pednekar and Mrs. S. P. Hajare	61
13	FLOOD INUNDATION MAPPING OF 2005s FLOOD ON RIVER SAVITRI – A CASE STUDY OF MAHAD AND SURROUNDING REGION WITH THE HELP OF GIS Priyadarshani B. More	64
14	SUSTAINABLE DEVELOPMENT AND POPULATION IN MARATHWADA REGION Dr. A. A. Kalgapure, Asst. Prof. Rahul Gunwant Kamble and Asst.Prof. Patel Shahana Nijamuddin	72

Indian Streams Research Journal
ISSN:-2230-7850
Impact Factor : 2.1506(UIF)

TOURISM DEVELOPMENT IN AURANGABAD DISTRICT (MS)

Dr. Tathe Sarjerao Vishwanath and Dr. Khandebharad S.A.

Head, Dept. of Geography, Sant Ramdas Art's, Commerce, And Science college Ghansawangi,Dist. Jalna.
Head, Dept. of Geography, Head, Dept. of Geography, Dist Jalna.

Abstract:

International tourism has been described by louses Turner as the most promising complex and under studied industry impring of the "Third world". It is only recently however. That tourism has begin to tulle its place besides more traditional economic activities in the text books on third world development.

INTRODUCTION

Tourism has mass movement of people with the "urged few to a mass movement to explore new and strange places to seek changes in Environment and to under go new experience(Robinson 1976). During the post war period tourism grew into a mass tourist industry. The number of international tourist arrivals rose from 25 million in 1950 to 18 million in 1970. An average growth rate of the more than 10%.

MEANING OF TOURISM:

Whist there has been a general consensus on technical definitions of particular forms of tourism or tourist the general and or wider concept remains clusive or rather is vague and nebulous Stephen L.J, Smith (1989) of the various attempts towards defining tourism. One of the earliest was by professor, Hunzikar and Krapf of Berhe university in (1942). They maintain that from the conceptual view points tourism should be defined as "the sum of the phenomena and relationship advising from the travel and stay of non residents in so far as they do not lead to permanent residence and are not connected with any earning activity.

According to Dr Livadin Joviac it is a. social movement with a view to rest diversion and satisfaction of cultural needs.According to Mc Intosh and Goldne "Tourism is the sum of the phenomena and host communities in the process of atrocity and hosting these tourist. According to L.J. Lickorish tourism embrace all movements of people outside their community for the purpose except migration or regular daily work. The most frequent reasons for this movement is for holidays but it will also include for example attendance at conferences and movements on sporadic or infrequent business. From the above definition it is clear that tourism represents various type of short term travel and is variably defined for particular purpose of the journey.

STUDY AREA:

The choice of the region and area under investigation has been influenced by several consideration. Firstly Aurangabad district comprising the nine tahsil of Maharashtra state has a significant location of Maharashtra plateau. Except Ajanta ranges and river basins majority part of the district comes under plateau region. The region under study has a major portion under flat topography, hence it supports high concentration of Agriculture. As a result these characteristics make this region a district physical entity and homogenous unit for geographical investigation. Aurangabad district is lying between 190-18' to 200-40' North latitudes and 740-40' to 760-40' East longitudes total geographical area of third district is 1008

thousand hectors. Secondly according to 2001 census there were 1344 villages there are 847 Grampanchayat in 2001 the total population is 29.21 lakh. Rural population is 13.54 lakh. The density is 289 persons per sq. kms, total literacy is 73.63%. World heriatage "Ellora and Ajanta" is lying on Ajanta hills it is part of Sahyadri mountain. About the 80% of the annual rainfall is received in the south west monsoon period. July is the rainest month. The variation of the annual rainfall from year to year is fairly large. Aurangabad district have a many tourist centre i.e. Ajanta, Ellora, Daulatabad, Mukbara, Pnchakki, Paithan, Maismal, Jayakwadi, Nath garden etc.

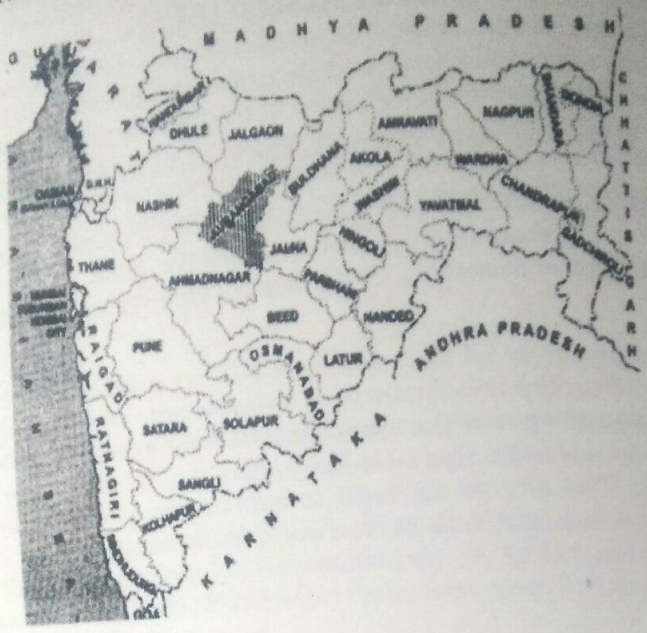

OBJECTIVES:

Some of the aspects hypothesis proposed to be tested to fulfil the following objectives are

1.The location of tourist places are tending to be sited to the source of roads, transportation water supply, lodging and boarding shopping centers etc.

2.Isolated and small tourist places provide merge and limited tourist facilities where the tourist spend few hours or their total journey time.

TOURIST CENTRES IN AURANGABAD DISTRICT:

1)Natural tourist centre

a)Jayakwadi project
b)Gautala Sanctuary
c)Pitalkhora caves
d)Chandrika devi temple
e)Mahadev temple
f)Maismal
g)Sant Dnyaneshwar garden

2)Holy tourist centres

a)Anwa temple
b)Paithan
c)Ghrishneshawar temple
d)Khultabad
e)Bhadra Maruti temple
f)Sulibhanjan

3)Historical tourist centre

a)Ellora
b)Ajanta
c)Aurangabad
d)Makbara
e)Panchakki
f)History Mesusum
g)Paithan

Tourist visitors the Aurangabad district from 1998 to 2007

1998				2007			
Sr. No.	Place	Visitors foreign	Indian	Sr. No.	Place	Visitors foreign	Indian
1	Ajanta	N.A.	276323	1	Ajanta	33188	272556
2	Ellora	N.A.	501935	2	Ellora	14444	325083
3	Daultabad	N.A.	362220	3	Daultabad	5216	266880
4	Bibi ka Maqbara	N.A.	565641	4	Bibi ka Maqbara	13565	743125
Total		N.A.	706119	Total		66413	1607644

Tourist Visitors the Aurangabad Caves From 1998 to 2007

Sr. No.	Year	Visitors	
		Foreign	Indian
1	1998	NA	NA
2	1999	NA	NA
3	2000	NA	NA
4	2001	1131	12757
5	2002	1173	24733
6	2003	1337	20940
7.	2004	2342	29270
8.	2005	2196	29760
9	2006	2132	28540
10.	2007	1712	28728

Source: Govt. of India Archaeological Survey of India, Aurangabad.

Tourist Visitors the Aurangabad Caves From 2001 to 2007

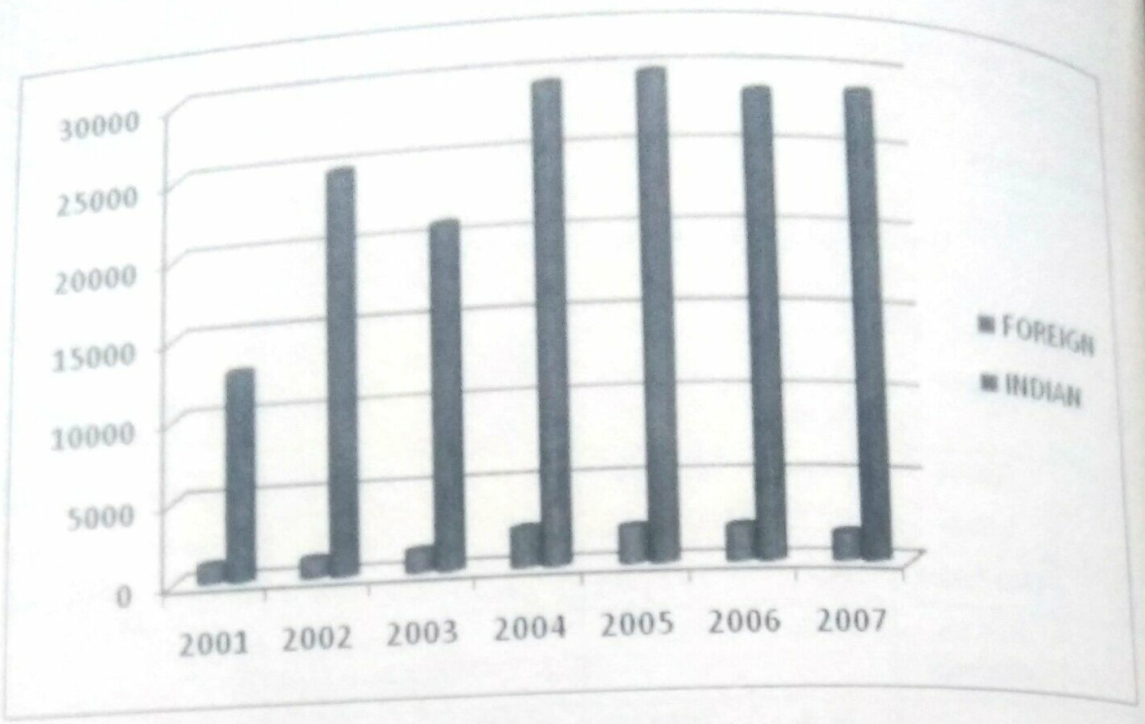

According to year 1998 to 2007 available sources, the number of Indian tourist at Ajanta vaves are seen 276323. At the time of 1998 there is no foreign visitors record but 2007 in Ajanta caves foreign visitors are visited 33188 and Indian visitors was 272556. Table no one reveals that the tourist visit to Ellora cave. According to year 1998 to 2007 available source the number of Indian tourist are continuously increased the foreign tourist also visited at Ellora (14444) in the year 2007. This table also indicates that tourist visit to Daulatabad fort indian visitors is increased during 1998 to 2007. Where as the foreign tourist also increased in the same period foreign tourist (5216) visited this fort in the year 2007 and the same period Indian visitors are 266880. To Bibi ka Makabara in Aurangabad foreign tourist also visit (13565) in the year 2007 and Indian tourist in the year 1998 (565641) tourist also visited and in the year 2007 the foreign tourists are 13565 and the Indian tourist are 743125.

There is many reason for increasing tourist arrival in Aurangabad because of there is so many Hotels and Motels are developed. Road transport facility are also good there are so many guide available. There are so many good Hospitality is available in the region.

REFERENCE:

1)Davis Phillip- 1989- Monuments of India Vol II
2)Grousset Reus, The civilization of the East India.
3)Gazzeteer of Aurangabad district.
4)Dhavalikar M.K. 2003 Ellora monument tegacy.
5)Misra and Puri 2007 Indian Economy- Himalay Publishing House.
6)Mujumdar R.C. 1951 – London- The vedi age pp 146-147.

Indian Streams Research Journal
ISSN:-2230-7850

Impact Factor : 2.1506(UIF)

URBANIZATION IN VIDARBHA REGION (MS)

Dr. Tathe Sarjerao Vishwanath and Dr. Khandebharad Sunil

Head, Dept. of Geography, Sant Ramdas Art's, Commerce And Science college Ghansawangi Dist. Jalna.
Head, Dept. of Geography, M.S.S. College, Tirthpuri, Tq. Ghansawangi, Dist. Jalna

Abstract:

Urbanization is the process by which villages turn into towns and towns develop into cities. It is a cyclical process through which a nation normally passes as it evolves from an agrarian to an industrial society(Ghosh, 1985) The degree of urbanization is an important indicator of socio-economic changes that are associated with it(YusufKhan, 1990).

INTRODUCTION

The economic development of a region is very intimately associated with the level of urbanization. Urbanization helps the process of modernizatin and the spread of science. Urbanization generates economic growth, but also creats inequalities of various kinds within population and regions(Barkley, 1996). At the global scale, there is a positive relationship between the level of urbanization and development(Berry, 1961). Therefore over concentration of urbanization is the main problems in such countries.

Study Area:

Vidarbha is a region of Mharashtra state. Its former name is Berar (in Marathi Varhad). The region of Vidarbha lies betwee 18°42'N to 21044'N latitudes and 76° E to 80o 50'Elongitudes. It covers an area of 9,7537 sq. kms. -1/3 ofthe State of Maharashtra. It occupies 31.6% of total area and holds 21.3% of total population of Maharashtra. Vidarbha has total population of 2,300,3,179 according to the 2011 census of the government of India Vidarbha is located in eastern Maharashtra. It borders Madhya Pradesh in the north, Chhattisgarh in east, Andhra Pradesh in the south and Marathwad region of Maharashtra in the west. There are 11 district in Vidarbha like Amravati, Akola, Bhandara, Buldhana, Chandrapur, Gadchiroli, Gondia, Nagpur, Wardha, Washim and Yavatmal in Vidarbha region. Geographically Vidarbha lies on the northern part of Daccan Plateau. Unlike the Western Ghats, there are no major hilly areas. The Satpura Range lies to the north of Vidarbha region in Madhya Pradesh. The Melghat area of Amravati district is on southern offshoot of the Satpura range. Large basaltic rock formations exists throughout Vidarbha caused by the Deccan lava trap. The eastern districts of Gondia, Bhandara, Gadchirolli and Nagpur fall in earthquake zone. Wainganga is the largest of all Vidarbha river. Penganga river is another big river which originates in Buldhana district.

The major city, Nagpur, is the second capital of Maharashtra and hosts the winter session of the state assembly. The cotton is famous in this area. It has dense forest cover, varied flora and fauna, and hence a major tourist destination, especially eco-tourism. Among the popular destinations are Chikhaldara, a hill station in Ambavati district, Lonar in Buldhana district, which boasts of the largest lake in the world created by the impact of meteor.

2013-14 / 2016-17 / D. Maske

(18)

Impact Factor : 3.541 Peer-Reviewed Journal ISSN : 2278 – 5639
Global Online Electronic International Interdisciplinary Research Journal (GOEIIRJ)
THEME : ROLE OF PSYCHOLOGY IN SPORTS
{Bi-Monthly} Volume – V Special Issue – IV January 2017

ROLE OF COACHING BEHAVIOR NEED SATISFACTION, AND THE PSYCHOLOGICAL AND PHYSICAL WELFARE OF YOUNG ATHLETES

Dr. Bappasaheb Maske – Sant Ramdas Mahavidyalaya, Gansavangi, Jalna
Abhijeet Deshmukh – Research Scholar, Dr. BAMU, Aurangabad
Ravindra Mali – Research Scholar, Dr. BAMU, Aurangabad

ABSTRACT

Grounded in self-determination theory the (Ryan, 2000), the purpose of this study was to examine the relationship of dimensions of coaching behavior to intrinsic need satisfaction and indices of psychological and physical well-being among male adolescent athletes. The present study utilized two measures of well-being to be essential to the experience of eudaimonia (subjective vitality and intrinsic satisfaction/interest in the activity) and one measure of ill-being (self-reported physical symptoms). What is particularly attractive about the concept of need satisfaction is that it allows researchers to identify the conditions under which the three needs should be satisfied and, in turn, promote well-being. One key social environmental factor in the self-determination framework assumed to nurture the fundamental need for autonomy is autonomy support. Autonomy support refers to the readiness of an individual in a position of authority (e.g., a coach) to take the other's (e.g., the athlete's) perspective, provide appropriate and meaningful information, offer opportunities for choice, while at the same time minimize external pressures and demands.

INTRODUCTION

In today's world of sport, pain rather than pleasure is often presented as the hallmark of what the motivated young athlete should feel. In quest of "the right body," many athletes starve themselves to be lighter or thinner, or inflate their body size via banned substances. Overtraining in the pursuit of higher performance, although often leading to burnout and overuse injuries, is part of the sport experience for a number of sport participants (Nationals, 2006). The literature suggests that the different social contexts manifested in sporting programs and, in particular, the behavior and interpersonal style of the coach, can play a major role in shaping the potential psychological, emotional, and physical effects (both positive and negative) of sport involvement (Duda, 2001; Smoll & Smith, 2002). One theoretical approach that may shed light on the potential implications of different aspects of the social environment in sport on the well-being of athletes is self-determination theory (SDT; Deci & Ryan, 1985, 2000). Recently a subtheory within SDT, termed basic needs theory (BNT; Ryan & Deci, 2002), has been formalized to clarify the meaning of the concept of basic needs and their relevance to mental and physical health. BNT assumes three needs to be essential for the nurturance and growth of the human psyche, namely the psychological needs for autonomy, competence, and relatedness. The satisfaction of the need for autonomy involves the experience of choice and the feeling that one is the initiator of one's own actions (de Charms, 1968).

The present study utilized two measures of well-being to be essential to the experience of eudaimonia

Impact Factor : 3.541 Peer-Reviewed Journal ISSN : 2278 – 5639
Global Online Electronic International Interdisciplinary Research Journal (GOEIIRJ)
THEME : ROLE OF PSYCHOLOGY IN SPORTS
{Bi-Monthly} Volume – V Special Issue – IV January 2017

YOGA AND WELLBEING : A REVIEW OF CASE STUDIES IN ANORECTAL DISEASES

Dr. Bappasaheb Maske – Sant Ramdas Mahavidyalaya, Gansavangi, Jalna,
Krushna Parbhane - Research Scholar, Dr. BAM University, Aurangabad,
Sushil Shinde - Research Scholar, Dr. BAM University, Aurangabad.

Abstract –

Yoga is one of the best therapies for health life. It not only gives physical health but also mental well being. It is the only therapy to reform the mental physical well being of human being which no other therapy can give.

The paper is focused on impact of yoga in anorectal diseases. Due to westernization of living habits the anorectal diseases are significantly increased. This study reviews the impact of yoga in treating anorectal disorders. The study diversified by diseases. The comparative profile of patients undergoing yoga therapy and a patient without yoga therapy along with ayurvedic medicine are taken into consideration for comparative study. The major finding of this study are discussed in details.

Introduction

Yoga is one of the best therapies for health. It not only gives physical health but also mental well being. It is the only therapy to reform the mental physical well being of human being which no other therapy can give.

A) Relation between Ayurved & Yoga

Ayurved is a science of living life. The main theme ayurved is means to maintain the health of healthy people and to cure the diseases of a patient.

This is the sciences which teach you how to live life in every season.

Ayurved - The natural way of living.

B) Concept of wellbeing in Yoga

Yoga is a part of ayurveda which gives you physically and mentally healthy life. Yoga is the most pleasurable to be smoothed into a state of relaxation. It reduces your stress and strain.

अभिसरण
Abhisaran

Special Issue

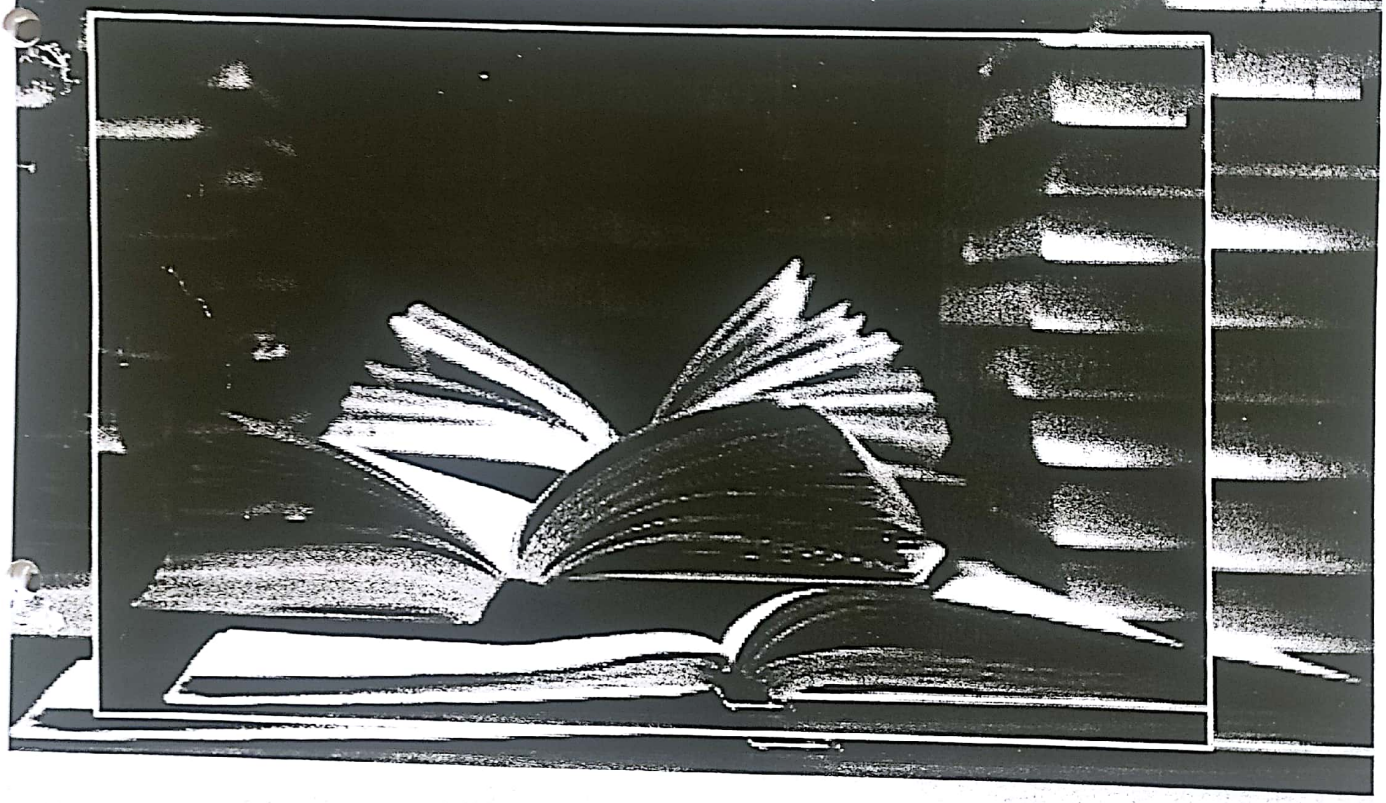

Research Methodology In Social Science

Chief Editor
Dr. V. G. Sanap

Scanned by CamScanner

सर्वेक्षण संशोधन पध्दती

दादासाहेब उ. मोटे
सहयोगी प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभाग प्रमुख,
कला,विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय,
अंबड जि. जालना.
E-Mail : dada.mote77@gmail.com

प्रा.सुनिल सामग
समाजशास्त्र विभाग प्रमुख ,
संत रामदास महाविद्यालय घनसावंगी
जि.जालना.
E-Mail : svsamag@gmail.com

प्रस्तावना

सामाजिक शास्त्राच्या अंतर्गत अध्ययनाची एक पध्दती म्हणून सर्वेक्षण पध्दतीचा उल्लेख केला जातो. सामाजिक सर्वेक्षण पध्दतीच्या माध्यमातून केवळ समस्यांचे अध्ययनच नाही तर त्यांचे निराकरण करण्याचाही प्रमुख उद्देश असतो. सामाजिक समस्यांचा शोध आणि त्यांच्या निराकरणासाटी प्रयत्न या उद्देशामाधून ही वैज्ञानिक अभ्यास पध्दती विकसित होत गेलेली दिसून येते. सामाजिक सर्वेक्षण ही संज्ञा प्रथमतः फ्रेडरीक ले प्ले या विचारवंताने उपयोगात आणलेली दिसून येते. त्यानंतरच्या काळात जॉन हॉवर्ड, चार्लस बूथ्ज या विचारवंतानी ही पध्दती अधिक शास्त्रोक्त केलेली दिसून येते. सामाजिक सर्वेक्षणाव्दारे सामाजिक घटना, सामाजिक सुधारणा, व्यवहार आणि सामाजिक तथ्यांचा शोध घेता येऊ शकतो. सामाजिक शास्त्रामध्ये उपयोगात आणली जाणारी ही वैज्ञानिक अभ्यासपध्दती संशोधक या पध्दतीचा कसा उपयोग करुन घेतो यावर अवलंबून आहे.

अर्थ व व्याख्या

(Survey Research studies large and small populations (or universes) by selecting and studying samples chosen from the populations to discover the relative incidence, distribution and interrelations of sociological and psychological variables. - Kerlinger)

सर्वेक्षण संशोधन पध्दतीत मोठया आणि लहान ज्ञानसंख्येचे अध्ययन केले जाते त्यासाठी लोकसंख्येतून नमुना निवड करुन त्याचे अध्ययन केले जाते. समाजशास्त्रीय, मानसशास्त्रीय चलांमधील संबंध अभ्यासणे, संबंधित घटनेचा शोध घेणे, चलांचे वितरण कसे झाले आहे ते अभ्यासणे हा सर्वेक्षण संशोधनाचा उद्देश असतो. सर्वेक्षणाच्या या व्याख्येतच नमूना निवडीचा उल्लेख कर्लिगरने केलेला आहे म्हणून काही वेळेस सर्वेक्षणास नमुना सर्वेक्षण असेही म्हटले जाते. नमुना निवडीच्या विविध पध्दतींच्या शोधासमवेत सर्वेक्षण पध्दती विकसित होत गेली. तसे पाहिले तर सर्वेक्षण नवे नाही पण सर्वेक्षण संशोधन पध्दती मात्र त्यानंतर उदयाला आलेली आहे. परिस्थिती कशी आहे, आकडेवारी काय दर्शविते हे पाहण्यासाठी सर्वेक्षण केले जाते, पण सर्वेक्षण संशोधन पध्दती केवळ पाहणी करुन थांबत नाही. संशोधन म्हटले की त्याला संशोधनाचे सर्व टप्पे पार करावे लागतात ते अर्थातच सर्वेक्षण संशोधनालादेखील लागू आहे. सर्वेक्षण संशोधन पध्दतीचा विकास विसाव्या शतकात झाला. समाशास्त्रज्ञ ,राज्यशास्त्रज्ञ, संख्याशास्त्रज्ञ, आदींनी ही पध्दत विकसित केली. शास्त्रीय पध्दतीचे सर्व निकष या पध्दतीला लागू होतील याची काळजी घेतली. सर्वेक्षण संशोधन पध्दतीच्या वर दिलेल्या व्याख्येत आपल्याला लोकसंख्या आणि नमुना निवड यांची सांगड घालण्यावर अधिक भर दिसतो.

सर्वेक्षण संशोधकांना संपूर्ण लोकसंख्येच्या वैशिष्टयांचे अचूक मूल्यमापन करण्यात रुची असते. उदाहरणार्थ, भारतातील संपूर्ण लोकसंख्येपर्यंत एडस नियंत्रणाचा संदेश कसा पोहोचतो, विविध राज्यांच्या लोकांवर, विविध धर्मांच्या लोकांवर, विविध आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक स्तरांतील लोकांवर, स्त्री पुरुषांवर, त्याचा काय परिणाम होतो किंवा हे लोक हा संदेश कसा स्वीकारतात, त्यावर काय प्रतिक्रिया व्यक्त करतात अशा विविध प्रश्नांचा शोध घेण्यात संशोधकाला रुची असेल. इथे लिंग, धर्म,आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक स्तर असे सर्व चल आहेत.

अशा अभ्यासासाठी संपुर्ण लोकसंख्येचा अभ्यास कुणी करत नाही. लोकसंख्येसंबंधी निष्कर्ष मिळण्यासाठी लोकसंख्येच्या प्रातिनिधिक नमुन्याची निवड केली जाते. त्यामुळे तुलनेने कमी श्रमात, वेळात, पैशात अध्ययन करता येते. या दृष्टीने योग्य नमुना निवडणे हयाला सर्वेक्षणात महत्व आहे. सर्वेक्षण संशोधनांचा व्यवस्थापनात फार उपयोग होतो. एखाद्या विशिष्ट निर्णयाप्रत येण्यासाठी आवश्यक अशी माहिती अशा संशोधनांमधून मिळते. ही संशोधने निर्णय देत नाहीत, पण निर्णय प्रक्रियेला मदत करतात. सद्यःस्थितीत कशी सुधारणा घडवून आणता येईल यासंबंधी विचार करण्यासाठी या पध्दतीने केलेल्या संशोधनांचा पायाभूत उपयोग होतो. सर्वेक्षण संशोधनांव्दारे सद्यःस्थितीशी संबंधित माहिती उघड करणे एवढेच अपेक्षित नसते. या माहितीचे विश्लेषण, अर्थनिर्वचन, सर्व करुन त्यावरुन संबंध शोधणे, उपयोगिता ठरविणे हेही अभिप्रेत असते आणि यासाठीच संशोधकाला तज्ञता, वैज्ञानिक दृष्टी, कौशल्य असावे लागते. हे गुण नसले तर संशोधन निव्वळ माहिती संकलना पलीकडे जाणार नाही. ते एक केवळ लेखनिकाचे काम होऊन बसेल. इतर सर्व संशोधनांप्रमाणे सर्वेक्षण संशोधनाची सुरुवातसुध्दा नेमक्या समस्येतून व्हावी

Scanned by CamScanner

ISSN - 2347 - 6419

Peer Reviewed & Referred International Journal

साहित्य, समीक्षा, भाषा तथा अनुसंधान की अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका

KALYAN LITERARY AND EDUCATIONAL TRUST

GULBARGA

KNOWLEDGE IS POWER

डेक्कन हिंदी साहित्य एवं भाषा दर्पण

Deccan Journal of Hindi Literature and Language

Indexed with International ISSN Directory, Paris

VOLUME : 1 • ISSUE : 1 • DEC 2013

Founder Editor : Dr. D.T. Angadi

Editor : Dr. Sanjay Rathod

अनुक्रम

१. समकालीन हिंदी कविता में आदिवासी समाज - डॉ. संजय राठोड 1
२. हिन्दी साहित्य में स्त्री लेखन परंपरा एवं उपलब्धियाँ – डॉ. दीपा रागा 5
३. साहित्य, समय और समाज - डॉ. भारती गोरे 9
४. हिंदी प्रगतिशील नाटकों में आध्यात्मिक परिवेश- डॉ. ज्ञानेश्वर महाजन 12
५. 'पोतराज' आत्मकथा में दलित जीवन की व्यथा- डॉ. दिलीप जाधव 14
६. मंगलेश डबराल की कविता में संगीत के नये आयाम - श्री. साहेबराव पवार 18
७. इलेक्ट्रॉनिक माध्यम और हिंदी - प्रा. संतोष गिन्हे 22
८ बंजारा लोकगीतों में रस-योजना - डॉ. संजय राठोड, अविनाश जाधव 25
९. 'गोदान' में भारतीय किसान की यातना - डॉ. जालिंदर इंगळे 30
१०. हिंदी कहानी में दलित जीवन का यथार्थ - डॉ. पी. व्ही. महालिंगे 32
११. केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में प्रकृति सौंदर्य - प्रा. संतोष नागरे 35
१२. हिंदी और मराठी दलित आत्मकथा - डॉ. चांदणी पंचांगे 38
१३. साठोत्तरी हिंदी और मराठी कविता का तुलनात्मक अध्ययन - डॉ. संतोष आडे 40
१४. स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में सामाजिक परिवर्तन – डॉ. प्रेमचंद चव्हाण 43
१५ नारी अस्मिता और उपन्यासकार मैत्रेयी पुष्पा– विजयकुमार परुते 47
१६. 'शेखर एक जीवनी' उपन्यास का मनोविश्लेषणात्मक विश्लेषण- डॉ. शंकर ए. राठोड 52
१७. कंचनलता सब्बरवाल का नाट्य साहित्य– अंबुजा मळखेडकर 54
१८. संत साहित्य और वर्तमान परिवेश– डॉ. सलीम मुजावर 57
१९. साठोत्तरी हिन्दी कविताओं में दलित चेतना – डॉ. बी. एम. राठोड 61

CRYSTALLOGRAPHIC, MORPHOLOGICAL AND FTIR STUDIES OF NI DOPED CuO NANOPARTICLES SYNTHESIZED BY CO-PRECIPITATION ROUTE

PHYSICS

KEYWORDS: Williamson – Hall analysis; grain size; scanning electron microscopy; functional group.

PROF. DR. S. P. KAMBLE	*Assistant Professor, Dept. of Physics, C. T. Bora College, Shirur, Dist. Pune, Maharashtra India. Email: spkamble008@gmail.com.*
PROF. DR. V.V. AWATI	*Associate Professor and Head, Dept. of Physics, C. T. Bora College, Shirur, Dist. Pune, Maharashtra, India*
PROF. DR.V.D. MOTE	*Assistant Professor, Dept. of Physics, Dayanand College, Latur, Maharashtra, India.*
PROF. DR. Y.S. SUDAKE	*Assistant Professor, Dept. of Physics, New Arts, Science and Commerce College, Shevgaon, Dist. Ahmednagar, Maharashtra, India.*
PROF. DR. P.T. SONWANE	*Sant Ramdas College, Ghansawangi, Tal- Ambad, Dist Jalna, Maharashtra, India.*
PROF. DR. P.W. KHIRADE	*Professor, Dept. of Physics, Dr. B.A. M. University, Aurangabad, Maharashtra, India..*

Abstract:

Ni doped CuO Nanoparticles with compositional formula $Cu_{1-x}Ni_xO$ where, x = 0.0, 0.1 and 0.3 were prepared by co-precipitation method in ethanolic medium at room temperature. All the samples were calcined at 500°C for 8 hrs in furnace followed by furnace cooling up to room temperature. Williamson – Hall analysis, morphology and chemical species of grown crystals were investigated by X-ray diffraction pattern, Scanning Electron Microscopy and Fourier Transform Infra Red spectroscopy respectively. Williamson – Hall analysis show that the strain produced due to Ni ions influences the grain size of the particle. From scanning electron microscopy images, it is observed that the various shaped grains were finely distributed in pure CuO sample whereas its morphology changes with increasing Ni concentration. The functional group and chemical species were determined by the Fourier Transform Infra Red spectroscopy spectra and observed that the functional groups corresponding to the Cu-O bands in the samples.

Introduction:

In the recent years, numbers of nanoscale metal oxides have attracted a great deal of research interest in accordance with their applications of day-to-day life in science and technology. The number of transition metal oxides in periodic table like ZnO, TiO_2, Fe_3O_4, CuO, NiO etc has number of applications in different fields due to its both fundamental and technological point of view. Among all these available

Rajendra K. Pardeshi

Coordination Chemistry of Schiff Bases

Metal-ligand comlexes

LAP LAMBERT Academic Publishing

मराठ्यांचा इतिहास

शिवकाळ ते पेशवाई

इ. स. १६३० ते १८१८

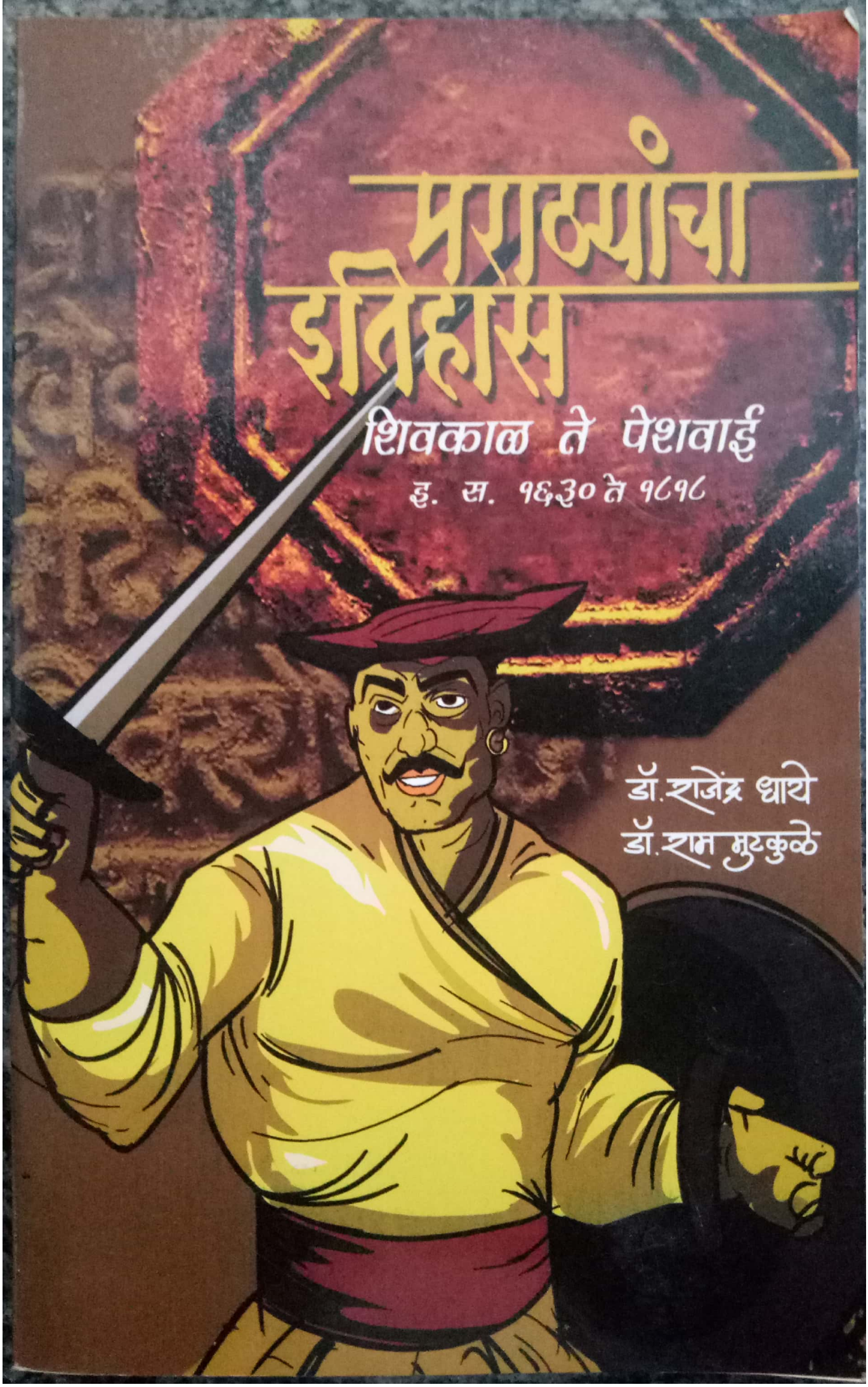

डॉ. राजेंद्र धाये
डॉ. राम मुटकुळे

Scanned by CamScanner

Mrathancha Itihas : shivkal Te Peshvai

मराठ्यांचा इतिहास : शिवकाल ते पेशवाई

प्रा. डॉ. राजेंद्र धाये , प्रा.डॉ.रामभाऊ मुटकुळे

प्रकाशक

चिन्मय प्रकाशन,

सवणेकर बिल्डिंग,जिजामाता कॉलनी,

पैठण गेट,औरंगाबाद.मो.९८२२८७५२१

chinmayprakashan@gmail.com

अक्षरजुळवणा

अभिजीत वि.सदावर्ते

वेदिका टाईपसेटर्स्,औरंगाबाद.

© लेखकाधीन

नोव्हेंबर २०१३

मुद्रक

अनिता प्रिंट हाऊस,

औरंगाबाद.

मुखपृष्ठ

आर.शिंदे औरंगाबाद.

किंमत : ३३०/-

ISBN - 978 - 93 - 81948 -88 - 0

Scanned by CamScanner

मध्ययुगीन भारताचा इतिहास

इ.स.१५२६-१७६१

संपादक: डॉ. रामभाऊ मुटकुळे

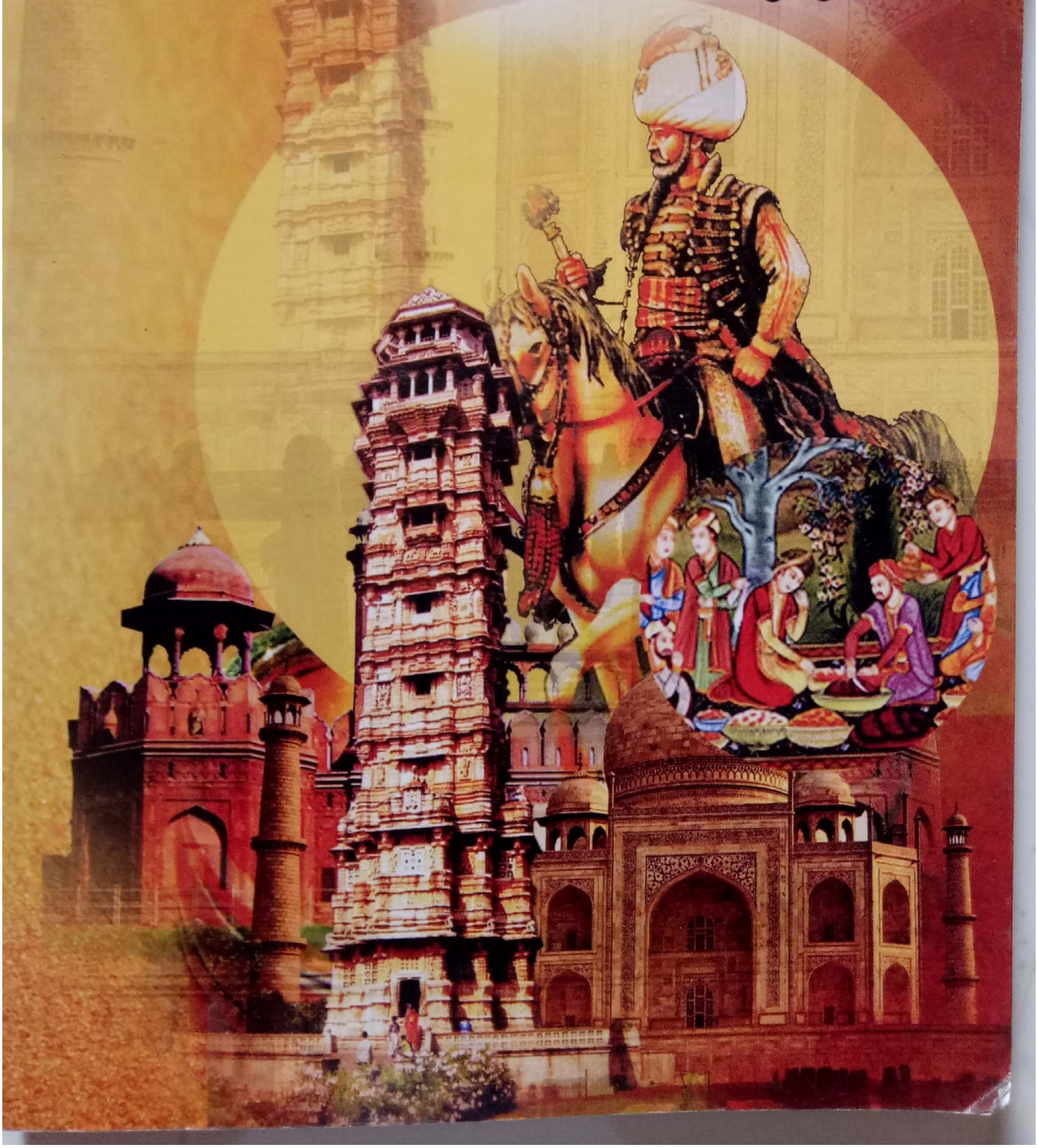

Scanned by CamScanner

मध्ययुगीन भारताचा इतिहास (इ.स. १५२६ ते १७६१)

डॉ. रामभाऊ मुटकुळे

प्रकाशक :
चिन्मय प्रकाशन
सवणेकर बिल्डींग, जिजामाता कॉलनी,
पैठण गेट, औरंगाबाद - ४३१ ००१
मो. ९८२२८७५२१९
Email -chinmayprakashan@gmail.com

अक्षरजुळणी :
संजीव पुंडलिक चौतमल
प्रतिक्षा मल्टी सर्व्हिसेस
बालाजीनगरी, पॉवरलूम, औरंगाबाद

© लेखकाधीन

१५ ऑगस्ट २०१४

मुद्रक :
ओंकार प्रिंटर्स, औरंगाबाद

मुखपृष्ठ :
अपूर्वा ग्राफिक्स, औरंगाबाद

किंमत :
२१०/- रुपये

ISBN - 978-93-84593-16-2

Scanned by CamScanner

अनुक्रमणिका

१. मध्ययुगीन भारताच्या इतिहासाची साधने ७ ते १६
भौतिक व वाङ्मयीन
- डॉ. रामभाऊ मुटकुळे

२. जहीरूद्दीन बाबर १७ ते ३४
मोगल साम्राज्याची स्थापना, चरित्र व कामगिरी
- डॉ. आर. आर पिंपळपल्ले

३. हुमायुन आणि शेरशहा सुरी ३५ ते ५७
चरित्र आणि कामगिरी, शेरशहा सुरीचे प्रशासन
- डॉ. नितीन बावळे

४. सम्राट अकबर ५८ ते ११८
चरित्र आणि कामगिरी
- डॉ. अनिल कठारे

५. जहांगीर ११९ ते १२०
चरित्र आणि कामगिरी
- डॉ. एस. जी. शिंदे

६. शहाजहान १३० ते १३७
चरित्र आणि कामगिरी
- डॉ. परिमल सुतवणे

७. औरंगजेब १३८ ते १९८
राजपुत-मराठा संबंध, धार्मिक धोरण, दक्षिण धोरण,
मोगल साम्राज्याचा ऱ्हास
- डॉ. राजेंद्र धाये

८. मोगलकालीन प्रशासन १९९ ते २२०
- डॉ. आर. एस. कोंडेकर

९. मोगलकालीन कला आणि स्थापत्य २२१ ते २३०
- प्रा. एस. एन. शेटोड

Scanned by CamScanner

ब्रिटिशकालीन भारताचा इतिहास

(१७५७ ते १९४७)

डॉ. अनिल कठारे

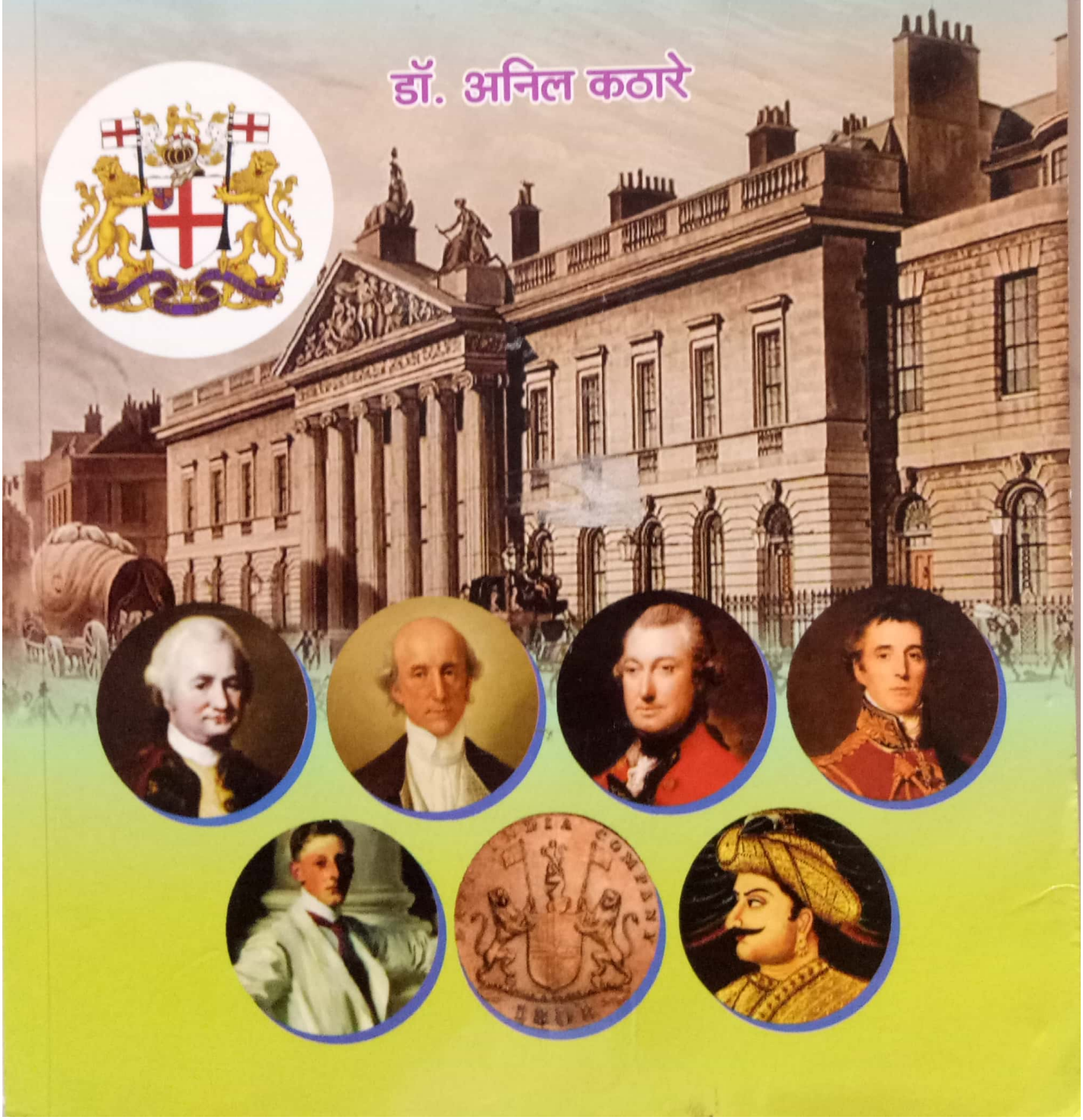

Scanned by CamScanner

विद्यापीठ अनुदान आयोगाच्या निर्देशानुसार महाराष्ट्रातील सर्व विद्यापीठांच्या पदवी, पदव्युत्तर तसेच सर्व स्पर्धा परीक्षांच्या M.P.S.C., U.P.S.C., NET/SET इतिहास विषयाच्या विद्यार्थ्यांसाठी उपयुक्त

ब्रिटिशकालीन भारताचा इतिहास

(इ.स. १७५७ ते १९४७)

-: संपादक :-

डॉ. अनिल मुरलीधर कठारे

अध्यक्ष

इतिहास अभ्यास मंडळ,

स्वामी रामानंद तीर्थ, मराठवाडा विद्यापीठ, नांदेड.

एज्युकेशनल पब्लिशर्स. औरंगाबाद.

Scanned by CamScanner

● ब्रिटिशकालीन भारताचा इतिहास

© - डॉ. अनिल कठारे

इतिहास विभाग प्रमुख, श्री. शिवाजी कॉलेज कंधार जि. नांदेड.

● ISBN No. : 978-93-80876-60-3

● डी.डी.सी. वर्गांक - ९५४.०३

● प्रकाशक : (ISO 9001 : 2008. Certified co.)
एज्युकेशनल पब्लिशर्स ॲण्ड डिस्ट्रिब्युटर्स
गोकुळवाडी, औरंगपुरा, औरंगाबाद.
दूरध्वनी क्र.: ०२४०-२३२९२०४
भ्रमणध्वनी : ०९९७००६७९७१
ई-मेल : educationalpub@gmail.com
web: www.pubeducational.com

● वितरक :
एज्युकेशनल बुक सप्लायर्स
औरंगपुरा, औरंगाबाद.
भ्रमणध्वनी : ९४२१३०००३६

● मुद्रक : राजमुद्रा ऑफसेट, औरंगाबाद.

● अक्षरजुळणी :
विनायक कॉम्प्युटर, औरंगाबाद.

● प्रथमावृत्ती :- २०१४

● किंमत : ५५०/-

Scanned by CamScanner

१६) वसाहतवाद, शेती, दुष्काळ व व्यापार

डॉ. अनिल कठारे,
श्री. शिवाजी कॉलेज, कंधार,
जि. नांदेड.

१७) भारतीय द्रव्यापहरणाचा सिद्धांत व अनुद्योगिकरण

डॉ. श्रीधर खामकर,
श्री. शिवाजी कॉलेज, कंधार जि. नांदेड.

१८) उद्योग व व्यापार

डॉ. सदाशिव दंदे,
महात्मा बसवेश्वर महाविद्यालय, लातूर.

१९) वसाहतकालीन भारताची अर्थव्यवस्था

डॉ. सुखदेव बलखंडे,
कै. बाबुराव पाटील कला व विज्ञान
महाविद्यालय, हिंगोली.

२०) शिक्षण

डॉ. अशोक साबणे,
बापुसाहेब पाटील एकंबेकर महाविद्यालय,
हानेगाव, ता. देगलूर, जि. नांदेड.

२१) भारतीय वृत्तपत्रांचा उदय व विकास

डॉ. राजेंद्र धाये,
संत रामदास महाविद्यालय,
घनसावंगी, जि. जालना.

२२) कंपनीच्या विरोधातील प्रारंभिक सशस्त्र लढे

डॉ. बाळासाहेब क्षीरसागर,
शिवाजी कॉलेज, हिंगोली.

२३) १८५७ चा उठाव

डॉ. अनिल कठारे,
श्री. शिवाजी कॉलेज कंधार,
जि. नांदेड.

Scanned by CamScanner

ISSN-0976-5425

मराठवाडा इतिहास परिषद, औरंगाबाद

History Research Journal

Issue - XIX

इतिहास संशोधन पत्रिका

अंक एकोणिसावा

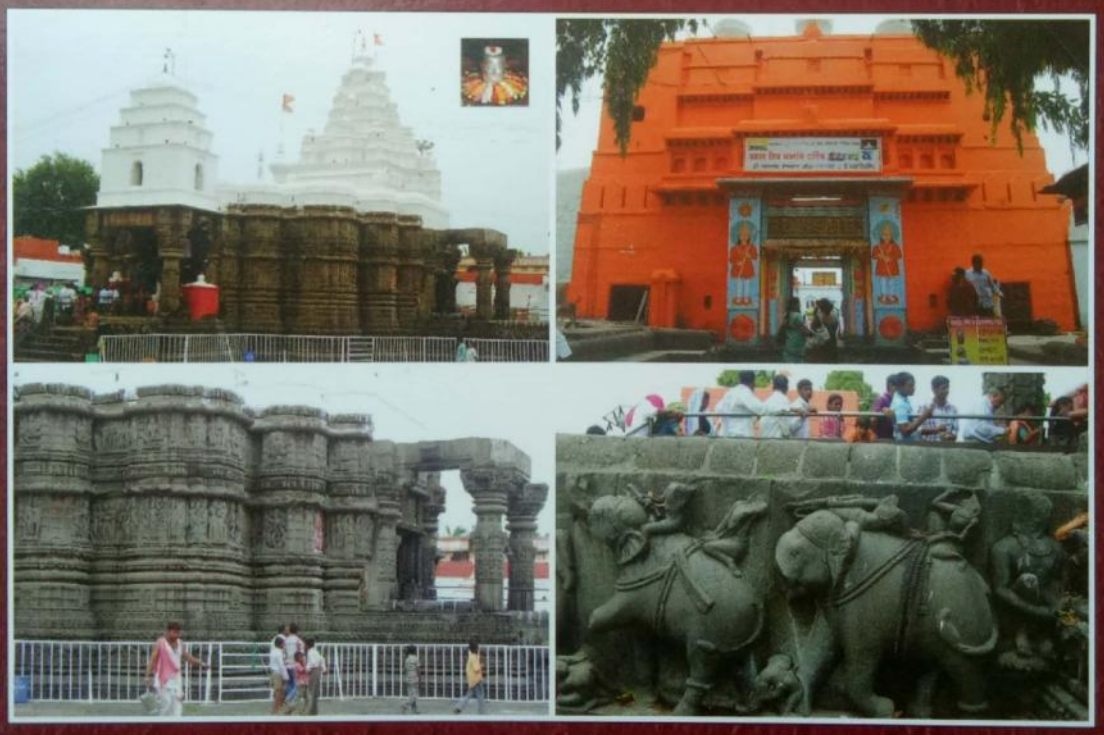

कार्यकारी संपादक

डॉ. सोमनाथ रोडे

२

मोगल सम्राट औरंगजेबकालीन करव्यवस्था

प्रा.राजाराम जगन्नाथ माने
मत्स्योदरी कला महाविद्यालय, तीर्थपुरी,
ता.घनसांगवी,जि.जालना.

डॉ.राजेंद्र धाये
संत रामदास महाविद्यालय,
ता.घनसांगवी,जि.जालना.

प्रस्तावना :

मध्ययुगीन भारताच्या इतिहासात मोगल काळ हा विशेष महत्त्वाचा मानला जातो. या काळात राज्य चालवण्यासाठी किंवा राज्य विस्तार करण्यासाठी सैन्य हा महत्त्वाचा घटक मानला जात होता. सैन्याच्या कुशल संचालनासाठी तसेच राज्यात कल्याणकारी योजना राबवण्यासाठी राज्याचे उत्पन्न चांगले असावे लागते. हा खर्च भागवण्यासाठी प्रत्येक राजा जनतेवर वेगवेगळ्या प्रकारचे कर लावत असतो. मोगल सम्राटाच्या उत्पन्नाचे मुख्य साधन यामध्ये लुटलेला संपत्तीचा पाचवा भाग, व्यापारी कर, बेवारस संपत्ती, मीठ कर. याशिवाय उत्पन्नाचे मुख्य साधन जमीन महसूल हे होते बाबर काळात त्याने भूमिकराची जबाबदारी जहागीरदारावर टाकली हीच पध्दत हुमायूनने सुरू ठेवली. अकबराने राजा तोरडमल मदतीने महसूल उत्पन्न वाढवले. त्याने दहसाला महसूल पध्दत राबविली. सम्राट जहागीरने जब्त प्रणालीचा पुरस्कार केला.[१]

सम्राट औरंगजेबचा काळ हा भारताच्या इतिहासात महत्त्वाचा मानला जातो. त्याचे साम्राज्य इतर मोगल सम्राटापेक्षा विस्ताराने मोठे होते. भारतात 'मर्कजी हुकूमत' म्हणजे केंद्रीय सत्ता निर्माण करणे ही औरंगजेबाची महत्त्वाकांक्षा होती. साम्राज्यप्राप्तीसाठी औरंगजेबाला फार मोठा संघर्ष करावा लागला. सततच्या युध्दामुळे अनेक प्रदेश उजाड बनले होते. व्यापारावर विपरित परिणाम झाला होता.[२] राज्याची आर्थिक स्थिती उत्तम राहावी. तसेच सम्राटपदाचे सार्वभौमत्व अबाधित राहावे, यासाठी त्याने कठोर आर्थिक धोरणे राबवली. औरंगजेब काळात जहागीरदार, मनसबदार यांची संख्या विलक्षण गतीने वाढली. या काळात १४४९ इतकी मनसबदार संख्या होती. यांच्या अंतर्गत २ लाख सामान्य सैनिक कार्यरत होते हिंदुस्थान अखंड एकसंध राहावा म्हणून त्याने अनेक मोहिमा हाती घेतल्या. यावर भरमसाट पैसा खर्च झाला.[३] हा खर्च भागवण्यासाठी औरंगजेबाने करप्रणालीत आमूलाग्र बदल केले.

इतिहासलेखनशास्त्र आणि ऐतिहासिक संशोधनातील नवीन प्रवाह

संपादक

डॉ. बी. यू. जाधव

डॉ. पी. ए. सुतवणे

Scanned by CamScanner

इतिहासलेखनशास्त्र आणि ऐतिहासिक संशोधनातील नवीन प्रवाह
Itihaslekhanshastra Aani Aitihasik Sanshodhanatil Navin Pravah

ISBN: 978-81-925458-5-1

संपादक
डॉ. बी. यु. जाधव
डॉ. पी. ए. सुतवणे
श्री शिवाजी महाविद्यालय, परभणी

© सर्व हक्क संपादकांच्या अधीन

प्रकाशक
श्री शिवाजी कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय,
वसमत रोड, परभणी

प्रकाशन
२२ जानेवारी २०१५

अक्षरजुळवणी
माई एज्युकेशनल्स, परभणी.

मुद्रक
आदिती ग्राफिक्स अॅन्ड मल्टी सर्व्हिसेस, परभणी

किंमत
४००/-

नोट : या पुस्तकातील सर्व शोधनिबंध लेखकांची मौखिक परवानगी ग्राह्य धरून एकत्रित करण्यात आलेले असून, त्यांनी शोधनिबंध जसे पाठविले तसेच मुद्रित शोधन न करता छापावे लागल्यामुळे त्यात मुद्रणदोष असू शकतात. शोधनिबंधातील मते ही प्रत्येकाची वैयक्तिक मते असून त्या मतांशी संपादक सहसंपादक, किंवा प्रकाशक सहमत असतीलच असे नाही.

या पुस्तकाचे सर्व अधिकार अबाधित असून या पुस्तकातील कोणताही मजकुर, तत्सम संकल्पना, यांची कोणत्याही प्रकारे नक्कल करणे किंवा यांत्रिक साधनांनी फोटो कॉपी, रेकॉर्डींग करणे कायद्याने गुन्हा असून असे आढळून आल्यास तात्काळ कारवाई करण्यात येईल.

Scanned by CamScanner

सबाल्टर्न स्टडीज आणि भारतीय इतिहास लेखनातील मंथन

डॉ. राजेंद्र धाये
इतिहास विभाग प्रमुख
संत रामदास महाविद्यालय, घनसावंगी

डॉ. प्रभाकर मिरकड
इतिहास विभाग प्रमुख
मोरेश्वर महाविद्यालय भोकरदन जि.जालना.

भूतकाळाकडे पाहण्याची दृष्टि बदलली की, इतिहासाविषयीचा नवा विचारप्रवाह निर्माण होतो. भूतकाळाकडे पाहण्याची ही दृष्टी वर्तमानातील प्रवाहावर अवलंबून असते. प्राचीन काळात समाज जीवनाचे मुख्य घटक धर्म आणि राजसत्ता, परिणामतः राजा, राजघराणे साम्राज्य विस्तार आणि त्याअनुषंगाने ग्रीको रोमन परंपरेत राजा आणि धर्मातील देवदेवतांच्या कथांनी इतिहास रंगवला गेला. प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन परंपरेतही असेच धर्माचे प्राबल्य अनुभवले. साऱ्या मानवी समाजाचा केंद्रबिंदू धर्म व देव बनला. राजा हा देवांचा प्रतिनिधी बनला. म्हणून इतिहासाकडे पाहण्याची दृष्टी राजसत्ता केंद्रीत राहीली. सामान्य प्रजाजन, त्यांची सुख दुःखे, त्याची जीवनपध्दती याला वेगळे स्थान नव्हतेच. कारण 'ठेविले अनंती तैसेची राहावे' ही श्रध्दा. म्हणून इतिहासाचे लेखनही राजघराणी त्यांचे कर्तृत्व, त्यांचे चरित्र यावरच केंद्रीत झाल्यामुळे गतकाळाचा शोधही त्याच अनुषंगाने घेतला गेला. हुमायुननामा असूदे किंवा अकबरनामा किंवा परमानंदाचा शिवभारतही.[1]

वर्तमान बदलला की इतिहास लेखनातील विचारप्रवाह बदलतात. १४५३ मध्ये कॉन्टॅटिनोपल पडल्यामुळे -आधुनिक युगात मानवी कर्तृत्वावरचा विश्वास वाढीस लागला. समतेचा विचार मांडला जाऊ लागला. कार्ल मार्क्सने गतकाळाचे आर्थिक पैलू धूंडाळले, पुराव्यांचे पुनर्विश्लेषण केले- वर्गकलह रेखाटला. आणि मानवी जीवनाच्या आर्थिक घडामोडीचा इतिहास लेखनातील नवा विचारप्रवाह प्रभावी ठरला. शोषितांचा, पिडीतांचा, कामगारांचा इतिहास रेखाटला गेला.

सबाल्टर्न इतिहास लेखनाचे प्रवर्तक रणजीत गुहा व त्यांच्या सहकाऱ्यांनी 'सबालटर्न' ही संकल्पना प्रसिध्द इटालियन कृतिशील मार्क्सवादी विचारवंत अंतानिओ ग्रामची (१८९१-१९३७) कडून घेतली.[2] सबाल्टर्न ही संकल्पना धुरीणत्व नसलेल्या (non-hegemonic) गटांना किंवा वर्गांना लागू केली. वर्गभान नसलेले शोषित-अंकित (subordinate) समूह असाही अर्थ यातून ध्वनीत होतो.[3]

१९८० च्या दशकात सुरुवातीला रणजीत गुहा यांनी सर्वप्रथम भारतीय समाजस्थितीच्या संदर्भात सबाल्टर्न संकल्पनेचा अवलंब केला. त्यांच्या मते भारतात काही ठिकाणी वर्चस्वी (dominant) असलेला गट इतर ठिकाणी अंकीत वर्ग म्हणून वर्तन करतो. या गटात श्रेष्ठी, दरिद्री जमीनदार, श्रीमंत व मध्यम शेतकरी इत्यांदीचा समावेश होतो. स्थानिक अभिजनांचे हे संदिग्ध विरोधाभासी स्वरुप लक्षात घेऊन गुहा सबाल्टर्न ची व्याख्या या प्रमाणे करतात.

I he social group and element included in this category represents the
demographic difference between the total Indian population and all
these whom we have described as the elite[4].

. मात्र ग्रामचीची सबाल्टर्न संकल्पना स्थूल व लवचिक असली तरी त्यात संदिग्धता नाही. त्यांच्या मते- सबाल्टर्न संकल्पना म्हणजे - 'शोषित - अंकीत जन' होय. गुहांच्या मते वर्गव्यवस्था, जातिव्यवस्था व पितृसत्तेने भारतीय समाजातील शोषणाची व वर्चस्वाची विशिष्टता घडवली आहे. अशा परिस्थितीत राष्ट्रीय पातळीवरच्या अभिजनांना मदत करणारे स्थानिक अभिजन हे अभिजन व मदत न करणारे ते सबाल्टर्न अशी व्याख्या संदिग्धता निर्माण करते.[5]

भारतीय परिप्रेक्ष्यातून पाहू गेल्यास भारतीय राष्ट्रवाद म्हणजे- ब्रिटीश उदारमतवादाचे फलीत वा ब्रिटीश साम्राज्याची देणगी असे मानणारी इतिहास मीमांसा वसाहतवादी इतिहसकारांनी केली. नववसाहतवादी इतिहासकारांनी भारतीय राष्ट्रीय चळवळ व राष्ट्रवाद यांना या सहयोगी वर्गाची उपज मानले. ब्रिटीश शिक्षण पध्दतीतून उदयास आलेल्या इंग्रजी शिक्षित भारतीय अभिजन वर्गांनी ब्रिटीश राजवटीसाठी मध्यस्थ, दलाल व हस्तक म्हणून कार्य केले. प्रांतीय स्तरावर उदयास आलेल्या या अभिजन वर्गामध्ये ब्रिटीश प्रशासनातील नोकऱ्या, विधिमंडळातील पदे मिळविण्यासाठी स्पर्धा सुरु झाली. राजकीय सत्ता व आर्थिक लाभासाठी धडपडणाऱ्या अभिजनांनी 'दाता-आश्रित'

ISBN : 978-81-925458-5-1

Scanned by CamScanner

संबंधाआधारे गट - तट उभारले. भारतातील राष्ट्रवाद म्हणजे प्रामुख्याने अभिजनांनी त्यांच्या हितसंबंधासाठी केलेली उठाठेव होती. अशी संगती नववसाहतवादी इतिहासकारांनी लावली [६]

पाश्चत्य देशात सुरु झालेल्या सबाल्टर्न इतिहास लेखनाप्रमाणेच महाराष्ट्रातही अशाच सबाल्टर्न इतिहास रेखाटनाचा प्रयत्न झालेला आहे. ब्रिटीश राजवटीच्या काळात अनुकूल प्रतिक्रीया व्यक्त करणारे तीन प्रवाह निर्माण झाले होते. १) धार्मिक सुधारकांचा - ब्राम्हो समाज (रानडे, भांडारकर, मोडक, चंदावरकर इत्यादी) २) बुध्दीवादी - अज्ञेय, जडवादी सुधारक आमरकर वगैरे, ३) बहुजनांचे नेतृत्व करणारा आणि अभिजनांच्या विरुध्द विद्रोहाचा विचार करणारा एक प्रबळ प्रवाह - या प्रवाहाने ब्राम्हणेत्तर चळवळीचे रुप धारण केले होते. याचे नेतृत्व फुल्यांनी केले. बहुजनांचा विचार करणारे फुले जसे सद्यस्थितीचा परामर्ष घेऊ लागले तसेच भूतकाळातील

इतिहासाचाही मूलगामी विचार करु लागले. या मूलगामी विचारातूनच महाराष्ट्राच्या इतिहासाचे डिइलीटायझेशन सुरु झाले. बहुजनांच्या गुलामगीरीची पहिली ओळख झालेला, बहुजन समाजातला पहिला माणूस म्हणून ज्योतिबा फुल्यांचा उल्लेख करावा लागेल. फुल्यांनी इतिहासातील बहुजनांच्या सहयोगाचा त्यांच्या कार्यकर्तृत्वाचा आलेख रेखाटायला सुरुवात केली. इंग्रजी राज्यातही भूतकाळातील समाजरचना टिकवून राहत आहे हे पाहूण त्यांनी मूलगामी विचार करुन भूतकाळातील इतिहासाचा नव्याने अर्थ लावला. बहुजनांच्या गुलामगीरीची जाणीव झाल्याने या गुलामगीरीचा शोध घेणारे इतिहास चिंतन महात्मा ज्योतिबांनी केले. बहुजनांच्या गुलामगीरीच्या वाटचालीचा शोध महात्मा ज्योतिबा फुल्यांचा परिवर्तनवादी विचार डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या चिंतनातून आणि लेखणीतून प्रकट झाला. विशेष करुन अस्पृश्य आणि शूद्रांच्या संदर्भाने सामान्याच्या बहुजनाच्या आणि दलित व पददलितांच्या इतिहासाचा मागोवा घेणारे लिखाण करुन डॉ. बाबासाहेबांनी सामान्य पददलितांच्या अस्मिता जागवल्या. वर्णव्यस्थेची, जातीसंस्थेची अत्यंत तर्कशुध्द अशी चिकित्सा केली. इतिहासाचे अभिजनवादी रुप बदलून नव्याने सारी मांडणी करण्याचा विचार प्रबळ बनत गेला. त्यातूनच इतिहास लेखणातील आधुनिक विचारप्रवाह निर्माण होत गेला. जो सामान्याचा इतिहास झाला म्हणजेच खऱ्या अर्थाने सबाल्टर्न इतिहास मांडला गेला.

सामान्य माणसाने कदाचित इतिहास निर्माण केला नाही म्हणून भूतकालीन वाटचालीत त्याचे काहीच योगदान नाही काय? असा प्रश्न होऊ लागला. आत्तापर्यंतचा इतिहास फक्त प्रभावशाली घटनांची नोंद घेत होता. ज्यांनी इतिहास निर्माण केला एका अर्थाने हा इतिहास आपण वरच्या थरातून अभ्यासतो. या इतिहासातून आपण केवळ प्रभावशाली घटनांची / घटकांची वाटचाल रेखाटतो. सेनापतीचीच नोंद होते त्यांच्या कार्यांचा गाजावाजा होतो यश सुध्दा त्यांच्याच नावे जमा होते. शूर शिपाई मात्र अनुल्लेखाने मारला जातो. विजयाच्या यशात सेनापती नेतृत्व त्याचे डावपेच महत्त्वाचे असतात. तेवढेच किंबहुना त्यापेक्षा जास्त सामान्य सैनिकांनी (subaltern गटाने) गाजवलेला पराक्रम महत्वाचा असतो. आजपर्यंतच्या इतिहासात नेमके याच गोष्टींचे भान इतिहासकारांनी न ठेवल्यामुळे म्हणजेच सामान्यांना दुर्लक्षित ठेवल्यामुळे ह्या सामान्यांचा / वंचितांचा (subaltiern) इतिहास गौण मानला गेला ही भावना प्रकर्षाने जाणवली. पुढील काळात इतिहासाचे डीइलीटायझेशन ची मागणी सुरु झाली आणि इतिहासातील नोंद वरच्या थरातून न घेता सामान्य - अतिसामान्य स्तरावर काम करणाऱ्या पराक्रम गाजवणाऱ्या तळागाळातल्या घटकातून घेतली जावी. असा विचार पुढे येऊ लागला आहे.

History from below असा तो विचार आहे. हा विचार ग्रामची, कनान, चेझनॉक्स, हॉब्सबॉन,चार्ज

रुड इत्यादींनी मांडला.

अभिजनवादी इतिहास लेखनाला नकार देत शोषित - अंकीतांच्या जाणीवेचा अभ्यास सबाल्टर्न इतिहास समुहाने सुरु केला. सबाल्टर्न इतिहासकारांनी अभिजन इतिहास लेखनाच्या ओझ्याखाली दडलेला शोषित - अंकीत जनांचे अनुभव त्यांच्या विवक्षित परंपरा, अस्मिता व जीवनस्तर यामधून उभा राहणाऱ्या त्यांच्या ऐतिहासिक व्यवहाराचा मागोवा घेतला. अर्थात. शोषित - अंकितांच्या जाणीवेचा अविष्कार म्हणून दक्षिण आशियामध्ये कार्यरत असणारे वर्चस्व व प्रभूत्व आणि त्या विरोधातील शोषित - अंकीतांचे उठाव, प्रतिकार व चळवळ यांना केंद्रवर्ती, स्थान देण्यात आले.[७]

रामचंद्र गुहानी - शोषित अंकीत हा आत्मनिष्ठ कर्ता असतो ही भूमिका प्रस्तावित करुन शेतकऱ्यांना त्यांनी बंडाचे कर्ते म्हणून सादर केले. शेतकऱ्यांवर वर्चस्व गाजविणाऱ्या सत्तेच्या प्रतिकारांना उद्वस्त करणे, किंवा त्यांना बळकावणे, ही शेतकरी बंडातील नकाराची रीत गुहा यांनी उलगडून दाखवली. स्थानिक व वसाहतवादी वर्चस्वशाली सत्ता प्रतिकाराचे भंजन शेतकरी करतात. मौखिक व लिखित भाषा अंगविक्षेप, वस्त्र, दळवणवळणाची साधन, गृहसंपत्ती, अशा सर्व बाबीमध्ये उलथापलथ घडवून आणतात. उच्चभ्रूसाठी वापरली जाणारी श्रेष्ठतादर्शक वा आदरवाचक संबोधने यांना फाटा देऊन, शिव्या-शापाच्या द्वारे शेतकरी आपला नकार अभिव्यक्त करतात. लेखनकला हे लबाडी व शोषण करण्याचे शत्रुचे साधन : म्हणून बंडामध्ये, खंडपत्रे,

ISBN : 978-81-925458-5-1

Scanned by CamScanner

करारपत्रे अशी शेतकऱ्यांना बंधनात अडकवणाऱ्या कागदपत्राची होळी करण्यात येते. चांभाराने राजपुताच्या भाषेत बोलणे, बरिया जातीच्या व्यक्तिने पाटीदार (शेतकरी) जातीची पगडी धारण करणे बलाही या निम्न जातीय व्यक्तिने घोड्यावर स्वार होऊन बुंदेलखंडातील गावात फिरणे, जमीनदाराला पाहील्यावर शेतकऱ्याने बाजेवरुन उठून उभे न राहता बसून राहणे, अशा उलट फेऱ्याच्या अनेक वर्तनाचा निर्देश गुहा करतात. शेतकऱ्याच्या प्रतिष्ठेची प्रस्थापना करण्याचा ध्यास केंद्रवर्ती ठेवून उलटफेराची नकारार्थीचा शेतकरी बंडातून कार्यरत असल्याचे गुहाचे विश्लेषन आहे.

संदर्भ :-

१) डॉ. देव प्रभाकर : इतिहास एक शास्त्र पृ.३४६ कल्पना प्रकाशन नांदेड जाने.२००२

२) उमेश बगाडे : इतिहास लेखन मीमांसा-निवडक समाज प्रबोधन पत्रिका-खंड १ (स.प्र.प.& सेंटर फॉर स्टडी इन कल्चर अँड सोसायटी - बंगलोर) पृ.७८ प्रकाशक- प्रकाश विश्वासराव - लोकवाउमय गृह मुंबई - मार्च-२०१०

३) अंतोनिओ ग्रामची : सिलेक्शन फ्रॉम दी प्रिझन नोटबुक्स (xiii-१९६) क्विंटीन होअर व जी. एन. स्मिथ (संपादक)ओरिएंट लॉगमन - दिल्ली. १९९६

४) गुहा रणजीत ऑन अस्पेक्टस् ऑफ दी हिस्टोरियाग्राफी ऑफ कलोनिअल इंडिया (संपादक) सबाल्टर्न स्टडीज रायटींग्ज इन साऊथ एशियन हिस्ट्री एंड सोसायटी ओ.यु.पी. दिल्ली -१९८२- पृ-८

५) उमेश बगाडे : इतिहास लेखन मीमांसा पृ ८०

६) लाल विनय : 'सबाल्टर्न इन दी अकॅडमी : दी हेगेमनी इन हिस्टरी' - हिस्टरी ऑफ हिस्टरी : पॉलिटिक्स अँड स्कॉलरशिप इन मॉडर्न इंडिया, ओ.यु. पी. दिल्ली. पृ १९४-९८

७) ओ हॅनलन रोझालिंड : रिकव्हरिंग दि सब्जेक्ट सबाल्टर्न स्टडीज अँड हिस्टरीज ऑफ रेजिस्टंस इन क्लोनिअल इंडिया - मॉडर्न एशियन स्टडीज (१९८८) पृ. १९५.

उपरोक्त आशय लक्षात घेता भारतातील सबाल्टर्न स्टडीच्या अभ्यासकांनी/ विश्लेषकांनी शोषित - अंकीताच्या जाणीवेतील स्वायत्तपणा अधोरेखीत केला. प्रयोगशिल रितीने नवनव्या अभ्यासपध्दतीचा अवलंब करुन शोषित-अंकीताच्या प्रतिकाराचे विवेचन केले. सबाल्टर्न इतिहास लेखन प्रकल्पाच्या योगदानाची योग्य चिकित्सा करुन शोषित - अंकीता संबंधीच्या इतिहास लेखनाचा प्रवाह असाच विस्तारत गेला पाहीजे.

ISBN : 978-81-925458-5-1

Scanned by CamScanner

७२. जागतिकीकरणाचे महत्व आणि आव्हान/प्रा. झोडगे रामेश्वर सिद्धेश्वर/१६३
७३. पोवाडा : संज्ञा संकल्पना आणि इतिहास परस्पर संबंध/प्रा. डॉ. शारदा कदम/१६६
७४. पुराणवस्तुशास्त्र:एक अभ्यास/प्रा. तांबोळी जावेद चाँदसाहेब/१६८
७५. मानवी हक्क स्वातंत्र्याचे प्रतिक/कदम एन. जी./१७०
७६. स्त्रीवादी इतिहासलेख आणि बदलते प्रवाह/डॉ. वंदना यादवराव कांबळे/१७२
७७. ऐतिहासिक संशोधनातील सहाय्यकारी शास्त्राचे महत्व व उपयोजन/प्रा. केशव अंबादास लहाने/१७५
७८. भारतीय स्वातंत्र्य लढ्यात आदिवासी महिलांचे योगदान/प्रा. डॉ. जिरेवाड लक्ष्मीकांत मा./१७८
७९. महाराष्ट्रातील आघाडी सरकारचे ऐतिहासिक पुर्नविलोकन/प्रा.पी.एस.लोखंडे/१८०
८०. करवीर संस्थानातील शैक्षणिक परिस्थिती आणि राजर्षी शाहू माहारज/मलसटवाड संतोष बबनराव/१८२
८१. सबाल्टर्न इतिहास लेखन प्रवाह:एक अभ्यास/प्रा. अनंत दादाराव मरकाळे, प्रा. राजाभाऊ बंकटराव भगत/१८४
८२. निजामकालीन मराठवाड्याच्या संघर्षाचे दर्शन घडविणारी कादंबरी:गावपंढरी/प्रा. मारोती रामराव कोल्हे/१८६
८३. मानवी हक्काचे संरक्षण आणि संवर्धन/प्रा. मोरे मेघा वामनराव/१८८
८४. भारतीय समाज व स्त्री जन्म नकार: एक विश्लेषणात्मक मांडणी/प्रा. कांबळे एम.एस., डॉ. के. सी. केंद्रे/१९१
८५. पर्यटनाच्या दृष्टीने अहमदनगर शहराचे महत्व/प्रा. सय्यद मुजीब मुसा/१९४
८६. पर्यटन उद्योगात ऐतिहासिक स्थळांची भूमिका/नानवटे सिमा बाबाराव/१९७
८७. इतिहास तथा साहित्य:अंत:संबंध/प्रा. बंग नरसिंगराव ओमप्रकाश/१९९
८८. भारतीय संविधान आणि जागतिकीकरण/प्रा.डॉ.बी. एम. नरवाडे/२०२
८९. स्त्रीवादी विचारांचा इतिहास, वैशिष्ट्ये, प्रकार/सौ. देशमुख स्वाती सज्जनराव/२०५
९०. भारतीय वृत्तपत्रांचा इतिहास व प्रगती/प्रा. सुदर्शन उद्धवराव स्वामी/२०८
९१. समाज सुधारणा चळवळीचा इतिहास/प्रा. सुर्यवंशी विश्वनाथ माधवराव/२१०
९२. Globalization in Indian Economy/Dr. Suryawanshi V.M./212
९३. कोटीतीर्थचे शिल्पवैभव/प्रा. सुभाष रामराव रगडे/२१५
९४. इतिहास संशोधन पद्धती/प्रा. सिसोदिया प्रदिप बन्सीधरराव/२१८
९५. शिवकालीन लष्करी व्यवस्था/प्रा. शोभा सुभाष मिसाळ/२२१
९६. भारतीय इतिहासातील पर्यावरण संवर्धनाच्या परंपरा व विचार/प्रा. जाधव शिवराम गोविंदराव/२२४
९७. मुलभुत संकल्पना/जाधव सत्यभामा, डॉ. पाटील स्वाती/२२७
९८ स्त्री चळवळीचा इतिहास/शेटे स्वप्ना अविनाशराव/२२९
९९ विसाव्या शतकातील नव मार्क्सवादी प्रवाह/प्रा. डॉ. साबणे ए. जी./२३१
१००. समाजपरिवर्तनामध्ये स्त्रियांची उल्लेखनिय भूमिका-मध्ययुगीन व आधुनिक/रेखा राऊत/२२३
१०१ सबाल्टर्न स्टडीज आणि भारतीय इतिहासा लेखनातील मंथन/डॉ. राजेंद्र धाये, डॉ. प्रभाकर मिरकड/२३५
१०२. स्त्रीवादी विचार प्रवाह व सामाजिक परिवर्तन/प्रा. रेवणनाथ भिका काळे/२३८
१०३. स्त्रीवाद आणि स्त्रीयांचा राजकीय सहभाग/प्रा. रत्नपारखे शिवशंकर अशोकराव/२४१
१०४. स्त्रीवाद आणि भारतातील स्त्री चळवळीचा इतिहास : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन:प्रा नागर्थवार दिगांबर राजन्ना/२४४

Scanned by CamScanner

RELEVANCE OF GANDHIAN THOUGHTS AT PRESENT TIME

(Vol. 1)

Guide
Dr. Gopalrao B. Sondge
Principal
Shivaji College, Hingoli (MS)

Editor
Dr. Sudhir G. Wagh
Director,
Gandhian Studies Center &
HOD Hindi, Shivaji College, Hingoli (MS)

Co- editor
Kishor N. Ingole
Asst. Prof. , Dept. of English
Shivaji College, Hingoli (MS)

NEW MAN
PUBLICATION
www.newmanpublication.com

Scanned by CamScanner

Relevance of Gandhian Thoughts at Present Time *(Vol. 1)*
© Principal, Shivaji College, Hingoli (MS)

ISBN: 978-93-83871-62-9
First Published: March, 2015.

Price: Rs. 295/-

Printed & Published by
Dr Kalyan Gangarde
For New Man Publication
108, Brahma Apartments,
Nr. Dattadham, Parbhani - 431401
Email: nmpublication@gmail.com
Web: www.newmanpublication.com

Mob. 9420079975

Type Setting & Cover Designing
Dr Kalyan Gangarde & Seema Gangarde

Disclaimer: Articles in this book do not reflect the views or policies of the Editors or the Publisher. Respective authors are responsible for the originality of their views / opinions expressed in their articles / papers.

Scanned by CamScanner

४०

महात्मा गांधीजींचे अस्पृश्यतेविषयी विचार

- डॉ.राजेंद्र धाये
सहयोगी प्राध्यापक आणि
इतिहास विभागप्रमुख,
संत रामदास महाविद्यालय,
घनसांवगी, जि. जालना.

भारतात फार पूर्वीपासून अस्पृश्यता अस्तित्वात आहे. अस्पृश्यतेच्या उगमा संदर्भात विद्वानांमध्ये एकवाक्यता नसली तरी वेदकालापासून अस्पृश्यतेची बिजांकुर सापडतात. अस्पृश्यतेचा उगम चातुर्वर्ण्यजाती संस्थेशी निगडीत असून तिचा उगम सूडाच्या भावनेतून झालेला असावा. एक मात्र, निश्चित की, 'अस्पृश्यता' ही भारतीय हिंदू समाजाला पिढ्यान्पिढ्या लागलेली सामाजिक कीड असून देशाच्या प्रगतीमधील हा फार मोठा अडसर आहे. अस्पृश्यतेमूळे माणुसकीची पायमल्ली होऊन सामाजिक विषमता वाढली. अस्पृश्यतेच्या गुलामगीरीमुळे येथील एक वर्ग सामाजिकदृष्ट्या हिन बनला आणि संस्कृती व प्रगतीच्या प्रवाहापासून तो बाहेर फेकला गेला.

विसाव्या शतकाने जगाला चार महान क्रांतीकारक दिले. लेनिन, माओ, गांधी आणि आंबेडकर. चारही नावे एका दमात घेणे जरा आपल्याला अवघड जाईल; पण आपल्याला आपला दमसांस वाढवावा लागेल. ही चारही नावे एकत्र घेणे आपल्याला कदाचित खटकेल; पण आपल्या मनाचे बंद दरवाजे आपल्याला उघडावे लागतील. लेनिन आणि माओने वर्गीय शोषणाच्या विरोधात व्यवस्था परिवर्तनाचा क्रांतीकारी व्यवहार सिध्द केला तर, आंबेडकर आणि गांधींनी वर्गीय शोषणाशी संघर्ष करीत असताना बिगरवर्गीय शोषधाच्या संरचनाबाबतही तितकेच भान जागे केले. गांधींचा वंशवाद विरोधी व अस्पृश्यविरोधी संघर्ष आणि आंबेडकरांचा जातीव्यवस्थाविरोधी संघर्ष याची साक्ष देतात.[१] म. गांधी हे भारतीय स्वातंत्र्य आंदोलनातील सेनानी. त्यांचे भारतीय स्वातंत्र्य लढ्यातील कार्य महत्वपूर्ण असले तरी या देशातील आर्थिक व सामाजिक प्रश्ना संदर्भातही त्यांनी आपले विचार मांडले. त्यांनी अस्पृश्यतेच्या संदर्भातील घेतलेली भूमिकाही महत्वाची आहे.

म. गांधीजींनी जगाला मानव मुक्तीचे तत्वज्ञान दिले. जात, वर्ण आणि अस्पृश्यतेची जाणीव त्यांना दक्षिण आफ्रिकेतच झाली होती. त्यांना दक्षिण आफ्रिके तच वर्ण संघर्षाला सामोरे जावे लागले होते. दक्षिण आफ्रिकेतून भारतात परत आल्यानंतर म.

Scanned by CamScanner

गांधींना येथील गुंतागुंतीच्या सामाजीक परिस्थितीची जाणीव झाली. भारतीय समाजातील स्पृश्य, अस्पृश्य, उचनीच, स्त्री-पुरुष, गरीब श्रीमंत इत्यादी भेदाची त्यांना प्रकर्षाने जाणीव झाली. भारतीय समाजाला एकसंघ करावयाचे असेल तर येथील अमानवी रुढी परंपरा नष्ट केल्याशिवाय पर्याय नाही हे त्यांनी जाणले. धर्मशास्त्र आणि धर्मग्रंथाविषयी त्यांच्या मनात आदरभाव असला तरी भारतीय समाजव्यवस्थैत अस्तित्वात असलेल्या अस्पृश्यतेच्या संदर्भातील धर्मशास्त्रातील भूमिका तर्क व नितीमत्तेला धरुन नाहीत असे त्यांचे ठाम मत होते. अस्पृश्ता ही हिंदू धर्माशी विसंगत आहे अशी भूमिका गांधीजींनी मांडली होती.

दक्षिण आफ्रिके तून भारतात आल्यानंतर इ.स. १९२०-२१ पासून म. गांधींनी अस्पृश्यते विषयीचे आपले विचार मांडण्यास सुरुवात केली. अस्पृश्यते विषयी यंग इंडियाच्या १९ जानेवारी १९२१ च्या अंकात म. गांधी लिहितात की, 'अस्पृश्यता ही धर्माने मान्य केलेली बाब नव्हे, ती सैतानी करामत आहे. सैतानाने नेहमीच धर्मग्रंथांना उद्धृत केले आहे. पण धर्मशास्त्रांच्या ग्रंथांचे स्थान कधीच बुध्दी आणि सत्य यांच्या वरचे असू शकत नाही. त्याचा उद्देश बुध्दी शुध्द करणे व सत्याला प्रकाशित करणे हा असतो. वेदांनी तसा उपदेश केला असेल, हरकत घेतली नसेल, यज्ञाला मान्यता दिली असेल, असे असेल तरीही मी कोण्या उत्तम अश्वाची यज्ञात कदापि आहुती देणार नाही. वेद हे दैवी व अलिखित आहेत असे मी मानतो. केवळ अक्षरज्ञान मारक ठरते, परंतु त्यामागील सारतत्व असते, ते प्रकाश दाखविते आणि वेदांचे सार म्हणजे निर्मलता, साथ, निष्पापता, पवित्र्य, नम्रता, साधेपणा, क्षमाशीलता, ईश्वरीय शक्ती इ. अनेक गुण हे आहे आणि स्त्रिपुरुषांना द्विव्यभव्य व शूरवीर बनविणारे आहे. पण आपल्या राष्ट्रातील थोर आणि न कुरकुरणाऱ्या सफाई कामगारांना कुत्र्यापेक्षाही निकृष्ट दर्जाची वागणूक देऊन त्यांच्यावर थुंकून त्यांचा तिरस्कार करणे, यात कुठलाही मोठेपणा किंवा शौर्य कदापि नाही हे लक्षात घ्यायला हवे.'[२] म. गांधीजी अस्पृश्यतेबद्दलची आपली भूमिका परखडपणे मांडतात. ते म्हणतात, अस्पृश्यता हा हिंदू धर्मावरील मोठा कलंक आहे. ती स्मरणातीत कालापासून चालत आली आहे हे मला मान्य नाही. आम्ही जेंव्हा अधःपतनाची परिसीमा गाठली असेल त्याकाळी तिचा उदय झाला असावा असा माझा समज आहे. हा एक भयंकर अभिशाप आहे आणि तो जोवर कायम राहील तोवर या भूमीत आम्हाला जे जे सहन करावे लागत आहे ते आम्ही आमच्या अपराधाबद्दल दंड म्हणून मानणेच योग्य होईल.[३] अस्पृश्यतेचे खऱ्या अर्थाने पूर्णपणे निर्मूलन झाले तर हिंदू धर्मावरचा भयानक असा कलंक धुऊन निघेल, इतकेच नव्हे तर या घटनेचे पडसाद जगात सर्वत्र उमटल्याखेरीज राहणार नाहीत. अस्पृश्यतेविरुध्द माझा जो झगडा आहे तो मानवी जीवनातील अशुध्दता, अमानुषता निपटून काढण्यासाठी चालू केलेला झगडा आहे.[४] गांधीजींच्या या

Scanned by CamScanner

उक्तीवरुन त्यांना या प्रश्नाचे (अस्पृश्यतेचे) गांभीर्य किती यथातथ्यपणे जाणवले होते ते समजते.

अस्पृश्यता हा हिंदुत्वास लागलेला एक कलंक आहे. ती पूर्णपणे नष्ट करणे ही हिंदूंचीच जबाबदारी आहे. जोपर्यन्त आपण आपल्याच लोकांवर स्पृश्यास्पृश्य भावातून वर्चस्व गाजवितो तोपर्यन्त ब्रिटीशांच्या विरोधात बोलण्याचा आपल्याला नैतिक अधिकार नाही,[५] असे गांधीजी म्हणत असत. आज ज्या स्वरुपात अस्पृश्यता हिंदू धर्मात विद्यमान आहे त्या स्वरुपात ती ईश्वर आणि मानवाविरुध्द होणारा घोर अपराध असून हे विष हिंदू धर्माला हळूहळू निर्जीव करीत आहे. शास्त्रांचा संकलित विचार केल्यास त्यात अस्पृश्यतेचे समर्थन आढळणार नाही असे मला वाटते. शास्त्रांत एका हितकारी अस्पृश्यतेचा जरुर उल्लेख आहे, आणि तसा तो सर्व धर्मांतून आढळतो. ती अस्पृश्यता स्वच्छतेच्या नियमांच्या पालनाचा भाग आहे. ती नेहमीच राहणार. पण भारतात आज जी अस्पृश्यता आहे ती भयंकर आहे आणि तिची प्रांतोप्रांती, किंबहूना जिल्हानिहाय अनेक रुपे आहेत. तिने स्पृश्यास्पृश्य दोघांचे अध:पतन केले आहे. कोट्यवधींचा विकास अडवून धरला आहे. त्यांना जीवनातील साध्या सोयीही उपलब्ध नाहीत. अतएव या अनिष्टाचे जितक्या लवकर उच्चाटन होईल तेवढेच ते हिंदूधर्म, भारत आणि कदाचित अखिल मानवजातीलाही उपकारक ठरेल.[६] असे गांधीजींना वाटत होते. गांधीजी अस्पृश्यतेचा प्रश्न स्वराज्य प्राप्तीशी जोडताना म्हणतात की, 'जोपर्यन्त अस्पृश्यता ही हिंदू धर्माचा भाग आहे, असे स्वत:हून हिंदू मानतात; तसेच जोपर्यन्त आपल्या एका वर्गाच्या बंधूंना स्पर्श झाल्याने पाप केले असे जे हिंदू विचार करतात, तोपर्यन्त स्वराज्यप्राप्तीची आवश्यकताच का आहे?[७] गांधीजी म्हणतात की, 'माझे अस्पृश्यतेबद्दलचे विचार हे काही माझ्या पाश्चात्य शिक्षणाचा परिपाक नव्हे, माझे हे विचार इंग्लंडला जाण्यापूर्वीच पक्के झाले होते व धर्मशास्त्रग्रंथांचा अभ्यास करण्याच्या कितीतरी आधी अशा स्थितीत ही जडणघडण झाली होती, की जेंव्हा असे विचार करण्यास वातावरण मुळीच अनुकूल नव्हते. तेंव्हापासून माझे ते विचार होते कारण मी एका सनातनी वैष्णव कुटूंबात जन्मलो आणि मला कळू लागल्यापासूनच या प्रश्नांबाबत कुणाशीही तडजोड न करता मी निर्णायात्मक मते बनविली होती. तीच मते पुढे हिंदू धर्मशास्त्राचा तुलनात्मक अभ्यास केल्यानंतर आणि स्वत: या अनुभवाच्या आधारावर अधिक पक्की झालीत. कुठल्याही धर्मशास्त्रांत या पाचव्या वर्णाचा उललेख नाही, हे सत्य असून देखील व गीतेत ब्राम्हण व भंगी (सफाई कामगार) हे समान माना असा स्पष्ट आदेश असताना देखील आपण लोक हिंदू धर्मावरील असलेला व खोलवर रुजलेला हा अस्पृश्तेचा कलंक अजुनही का टिकवून धरीत आहोत हे मला काही उमजत नाही. ब्राम्हण व भंगी समान आहेत असे म्हणण्यात जो गुणांनी खरा ब्राम्हण असेल त्याचा तुम्ही योग्य आदर करणार नाही असे नाही. त्याचा अर्थ असा की ब्राम्हण आणि भंगी

Scanned by CamScanner

यांना पण समान सेवेचा हक्क आहे. म्हणजे भंग्याला देखील आपल्या मुलाला चांगल्या शाळेमध्ये शिक्षण देण्याचा अधिकार आहे. सार्वजनिक मंदिरे त्यांच्यासाठी खुली करणे, सार्वजनिक विहिरींचा वापर करण्याची मुभा देणे इत्यादी अधिकार जे इतर हिंदूंना उपभोगता येतात, ते सर्व उपभोगण्याचा अधिकार त्यांनाही (भंगी, अस्पृश्य) मिळालाच पाहीजे.'[८] म. गांधी स्वतःला एक सनातनी हिंदू धर्मिय मानीत. असे असले तरी हिंदू धर्मातील अस्पृश्यता त्यांना मान्य नव्हती.

'मी भंगी आहे, सूत कातणारा विणकर आहे',अशी स्वतःची ओळख गांधी नेहमी सांगत. ही त्यांची शूद्रातिशूद्र वर्गांशी असलेली तादात्म्यता आहे. स्वतःला अस्पृश्य म्हणून संबोधताना गांधींना कोणतीही दांभीकता वा आढ्यता दाखवायची नव्हती. कच्छमधील एका दौऱ्यात त्यांनी याविषयीचा खुलासा केला आहे. ते म्हणतात, ''मी स्वतःला एक अस्पृश्य, भंगी म्हणून संबोधीत आलो आहे ते काही आढ्यतेने नव्हे वा अज्ञानाने नव्हे; तसेच मी पाश्चात्य विद्याविभूषित आहे म्हणूनही नव्हे; तर त्यामुळे त्यांची सेवा मला चांगली करता यावी म्हणून.'' (डॉ.यशवंत सुमंत)[९] या त्यांच्या उद्गारात कोठेही दांभिकता नाही. प्रतिनिधीत्वाचा दावा नाही. दावा आहे तो सेवेचा, सेवेच्या माध्यमातून त्यांच्यापर्यन्त पोहचण्याचा. पोहचण्यातून त्यांच्याशी एकरुप होण्याचा व त्यांचे शोषण अनुभवण्याचा ! हे अनुभवणे हे केवळ एक थरारक अनुभव घेण्यासाठी नव्हे; तर त्या वेदनेतून कार्यप्रवण होण्यासाठी आणि तरीही या अनुभव घेण्यास मर्यादा ओहतच असे गांधी म्हणतात. अस्पृश्यतेबद्दलची मं. गांधीची तळमळ यातून स्पष्ट होते.

त्यापूढेही जाऊन मं. गांधीजी असे म्हणतात की, 'मला पुनर्जन्म नको आहे. पण यायचाच झाला तर तो अस्पृश्य जातीत यावा. म्हणजे मला त्यांच्या व्यथावेदनांचा प्रत्यक्ष अनुभव मिळेल, आणि अस्पृश्यतानिवारणाचे कार्य मला अधिक कसोशीने व परिणामकारकतेने करता येईल.'[१०] मी एकवीस वर्षाचा झालो तेंव्हा माझा इतर सर्व धर्माचाही अभ्यास झाला होता. माझ्या आयुष्यात एक काळ असा होता की हिंदू धर्म व ख्रिश्चन धर्म या दोहोंच्या हिंदोळ्यावर माझे मन हेलकावीत होते. परंतु जेंव्हा माझ या मनाने समतोल गाठला, तेंव्हा मला आढळून आले की, मला जर मोक्षप्राप्ती हवी असेल तर ती फक्त हिंदू धर्मानेच मिळू शकेल आणि त्यानंतर माझी हिंदू धर्मावरील श्रध्दा अधिकच प्रगाढ व ज्ञानमय होत गेली. परंतु असे असुनही माझी ही धारणा आहे की अस्पृश्यता ही हिंदू धर्माचा भाग नाही, आणि जर तसे असेल तर मग असा हिंदू धर्म मला नको, हे खरे आहे की, अस्पृश्यता हे पाप आहे असे हिंदू धर्म मानीत नाही. शास्त्रांच्या भाष्यांबद्दल व अर्थ लावण्याबाबत मी कोणत्याही वादात पडू ईच्छित नाही. माझा मुद्द स्पष्ट करण्यासाठी भागवत अथवा मनुस्मृतिच्या दाखल्यांचा उपयोग करुन

Scanned by CamScanner

विशद करणे मला कदाचित फार जड जाईल. परंतु माझा असा दावा आहे की, मी भावना जाणून चुकलो आहे. अस्पृश्यतेला मान्यता देऊन हिंदू धर्माने एक पाप केले आहे. त्यामुळे आपले भयंकर अधःपतन झालेले आहे. आणि ब्रिटीश साम्राज्यतही आपल्याला हिन दर्जा मिळाला आहे. मुसलमानांना सुध्दा आपल्या संगतीने या रोगाची लागण झाली आहे. आणि दक्षिण आफ्रिका, पूर्व आफ्रिका व कॅनडा येथील मुसलमान देखील हिंदू प्रमाणेच निकृष्ट जात मानू लागलेत. हा सारा दुष्परिणाम अस्पृश्यतेच्या पापातून उद्‌भवला आहे.[११] गांधीजी स्वतःला सनातनी हिंदू म्हणवून घेत. असे असले तरी हिंदू धर्माच्या नावावर ज्या अनेक वाईट गोष्टी केल्या जातात त्यांना ते नाकारत होते.

म. गांधीजी ६ आक्टोंबर १९२१ च्या यंग इंडियाच्या अंकामध्ये लिहितात की, 'तुमची जी श्रध्दा असेल किंवा तुमचा जो धर्म असेल, त्यानुसार तुम्ही ईश्वराची उपासना करा असे हिंदू धर्म सांगतो, त्यामुळे तो सर्व धर्मासोबत सलोख्याने, शांततेने राहू शकतो. अशा प्रकारची माझी हिंदू धर्माची संकल्पना असल्यामूळे मला हिंदू धर्मातील अस्पृश्यतेशी कधीही जुळवून घेता आले नाही, मी सदैव ती एक बांडगुळासारखीच मानली. आपल्याकडे अस्पृश्यता पिढ्यानपिढ्या चालत आली आहे हे खरे आहे. परंतु तशा आणखी कितीतरी वाईट चालीही आपल्याकडे आजतागायत चालत आलेल्या आहेत. मुली देवाला अर्पण करुन त्यांना वेश्याव्यवसायाला प्रवृत्त करण्याच्या चालीला हिंदू धर्माचे अंग म्हणवून घेताना मला अत्यंत लाज वाटते. तरीही ही चाल हिंदूस्थानच्या काही भागात आजही प्रचलित आहे. कालीमातेला बकऱ्याचा बळी देणे ही गोष्टी मी ठामपणे अधर्म मानतो, आणि ते हिंदू धर्माचे अंग आहे असे मुळीच मानीत नाही. हिंदू धर्म हा अनेक शतकांपासून विकसित होत असलेला धर्म आहे. खुद्द 'हिंदू धर्म' हे नाव देखील परकीयांनी हिंदुस्थानात राहणाऱ्या लोकांच्या धर्माला दिलेले आहे. एकेकाळी धर्माच्या नावावर प्राण्यांचा बळी दिला जात असे हे खरे आहे. पण तो धर्म नव्हे, हिंदू धर्म तर नव्हेच नव्हे आणि मला असेही वाटते की, गाईचे सरंक्षण करणे हा जेंव्हा पूर्वजांनी धर्म मानला, तेंव्हा गोमांस खाणाऱ्यांवर त्यांनी बहिष्कार टाकला असला पाहिजे. आपसातील यादवीचा हा झगडा फार भयंकर झाला असला पाहिजे. केवळ समाजाला न जुमानणाऱ्यांवर हा सामाजिक बहिष्कार घातला गेला असे नव्हे तर त्यांच्या पापाचे परिणाम त्यांच्या मुलाबाळांनाही भोगावे लागले असे दिसते. जी रुढी सद्‌हेतूने अंमलात आणण्याचा प्रयत्न केला गेला ती पूढे भलतीच घट्ट झाली आणि हिंदू धर्मग्रंथांत त्या रुढीला कायम करणारे श्लोकही शिरलेत. अशारीतीने त्या रुढीला शाश्वत करण्याकडे कल होऊ लागला, जो सर्वथा अनुचित व अन्यायकारक होता. माझे हे विवेचन चूक असो की बरोबर असो, पण अस्पृश्यता ही बुध्दीला मुळीच न पटणारी आणि दया, करुणा आणि प्रेम या उपजत भावनांच्या विरोधी आहे. जो धर्म गाईची पूजा करण्यात प्रतिष्ठा

Scanned by CamScanner

मानतो, तो माणसाशी निष्ठूर वागेल, मनुष्यप्राण्यावर अमानुष बहिष्कार टाकेल किंवा ते योग्य मानील हे शक्य वाटत नाही. माझ्या शरीराचे तुकडे तुकडे करुन मला ठार मारणे मी आनंदाने पत्करेन. तरीही मी अस्पृश्यांनां कधीही दूर लोटणार नाही. जर हिंदूंनी आपल्या दिव्य धर्माला लागलेला अस्पृश्यतेचा कलंक कायमचा मिटविला नाही तर ते स्वातंत्र्य प्राप्तीला योग्य समजले जाणार नाहीत व त्यांना कधी स्वातंत्र्य मिळणार नाही. मी हिंदू धर्मावर प्राणापेक्षाही अधिक प्रेम करीत असल्याने मला या अस्पृश्यतेच्या कलंकाचा भार असह्य होऊ लागला आहे.'[१२] प्राचीन आहे, सबब अस्पृश्यतेला असू द्या असे म्हणता येणार नाही. एखाद्या काळी एखाद्या अपराधाबद्दल शिक्षा म्हणून कोणावर अस्पृश्यता लादण्यात आली असेल असे म्हटले तरी अजुनही त्यांच्या वंशजांना सदर शिक्षा भोगावयास लावण्याचे काहीही कारण नाही. खुद्द अस्पृश्यांत पुनः अस्पृश्यतेचे पापुद्रे आहेत. त्यावरुन एवढेच सिध्द होते की एखादी वाईट प्रथा सुरु झाली म्हणजे तिला पायबंद घालणे दुरापास्त असते. यामुळे तर सुसंस्कृत हिंदू समाजाने हा अभिशाप शक्य तेवढ्या ताबडतोब झटकून मोकळे झाले पाहिजे. जनावराला मारणे आणि मांस, रक्त, हाडे, मल यांच्या संपर्कामूळे जर अस्पृश्य ठरत असतील तर प्रत्येक नर्स, डॉक्टर यांनाही अस्पृश मानणे भाग पडेल. एवढेच कशाला ! मांसाहार करणाऱ्या व जनावरांचा बळी देणाऱ्या ख्रिस्ती, मुसलमान आणि खुद्द हिंदूतील तथाकथीत उच्चवर्णीयांनाही अस्पृश्य मानावे लागेल.[१३] म. गांधींनी अस्पृश्यते बद्दल आपले विचार परखडपणे मांडले. हिंदू धर्मातील उणीवा दाखवण्यासही त्यांनी मागेपूढे बघीतले नाही. अस्पृश्यतेसारख्या रुढीला चिकटून बसल्यामुळे त्यांनी हिंदूवर दोषारोप ठेवला आणि ही दुष्ट प्रथा हिंदूंनी हद्दपार करावी म्हणून त्यांनी हिंदूना अर्जवाही केली.

सारांश :

म.गांधींनी अस्पृश्यतेच्या विरुध्द जीवनभर संघर्ष केला. म. गांधी दक्षिण आफ्रिकेत असतानाच त्यांना अस्पृश्यतेचा अनुभव आला होता. वर्णद्वेषातून त्यांनाही अपमानित व्हावे लागले होते. त्यांनी भारतात परतल्यानंतर अस्पृश्यतेवर आपली मत स्पष्टपणे मांडली. त्यांनी अस्पृश्यतेच्या संदर्भात मांडलेल्या मतांमूळे भारतीय समाजाला अस्पृश्यतेची जाणीव प्रखरतेने झाली. भारतीय धर्मव्यवस्थेतील अस्पृश्यता किती अन्यायी आहे, त्यामुळे अस्पृश्यांची अवस्था किती दयनीय झालेली आहे. सवर्ण समाज अस्पृश्यतेच्या नावाखाली अस्पृश्यांना किती वाईट व अपमानास्पद वागणूक देत आहे, अस्पृश्यांना जीवन जगणेही कसे कठिण झाले आहे हे म. गांधीजींना समजले होते. अस्पृश्यांची ही वाईट परिस्थिती बदलायची असेल तर ही अस्पृश्यतेची परंपरा किती वाईट आणि हिंदू धर्मावरील कलंक आणि हिंदू हिंदूंसाठी कशी अपमानकारक आहे हे त्यांनी येथील सनातनी हिंदू धर्मीयांना अस्पृश्यतेवर आपले

Scanned by CamScanner

परखड विचार मांडून स्पष्ट करण्याचा प्रयत्न जीवनभर केला. अस्पृश्य सुध्दा आपल्यासारखेच हाडामासाची माणसे आहेत, त्यांनाही जगण्याचा अधिकार आपणांसारखाच आहे, त्यांना आपण आपल्या बंधू प्रमाणे वागवावे असे गांधीजी सतत सांगत राहीले.

थोडक्यात येवढेच म्हणावे लागेल की, अस्पृश्यता ही हिंदू धर्माला लागलेली किड असून तिने एका वर्गाला अतिशय अपमानास्पद व अमानवी जीवन जगायला भाग पाडले. तिचा उगम हा सूडाच्या भावनेतूनच झाला असावा असे म्हटले तर गैर होणार नाही.

संदर्भ :

१) प्रा. सोनुने यशवंत (संपादक), मंथन, चिन्मय प्रकाशन, औरंगाबाद, प्रथमावृत्ती एप्रील-२००७, पृ.क्र. १८.

२) महात्मा गांधी, अनुवाद तारा धर्माधिकारी, हिंदू धर्म म्हणजे काय ? , नॅशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इंडिया, दिल्ली, चौथी आवृत्ती, २००९, पृ.क्र. ९४.

३) महात्मा गांधी, माझ्या स्वप्नांचा भारत (संक्षिप्त), परंधाम प्रकाशन, पवनार (वर्धा), पाचवी आवृत्ती, ऑगस्ट २००७, पृ.क्र. ७८.

४) सरदार गं.बा., गांधी आणि आंबेडकर, सुगावा प्रकाशन, पुणे, पुनर्मुदण २० जुलै २००४, पृ.क्र. ६३.

५) प्रा.डोळस अविनाश व इतर, सामाजिक परिवर्तन आणि सामाजिक चळवळी, पुस्तक ३, ग्रंथनिर्मिती केंद्र, यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ नाशिक, प्रथम प्रकाशन, एप्रिल २००२, पृ.क्र. १००.

६) महात्मा गांधी, उपरोक्त, पृ.क्र. ७८-७९.

७) खरात शंकरराव, अस्पृश्यांचा मुक्तीसंग्राम, इंद्रायणी साहित्य प्रकाशन, पुणे, तृतीय आवृत्ती २५ जून २००९, पृ.क्र. ७५.

८) महात्मा गांधी, अनुवादक तारा धर्माधिकारी, उपरोक्त, पृ.क्र. ९५.

९) प्रा. सोनुने यशवंत (संपादक), उपरोक्त, पृ.क्र. ३०.

१०) सरदार गं.बा., उपरोक्त, पृ.क्र. १५.

११) महात्मा गांधी, अनुवादक तारा धर्माधिकारी, उपरोक्त, पृ.क्र. ९२-९३.

१२) कित्ता, पृ.क्र. ७-८.

१३) महात्मा गांधी, उपरोक्त, पृ.क्र. ७९.

❑❑❑

Scanned by CamScanner

महाराष्ट्रातील स्वातंत्र्य चळवळी

डॉ. के.डी. ढेकणे

Scanned by CamScanner

अथर्व पब्लिकेशन्स्

महाराष्ट्रातील स्वातंत्र्य चळवळी
Maharashtratil Swantantrya Chalvali

© सुरक्षित

ISBN : 978-93-85026-07-2

प्रकाशक
युवराज भटू माळी

अथर्व पब्लिकेशन्स्
धुळे १७, देवीदास कॉलनी, वरखेडी रोड,
धुळे - ४२४००१.
संपर्क ९४०५२०६२३०
जळगाव तळमजला, ओम हॉस्पिटल,
अँग्लो उर्दू हायस्कूलजवळ, ढाके कॉलनी,
जळगाव - ४२५००१.
संपर्क ०२५७-२२३९६६६, ९७६४६९४७९७
ई-मेल atharvapublications@gmail.com
वेबसाईट www.atharvapublications.com

प्रथमावृत्ती
१८ मार्च २०१५

अक्षरजुळवणी
अथर्व पब्लिकेशन्स्

मुखपृष्ठ
विशाल लोहार

मूल्य
₹ ३५०/-

टीप : या पुस्तिकेत प्रसिद्ध झालेले लेख त्या त्या संबंधित लेखकांच्या व्यक्तिगत मतांवर आधारित आहेत. संपादक/मुद्रक/प्रकाशक या मतांशी सहमत असतीलच असे नाही.

श्री.एस.एस. पाटील कला, श्री. भाऊसाहेब टी.टी. साळुंखे वाणिज्य आणि श्री.जी.आर. पंडीत विज्ञान महाविद्यालय,जळगाव. (नूतन मराठा महाविद्यालय, जळगाव) महाराष्ट्रातील स्वातंत्र्य चळवळी याविषयावर झालेला राष्ट्रीय परीषदेतील लेखांचे संकलन

Scanned by CamScanner

अनुक्रमणिका

- **हैदराबाद स्वातंत्र्यसंग्रामातील बीड जिल्ह्याचे योगदान** ११
  - प्रा. सावंत के. डी.
- **हैद्राबाद मुक्ती संग्राम** १४
  - प्रा. अनिल प्रभाकर निकम
- **हैद्राबाद मुक्ती संग्राम** १७
  - प्रा. डॉ. दुधभाते फुलचंद सुर्यभान
- **हैद्राबाद मुक्तीसंग्रामात दलितांचे योगदान** २०
  - प्रा. डॉ. प्रभाकर मिरकड
  - प्रा. डॉ. राजेंद्र धाये
- **औरंगाबाद जिल्ह्यातील जंगल सत्याग्रह** २३
  - प्रा. एस. के. कदम
- **हैदराबाद मुक्ती संग्रामात औरंगाबाद जिल्ह्याचे योगदान** २६
  - डॉ. के. डी. ढेकणे
- **हैद्राबाद मुक्तीसंग्रामात महिलांचे योगदान** २९
  - प्रा.जयश्री रा.सांळुके
- **हैद्राबाद मुक्ती संग्राम** ३५
  - प्रा.दिलीप गुलाब तडवी
- **हैदराबाद संस्थानातील स्वातंत्र्य चळवळ** ३८
  - प्रा.शेख अनिसुद्दीन अल्लाउद्दीन

- **१८५७ च्या स्वातंत्र्य लढ्यातील नाशिक जिल्ह्यातील आदिवासींचा सहभाग** ४०
  - डॉ.पल्लवी ठाकूर
- **पेठ संस्थानातील स्वातंत्र्य लढा** ४८
  - प्रा. बोरसे रमेश रामदास
- **विंचूर संस्थानचे वि.शि.विंचूरकराचा अशेरी संघर्ष** ५१
  - प्रा. भोंग रामदास गुंडिबा
  - प्रा.डॉ.वाघ डी.एन.
- **निफाड तालुक्यातील स्वातंत्र्य चळवळ** ५४
  - प्रा. छाया भास्कर भोज
- **ऑगस्ट १९४२ चा महाराष्ट्रातील भडाग्नी** ५७
  - अनिल साहेबराव पाटील
  - प्रा. इंदिरा अशोक लोखंडे
- **स्वातंत्र्य आंदोलनात विदर्भातील झेंडा सत्याग्रह** ६३
  - प्रा.डॉ. नामदेव वा. ढाले

Scanned by CamScanner

हैद्राबाद मुक्तीसंग्रामात दलितांचे योगदान

प्रा. डॉ. प्रभाकर मिरकड । प्रा. डॉ. राजेंद्र धाये

इ.स.१९४७ मध्ये भारतातून इंग्रज निघून गेल्यावर हैद्राबादचे निजाम आपले संस्थान भारतात विलीन करतील असे वाटले होते. पण त्यांनी स्वतंत्र, सार्वभौम मुसलमानी राज्य चालविण्याचा मानस व्यक्त केला.[१] भारत स्वतंत्र झाला त्यावेळी भारतात ५८० संस्थाने होती. यापैकी हैद्राबाद संस्थान वगळता बाकी सर्व संस्थाने भारतात विलिन झाली पण हैद्राबाद संस्थानचे नवाब मीर उस्मान अली खॉ बहादूर निजाम यांनी स्वतंत्र राहण्याचे ठरवले व भारत स्वतंत्र झाल्यावर तशी घोषणा केली.[२] हैद्राबाद संस्थान हे भारतात स्वतंत्र राहील या निजामाच्या घोषणेला संस्थानातील रझाकार संघटनेने समर्थने दिले. या संघटनेचा प्रमुख लातुरचा कासीम रझवी याने या रझाकारी संघटनेला सशस्त्र व आक्रमक बनविले होते.

इंग्रजांनी भारतातून जाताना भारत आणि पाकिस्तान ही दोन वेगवेगळी राष्ट्रेच निर्माण केली असे नव्हे तर त्याचबरोबर त्यांचे मांडलिक असलेल्या ५८० संस्थानिकांना जाताना त्यांनी स्वतंत्र आणि सार्वभौम केले. नव्या सरकारला जातीयवाद, संस्थानिकांचे प्रश्न आणि पाकिस्तान या साऱ्या प्रश्नांनी घेर्निं भंडावून सोडावे ही नीती हे स्वातंत्र्य बहाल करताना होती.[३] सातव्या निजामाच्या काळात अन्यायाचा कळस झाला होता. मीर उस्मान अली खानची सत्तेची महत्वाकांक्षा अतिशय खालच्या थराला गेली होती. त्याने स्वत:च आपल्या आसफजाही घराण्याच्या व राज्याच्या रक्षणासाठी प्रार्थना करणारे एक कवन इ.स. १९१२ मध्ये रचले, खास गॅझेटद्वारे ते प्रसिद्ध केले. हे कवन फारसी होते. त्याचे उर्दूमध्ये भाषांतर करवून घेतले व राज्यातील सर्व शाळांमधून हे कवन प्रार्थना म्हणून म्हणावे असा हुकूम काढला.[४] आसफजाही घराण्याची सत्ता चिरंजीव राहावी यासाठी सर्व जातीधर्मांच्या मुलांना ही प्रार्थना म्हणावी लागत असे. त्याचबरोबर गणवेशातही इस्लामी संस्कृतीची सक्ती करण्यात आली होती. शेरवानी व पायजमा असा गणवेश होता.[५] हैद्राबाद संस्थानात जबाबदार शासनपध्दती अस्तित्वात नव्हती. संस्थानात संघटना स्वातंत्र्य नव्हते. वृत्तपत्रांवर अनेक बंधने होती. लोकांच्या स्वातंत्र्याची गळचेपी होत होती. रझाकारी संघटनेचे अत्याचार वाढतच चालले होते.

हैद्राबाद मुक्तीसंग्राम आणि दलित

निजामाच्या या अन्यायी राजवटीला प्रतिकार करण्याचा, विरोधात आवाज उठवण्याचा अनेकांनी प्रयत्न केला, संघटित झाल्याशिवाय निजाम राजवटीला विरोध करणे अशक्य आहे हे लक्षात आल्यानंतर अनेक संघटना उदयास आल्या. त्यात धार्मिक व सामाजिक संघटनाही होत्या. राजकीय संघटनांचे योगदान महत्वाचे आहे. महाराष्ट्र परिषद, स्टेट कॉंग्रेस, आर्य समाज, हिंदू महासभा, इत्यादी संघटनांचे योगदान महत्वपूर्ण आहे. हैद्राबाद

Scanned by CamScanner

मुक्तीसंग्रामाच्या या लढयात स्त्रिया होत्या, शेतकरी होता आणि त्याच बरोबर महत्वाचा घटक होता तो दलित समाज हैद्राबाद मुक्तीसंग्रामातील लढयात दलितांचे योगदान महत्वपूर्ण आहे.

हैद्राबाद मुक्तीसंग्रामात दलितांचे योगदानही वाखाणण्यासारखे आहे. त्यांच्या हैद्राबाद मुक्तीसंग्रामातील योगदानाची, सहभागाची नोंद केल्याशिवाय मुक्तीसंग्रामाचा इतिहास पूर्ण होणार नाही.

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर निजाम राजवटीमधील हरिजनांना (दलितांना) कळकळीचा सल्ला देत होते की, ''काय वाटेल ते झाले तरी अस्पृश्यांनी निजाम व इत्तेहादुल मुसलमीनची बाजु घेऊ नये. स्पृश्यांच्या जुलमाने आपण आंधळे होता उपयोगी नाही. अस्पृश्यांची चळवळ स्वातंत्र्याची व विमुक्तीची आहे व निजाम त्याविरुद्ध आहे. अस्पृश्य हे या भुमितले असुन इतराप्रमाणेच हिंदुस्थान त्यांचाही मायदेश आहे. त्यांनी मातृभुमीच्या स्वातंत्र्यासाठी व अखंडत्वाकरिता इतरांप्रमाणेच झुंजले पाहिजे. त्यासाठी हैद्राबादने हिंदी संघराज्यात सामील झाले पाहिजे असा आग्रह आपण धरला पाहिजे. निजाम हिंदी संघराज्याच्या विरोधी असल्यामुळे त्याला सहानुभूती दाखवण्याचे काहीच कारण नाही. निझामाचे हित तो जाणतो. पण त्याने काही केले तरी माझ्या जमातीचे लोक मातृभूमीच्या शत्रुला सामील होत नाहीत याची खबरदारी घेणे हे माझे कर्तव्य आहे व म्हणूनच मी निजामीतील अस्पृश्यांना वरील आदेश देत आहे.[६] डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या वरील विवेचनावरून त्यांची हैद्राबाद मुक्तीसंग्रामाबद्दलची भूमिका स्पष्ट होते.

हैद्राबाद संस्थानामध्ये तीस लाखाच्या आसपास दलितांची संख्या होती. संस्थानात दलितांच्याही काही संघटना होत्या. त्यापैकी केवळ अंजमन-ई-पस्तकर्दा-अख्वामचा इत्तेहादुल मुसललीम था संघटनेशी राजकीय समझोता होता. तिचे नेते रावसाहेब, बी.एस.व्यंकटराव यांनी विशिष्ट परिस्थितीत आजाद हैद्राबादचा पुरस्कार केला होता. परंतु शेडयुल्ड कास्ट फेडरेशन व इतर दलित संघटनांनी मात्र निजामाच्या विरोधी भूमिका घेतली. निजामविरोधी लढयात सामान्य दलित जनता सहभागी होती. त्यांचा हा लढा गुणात्मक दृष्टया महत्वाचा होता. कोणत्याही समुहापेक्षा तो दूर्लक्षीण्यासारखा तर मुळीच नव्हता.[७] स्टेट काँग्रेसने सत्याग्रह सुरू केला होता, हा सत्याग्रह मोडीत काढण्याचे काम सरकार करत होते. डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर स्टेट काँग्रेसच्या सत्याग्रहाविषयी म्हणाले की, स्टेट काँग्रेसने चालविलेला सत्याग्रह हा योग्य आहे, त्यांनी सत्याग्रहाचे समर्थनच केले. निजाम सरकारने स्टेट काँग्रेसवर बंदी घातल्यावर डॉ.आंबेडकर कडाडले, मसंस्थानात निघणाऱ्या संस्थांना जन्मापूर्वीच कसे नख लावण्यात येते ते पाहावयाचे असल्यास तिथे स्टेट काँग्रेसला कसे बेकायदेशीर ठरविण्यात आले हया वर्नि दिसून येईल.[८] खेडयापाडयातील दलित युवकही निजामाच्या विरोधात उभा राहीला होता. दलितांनी वंदे मातरम, सत्याग्रह, जंगलतोड इत्यादी कृतीत सहभाग नोंदवला.

लोहा येथील विश्वनाथ माधव महाबळे, हरी रामा महाबळे, नामदेव संताजी महाबळे, संभा नामदेव कापूरे इ. दलित मंडळी पोलिसांना हुलकावण्या देत पैठणला गेली व सत्याग्रह केला. निजाम कोर्टाने ३ वर्षे ४ महिन्यांची शिक्षा ठोठावली त्यांना औरंगाबादच्या मध्यवर्ती कारागृहात डांबण्यात आले. नंतर त्यांना हैद्राबादच्या तुरूंगात पाठविण्यात आले.[९] पाथरीचे डॉ. देवराव कांबळे, त्यांचे सहकारी शंभू बापूराव काळभोर महार, ज्योती नाईक महार, सोपान महाबळ महार, इंगळे मांग, शंकर संभाजी चांभार यांनी १९३८ वंदे मातरम् चळवळीत सहभाग घेतला होता.[१०] दलितांचा जंगल सत्याग्रहातील सहभागही महत्वाचा आहे.

१५ सप्टेंबर १९४७ पासुन जंगल सत्याग्रहाला सुरूवात झाली. शिंदीच्या झाडाच्या लिलावापोटी निजाम सरकारला मिळणारा महसूल बंद व्हावा हा जंगल सत्याग्रहाचा प्रमुख हेतू होता. निजामाच्या राज्यात शिंदीची झाडे तोडणे हा कायद्याने गुन्हा होता. शिंदीच्या झाडाला मडके अडकविणे, शिंदी काढणे हे काम अस्पृश्यांना करावे लागे. असे मडके अडकवलेले झाड भल्या पहाटे मडके काढून घेतल्यानंतर तोडीत, पण तो अस्पृश्य कधीच कुणाचे नाव निजाम पोलीसांना सांगत नसे. जेंव्हा स्टेट काँग्रेसने जंगल सत्याग्रहाचा आदेश दिला तेंव्हा दलितांनीही यामध्ये सहभाग नोंदविला. दलित स्त्रियाही या सत्याग्रहात सहभागी झाल्या. परभणी जिल्हयात शंभर टक्के जंगल सत्याग्रह यशस्वी झाला, तो दलित व शेतकरी वर्ग त्यात सामील झाल्यामुळेच जंगल सत्याग्रहात स्वातंत्र्य प्राप्तीच्या निर्धाराने स्वत:च्या रक्ताने सह्या केलेली शेकडो प्रतिज्ञापत्रे स्वामी रामानंद तिर्थांना

Scanned by CamScanner

सादर करण्यात आली. त्यात दलितांच्याही स्वाक्षऱ्या होत्या.[११] रेल्वेच्या घातपाताच्या कार्यक्रमामध्ये वाहतूक बंद पाडणे, रेल्वे रूळ उखडणे, रेल्वे स्टेशनला आगी लावणे इ. कार्यक्रम आखण्यात आले. यात दलितांनी भाग घेतला. नांदेड व लिंबगाव या रेल्वेस्टेशनच्या दरम्यान रेल्वे रूळ उखडण्याचे काम ८ ते १० अस्पृश्य रेल्वे गँगमननी केले. या प्रकरणात मुकादम मोरेसह सर्वांवर खटले भरण्यात आले. त्याचप्रमाणे मुकादम कांबळे यांच्या मार्गदर्शनाखाली १० ते १५ अस्पृश्य गँगमननी बोल्डा-नांदापूर दरम्यान रेल्वे रूळ उखडण्याचे काम केले. पोलीस ॲक्शनपर्यन्त हा मार्ग वाहतुकीसाठी पुन्हा मोकळा होऊ शकला नाही. रेल्वे स्टेशन जाळण्यातही दलित आघाडीवर होते.[१२] दलित गँगमनच्या घरी स्वातंत्र्य सैनिकांची हत्यारे ठेवली जात. ज्यांच्याकडे हत्यारे ठेवली जात आणि ज्यांनी रेल्वे घातपात घडवून आणले ते दलित गँगमन खरोखरच परागंदा झाले. त्यांचा शोध घेण्याच्या प्रयत्नांना अपयश आले.

समारोप

दलित समाज हा हैद्राबाद मुक्तीसंग्रामाचा केवळ तटस्थ निरिक्षक नव्हता. त्यानेही या मुक्ती संग्रामात स्वत:ला वाहून घेतले. निजामाची अन्यायी सत्ता उलथून टाकण्यासाठी तोही मनापासून लढला. कम्यूनिस्ट पक्ष, हैद्राबाद स्टेट शेडयूल्ड कास्ट फेडरेशन, आर्यसमाज, स्टेट काँग्रेस इत्यादी संघटनेच्या माध्यमातून दलित समाजाने निजाम आणि रझाकाराविरूद्धच्या लढयात भाग घेतला. हैद्राबाद स्वातंत्र्य संग्रामाच्या लढयात सर्वच स्तरातून सहभाग नोंदवला गेला. गरीब होते, दलित, श्रीमंत, शेतकरी आणि कामगारही होते. समाजात विविधता असली तरी त्यांच्यात एकजुट ही होतीच. संकट समयी एकमेकांसाठी जीव देण्याचीही तयारी होती. त्यांच्या परिश्रमाला तोड नव्हती. त्यांची मालमत्ता लुटली, तुर्गींत डांबले, प्रसंगी ठार मारले तरी ही समाजातील सर्व स्तरातून हा मुक्तीसंग्रामाचा लढा तिव्र केला गेला.

सारांशरूपात येवढेच म्हणावे लागेल की, हैद्राबाद मुक्तीसंग्रामाच्या (स्वातंत्र्य संग्रामाच्या) इतिहासाला दलितांच्या सहभागाची त्यांच्या शोर्यशाली, धैर्यशाली आणि कृतीशील लढयाची सोनेरी पाने जोडली नाहीत तर तो अपूर्णच राहील.

संदर्भ

१. खोत श्रीनिवास/ विर्धे दिंगंबर, हैद्राबादच्या मुक्तीसंग्राम आणि आम्ही, विर्धे दिगंबर, साकेत प्रकाशन प्रा.लि.११५, औरंगाबाद, प्रथम आवृत्ती १९९३, पृ.क्र.५४
२. कित्ता, पृ.क्र.९३
३. कित्ता, पृ.क्र.१७७
४. भालेराव अनंत, हैद्राबादचा स्वातंत्र्य संग्राम आणि मराठवाडा, मौज प्रकाशन, मुंबई सप्टेंबर १९८७ पृ.क्र.४७
५. चपळगावकर नरेंद्र, कहाणी हैद्राबाद लढयाची, देशमुख आणि कंपनी, पब्लिशर्स प्रा.लि.पुणे १९९९, पृ.क्र.११
६. खोत श्रीनिवास, विर्धे दिगंबर उपरोक्त, पृ.क्र.१७२
७. गायकवाड नरेंद्र, मराठवाड्यातील दलित चळवळ आणि हैद्राबादचा स्वातंत्र्य संग्राम, सुगावा प्रकाशन पुणे, १९९० पृ.क्र.१०१-१०३
८. कित्ता, पृ.क्र.१०८
९. कित्ता, पृ.क्र.११०
१०. देव प्रभाकर (संपादक), हैद्राबाद मुक्तीसंग्राम, स्वातंत्र्य सैनिकांच्या मौखिक नोंदी, स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विद्यापीठ नांदेड, १९९९, पृ.क्र.१०३.
११. गायकवाड नरेंद्र, उपरोक्त, पृ.क्र.११६
१२. कित्ता, पृ.क्र.१२९.

Scanned by CamScanner

Globalization & Public Administration: Pros and Cons

Editors

Dr. M.C. Pawar

Dr. Pratibha Patil

EDUCATIONAL PUBLISHERS

Globalization –Economic Development In India

*Dr. Raut Radheshyam Kisanrao

Introdution:-

Globalization essentially is a micro economic process. It is driven by the growing significance of transnational corporation (TNC's) in global economy. A TNC refers to an enterprise having a significant degree of control over value adding activities in to or ore nations. (See During 1989).Globalization has become one of the "buzzwords" in the discussion on International Business these days.

Globalization leads to an expanding global economy. It is a process, which trends to increase the interdependence, integration and links between the economics various nations. FDI flows over the years have contributed to the increased economic integration, globalization process on a worldwide level. During 1983-1990 FDI outflows have grown at the rate of 29% per annum on average s against the rate of world output (4%) and exports (6%). In the Asia Pacific Region, South East Asian nations have been major beneficiaries of the globalization process .For instance, Malaysia trade/ GDP ratio was estimated to be 152% in 1991, which is among the highest in the world .World economic integration can be attributed to trade, investment to flows and increasing globalization process of the MNCs. Globalization implies a process of internalization in which companies gradually and incrementally expand their international involvement. Globalization is an evolutionary process of increasing involvement in international business operations. Under globalization the business firms undertake coordinated activities as single entities operating in a single, global market economy, rather than a host country basis. For example, subsidiaries of Sony operating in Malaysia and Thailand imply globalization business of Sony, Ohmae entions about "global signposts" of globalization as follows.

Innovation and extensions of information and Communication Technology (ICT), ICT has made business communication across world quick and instantaneous.

Concept of Globalization:-

a) Globalization is a new evolving paradigm of international business and marketing. It is a process of integration of the world into a single huge market, in the sense .It implies unification of national markets in evolving global economy.

b) Globalization is a broader tear than internationalization.

* Dr. Raut Radheshyam Kisanrao, Associate Professor in Economics, Sant Ramdas Arts, Commerce & Science College, Ghansawangi, Ta.Ghansawangi, Dist.Jalna. Email ID.-rkraut88@gmail.com

ISBN- 978-93-81921-46-3

Terrorism :
A Challenge before Human Rights

HUMAN RIGHTS EDUCATION
SANGAMNER COLLEGE

दहशतवाद : मानवी हक्कांसमोरील आव्हान

Editor
Prin. Dr. K. K. Deshmukh
Dr. Pratap Phalphale

ISBN- 978-93-81921-46-3

IMPACT OF TERRORISM

Dr. Radheshyam Kisanrao Raut
Associate Professor in Economics
Sant Ramdas Art's,Com. & Sci.College,
Ghansawangi,Ta. Ghansawangi, Dt. Jalna 431209
Email ID -rkraut88@gmail.com
Mob. No - 9423274488

TRODUCTION

e human cost of terrorism has been felt in virtually every corner of the globe. The ited Nations family has itself suffered tragic human loss as a result of violent rorist acts. The attack on its offices in Baghdad on19 August 2003 claimed the es of the Special Representative of theSecretary-General, Sergio Vieira de Mello, d 21 other men and women,and injured over 150 others, some very seriously.

rorism clearly has a very real and direct impact on human rights, with devastating nsequences for the enjoyment of the right to life, liberty and physical integrity of tims. In addition to these individual costs, terrorism can destabilize vernments, undermine civil society, jeopardize peace and security, and threaten cial and economic development. All of these also have a real impact on the joyment of human rights.

curity of the individual is a basic human right and the protection ofindividuals is, cordingly, a fundamental obligation of Government. Statestherefore have an ligation to ensure the human rights of their nationalsand others by taking positive asures to protect them against the threatof terrorist acts and bringing the petrators of such acts to justice.

recent years, however, the measures adopted by States to counterterrorism have emselves often posed serious challenges to humanrights and the rule of law. Some tes have engaged in torture and otherill-treatment to counter terrorism, while the gal and practical safeguardsavailable to prevent torture, such as regular and dependent monitoringof detention centres, have often been disregarded. Other tes havereturned persons suspected of engaging in terrorist activities to untrieswhere they face a real risk of torture or other serious human rights use,violating the international legal obligation of non-refoulement.The dependence of the judiciary has been undermined, in some places,while the use of -optional courts to try civilians has had an impact onthe effectiveness of regular rt systems. Repressive measures have been used to stifle the voices of human hts defenders, journalists, minorities,indigenous groups and civil society. sources normally allocated to socialprogrammes and development assistance e been diverted to the security sector, affecting the economic, social and cultural hts of many.

ISBN:978-93-80039-09-1

3rd INTERNATIONAL CONFERENCE

on Current Issues in Education & Social Sciences

09th & 10th May 2015

Organized by

Faculty of Education

Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University Aurangabad. (M.S.), India.

In collaboration with

Depatrment of Education, Dr. B. A. M. U., Aurangabad.

and

Jay Prakash Narayan College of Education, Aurangabad.

Editors

Dr. Shobhana Joshi
Dr. Ganesh Shetkar
Dr. Balaji Lahorkar
Dr. Satish Satav

The Role of Higher Education In Economic Development

Dr. Raut Radheshyam Kisanrao, Associate Professor in Economics, Sant Ramdas College, Ghansawangi, Dist Jalna Pin code-431209
rkraut88@gmail.com ,Mo. 09423274488

Abstract:

The role of higher education as a major driver of economic development is well-established, and this role will increase as further changes in technology, globalization, and demographics impact the United States. To remain competitive in light of these changes, regions will need to improve productivity and adopt an innovative spirit. Higher education has the capacity, knowledge, and research necessary to help achieve these goals (Sampson, 2003; 2004).

The focus of this report is the role of higher education in the economic development of Illinois' Rock River Region. A brief summary of economic development issues in this region is given, followed by a general discussion of the role of higher education in economic development and specific actions taken by the institutions of the Higher Education Alliance for the Rock River Region (HEARRR) Northern Illinois University, Rockford College, Rock Valley College, and University of Illinois College of Medicine.

The Role of Tertiary Education In The Knowledge Economy

In the knowledge economy tertiary education has become far more widespread than in earlier generations. The development of a class of knowledge workers is transforming labor forces and economies. As electronic devices and robots increasingly accomplish human tasks, the need for routine skills – both manual and cognitive – are decreasing, while the demand for expertise and communication skills of all kinds is rapidly rising. The need to understand and interact with images and data is increasing the demand for analytical and integrative skills in even basic functions. This phenomenon stretches educational and organizational systems, as they straddle specialized and generalized skills. Also, although research on the impact of the knowledge economy on employment creation and growth is still at a preliminary stage, efforts have begun, particularly in advanced economies, to quantify its effects. Brinkley and Lee (2006) studied rates of job creation in knowledge-based sectors and low-knowledge sectors in the European Union and USA over a ten-year period. They found that knowledge-based industries created twice as many new jobs in the USA and four times as many in Europe.

The World Bank (2007) also reported that industrialized countries, for which the term 'knowledge economy' was initially derived, are coping unevenly with the new realities. The nations of North America seem to have benefited quickly from the new opportunities offered, with a higher growth rate and higher productivity performances over the last 15 years or so. Gaps in income per inhabitant between North America and Europe have increased. In Europe, small, dynamic economies such as Finland have become models of knowledge-based growth and competitiveness; while larger continental economies such as France and Germany – which led the technological and industrial race in past decades– have had difficulty adjusting. Meanwhile, Japan has experienced a difficult decade, with slow growth caused by a variety of factors, but has continued to build knowledge economy assets (by increasing spending on basic research, for example) and to maintain the competitive edge of its global manufacturing companies. The Republic of Korea, meanwhile, has actively embarked on a knowledge economy track to recover from the financial crisis of 1997/1998.

On the whole however, there is a strong correlation between innovation performances, total factor productivity, and economic growth in OECD countries. Nordic and English-speaking countries have, as a whole, performed better than others.

The transition economies of Eastern Europe have had difficulty coping with the new knowledge-based competition, although they benefited from considerable past investments in education and science. Smaller economies such as Hungary, Slovenia and Estonia have coped well and taken advantage of European enlargement. Estonia, in particular, has adopted an aggressive knowledge economy approach. However, a number of other new EU members and candidates are undergoing a more painful adjustment process. The Russian Federation and other countries of the former Soviet Union have yet to demonstrate their capacity to make use of a knowledge potential that was considerable at the time when the Berlin Wall fell but eroded rapidly owing to the migration of highly educated people.

ISBN NO-978-93-80986-74-6

UGC SPONSORED

ONE DAY NATIONAL SEMINAR

"IMPORTANCE OF HUMAN RIGHTS"

31st January, 2015

HUMAN RIGHTS

Organized by

Department of Political Science
New Art's Commerce & Science College,
Nalwadi, Wardha (M.S.)

The Human Rights

ISBN NO.: 978-93-80986-74-6

मानवाधिकार एवं महिला

डा. जीआर. अवचार
राजनीतिशास्त्र विभागाध्यक्ष एवं सहा.प्रोफेसर
शा.रामदास महाविद्यालय, घनसावंगी, जि. जालना
ई-मेल : awchargr@gmail.com
Mob. 8793550635 / 9404426348.

समाज में मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास के लिए कतिपय अधिकारों की आवश्यकता होती है। जिसके अभाव में उसके व्यक्तित्व का होना समाज में असम्भव है, इन्ही को मानव अधिकार कहा जाता है। मानव अधिकारों का सम्बन्ध मानव की स्वतत्रता, समानता एवं गरिमा के साथ जीने के लिए स्थितीयाँ उत्पन्न करने से होता है। मानवाधिकार एक ऐसा विषय है जो किसी क्षेत्र, समाज एवं राष्ट्र को ही नहीं बल्कि पूरे विश्व को एक समुदाय के रूप में देखता है क्योंकि मनुष्य इस विश्व समुदाय का ही अंग होता है । मानव अधिकार के अतर्गत सभी व्यक्तियों को बिना किसी विभेद के साथ समान अधिकार प्राप्त होने चाहिए। परतू मानव अधिकार का यह अर्थ अभिप्रेत होते हुए भी महिला, बच्चे, अल्पसंख्यक एव पिछडे जाती का समुदाय अधिकारों से वचित रहता है। मानव अधिकार का विचार जिस तर्क पर आधारित है, उस तर्क के आधारपर शुरू-शुरू में 'प्राकृतिक अधिकारों' (Natural Rights) की संकल्पना प्रस्तूत की गई। प्राकृतिक अधिकारों के सिध्दांत के आरंभिक संकेत बारहवीं शताब्दी में युरोप में मिलते हैं, परतु इनका व्यवस्थित निरूपण सत्रहवी शताब्दी में आरंभ हुआ। इस शताब्दी के प्रारंभ में ह्युगो ग्रोश्यस (1583-1645) ने तर्क दिया की प्राकृतिक कानून (Law of Nature) का आधार मनुष्य की विवेकशील प्रकृती में ढूँढना चाहिए। लेकिन विश्व के अनेक देशों में ढूँढने से भी मनुष्य की विवेकशील प्रकृती नहीं दिखाई देती। आज भी इक्कीसवी शताब्दी में भी महिलाओ पर अनन्वीत अत्याचार किये जाते दिखाई देते है, जो की समाज की पुरी नींव महिलाओंपर निर्भर हैं। विश्व के अधिकतम देशों में महिलाओं के सक्षमीकरण के लिए अपने संविधान में कई प्रावधान किये हैं फिर भी महिलाओं के उपर अत्याचार का सिलसिला बढता ही जा रहा है। महिलाओं के अधिकारों के हनन के विभिन्न तरिके विभिन्न देशों में पाये जाते हैं। जैसे एशियाई देश भारत, पाकिस्तान, बाग्लादेश, नेपाल, श्रीलंका में लडकियों का पैदा होना अभिशाप माना जाता है। आज भी कई महिला दहेज का शिकार बनती हुई नजर आती है। महिलाओं के अधिकारों का निम्न रूप से हनन किया जाता है।

भ्रूण हत्या :
भ्रूण हत्या के माध्यम से महिलाओं को जन्म लेने के अधिकार से ही वंचित किया जाता है। अर्थात् महिलाओं के जन्म लेने से पूर्व ही भ्रूण में ही खत्म कर दिया जाता है। भ्रूण हत्या के परिणामस्वरूप ही आज विश्व के सभी देशों में महिलाओं की संख्या प्रतिशत दिन रोज घटती जा रही हैं।

बलात्कार और यौन उत्पीडन :
भ्रूण हत्या के बचने बाद जो बालिकाएँ जन्म लेती हैं उनके साथ बाल अवस्था में ही बलात्कार और यौन-उत्पीडन के मामले दिन-रात सामने आते रहते हैं।

महिला कर्मिकों को कम वेतन दिया जाना :
महिला अधिकारों का हनन का एक तरिका समान कार्यों के लिए कम वेतन दिया जाना है। इस रूपको गाँव तथा अशिक्षित महिलाएँ शारीरिक रूप से पुरूषों से कमजोर होती हैं, और इसलिए ही उन्हें कम मजदुरी दी जाती हैं।

महिला अधिकार एवं भारतीय स्थिती (Women Rights and Indian Status) :

भारत की महिलाओं की स्थिती भी अन्य देशों से परे नहीं हैं। यहाँ की भी महिला सदियों से अपनी उपर दीक्कतों से सामना करती आ रही हैं। उनका उत्पीडन, अत्याचारों का सिलसिला प्राचीनकाल से ही चला आ रहा है। यहाँ के धर्म के ठेकेदारों ने उन्हें एक भोग विलासी के ही रूप में देखा है। उनकी अज्ञानता एवं धर्म का उनके उपर बिछाया जाल ही उनका शोषण करता आ रहा है। धर्म ने ही उनका स्वतंत्र स्थान नहीं रखा। यहाँ महिलाओं का शोषण करने के लिए उनको धर्म के आज्ञा का वास्ता देकर चूप बिठाया।

Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad

In Association with

Chetna Shikshan Prasarak Mandal's Vaijapur,

Art's Senior College, Aurangabad

One Day National Conference

On

Women Empowerment : Issues & Challenges

(An Interdisciplinary Approach)

02/03/2015

AJANTA PRAKASHAN

debates about human rights have
ent place in postcolonial literature
n Rushdie to Nawal El Saadawi
th the possibilities and challenges
n rights, particularly in the Global
nall Things has raised the issue of
brutality. It puts forth the need to
d eradication at the psychological
i has discussed the various issues
is plays. It is observed in British
and almost all the literatures in
nal languages. The movement of
ted, encouraged and channelized
. It may not have generated a
tributed to start the process of
TIER THAN THE SWORD.

erty and Other Essays. Oxford : Oxford

aw and Human Rights. Newyork: 1959.
nment: A Translation Into Modern English,

men.London: Longmans, Green, Reader
er 2012.
sic Human Rights. New Delhi: Manak

Human Right and Right to live in Healthy Environment: In framework of Indian constitution

Dr. S.V. Tathe
(Head & Research Guide Dept.of Geography)
Mr. S.B. Jige (Head of dept of Botany)
Sant Ramdas College Ghansawangi Dist. Jalna (MS)

Abstract: In 24 Oct 1945 mile stone of in the respect of UN Charter Human Right generally defined those rights which are herent in our nature and without which we cannot live as human beings. Environment and man relationship undergoing profound changes in the wake of modern scientific and technological developments. Then concept of human right to safe and clean environment has emerged as one of basic rights. Declaration of human rights adopted by the General Assembly on 10 December 1948 does not mention a human right to environment. Article 12 of International convent on economic, social and cultural rights recognized healthy environment right. In 1972 Stockholm conference agendas, proclamations principle and subsequent global, environment protection efforts shows. So that in Indian constitution frameworks its reflection occur article 14 (4) 19 (5) & 21 (6) dealing with right to equality freedom of expression right to use and personal liberty. Also from time to time various laws enacted for protection of environment, flora fauna in India.

Keywords- Human Rights, charter environment, flora, fauna etc.

Introduction:

Human right generally defined as those rights which are in

Role of Yoga and Meditation for Better Performance of Women Archery Player

Dr. Bappasaheb Maske Sushil B. Shinde

Ravindra G. Mali

Abstract :

The word yoga comes from the Sanskrit word "Yuj" mean to yoke join or unite. This implies joining or integrating all aspects of the individual body with mind and mind with soul to achieve a happy, balanced and useful life, and spiritually, uniting the individual with the supreme, though yoga is spiritual quest. The aspirant also gains health, happiness, tranquility and knowledge. According to Dr. M.L. Gharote, various practices of yoga con be broadly divided into five major branches, they are Asana, Pranayama, Bandhamudra, Shrudhikriya and Meditation (Dhana). The use of Meditation for healing is not new. Meditation makes it possible to live life to the full spectrum of our conscious and unconscious possibilities. Meditation is a valuable tool for stress, reduction and stress related disorders. Herbert Benson, M.D., a professor at Harvard Medical School, describes the meditation experience as the 'relaxation response'. He discovered by studying various yogis and longtime mediators. Muscle tension decreases, blood pressure drops and for same extraordinary practitioners, even temperature and basal metabolism rates drop during a prolonged meditation. Archery is games of aiming and for long time players want to achieve the proper target the need patience & concentrate. It will be hypothesized that the practice of meditation the archery player con benefited.

Introduction

Yoga

The word yoga comes from the Sanskrit word "Yuj" mean to yoke join or unite. This implies joining or integrating all aspects of the individual body with mind and mind with soul to achieve a happy, balanced and useful life, and spiritually, uniting the individual with the supreme, though yoga is spiritual quest. The aspirant also gains health, happiness, tranquility and knowledge. According to Dr. M.L.

A Two Day State Level Seminar

On

Role of Opposition in Indian Parliamentary Democracy

6th & 7th February 2015

Organized by

Department of Political Science & Public Adminstration

Sponsored by

BCUD, Savitribai Phule Pune University, Pune

Chief Patron

Shri. Pratapdada N. Sonawane
President, M.V.P.Samaj, Nashik

Smt. Nileematai Pawar
Sarchitnis, M.V.P.Samaj, Nashik

Adv. Nitin B. Thakare
Sabhapati, M.V.P.Samaj, Nashik

Shri. Nanaji N. Dalvi
Upasabhapati, M.V.P. Samaj, Nashik

Shri. Dr. Sunil U. Dhikale
Chitnis, M.V.P. Samaj, Nashik

Organizing Committee

Chairmen	:	Prin. Dr. Dilip Shinde
Co-ordinator	:	Prof. Dnyanoba Dhage
Member	:	Prof. Bharat Jadhav
Member	:	Prof. Smt. Chhaya Dukare
Member	:	Prof. Shivaji Gangurde

ISSN 2394-2649

Maratha Vidya Prasarak Samaj, Nashik

Karmaveer Kakasaheb Wagh
Arts, Science and Commerce College
Pimpalgaon (Baswant), Tal-Niphad Dist. Nashik (M. S.)

PURSUIT

A Half-Yearly International Multi-Discipilinary
Peer Reveiwed Research Journal
Vol. II, Issue – II (February 2015)

A Special Issue Published on the occasion of State Level Seminar

On

Role of Opposition in Indian Parliamentary Democracy

6th & 7th February 2015

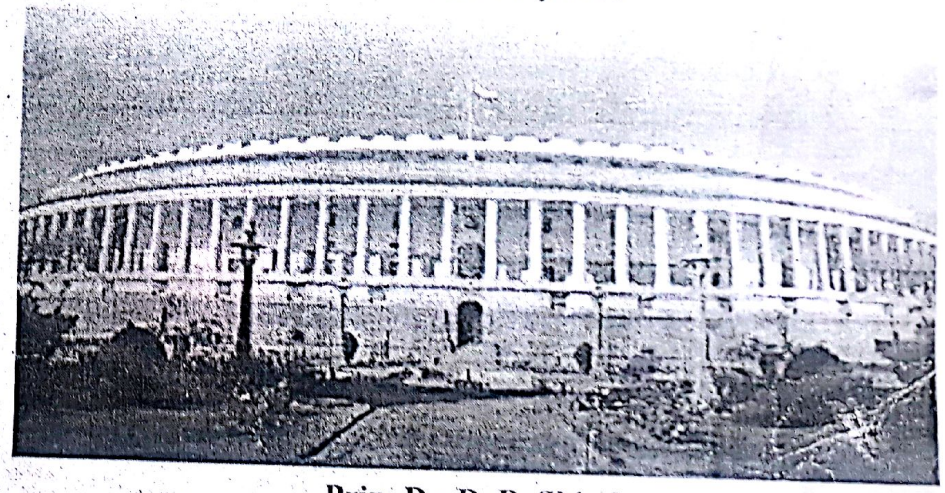

Prin. Dr. D. B. Shinde
Editor-in-Chief

Chief Patron:

- Hon. Smt. Nileematai Pawar, Hon. Sarchitnis, M.V.P. Samaj, Nashik
- Shri. Dilipnana More, Director (Niphad), M.V.P. Samaj, Nashik
- Shri. Vishwasrao More, Chairman, LMC (Senior College)
- Shri. Pratapdada More, Chairman, LMC (Junior College)

Advisory Board:

- Dr. V. B. Gaikwad, Director, BCUD, S.P. University of Pune,Pune,
- Dr. Milind Malshe, Professor, IIT (Mumbai)
- Dr. Anjana Tiwari, Professor,NITTTR, Bhopal
- Dr. D.D. Kajale, Associate Professor, KTHM College, Nashik
- Dr.Vijay Medhane, Associate Professor, KTHM College, Nashik

Editorial Board:

- Dr. D. B. Shinde (Principal & Editor-in-Chief)
- Dr. S. K. Binnor (Executive Editor)

Editorial Committee:

- Prof. S. Y. Malode, Vice Principal
- Prof. D. W. Shelke, Vice Principal
- Prof. M. D. Dugaje (Languages)
- Prof. Y. R. Baste (Science)
- Prof. D. T. Dhage (Social Science)
- Prof. Dr. V. B. Kale (Environmental Studies)
- Prof. A. P. Mehandale (Resources)

Peer Review Committee for this Issue:

- Prof. Dr. Eknath Khandve, Dean, Mental, Moral, & Social Science, S. P. Pune University, Pune
- Dr. P. D. Deore, President, Maharashtra Political Sci. & Pub. Admin. Council.
- Dr. Sunil Shinde, Associate Professor, Dnyanopasak College, Parbhani

Place of Publication:

K. K. Wagh Arts, Sci. & Com. College, Pimpalgaon (B), Tal. Niphad, Dist. Nashik-422209.

Important Note:

The views expressed by the authors in their research papers or articles in this issue are their own. The Editor/publisher is not responsible for them.

Author Guidelines

GUIDELINES FOR AUTHORS

PURSUIT

(ISSN: 2394-2649)

Submission of Manuscripts

- Research papers (max length 3000 words) containing original research findings in a clear and concise manner
- Authors should submit the soft copy (MS-Word compatible with font type Times New Roman and Font Size 12 point (14 point font size for Title) along with hard copy typed with line spacing of 1.5 lines. The Margin Should be 1". The reporting in the paper should be generally in third person.
- Papers in Marathi/ Hindi Languages should be typed in ISM fonts having 14 point font size.

It is mandatory that the paper should include :

a. Title page with a running short title,
b. Nomenclature of symbols used (if any)
c. Tables/figures/illustrations along with their captions in serial order as they appear in Text
d. Address, telephone numbers, e-mail ID
e. Abstract in about 100 words max.
f. Bibliography in MLA latest edition.

Subscription Details

Annual subscription fee for PURSUIT is as follows :

Individual Researcher	:	Rs. 700/-
Institution/College	:	Rs. 1000/-

Subscription is must for publication of research article. D.D. should be drawn in favour of *The Principal, K. K. Wagh Arts, Sci. & Com. College, Pimpalgaon (B), Tal. Niphad, Dist. Nashik*

ISSN 2394-2649

Role of Opposition In India

Dr.R.N.More
M.A; M.Phil; Ph.D; SET;NET.
Dept.of political science
Sant Ramdas Arts,Commerce,Science College, Ghansawangi,Jalana

Introduction:

From the down of the civilized life, human beings have always organized themselves into groups and large formations for a variety of collective purpose –social, cultural, economic and Political. A party is an organization for collective life. Indeed organized society alone is a party. Political party system is modern phenomenon. It is less than 200 years old.

The founding fathers of United states did not believe in the party system. They thought its influence was bad. Parties and party system emerged in Europe, North America and Japan around the third decade of nineteenth century, much latter, it came into fail force in other countries.

Political parties are indispensable for a democracy. Democracies in the contemporary world are representative in character. In representatives from government Political parties educate the Public and in calculate interest to take part in active Politics.

Democracy is the government of the people by the people and for the people. It is the most common form of the government in this world. In democracy the opposition has a great role to play in a parliament and remains in power as long as it enjoys the confidence of popularly – elected houses.

Parties and group in eight sides have their own elected leaders. The prime minister is also the leader of the house whole the leader of the largest opposition party enjoys the status of the leader of the opposition in the house. The leader of opposition often raises the issue with the government, when he finds the government is not functional and make design, so long as it retains power that is again subject to the approval of the House in prescribed manner.

The common people that a healthy Parliamentary opposition is essential for the sound working of Democracy. There is a vigilant opposition, constantly of the alert and keep an eye on the governments policies and actions. When there are well informed critics. They are ever ready to expose the wrong committed by the Government. It can bring to light its acts of omission and commission. The ruling party cab hardly afford to be slack and negligent in the performance of its duty towards the country to provide an efficient and sound administration.

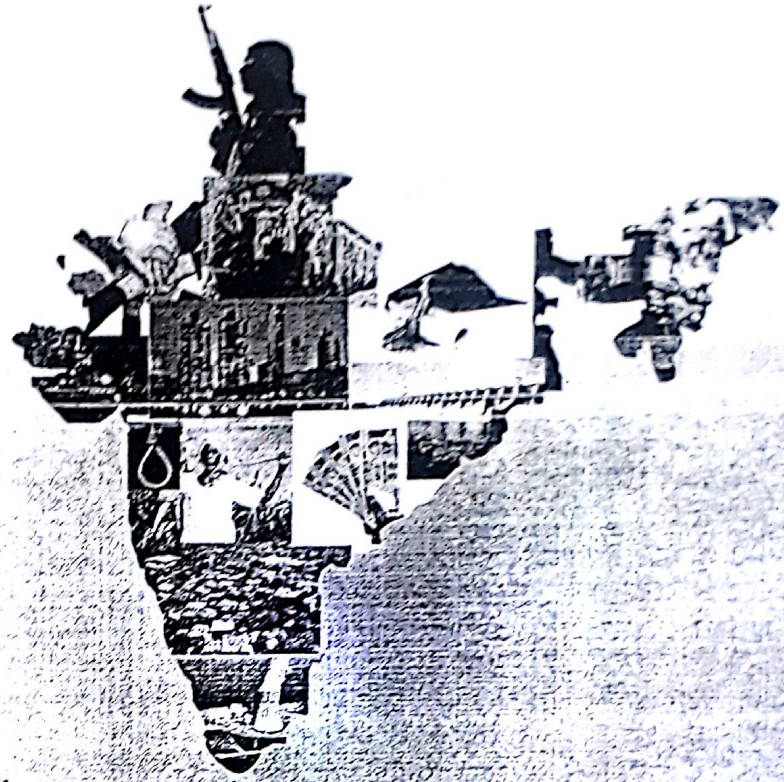

भारतापुढील आव्हाने आणि सद्यस्थिती

संपादक :

डॉ. पंडित नलावडे

भारतापुढील आव्हाने आणि सद्यस्थिती

© संपादक
डॉ. पंडित शेषराव नलावडे
मो. ९४२३३९६३९९/८२७५३२६२९०
Email : nalawade044@gmail.com

सहसंपादक
प्रा. राजू भागाजी वनारसे
मो. ९४२१४२३४१९/९४०४२६३७१२
Email : rajuvanarse419@gmail.com
प्रा. प्रभाकर रघुनाथ जगताप

प्रकाशक
के. एस. अतकरे
कैलाश पब्लिकेशन,
औरंगपुरा, औरंगाबाद.
पहिली आवृत्ती-जानेवारी २०१५

अक्षरजुळणी
ज्ञानेश्वर व्ही. अघाने
गौरव कॉम्युटर्स, औरंगाबाद.
मो. 9158500052

प्रकाशन दिनांक
५ व ६ जानेवारी २०१५

मुद्रक
ओंकार ऑफसेट. औरंगाबाद.

किंमत : ४५०/-

ISBN No. - 978-93-84451-37-0

६. ग्रामीण विकास आणि शेतकऱ्याची आत्महत्या

डॉ. राजेंद्र नामदेवराव मोरे
राज्यशास्त्र विभाग,
संत रामदास महाविद्यालय, घनसावंगी जि. जालना.

भारत हा शेतीप्रधान देश असल्याची चर्चा येथे पूर्वापार सुरु असली तरी शेती आणि शेतकरी यांच्या प्रश्नांना मध्यवर्ती ठेवून निरीक्षण, अभ्यास आणि चिंतन सुरु आहे.विशिष्ट प्रश्न किंवा योजना या दृष्टिने शेतीचा विचार न करता शेतीवर जगणाऱ्यांच्या कुंटूबांची परिस्थिती, त्यांचे समाजातील स्थान, शेतकरी समाजाचे पराकोटीची अज्ञान, रुढीग्रस्तता, आर्थिक ओढगस्त, त्यांच्यावर कोसळणारी अस्मानी व सुलतानी संकटे अशा विविध अंगानी त्यांचे विवेचन सुरु आहे. महाराष्ट्रातील शेतकऱ्यांच्या आत्महत्याचे गांभीर्य गेल्या तीन-चार वर्षापासून सतत वाढत चाललेले आहे. केवळ महाराष्ट्रातच नव्हे तर पंजाब, आंध्रप्रदेश, केरळ, तामिळनाडू, कर्नाटक आदी राज्यातही गेल्या तीन-चार वर्षापासून शेतकऱ्यांचे आत्महत्येचे सत्र वाढत चाललेले दिसून येत आहे. त्यामुळे केंद्रसरकार आणि राज्यसरकारे, विविध राजकीय पक्ष, विविध सामाजिक संघटना, विचारवंत, पत्रकार अशा सर्वांनाच या प्रश्नांचे गांभीर्य ओळखून केंद्र सरकार आणि राज्य सरकारानी काही अभ्यास समित्या नेमल्या व त्यानुसार शेतकऱ्याच्या विकासासाठी अनेक नवनवीन योजना सादर केल्या व पॅकेजही जाहीर केले. अनेक राजकीय पक्षांच्या नेत्यांनी आत्महत्याग्रस्त शेतकऱ्यांचे सांत्वन केले, आर्थिक, मानसिक आधार दिला. शेतीक्षेत्राला आणि पूरक व्यवसायांना अनुदान देऊन योजना जाहीर केल्या पण शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या थांबल्या नाहीत.

जगाचा अन्नदाता म्हणून शेतकऱ्याकडे पाहिले जाते. शेतकऱ्यांना २१ व्या शतकाकडे वाटचाल करणाऱ्या देशात आत्महत्या करण्याची वेळ का आली? आज शेतकरी नवनवीन तंत्रज्ञानाचा वापर करित असून परंपरागत बी-बीयाणे मोडीत निघून संकरित बियाणे, रासायनिक खते, किटकनाशकांचा वापर करुन उत्पादनांचे उच्चांक प्रस्थापित करीत असतांना शेतकरी आत्महत्या का करित आहे हा संशोधनाचा विषय आहे. स्वातंत्र्यानंतर बारा पंचवार्षिक योजना पूर्ण झाल्या आहेत या योजनेत अनेक विकासाच्या योजना बनविण्यात आल्या आहेत. तसेच त्या योजनांची अंमलबजावणी करण्यात आली आहे. परंतु ग्रामिण भागाचा अपेक्षित विकास झाला नाही. गरीब-श्रीमंत यांची दरी वाढत आहे. गांधीजीनी सर्वोदयचे स्वप्न पाहिले होते. म. गांधीजींना वाटत होते की खेडी स्वयंपूर्ण होऊन खेडयाच्या विकासाला महत्वपूर्ण स्थान दिले पाहिजे. यासाठी त्यांचा विचार होता की, भविष्यात देशांची आर्थिक भविष्य ग्रामिण अर्थव्यवस्थेवर आधारीत असावे. प्रत्येक गाव स्वावलंबी झाले पाहीजे तसेच प्रत्येक गाव प्रजासत्ताक सारखे असावे आणि पंचायतीच्या माध्यमातून ग्रामस्थ आपल्या समस्याची सोडवूणक करेल. ग्रामीण

Godavari Shikshan Prasarak Mandal's
B.Raghunath
Arts, Commerce and Science College,
Parbhani, Maharashtra
(Best Examination Centre Award- 2010)
(NAAC Accredited 'B' Grade with CGPA 2.46)

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

SOUVENIR
National Level Conference on

"Human Rights - Theory and Practices"

(मानवी हक्क : सिद्धांत आणि व्यवहार)

19th March, 2015

Chief Editor
Dr. Vilas Sonawane

Editor
Prof. Suresh Bhalerao

Organized by
Department of Political Science and IQAC
B. Raghunath
Arts, Commerce and Science College
Parbhani - 431 401, Maharashtra

Human Rights - Theory and Practices
(मानवी हक्क : सिद्धांत आणि व्यवहार)

© Editors

Publisher and Printer
Prashant Publications
3, Pratap Nagar, Shri Sant Dnyaneshwar Mandir Road,
Near Nutan Maratha College, Jalgaon – 425001.
☎ *(0257) 2235520,2232800*
Website : www.prashantpublications.com
E-mail : sales@prashantpublications.com

First Edition : *19th March 2015*

ISBN : *978-93-85021-38-1*

Type Setting
Prashant Publication

Price : ₹ 200/-

Disclaimer : The author are solely responsible for the content of the papers compiled in this volume. The publisher editor or editor do not take responsibility for the same in any manner error if any purely unintentional and renders are requested to communicate such error to the editor or publisher to avoid discrepancies in future.

All rights reserved. No part of this publication shall be reproduced, stored stored in retrieval system or transmitted, in any form or by any means, electronics, mechanical, photocopying (Xerox copy), recording or otherwise, without the prior permission of the editors.

Historical Development of Human Rights

Dr.Rajendra.N.More
Dept.of Political Science
Sant.Ramdas Arts,comm.& science college,
Ghansawnagi, Dist-Jalna

Introduction:

Right are the some total of those of opportunities which insure in enrichment of human personality. Right are necessary conditions for development of human personality. These are also necessary for the development of the society and social values. Right are social requirement of an individual for the development of his personality and society at large. No man can attend the fullest development of his life in the absence of rights and liberties. Every society recognizes some rights and liberties for its members which are enforced and protected by the state. Thus these right are those which the individual enjoy as the citizen. When these right are declared through the constitution, they are generally know as a fundamental rights.

Historical Development of Human Rights:

The emphasize the Importance of Human Rights, objective like natural, fundamental human have been used in the long history of their development. Twentieth century has been described as the century of Human Right because the concept of human right became increasingly important in liberal democratic as well as in the socialist countries and the underdeveloped world.[1]Virtually, all state now subscribe officially to some doctrine of human right and in every case there is general Political theory justifying the kind of society and the Political institutions. Human rights refer to inherent universal rights of human beings regardless of jurisdiction or other factor, such as the ethnicity, nationality, or sex. Human rights constitute the very source of all rights of human beings. They provide for Moral foundation of any system of right. "Human right has always been an important, interesting and acute one"[2] within the discourse of social science, particularly in recent times. In two context, many researchers have been prompted to explore the basis, nature and scope of this subject. So an historical enquiry may help to understand its growth and development in different phases of Human society.

The concern for human rights became popular particularly in the twentieth century, though it had its roots in different forms since time immemorial. It is not static but part of continuing "dialectic process through which progress in the field might be and manifestly has been made."[3] Most of the students of Human Rights trace the historical origin of concept back to ancient Greece and Rome where it was closely linked with the pre - modern natural law doctrine of Greek stoicism.[4] This school of thought which was initially founded by Zeno of Citium. The theory of stoicism played a key role in political theories of natural Rights both in Greece. Western Political Philosophy, however contends that the classical Greek philosophy was based on an examination of the individual and his role in the running of a civil society in particular "the polis" - which became a precursor to Philosophical debate

This handbook provides code of ethics and conduct for members of the college's governing body, students and teachers of Sant Ramdas College .All members of the college's governing body, students and teachers must abide by this code of ethics and conduct. It is expected from all students to be well conversant with this code, which is displayed on the college website.

CODE OF CONDUCT FOR THE GOVERNING BODY

Members of the College's Governing Body should:

1. Strive to accomplish aims and objectives of the College,
2. To work hard to fulfill vision and mission of the institution
3. Act honestly and diligently in promoting the interests of the College
4. Follow the rules and acts of university and government in letter and spirit
5. Perform their delegated roles and responsibilities sincerely
6. Maintain transparency in financial matters
7. Give precedence to priority to interests of college
8. Show tolerance towards others differences of opinion
9. Present unbiased view on matters before the Governing Body
10. Not follow partisan or representative views
11. Resist any temptation or outside pressure to use the position for personal gain
12. Respect the confidentiality of the internal matters of institute

Code of Conduct for Students

- This code is applicable to all kinds of conduct of students in the campus
- At the time of admission, each student must sign an undertaking that he /she shall be regular. In case of cancellation of admission the student should clear pending library and other college dues
- All students must uphold academic integrity, respect to the staff.
- All students must deter from indulging in damage to college infrastructure
- Students must maintain decorum in the campus to maintain college's reputation.
- Student must possess identity card daily and it should be produced on demand
- No meetings and processions without permission from the institute is allowed.

- Unauthorized possession, carrying or use of any weapon, ammunition, explosives, or potential weapons, fireworks is strictly banned
- Students are not allowed to carry banned drugs.
- Smoking on the campus is strictly prohibited
- Possessing, consuming, distributing, selling of alcohol in the campus is prohibited
- Rash driving on the campus that may cause any inconvenience to others is punishable offence
- Misbehavior at the time of student body elections or during any activity of the Institute is not tolerated and dealt with stringent punishment
- Engaging in indecent conduct, creating unreasonable noise; pushing and shoving; inciting or participating in a riot or group at the Institute will not be tolerated.
- No videography in classrooms without permission.
- Students are expected to use the social media carefully and responsibly.
- Videography in the campus with bad intentions is not allowed
- Zero tolerance towards violence
- Ragging is a legal offence and it is banned in campus

Code of Conduct for Teachers

- Practice civility in interactions with students, parents and staff
- Respect to the others opinions
- Create a welcoming environment for parents/guardians
- Develop open communicate with students and parents.
- Develop professionalism
- Provide and receive feedback regarding teaching and learning
- Follow work culture
- Strive for the reputation of institution
- Students welfare as utmost priority
- Desisting from the unruly behavior
- No discrimination against parents, guardians, coworkers, based on race, color, religion, gender, gender identity, age, marital status, socioeconomic status, sexual orientation, physical characteristics and disability.

Swami Ramanand Shikshan Prasarak Mandal's

Sant Ramdas Arts, Commerce and Science College, Ghansawangi Dist. Jalna

Handbook of Code of Ethics

THEMATICS PUBLICATIONS PVT LTD
www.thematicsjournals.org

SOCIAL SCIENCE REPORTER
ISSN 2231-0789
Vol 4. Issue 3. Sep 2014. pp. 46-49
Available online at http://www.thematicsjournals.org/SocSciReporter
Paper received: 01 Sep. 2014. Paper accepted: 15 Sep. 2014

राजवटी आणि राष्ट्रांचे सार्वभौमत्व (विश्व व्यापार संघटनेचा भारतावर परीणाम)

प्रा.डॉ.राजेंद्र नामदेवराव मोरे

व्यापारी राजवटी म्हणजे आंतरराष्ट्रीय स्तरांवर राष्ट्रांमधील आर्थिक आणि व्यापारी संबंध नियंत्रित करण्यासाठी, त्यांचे व्यवस्थापन करण्यासाठी निर्माण करण्यात आलेली संस्थात्मक व्यवस्था होय. या संस्थेची विशिष्ट नियमावली असते आणि या नियमावलीच्या आधारे राष्ट्रामधील आर्थिक आणि व्यापारी संबंध नियंत्रित केले जातात. अशा राजवटी राष्ट्रांमधील औपचारीक करारा मधून आकाराला येतात. दुसऱ्या महायुध्दानंतर विश्वबँक, आर्थिक सहकार्य विकास संघटना आणि आंतरराष्ट्रीय नाणेनिधीचे अशाच स्वरूपाची भूमिका पार पाडली सन १९९५ मध्ये अस्तित्वात आलेली विश्व व्यापार संघटना (World Trade Organization) व्यापार राजवटीचा उत्तम नमुना आहे.

विश्व व्यापार संघटनेची भूमिका कशी राहिली भारताच्या सार्वभौमत्वावर काय परिणाम झाले. या पार्श्वभुमीवर WTO चे मूल्यमापन करणे क्रमप्राप्त ठरते. विश्व व्यापार संघटनेच्या डंकेल प्रस्तावाच्या आधारावर तयार करण्यात आलेला विश्व व्यापार संघटनेचा करार उद्दिष्टये, कार्य यांचे विश्लेषन करून काही प्रश्न उपस्थित केले. या प्रश्नांच्या उत्तरार्थ मांडणी करून आपल्याला निष्कर्षाप्रत जाता येईल. WTO मधील नवीन विषयांना विकसनशील राष्टांचा आक्षेप आहे. WTO ला आपल्या उद्दिष्टानुरूप कार्य करता आले नाही. WTO मध्ये विकसित राष्ट्राचे वर्चस्व आहे बहुराष्ट्रीय कंपन्याच्या अधिकारात आणि कार्यक्षेत्रात अमर्याद वाढ झाली त्याचा परिणाम भारताच्या सार्वभौमत्वावर परिणाम झाला. भारतासहीत विकसनशील राष्ट्रांच्या प्रमुख मुद्याकडे WTO ने दुर्लक्ष केले. काही प्रश्नांच्या उत्तरांच्या शोधात मांडणी करून सद्यस्थितीत व्यापार राजवटी आणि राष्ट्रांचे सार्वभौमत्व कोणत्या वळणावर आहे याचा वेध घेण्यात येईल. WTO च्या स्थापनेपासून विकसित आणि विकसनशील राष्ट्राच्या संदर्भात भूमिका काय बदलल्या आर्थिक आणि व्यापारी राष्ट्रांच्या अंतर्गत बदलच्या पार्श्वभूमीवर चिकित्सा करावी लागेल.

विश्व व्यापार संघटना :-

विश्व व्यापार संघटनेची स्थापना १ जानेवारी १९९५ ला झाली. गॅट्स वुडस करारांतर्गत निर्माण करण्यात आलेली व्यापार आणि शुल्कांची सर्वसाधारण व्यवस्था म्हणजेच जनरल ॲग्रीमेंट ऑन टेरिफ ॲंड ट्रेडच[1] ची जागा विश्व व्यापार संघटनेनी घेतली गॅटच्या तुलनेत शक्तीसंपन्न प्रभावी संघटन म्हणून विश्व व्यापार संघटनेची स्थापना झाली. विश्व व्यापार संघटना विभिन्न परिषदा आणि समित्यांच्या माध्यमातून आंतरराष्ट्रीय व्यापारांशी संबंधित करार लागू करतात. ही संघटना स्थापन होण्यापुर्वी सन १९८६ ते १९९४ अशी आठ वर्षे गॅट करारातील तरतुदीचे बदलत्या परिस्थितीनुसार पुनर्विलोकन करण्यासाठी आणि विश्व व्यापाराचे नियम ठरविण्यासाठी विकसित आणि विकसनशील राष्ट्रांमध्ये सविस्तर चर्चा चालू होती. या चर्चेअंती एक विस्तृत मसुदा तयार केला गेला. या बहुपक्षीय करारामध्ये ६० करारांचा समावेश होता हा करार बहुपक्षीय व्यापार प्रणालीसाठी संस्थागत तसेच कायदेशीर आधार उपलब्ध करून दिला.

विश्व व्यापार संघटनेची प्रमुख उद्दिष्टे :-

विश्व व्यापार संघटनेची निर्मिती आंतरराष्ट्रीय व्यापार नियंत्रित करण्यासाठी झाली. त्यानुसार या संघटनेची उद्दिष्टे ठरविण्यात आली.[2]

१) सदस्य राष्ट्रामध्ये खुल्या पध्दतीने व्यापार वृध्दीला प्रोत्साहन देणे.

२) सदस्य राष्ट्रांमध्ये उत्पादन व रोजगार यांची वृध्दी करणे.

३) स्वयंसवर्धित विकासाला प्रोत्साहन देणे.

४) सदस्य राष्ट्रामध्ये सहकार्य व समतेच्या आधारावर संबंध प्रस्थापित करणे.

५) सदस्य राष्ट्राच्या जीवन स्तरामध्ये सुधारणा करणे

६) पर्यावरण संरक्षण करणे

७) अविकसित, गरीब आणि विकसनशील राष्ट्रांना आर्थिक न्याय मिळावा यासाठी प्रयत्न करणे.

८) विश्वातील संसाधनाचा योग्य वापर करणे.

विश्व व्यापार संघटनेची सदस्य संख्या १५३ असून ९०% आंतरराष्ट्रीय व्यापार विश्व व्यापार संघटनेच्या अंतर्गत होतो. सदस्य राष्ट्रांच्या जीवनस्तरामध्ये सुधारणा करणे या उद्दिष्टांचा तसेच सहकार्य व समतेच्या आधारावर सुधारणा कराणे तसेच विकसनशील राष्टांना आर्थिक न्याय मिळणे आदी विषय विवादस्पद राहीले. व्यापार वृध्दीला प्रोत्साहन देवून सदस्य राष्ट्रामध्ये उत्पादन व रोजगारांची वृध्दी करणे, ह्या दृष्टीने WTO च्या मूळ उद्दिष्टांना तडा गेला. म्हणून WTO च्या

परभणी

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

ISBN 978-81-92939-55-1

National Level Conference on

Anti-Nuclear Weapons Movements and Politics

24th December 2014

Chief Editor
Dr. Vilas Sonawane

Editor
Prof. Suresh Bhalerao

SOUVENIR

Organized by

Department of Political Science and IQAC

B. Raghunath Arts, Commerce and Science College, Parbhani

(NAAC Accredited 'B' Grade with CGPA 2.46)

G.S.P.S's

B. Raghunath Arts, Commerce and Science College

Parbhani- 431 401 (Maharashtra)

(NAAC Accredited 'B' Grade with CGPA 2.46)

Jintur Road, Parbhani - 431401 (Maharashtra) Ph.No.02452-232374, Fax.- 02452-232374

Website : www.brcpbn.org | email : brcpbn@gmail.com

SOUVENIR

ACADEMIC

PUBLISHERS & DISTRIBUTOR

3, Pratap Nagar, Shri Dyaneshwar Mandir Road, Near Nutan Maratha College, Jalgaon - 425 001

Ph. : 0257-2232800, 2235520 - Cell No. : 94216 36460, 96656 26717

ISBN 978-81-92939-55-1

भारत - अमेरीका आण्विक करार - देखावा आणि मतितार्थ

प्रा.डॉ.राजेंद्र नामदेवराव मोरे
घनसावंगी, जि. जालना

भारत आणि अमेरीका नागरी अणुकराराची प्रक्रिया होऊन अनेक वर्ष गेली आहेत. भारताचे पंतप्रधान मनमोहन सिंग यांनी १८ जुलै २००५ मध्ये वाशिंग्टन दौऱ्यात अमेरीकेचे रिपब्लीकन पक्षाचे राष्ट्रध्यक्ष जॉर्ज डब्ल्यू बुश (ज्युनिअर) यांच्यामध्ये भारतात कार्योचे उद्दिष्टानुसार अणुउर्जेचा विकास आणि प्रयोग करण्यासाठी भारत आणि अमेरीका यांच्यामध्ये सहकार्ये करण्याचा करार झाला होता. या कराराला कायदेशीर स्वरूप मिळण्यासाठी २ मार्च २००६ मध्ये नवी दिल्ली येथे भारत - संयुक्त राज्य अमेरीका नागरी आण्विक सहकार्ये करार वर राष्ट्रपती बुश तसेच पंतप्रधान डॉ.मनमोहन सिंग यांनी स्वाक्षरी केली.

अमेरिकेची भारताविषयी भूमिका बदलून त्यांना भारताच्या मैत्रीची गरज वाटण्याची अनेक कारणे आहेत. भारताच्या लोकशाही व्यवस्थेमुळे, राजकीय स्थैर्यामुळे तिसऱ्या जगात उठून दिसतो. इथल्या वैधिध्याचेही अमेरिकनांना नैसर्गिक आकर्षण आहे. याच जोडीने नव्वदच्या दशकात आर्थिक सुधारणांमुळे भारताने केलेली प्रगतीही लक्षणीय आहे. त्यामुळे भारतीय बाजारपेठेत अमेरिकन बहुराष्ट्रीय कंपन्यांना विशेष रस आहे. भारताची वाढती लोकसंख्या तसेच सातत्याने आर्थिक वृध्दीमुळे बाजारपेठ वाढत आहे. अमेरीकेला भारतामध्ये गुंतवणुक करण्यात स्वारस्य आहे. त्याचप्रमाणे आउटसोर्सिंगचा व्यवसाय तंत्रज्ञ किंवा इतरही मनुष्यबळ आहे. आर्थिक आणि सामरिक मुदयांवर चीनला प्रतिस्पर्धी ठरू शकेल अशी क्षमता भारतामध्ये आहे. अमेरीकेचा प्रभाव आज अनेक राष्ट्रांना खटकत असला तरी अमेरिकेशी उघड शत्रुत्व न घेण्याचीच भूमिका रशिया, फ्रान्स, जर्मनी यांच्याप्रमाणे भारताची आहे. बदलत्या दक्षिण आशियाई राजकारणात पाकिस्तानवर दबाव

मानवी हक्क शिक्षण व विकास

संपादक

डॉ. शशिकांत पाटील

डॉ. आर. के. परदेशी

'मानवी हक्क, शिक्षण अणि मानवी विकास' हा विषय जेव्हा माझ्या महाविद्यालयाने चर्चासत्रासाठी निवडला तेव्हा त्यामागे घनसावंगी परिसर आणि महाराष्ट्रातील ग्रामीण परिसर डोळ्यासमोर आला. आज समाजात वाढती असहिष्णूता, संविधान आणि मानवी हक्कांविषयी अज्ञानता पाहिली तर ही ज्ञानशाखा सर्वांपर्यंत पोहचली पाहिजे. यातून लोकजागृती होईल आणि देशात एक नवे नेतृत्व निर्माण होईल. आपण बऱ्याचदा चर्चा करतो त्याचे फलीत काय? असा प्रश्न निर्माण होतो. पण जेव्हा ॲड. एकनाथ आव्हाड यांच्यासारखी चळवळीतील माणसे 'मानवीहक्क आणि त्यांचे शिक्षण' यासाठी झटतात तेव्हा आपणही या प्रवाहात सामील होऊन याविषयी चर्चा घडवून आणली पाहीजे. या उद्देशाने झालेल्या या चर्चासत्रातील सर्वच निबंध वाचनीय, अभ्यासपूर्ण असे आहेत.

-डॉ. आर. के. परदेशी
प्राचार्य, संत रामदास महाविद्यालय,
घनसावंगी, जि. जालना

चिन्मय
प्रकाशन, औरंगाबाद
९८२२८७५२१९

ISBN 938194883-6
9789381948835

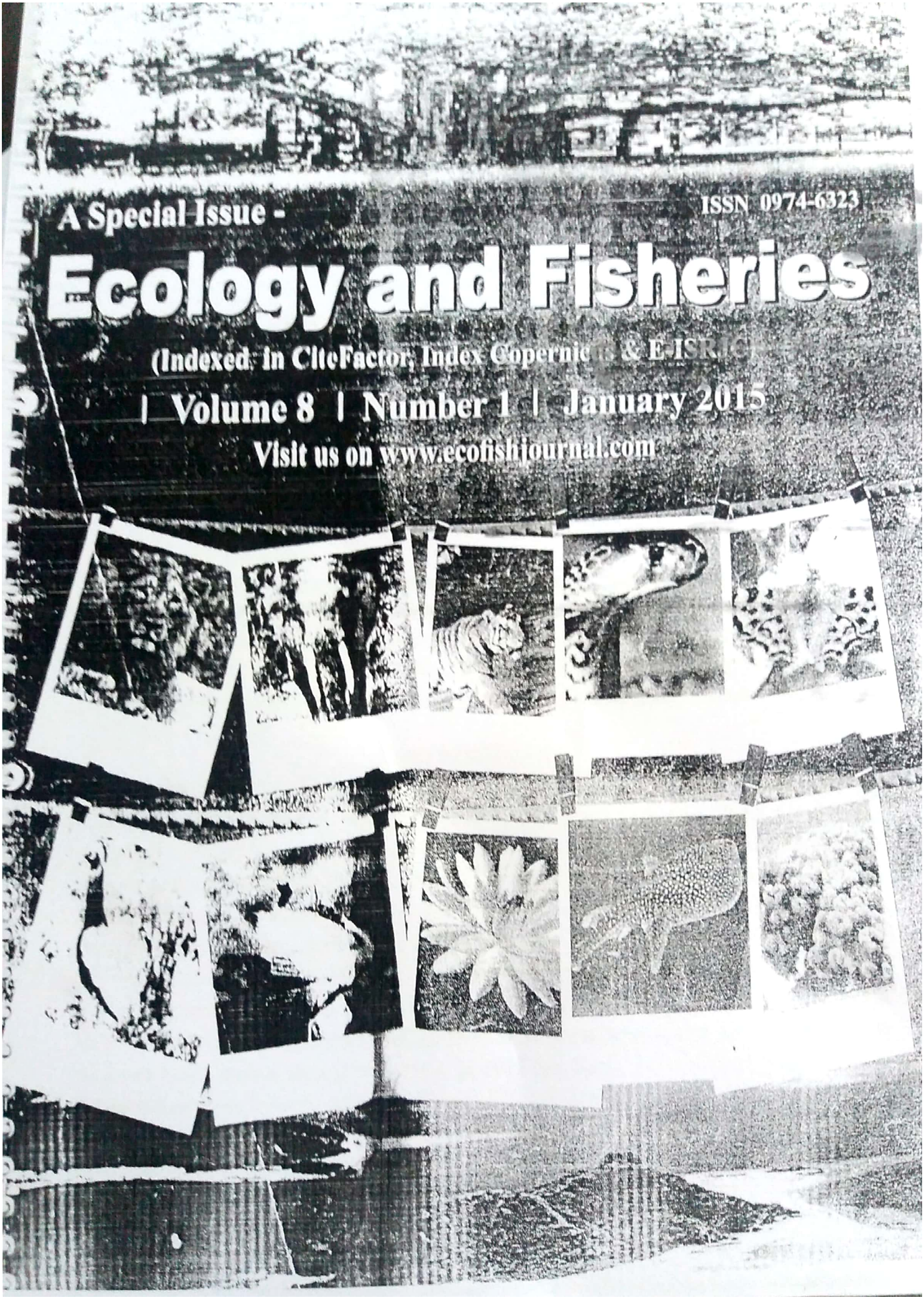

Scanned by CamScanner

Vol 8(1) 118-122

THE GENUS POLYPOCEPHALUS BRAUN (1878) WITH ITS NEW SPECIES, POLYPOCEPHALUS SHINDEI

Ashok Mote and Hemlata Wankhede[1]

Department of Zoology, Sant Ramdas College, Ghansawangi Dist. Jalna (M.S.) India.
[1]Director Govt. Pre. IAS Coaching Centre, Govt. College Campus, Near Subhedari Gust House, Aurangabad.

ABSTRACT

The present paper deals with new species of the polypocephalus shindei n.s.p. cestode parasites from the genus polypocephalus Braun 1878. The present species was collected from spiral valve of Rhynchobatus dieddensis at Kakinada, A.P. (East Coast of India) in the month of April 1988.

Scolex medium size, oval anterior region is having crown of 10 tentacles, posterior region having four accessory suckers, neck absent, oval, six number, cirus pouch medium, cirrus thick, genital pore small, ootype small, vitellaria granular.

key words: marine fish, cestode polypocephalus.

Material and Methods:-

This present species was collected from the spiral valve of rhynchobatus dieddensis at Kakinada, A.P. (East Coast of India), India. In the month of April 1988, The worm were collected and preserved in 4% formalin and stained, with harris haematoxilin, dehydrated cleared in xylene, mounted on DPX, Drawings, made with the aid of camera lucida Identification was carried out with the help of systema helminthes vol. II Yamuguti. All measurements in mm.

INTRODUCTION

Braun (1878) [1] erected a new genus polypocephalus with its type species P. radiates which was characterized by the presence of tentacles and suckers on the scolex. Linton (1889) [2] obtained a new species of the cestode from the intestine of trygon centrura which he named parataenia medusia. The scolex of linton;s species bears close resemblance to that of Braun's P. radiates, Shipley and Homell (1906) [3] described two new species of cestode Rhysanobothrium Uamakens and Anthobothirum pulchrum from Trygon uarnak and Trygon sephen respectively. Both these resemble the genus polypcephalus Braun (1878) [1] in the characters of their socolices. It seems evident that these authors had not seen either Braun's or Linton's work, for they refer to the fentacles on being very curious and as far as we know unique amongst cestode. In 1912 Southweel [4] described a new cestode Parataenia elongate from the intestine of Trygon Kuhil. Woodland (1930). [5] made a detailed study of Parataenia elongate Southwell and Parataenia medusia Linto and confirmed southwell's view that southweel considered. Thysanobothrium uarankens Shipley and Hornell and Parataenia elongate Southweel, to be synonynonymous with polypocephalus rediatus

Scanned by CamScanner

ISSN & 2347 - 6419

Peer Reviewed & Referred International Journal

साहित्य, समीक्षा, भाषा तथा अनुसंधान की अंतरराष्ट्रीय अर्ध-वार्षिक पत्रिका

KALYAN LITERARY AND EDUCATIONAL TRUST

GULBARGA

KNOWLEDGE IS POWER

डेक्कन हिंदी साहित्य एवं भाषा दर्पण

Deccan Journal of Hindi Literature and Language

Indexed with International ISSN Directroy, Paris

VOLUME : 1 ISSUE: 2 Jully-Dec. 2014

Founder Editor: Dr. D. T. Angadi

Editor : Dr. Sanjay Rathod

1. नई समीक्षा के आयाम
डॉ. भारती गोरे 1
2. अपने अस्तित्व और अस्मिता से जुझता हुआ आदिवासी समाज
डॉ. विष्णु सरवदे 8
3. दमन की दहलीज पर खडी होती हुई दलित कविता
डॉ. पी. व्ही. महालिंगे 9
4. सामाजिक मूल्य व्यवस्था में मीडिया की भूमिका
डॉ. संजय राठोड 16
5. गोरख पांडेय की कविता में सामाजिक सरोकार
डॉ. ज्ञानेश्वर महाजन 2
6. सत्तरोत्तर हिंदी दलित कहानिया
डॉ. सुकुमार भंडारे 7
7. सामाजिक व्यवस्था और दलितों की अस्मिता
डॉ. लक्ष्मण भोसले .....
8. 'अँधेरे का ताला' : वर्तमान शिक्षा व्यवस्था का पर्दाफाश
प्रा. संतोष गिन्हे .....
9. भारतीय साहित्य की अवधारणा
प्रा. सूर्यकांत चव्हाण .....
10. साठोत्तरी उपन्यासों में अंधविश्वास तथा धार्मिक पाखण्डता
डॉ. जालिंदर इंगले .....
11. मंगलेश डबराल के काव्य में नारी जीवन का परिदृश्य
डॉ. संजय राठोड, डॉ. साहेबराव पवार .....
12. संक्रमणकालीन हिन्दी कविता
डॉ.मीरा निचळे .....
13. उदय प्रकाश की कविता
प्रा. गजानन सवने .....
14. विधी क्षेत्र और राजभाषा हिंदी
डॉ. संतोश आढे .....
15. केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में राजनीतिक चेतना
प्रा.संतोष नागरे .....
16. प्रताप नारायण मिश्र के निबन्धो में सांस्कृतिक अभिव्यक्ति
सरिता यादव .....

हिंदी में रोजगार की संभावनाएँ

संपादक
डॉ. शहाबुद्दीन शेख

प्रबंध/कार्यकारी संपादक
डॉ. दस्तगीर देशमुख

संपादन-सहाय्य
डॉ. लियाकत शेख

नोट : प्रस्तुत ग्रंथ में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं । यह आवश्यक नहीं है कि संपादक उनके विचारों से सहमत हों।

ISBN : 978-93-82119-43-2

© : संपादकगण

मूल्य : पाँच सौ रुपये

प्रथम संस्करण : जून, 2015

प्रकाशक : नवभारत प्रकाशन
डी-626, गली नं. 1, अशोक नगर
(निकट ललिता मन्दिर)
शाहदरा, दिल्ली-110094
मोबाइल : 09968047183, 09717507223
email : fatehchand058@gmail.com

शब्द-संयोजन : मुस्कान कम्प्यूटर्स, दिल्ली-110094

मुद्रक : पूजा प्रिंटर्स
जगतपुरी विस्तार, दिल्ली-110093

30. अनुवाद में रोजगार की संभावनाएँ (साहित्येत्तरक्षेत्र)
सुलभा शेंडगे 178
31. फिल्मी संसार और रोजगार संभावनाएँ
डॉ. जंघाले झेड़यम 182
32. हिंदी विज्ञापन में रोजगार के अवसर / **प्रा. बेबी कोलते** 185
33. इलेक्ट्रॉनिक माध्यम और रोजगार / **प्रा. मोहन रमेश कोन्हाळे** 190
34. हिंदी का भविष्य : मीडिया में रोजगार की संभावनाएँ
डॉ. सविता नागरे 193
35. फिल्म जगत और रोजगार (पटकथा लेखन के संदर्भ में)
प्रा. डॉ. रमा दुधमांडे 196
36. मुद्रित माध्यम और रोजगार के अंतर्गत विज्ञापन में रोजगार
के अवसर / **प्रा. डॉ. कुसुम राणा** 201
37. सूचना प्रौद्योगिकी और रोजगार के अवसर
डॉ. मिर्जा अनिस बेग 206
38. हिंदी : पुरुषार्थ की दिशाएँ / **विश्वनाथ अं. अप्टुरे** 211
39. हिंदी में रोजगार के विविध अवसर / **शिराज शेख** 215
40. अनुवाद और रोजगार / डॉ. हाशमबेग मिर्जा / **किरण शिंदे** 220
41. मीडिया : रोजगार प्राप्ति का साधन / **प्रा. प्रणिता फड** 224
42. हिंदी में रोजगार की संभावनाएँ फिल्म जगत और रोजगार
प्रा. डॉ. राजश्री डी. भामरे 228
43. पत्रकारिता में रोजगार की उपलब्धियाँ / **डॉ. संतोष आडे** 232
44. हिंदी में रोजगार की संभावनाएँ : इलैक्ट्रॉनिक माध्यम के
संदर्भ में / **डॉ.जोगेंद्रसिंह बिसेन** 239
45. मुद्रित माध्यम और रोजगार में रेडियो का योगदान / रेखा कठारे 243
46. अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार के अवसर
प्रा. डॉ. अशोक गायकवाड 247
47. लहदी में रोजगार की संभावनाएँ / **प्रा. डॉ. ऐनुर एस. शेख** 250
48. हिंदी भाषा में रोजगार के अवसर / **प्रा. शरद कोलते** 256

मराठी

वाङ्मय प्रकारांची सैद्धांतिक रचना व अध्यापन पध्दती

मराठी वाङ्मय प्रकारांची सैद्धांतिक रचना व अध्यापन पद्धती

प्रकाशक व मुद्रक
श्री. रंगराव पाटील
प्रशांत पब्लिकेशन्स
३, प्रताप नगर, श्री संत ज्ञानेश्वर मंदिर रोड,
नूतन मराठा महाविद्यालयाजवळ,
जळगाव ४२५००१.
☎ (०२५७) २२३५५२०,२२३२८००
Website : www.prashantpublications.com
Email : sales@prashantpublications.com

प्रथम आवृत्ती : ३० जानेवारी २०१५

ISBN : 978-93-85021-25-1

© संपादकीय

अक्षरजुळणी
प्रशांत पब्लिकेशन्स

मूल्य : ₹ ४५०/-

या पुस्तकातील सर्व शोधनिबंध लेखकाची मौखिक परवानगी ग्राह्य धरूनच हे शोधनिबंध एकत्रित करण्यात आलेले असून, शोध निबंधातील मते ही प्रत्येकाची वैयक्तिक मते असून त्या मतांशी संपादक व प्रकाशक सहमत असतीलच असे नाही.

या पुस्तकाचे सर्व अधिकार लेखकाधीन असून या पुस्तकातील कोणताही मजकूर, तक्ता किंवा तत्सम संकल्पना यांची कोणत्याही प्रकारे नक्कल करणे किंवा यांत्रिकी साधनांनी फोटो कॉपी, रेकॉर्डींग करणे कायद्याने गुन्हा असून असे आढळून आल्यास

ललित गद्य वाङ्मय प्रकाराचे स्वरूप

प्रा. डॉ. गारोती माधवराव घुगे
संत रामदास कला,वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,
घनसावंगी, ता.घनसावंगी, जि.जालना.

प्रस्तावना :-

दहाव्या शतकात उदयास आलेला मराठी साहित्याचा प्रवाह उत्तरोत्तर विकसीत झालेला दिसतो. या एक हजार वर्षाच्या इतिहासात असंख्य वाङ्मयप्रकार व वाङ्मयीन प्रवाह मराठी साहित्यात निर्माण झाले. मध्ययुगीन काळात असणारे मराठी साहित्याचे पद्यमय रूप आधुनिक काळात गद्यमय झाले. १८१८ ला या देशात इंग्रजी अंमल सुरू झाला. याचा परिणाम भारतीय संपूर्ण समाजव्यवस्थेवर झाला. तसाच भारतीय साहित्यावरही झाला. मराठी साहित्य याला अपवाद नव्हते. इंग्रजी साहित्याच्या अनुकरणातून मराठी साहित्यात कथा, कादंबरी, नाटक, निबंध असे गद्य वाङ्मयप्रकार अस्तित्वात आले. 'कालाय तस्मै नम:' या उक्तीप्रमाणे काळाच्या गरजानुसारही वाङ्मयप्रकार निर्माण होत असतात. कुठलाही लेखक हा कधीही ठरवून लेखन करीत नाही. आपल्या मनातील भावभावनांची गर्दी तो प्रथमत: अविष्कृत करीत असतो. लेखकाजवळ असलेल्या अनुभवावरून अविष्कृत होणाऱ्या साहित्याचा आकार ठरत असतो आणि असे सारख्याप्रकारचे अनुभव साहित्यातून यायला लागल्यानंतरच साहित्याचे प्रकार अस्तित्वात येतात; तर काही वेळेस वाचकांच्या अभिरुचीनुसारही वाङ्मयप्रकार उदयास येतात.

अशाच प्रकारे १९५० नंतर मराठी साहित्यात ललितगद्य वाङ्मयप्रकार नावाने एक साहित्यप्रकार ओळखल्या जाऊ लागला. कथा, कादंबरी, नाटक या प्रमुख वाङ्मयप्रकारात न बसणारे असे ललित लेखन म्हणजेच साधारणपणे 'ललित गद्य' होय. १९८० नंतरच्या ललितगद्याने आपली स्वतंत्र ओळख निर्माण केलेली आहे. स्वत:ची सिद्धता सिद्ध केलेली आहे. याविषयी प्रा. भिमराव कुलकर्णी यांचे मत असे की, ''एक कालखंड असा होता की, त्यावेळी मराठी वाङ्मयाचा आढावा घेताना 'लघुनिबंध' ह्या वाङ्मयप्रकाराचा समावेश त्यामध्ये स्वतंत्रपणे करणे आवश्यक असे; परंतु गेल्या पाच-सहा वर्षात ही आवश्यकता कमी होत गेली आणि 'संकीर्ण ललित गद्य' असे ऐसपैस नाव देऊन कथा, कादंबरी, नाटक, चरित्रे, आत्मचरित्रे व कविता इत्यादी वाङ्मयप्रकारात न बसणाऱ्या वाङ्मयाचा समावेश 'ललित गद्य'

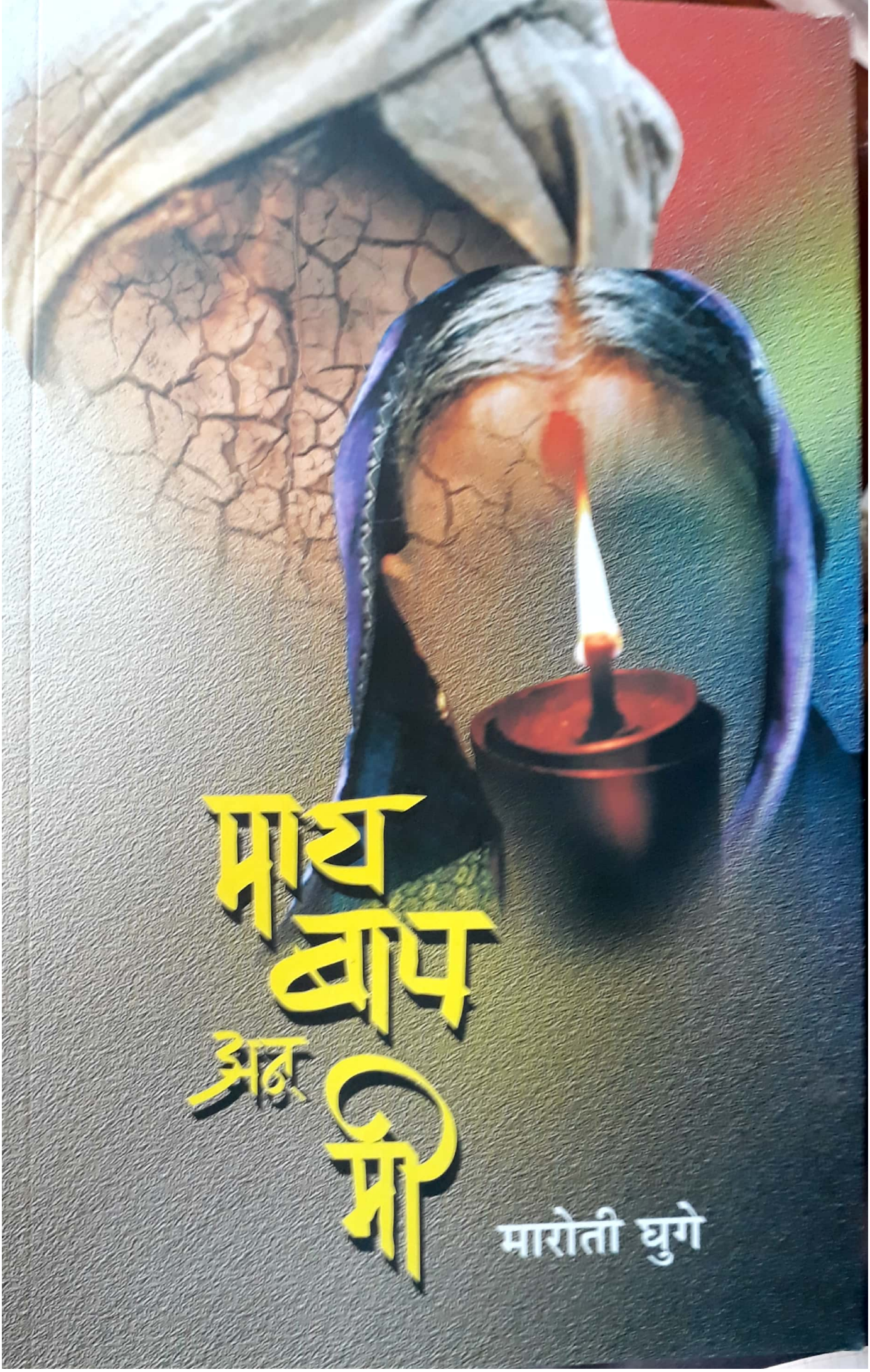

Scanned by CamScanner

- माय बाप अन् मी : प्रा. डॉ. मारोती घुगे
  May Baap an Mee : Dr. Maroti Madhavrao Ghuge
- लेखक - प्रा. डॉ. मारोती घुगे
  मो. नं. - ९८५०८०७६९८ / ८८५६८४६२८१

- © सौ. कल्पना घुगे

- प्रथमावृत्ती : १३ जानेवारी २०१५
- प्रकाशक : व्यंकटराव अर्जुनराव मोरे
  मैत्री प्रकाशन, लातूर
  मो.नं. - ९८५०७४०३६७
- मुद्रक : रुद्रायणी ऑफसेट, औरंगाबाद.
- मुखपृष्ठ : सरदार जाधव
- अक्षरजुळणी : संग्राम मोरे
- पृष्ठ संख्या : ७१
- मुल्य : ७०/-

ISBN : 978-93-84810-04-7

मा. आ. श्री. शिवाजीराव चोथे साहेब
श्री. त्र्यंबकराव केंद्रे
प्रा. डॉ. आनंद भंडारे
प्रा. डॉ. सुनिल व्यवहारे
यांना अर्पण.....

Scanned by CamScanner

ISBN No. 978-93-84451-43-1

DMIC- CHALLENGES AND PROSPECTS OF INDIAN ECONOMY

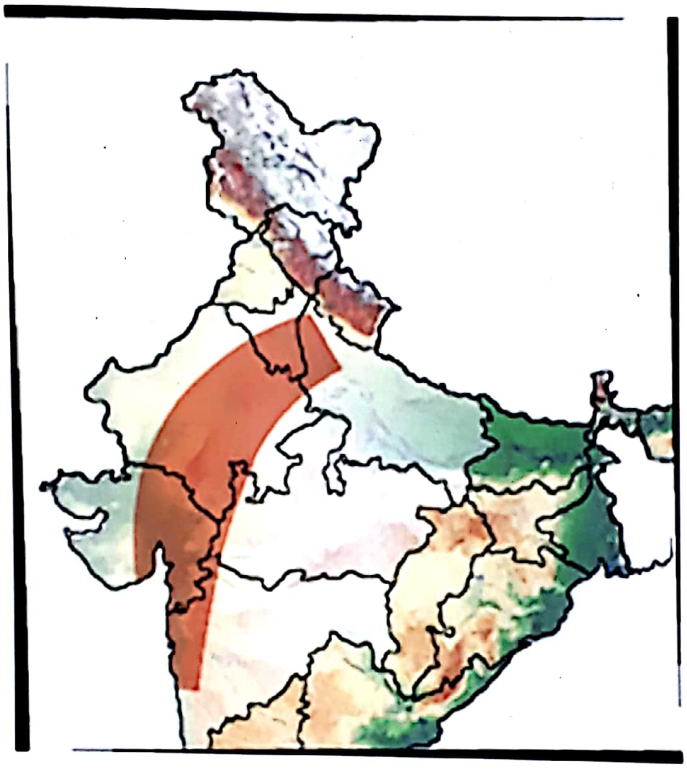

Chief Organizing Secretary

Dr. P.V. Jabde

Edited By

Dr. I.L. Chhanwal

Dr. S.E. Ghumatkar

Dr. D.A. Nikam

Scanned by CamScanner

ISBN No. 978-93-84451-43-1

Delhi-Mumbai Industrial Corridor: Employment Opportunities in Maharashtra

Dr.S.Y.Gande
Assistant Professor,& Head (Commerce) SantRamdas College,
Ghansawangi, Dist: Jalna (M.S.)

BACKGROUD

Government of India has announced the establishing the Dedicated Freight Corridor between Delhi and Mumbai, covering an overall length of 1483km and passing thrugh the States of U.P, NCR of Delhi, Haryana, Rajasthan, Gujarat and Maharashtra, with end terminals at Dadri in the National Capital Region of Delhi and Jawaharlal Nehru Port near Mumbai. This Dedicated Freight Corridor offers high-speed connectivity for High Axle Load Wagons (25 Tonne) of Double Stacked Container Trains supported by high power locomotives. The Delhi- Mumbai leg of the Golden Quadrilateral National Highway also runs almost parallel to the Freight Corridor.

DELHI-MUMBAI INDUSTRIAL CORRIDOR

The proposed high-speed connectivity between Delhi and Mumbai offers immense opportunities for development of an Industrial corridor along the alignment of the connecting infrastructure. A band of 150 km (Influence region) has been chosen on both the sides of the Freight corridor to be developed as the Delhi-Mumbai Industrial Corridor. The vision for DMIC is to create strong economic base in this band with globally competitive environment and state-of-the-art infrastructure to activate local commerce, enhance foreign investments and attain sustainable development. In addition to the influence region, DMIC would also include development of requisite feeder rail/road connectivity to hinterland/markets and select ports along the western coast.

Vision for DMIC

The vision for DMIC is to create strong economic base with globally competitive environment and state-of-the-art infrastructure to activate local commerce, enhance foreign investments and attain sustainable development.

Delhi-Mumbai Industrial Corridor is to be conceived as a Model Industrial Corridor of international standards with emphasis on expanding the manufacturing and services base and develop DMIC as the 'Global Manufacturing and Trading Hub'.

Project Goals

The developmental planning for DMIC aims to achieve certain end results with implementation that would ensure realization of envisaged vision for the project and lead to economic development. Accordingly the project goals for DMIC are:

- Double employment potential in five years
- Triple industrial output in five years
- Quadruple exports from the region in five years

ORGANIZATIONAL STRUCTURE & PROJECT IMPLEMENTATION FRAMEWORK:

Government of India has incorporated a special purpose vehicle, Delhi Mumbai Industrial Corridor Development Corporation (DMICDC), specially envisaged to coordinate DMIC Project Development, Finance and Implementation, headed by a full time Chairman and Directors and having representation from the Government of India and Financial Institutions.

An Apex Authority has been constituted under the chairmanship of Union Finance Minister with concerned Central Ministers and Chief Ministers of respective DMIC States as Members for providing overall guidance for planning and issue necessary approvals.

DMICDC will undertake project development activity for various central government projects and also help in assisting state governments, wherever desired. DMICDC will be responsible for assisting state governments in raising finances on the basis of a sovereign guarantee. The corporate entity will have a shell structure with 49% contribution by GOI and the remaining by Financial Institutions and other infrastructure organizations.

DMICDC will also act as a pass through entity for specific projects and raise Project Development Fund (PDF) from GOI, GOJ and FIIs. The PDF is proposed to be used as a revolving fund, specifically for undertaking project development activities (e.g. DPR preparation etc.), and shall be recovered from the successful bidders. This fund will also ensure availability of uninterrupted funds for various preparatory activities. The designatories of respective State Governments and the DFC implementing agency could be represented as Directors on the Board of DMICDC.

Scanned by CamScanner

ENGLISH STUDIES

International Research Journal

VOLUME 2

ISSUE 1

ISSN 2347-3479

Editor-in-Chief

Dr. Ratnakar D B

IMRF Journals

Ratna Prasad Multidisciplinary Research & Educational Society

अ.क्र.	निबंधाचे शीर्षक	संशोधक	पृ.क्र.
३३.	USE OF FIGURATIVE LANGUAGE IN ENGLISH LITERATURE	Dr. Karad Prakash Desai	124
३४.	BHARATA'S PATHETIC SENTIMENT AND 'MACBETH'	Anuru Mishra	126
३५.	THE GROWTH AND DEVELOPMENT OF CLASSICAL SANSKRIT DRAMA	Mr. Kakasaheb Dhaygude	127
३६.	AESTHETIC CONSCIOUSNESS OF RASA IN LITERATURE	DR RAJKUMAR M LAKHADIVE	130
	मराठी शोधनिबंध		
३७.	''प्रयोगप्रधान प्रतिमा नाटक"	प्रा. वेदांजली काळे	१३३
३८.	सावित्रीबाई फुले यांच्या काव्यातील वृत्त, अलंकार, छंद आणि काव्यनिर्मितीप्रक्रिया विचार	डॉ. श्रीराम गुंदेकर	१३७
३९.	संस्कृत नाटक - नांदी परंपरा	कु. प्रणिता उद्धवराव पाटील (पवार)	१४०
४०.	व्यंग्यार्थातील सूचकता	डॉ. आशा मुंडे	१४५
४१.	काव्यशास्त्रातील औचित्य विचार	प्रा. ओमप्रकाश मदनसुरे	१४
४२.	अभिनव गुप्ताच्या सिध्दांताचा प्रभाव	प्रा. शंकर धारबा घाडगे	१५
४३.	काव्यालंकार चर्चा	प्रा. किरण आर. नागपूरकर	१५
४४.	प्राचीन साहित्यमीमांसकानी प्रतिपादिलेली साहित्य लक्षणे : एक अभ्यास.	प्रा.अशोक भानुदासराव केंद्रे	१
४५.	काव्य प्रयोजन चर्चा	प्रा. राजेंद्र प्रसाद किशनराव आर्य	१
४६.	संस्कृत काव्यशास्त्राचा मराठी साहित्यावरील परिणाम	प्रा.डॉ. नरसिंग कदम	१
४७.	संस्कृत काव्यशास्त्र आणि तुकोबांचा अभंग	प्रा. सुधीर गरड	
४८.	प्रियदर्शिका नाटिकेतील विविध अलंकारांची उदाहरणे	संतोष महादेव कदम	
४९.	काव्यशास्त्रातील उपमा अलंकाराचा भवभूतीच्या उत्तररामचरित नाटकावर झालेला प्रभाव.	प्रा. जाधव एम.एस.	

CONTENTS

18. **DISCOURSE IN THE NOVEL – AN ESSAY BY M.M. BAKHTIN** 341
Shweta Sharma

19. **WOMEN EXPLOITATION RELATED ISSUES COVERAGE** 345
Kapil Dev, Anjum Shaheen

20. **PACKAGE DESIGN PERCEPTION: A MANAGEMENT MODEL** 349
Subramanian, S.R.

21. **EMPOWERING WOMEN THROUGH EDUCATION** 352
Dr.Kesang Degi

22. **HINDU-CHRISTIAN COMMUNALISM, INTERACTIVE TRADITIONS** 355
Immanuel Ebenezar E.D.

23. **FALLING IN LINE: A CASE STUDY ON SITUATING STUDENTS** 364
Shiny Bhardwaj, Jamia Millia Islamia

24. **THE NEED FOR REMEDIAL TEACHING IN LANGUAGE LEARNING** 368
Dhaygude kakasaheb dhondiba

25. **INTERACTIVE ART AND ARCHITECTURE AS RESOURCES** 371
Immanuel Ebenezar E.D.

26. **RETIRED PEOPLE: ECOMOMIC MULTIPLIERS** 377
Arun Raste

27. **A STUDY ON THE EFFECT OF MODULAR APPROACH** 381
Dr. B. Reena Tok, Subhangini Boruwa

28. **ICONIC DESIGNS OF AGRA'S MUGHAL MONUMENTS** 385
Meenakshi Kumar Seth, Dr. Parul Bhatnagar

29. **VOCATIONAL EDUCATION WITH SKILL DEVELOPMENT** 389
Dr. Parul Bhatnagar, Radhika Seth, Meenakshi Kumar Seth

30. **THE ROLE OF ICT TO PRODUCE ENHANCED EDUCATIONAL** 392
L.Mathu Krithigha

31. **SOCIAL WORK INTERVENTION FOR WOMEN TO COPE HIV** 396
Mary Princess Lavanya

32. **HUMAN ECOLOGICAL STUDIES IN A SEMI-ARID VILLAGE** 399
C.Jeyalakshmi

33. **THE GENDERED BODY: GENDER POLITICS AROUND** 403
Manjima Biswas

34. **A STUDY ON RELATION BETWEEN PROFILE** 407
Dr. K. Anitha Kumari, Dr. Ch. Venugopal Reddy, K.N.Raja Kumar

ISBN 978-93-84124-21-2

CONTENTS

18. LANGUAGE PROJECTS: AN INNOVATIVE PRACTICE IN ELT
Vakulabharanam Anantalakshmi

19. USING SHORT STORIES AND INTERESTING LITERARY TEXTS
Gurmeet Sodhi

20. ENGLISH LANGUAGE NEEDS OF UG AGRICULTURE STUDENTS
Sarap N.S.

21. TWO CITIES, TWO CULTURES, ONE WORLD
Binu George

22. THE PARALLELISM OF CASTE CONSCIOUSNESS
Samjy Mathew

23. EVOLUTION OF WEST AFRICAN WRITINGS IN ENGLISH
M.Priya

24. SOCIALITE EVENINGS: A QUEST FOR IDENTITY
Joan Leela Madtha

25. TEACHING MEDIA LANGUAGE IN THE RECENT SOCIO-CULTURAL
Kakasaheb D Dhaygude

26. TREATMENT OF NATIONALITY, INTERNATIONALITY
Abdul Nasir Vellarampara

27. 'LIMINALITY: A PROBLEM OR A STATE?' CRITICAL ANALYSES
Sruthy B

28. ECOCRITICISM: A MIND EXPANDING STUDY
Dr. Suresh Frederick

29. REPRESENTATION OF CASTE, CLASS AND GENDER
Mahesh Naik S, Dr. Nagya Naik B.H

30. ENHANCING THE SOFT SKILLS OF ENGINEERING STUDENTS
Radhika Shanmugam

31. THE SHATTERED DREAMS OF REPATRIATION
Dr. A. Sheeba Princess

32. THE JOURNEY OF THE NIGERIAN WOMEN EN ROUTE
Velma Mohan

33. LANGUAGE ON THE THRESHOLD OF THE GLOBALIZATION
Dr. Preeti Oza

34. YOUTH REQUIRE SOFT SKILLS TODAY
B. Shoba.Rao

ISBN 978-93-84124-19-9

CONTENTS

18. LANGUAGE PROJECTS: AN INNOVATIVE PRACTICE IN ELT
Vakulabharanam Anantalakshmi

19. USING SHORT STORIES AND INTERESTING LITERARY TEXTS
Gurmeet Sodhi

20. ENGLISH LANGUAGE NEEDS OF UG AGRICULTURE STUDENTS
Sarap N.S.

21. TWO CITIES, TWO CULTURES, ONE WORLD
Binu George

22. THE PARALLELISM OF CASTE CONSCIOUSNESS
Samjy Mathew

23. EVOLUTION OF WEST AFRICAN WRITINGS IN ENGLISH
M.Priya

24. SOCIALITE EVENINGS: A QUEST FOR IDENTITY
Joan Leela Madtha

25. TEACHING MEDIA LANGUAGE IN THE RECENT SOCIO-CULTURAL
Kakasaheb D Dhaygude

26. TREATMENT OF NATIONALITY, INTERNATIONALITY
Abdul Nasir Vellarampara

27. 'LIMINALITY: A PROBLEM OR A STATE?' CRITICAL ANALYSES
Sruthy B

28. ECOCRITICISM: A MIND EXPANDING STUDY
Dr. Suresh Frederick

29. REPRESENTATION OF CASTE, CLASS AND GENDER
Mahesh Naik S, Dr. Nagya Naik B.H

30. ENHANCING THE SOFT SKILLS OF ENGINEERING STUDENTS
Radhika Shanmugam

31. THE SHATTERED DREAMS OF REPATRIATION
Dr. A. Sheeba Princess

32. THE JOURNEY OF THE NIGERIAN WOMEN EN ROUTE
Velma Mohan

33. LANGUAGE ON THE THRESHOLD OF THE GLOBALIZATION
Dr. Preeti Oza

34. YOUTH REQUIRE SOFT SKILLS TODAY
B. Shoba.Rao

ISBN 978-93-84124-19-9

A CRITICAL STUDY OF MAHESH DATTANI'S PLAY *DANCE LIKE A MAN*
Bharat Arvind Tupere & V.M. Rasure
188 - 193

MYTH IN CONTEMPORARY INDIAN ENGLISH NOVEL
Manoj C. Zade
194 - 199

DISLOCATION & IDENTITY IN TONI MORRISON'S NOVEL *JAZZ*
Prashant U. Gambhire
200 - 204

RECENT TRENDS IN ENGLISH LANGUAGE TEACHING
Sangeeta Subhash Hingmire
205 - 213

HUMANITY AT RECEIVING END IN DAVID MITCHELL'S *CLOUD ATLAS*
Kakasaheb D. Dhaygude
214 - 218

LITERATURE AND ENVIRONMENT: A ECOCRITICAL NOTE
Parmeshwar V. Zakade
219 - 227

FEMINIST ISSUES IN THE POEMS OF KAMALA DAS: A STUDY
B.N. Waghmare
228 - 236

IDENTITY CRISIS: A STUDY OF BHARATI MUKHERJEE'S *JASMINE*
Madhav D. Shrimangale
237 - 242

VISHWABHARATI

RECENT TRENDS IN ENGLISH LANGUAGE & LITERATURE

Volume 1

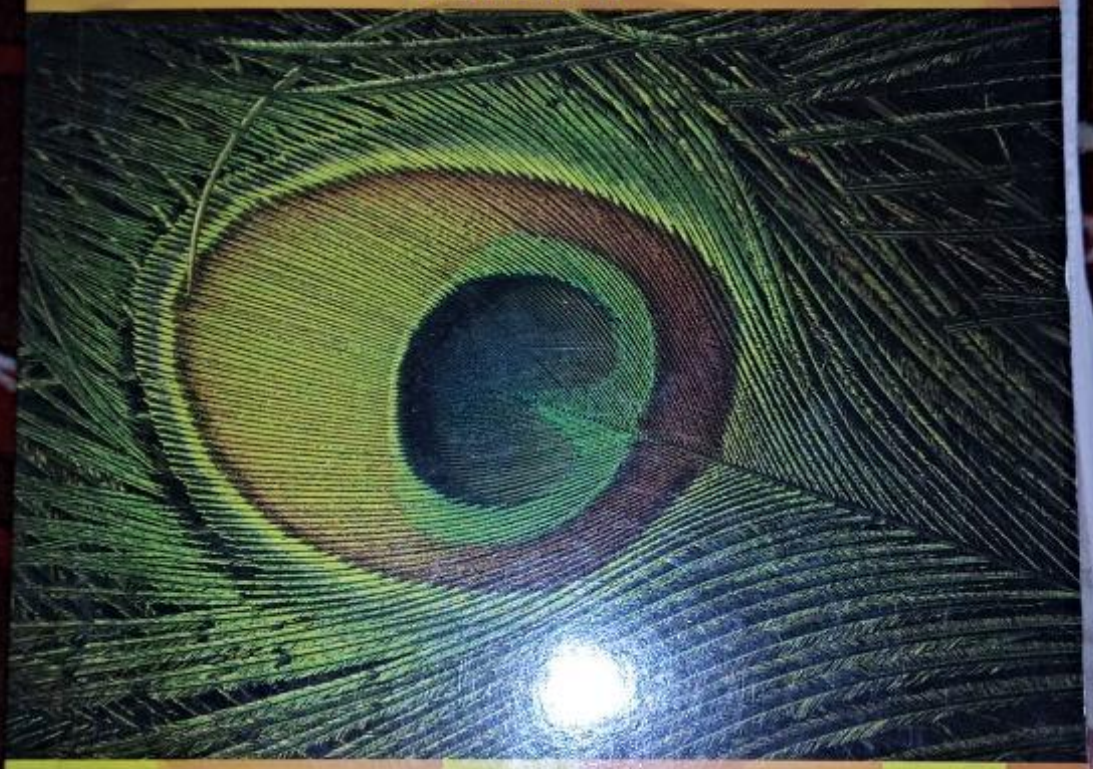

Dr. D.P. Garud
Chief Editor

Dr. T.M. Pawar
Editor

ISBN :978-81-930150-8-7

International Conference

on

||Sant Mahatmyanchi Bhumi||

Histories of Interactions, Connections & Subjectivities in Aurangabad Region

19-20-21, June, 2015.

Conference Souvenir

Organized by

Urdu Education Society, Aurangabad

Chishtiya College, Khuldabad & Aurangabad History Society, Aurangabad

Sponsered by

UGC & ICSSR New Delhi &

Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University Aurangabad (M.S.) INDIA

मध्ययुगीन कालखंडातील संत तुकाराम महाराजांचे सामाजिक योगदान

प्रा. डॉ. राजेंद्र थाये,
'सहयोगी प्राध्यापक', इतिहास विभागप्रमुख
संत रामदास महाविद्यालय, घनसावंगी, जि. जालना.

मध्ययुगात मानवी जीवनाच्या शिक्षण, साहित्य, कायदा, नीती, इत्यादी सर्व क्षेत्रात धर्माचे अधिराज्य चाले. समाजाची उंचनीच पातळी धर्मकल्पनांच्या शुद्धाशुद्धतेवर अवलंबून असे. म्हणून धर्मजीवन निकोप राखण्याची जबाबदारी तत्वज्ञ, आचार्य, शास्त्रज्ञ पंडीत व भक्तीमार्गी संत ह्या समाजधुरिणांवर पडे. रुढ तत्वचर्चा आणि शास्त्रनिर्णय यांचा प्रवाही लोकजीवनाशी मेळ बसणे ज्या-ज्या परिस्थितीत अशक्य होई, त्या त्या वेळी मानवतेला आवाहन करुन सदाचाराचा नवा आदर्श घालून देणारे संतच त्या त्या काळच्या परिस्थितिप्राप्त लोकजीवनाला योग्य वळण लावण्यास समर्थ ठरल्याचे दिसून येते.[1] लोकजीवनात संतांचे कार्य महत्त्वपूर्ण राहीलेले आहे.

महाराष्ट्रात संत परंपरेचा उदय तेराव्या शतकाच्या उत्तरार्धात यादवांच्या राजवटीत झाला. यादव राजे वैदिक धर्माचे पुरस्कर्ते होते. सर्व लोकांचे आचरण बहूशः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्त विचारांना अनुसरुन चालले होते. शंकराचार्यांच्या मायावादी अद्वैतवादाची छाप महाराष्ट्रातील बुद्धिवंतांवर पडली होती. वैदिक परंपरेचे पुनरुज्जीवन करणारे टिकाग्रंथ विज्ञानेश्वर, हेमाद्री, श्रीधर बोपदेव इत्यादी पंडीत लिहित होते. ज्योतिष, गणित, वैद्यक, संगीत इत्यादी लौकीक विद्या-कला यांवरही ग्रंथ-निर्मिती होत होती. पण हे सारे ज्ञानभांडार संस्कृतमध्ये असल्याने उच्चवर्णीयांपुरतेच मर्यादीत राहात होते. शिवाय त्यांच्या जीवन व्यवहारात शब्द प्रामाण्य नि तंत्रनिष्ठा यांवरच भर असे, त्यामुळे उच्चवर्णीय शास्त्री-पंडीत प्रेरणाशून्य व प्रवाहपतित बनले होते. त्यांच्यांत द्वैती-अद्वैती, कर्ममार्गी-ज्ञानमार्गी, स्मार्तभागवत इत्यादी पंथोपपंथ निघून वैचारीक दृष्ट्या सर्वत्र अराजक माजले होते, एकंदरीत तेराव्या शतकाचा उत्तरार्ध हा वैदीक संस्कृतीच्या दृष्टीने धर्मग्लानीचा व सामाजिक अवनतीचा काळ होता. या सांस्कृतिक अधःपाताला तोंड देण्यासाठी भारताच्या निरनिराळ्या प्रदेशात लोकभाषांतून भक्तीमार्गाचा प्रचार करणारे भागवतधर्मी संत पूढे आले.[2]

भक्तीपंथापूर्वीच्या काळात महाराष्ट्रात अनेक समूह नांदत होते; पण समाज नव्हता. येथे वेगवेगळी दैवते, वेगवेगळ्या उपासनापद्धती, वेगवेगळे खेळ व वेळ घालविण्याची साधने होती. या भूभागावर राहाणाऱ्या सर्वांना एकत्र आणील असे काही नव्हते. भक्तीसंप्रदायांनी या वेगवेगळ्या समुहांना एकत्र आणून एक समाज निर्माण करण्याचे कार्य केले. भक्तीपंथाच्या संतांचे साहित्य हे आध्यात्मिक लोकशाहीचे साहित्य आहे. हे साहित्य म्हणजे समता, बंधुता व आध्यात्मिक स्वातंत्र्य यांची निःश्वासितेच आहेत. या साहित्याने समाजाला मातृभाषेविषयी, मराठी भाषेविषयी आस्मिता दिली. संतांच्या या साहित्यामूळे साहित्य हे ब्राह्मण, शूद्र अशा कोणत्याही एका समूहाचे न राहाता ते मराठी साहित्य झाले. संत साहित्याने निर्माण केलेले आध्यात्मिक आदर्श व ध्येय यांच्या एकात्मतेचा परिणाम म्हणून समाजाचे भौतिक आदर्श, ध्येय व भाषा यांचीही एकात्मता झाली. म्हणून भक्तीपंथाच्या संतांनी केवळ साहित्य निर्माण केले असे नाही तर महाराष्ट्रातील लोकांना त्यांनी राष्ट्र बनविले.[3] असे वा.ब. पटवर्धन स्पष्टपणे नोंदवतात. न्यायमूर्ती रानडे यांनी महाराष्ट्रातील संतांची चळवळ व पश्चिम युरोपातील धर्मसुधारणेची चळवळ यामध्ये कसे साम्य आहे.[4] हे दाखवून दिले. त्याचबरोबर संतांची धर्मसुधारणेची चळवळ ही त्या काळातील राजकीय चळवळीला पुरक होती अशी न्यायमुर्ती रानडे यांची भूमिका होती.

संत ज्ञानेश्वर, संत नामदेव, एकनाथ याच संत मालिकेतील संत तुकाराम महाराज पण एक संत. तुकारामांनी भक्तीपंथाचा प्रसार करताना समाजातील नीतिमूल्यांची जोपासना केली असे म्हटले तरी एवढ्याने त्यांच्या कामगिरीचा पुरा उलगडा होत नाही. तुकाराम जातीने शुद्र व व्यवसायाने वैश्य होते. त्यांनी आपल्या अभंगात या गोष्टीचा अनेकदा उल्लेख केला आहे. महाराष्ट्रात शहरे अगोदर थोडी आणि त्यामानाने व्यापारही बेताचाच. यामूळे येथील सर्वसाधारण वैश्यांची स्थिती शूद्रांहून फार भिन्न नव्हती. तेंव्हा महाराष्ट्रातील बहूजन समाजाची संस्कृती ही मुख्यतः शेतकऱ्यांची व कारु-नारुंचीच होती असे म्हणावयास हरकत नाही. या वर्गाच्या भावना आणि आकांक्षा तुकारामांच्या वाङ्मयात आत्मीयतेने प्रकट झाल्या आहेत. हेच त्यांच्या व्यक्तीभावाचे वैशिष्ट्ये आहे. "संत तुकाराम महाराजांबद्दल महाराष्ट्रातील ख्यातनाम विचारवंत व इतिहासाचे गाढे अभ्यासक डॉ.आ.ह. साळुंखे म्हणतात की, 'तुकाराम! मानवी जीवनातील नाना प्रकारच्या उत्कट अनुभवांना अत्यंत आशयघन शब्दांत साकार करणारा एक शब्दार्थप्रभू प्रतिभावंत. धर्माला नीतीचे आणि निष्कपट भावनेचे अधिष्ठान देणारा एक आचारशील भक्त. अक्षरशः सर्वस्व पणाला लावून सांस्कृतिक व सामाजिक अन्यायाच्या विरोधात दंड थोपाटणारा एक आव्हानवीर योद्धा, प्रतिभावंत, भक्त आणि योद्धा या तिन्ही भूमिकांचा एकत्र मिलाफ झालेला महापुरुष-कवी तुकाराम, संत तुकाराम, विद्रोही तुकाराम."[5] तुकाराम महाराज हे डोळस आणि संवदेनशील गृहस्थ होते. ते डोळस असल्यामुळे आपल्या अवती-भोवतीच्या सामाजिक परिस्थितीचे बारकाईने निरिक्षण करीत होते. त्यामुळे आपल्या समाज-व्यवस्थेतील त्रुटी आणि उणिवा त्यांना जानवू लागल्या होत्या. धर्माच्या नावाखाली होणारा अन्याय,

मराठ्यांच्या इतिहासाचे पुनर्लेखन

REWRITING OF THE MARATHA HISTORY

संपादक

डॉ. जगदीश भेलोंडे डॉ. कारभारी भानुसे

डॉ. प्रकाश महाजन

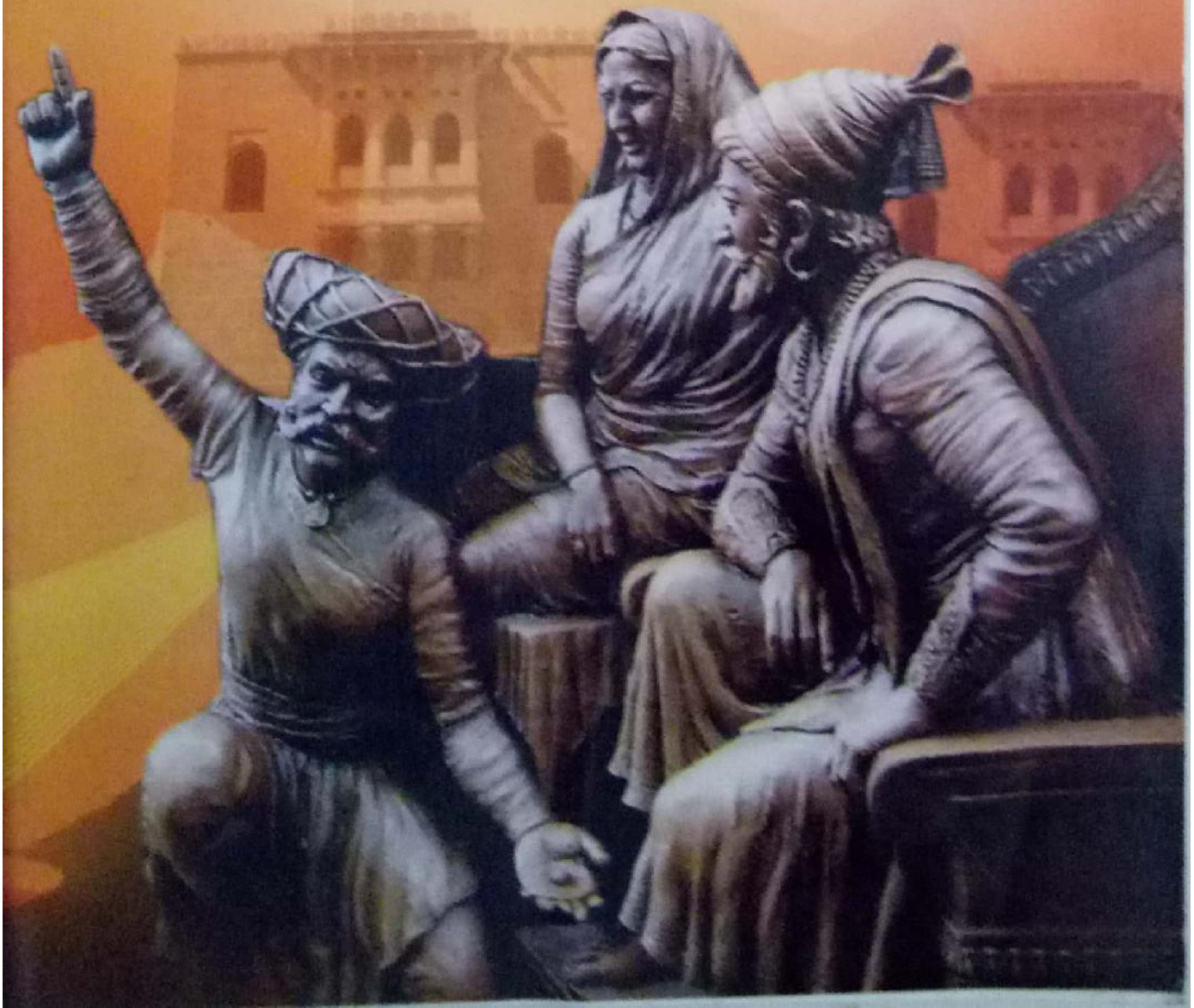

10 छत्रपती शिवाजी महाराजांच्या स्वराज्य स्थापनेत संत तुकाराम महाराजांचे योगदान

डॉ. राजेंद्र धाये

सहयोगी प्राध्यापक व इतिहास विभागप्रमुख,

संत रामदास महाविद्यालय, घनसावंगी जि. जालना.

---

१७ व्या शतकामध्ये शहाजी राजांचा पुत्र शिवाजी महाराजांनी स्वराज्याची स्थापना केली. रयतेचे लोककल्याणकारी राज्य स्थापन करुन त्यांनी एक क्रान्ती घडवली. ग्रँट डफ या इंग्रज अधिकाऱ्याने मराठा सत्ता अस्तास गेल्यानंतर मराठ्यांचा समग्र इतिहास इ.स. १८२६ मध्ये तीन खंडात प्रसिद्ध केला. ग्रँट डफ आपल्या ग्रंथाच्या सुरुवातीसच लिहितो की, सह्याद्रीच्या रानात वाळलेले गवत पेटून जसा वणवा पेटतो, त्याप्रमाणे महाराष्ट्रातील ह्या मूळच्याच उच्छृंखल व लुटारु वृत्तीच्या हिंदूंनी (मराठ्यांनी) मुसलमान राज्यकर्त्यांच्या विरुद्ध उठाव केला, आणि मग या उठावाच्या वणव्याचे दूरदुरचे लोकही आश्चर्य करु लागले.[1] म्हणजेच, तो मराठी सत्तेच्या स्थापनेला (स्वराज्य) अचानक पेटलेला वणवा संबोधतो. या स्वराज्य स्थापनेचे श्रेय तो शिवाजी महाराजांच्या नेतृत्वाला, पराक्रमाला देत नाही. विनायक दामोदर सावरकर शिवाजी महाराजांच्या स्वराज्य स्थापनेबद्दल म्हणतात की, दैवाने म्हणा, देवाची इच्छा म्हणून म्हणा, काकतालीय न्यायाने म्हणा, किंवा पेरलेल्या प्रयत्नांचे अेकसमयावच्छेदेकरुन बहरुन आलले पीक म्हणून म्हणा, पण, जिजामातेच्या गृहांगणातील शिवाजीच्या ह्या जन्मापासून अेक आश्यर्यकारक परिवर्तन हिंदू - मुसलमान युद्धसंघर्षातील राष्ट्रीय रणांगणातही घडून आले.[2] म्हणजेच सावरकरही शिवाजी महाराजांच्या स्वराज्य स्थापनेच्या कार्याला योगायोगच समजतात. काही इतिहासकार तर शिवाजी महाराजांच्या स्वराज्य स्थापनेचे श्रेय त्यांच्याशी काहीही संबंध नसणाऱ्या व्यक्तींना देवून टाकतात, तेही त्यांचे मार्गदर्शक, गुरु ठरवून.

इतिहास हा व्यक्तींविषयी, व्यक्तींच्या उपक्रमाविषयी, चळवळींविषयी काही उच्चारण करीत असतो. म्हणजे माहिती देत असतो. ही माहिती कथाकादंबऱ्याप्रमाणे काल्पनिक नसते. कागदपत्रे, पत्रव्यवहार, बखरी रोजनिशा, नाणी, ताम्रपट, कोरीव लेणी इत्यादी

20

" बाबासाहेब आंबेडकरोत्तर परिवर्तनवादी दलित चळवळ"

कौतिक दांडगे
संशोधक विद्यार्थी
इतिहास विभाग
डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर
मराठवाडा विद्यापीठ, औरंगाबाद

डॉ. राजेंद्र घाये
मार्गदर्शक
सहयोगी प्राध्यापक व इतिहास विभागप्रमुख,
संत रामदास महाविद्यालय, घनसावंगी,
जि.जालना.

प्रस्तावना :

नामांतर आंदोलनाने दलितांमध्ये सांस्कृतिक क्रांतीचा प्रारंभ केला. जातीव्यवस्थेने नाकारलेल्या शूद्रातिशूद्रांच्या प्रतिकाना मानचिन्हांना सन्मान मिळवून देणारा हा लढा होता. तो एक व्यवस्था परिवर्तनाच्या लढ्याचा एक महत्त्वपूर्ण भाग असून क्रांतीकारी असे जनआंदोलन होते की, ज्यामध्ये लाखो वेगवेगळ्या जातीधर्मातील स्त्री-पुरुषांनी प्रत्यक्षा सहभाग घेतला आणि स्त्री-पुरुषांतील कृत्रिम भेदाभेद नष्ट करणारा ठरला. समाजात अस्तित्वात असलेली हजारो वर्षांपासून चातुर्वण्य जातीव्यवस्था व त्यामुळे पदोपदी दिसणारी व अस्पृश्यशंना लाभगत असलेली उच्च-निचता, भेदाभेद, शोषण, अमानुषता इत्यादी विरूद्धचा हा संघर्ष होता. नामांतर चळवळीत खरे तर सर्वसामान्य माणसाने खूप मोठा त्याग केला. नामांतर चळवळीत बाबासाहेबांवरील निष्ठेपायी तो या लढत्या स्वयंस्फूर्तीने सामील झाला होता.

मराठवाडा विद्यापीठाची स्थापना :

मराठवाड्यासाठी स्वतंत्र विद्यापीठ निर्मीतीचा ठराव झाला आणि मग या ठरावाच्या अंमलबजावणीसाठी मराठवाड्यातील शिक्षण तज्ञ विधी मंडळाचे सदस्य, संसद सदस्य यांनी पाठपुरावा सुरू केले. दि. ९ जानेवारी १९५७ रोजी या मंडळींचा सहभाग असलेले एक शिष्ट मंडळ मुंबई राज्याचे मुख्यमंत्री यशवंतराव चव्हाण यांना भेटले. चव्हाण हे शिक्षण प्रेमी असल्यामुळे त्यांनी या विषयाला प्राधान्य दिले कारण १९५० साली जेथे एकाच खाजगी महाविद्यालय होते ते त्या मराठवाड्यातील अनेक जिल्ह्यामध्ये महाविद्यालये सुरू झाली होती. त्यांचे सुसुत्रीकरण महत्त्वाचे होते आणि म्हणूनच ना. यशवंतराव चव्हाण यांनी दि. २७ एप्रिल १९५७ रोजी न्या. पळणीटकर यांच्या अध्यक्षतेखाली एक समिती स्थापन केली या समितीकडे अनेक कामे सोपविण्यात आली होती या समितीवर प्रा.म.भि. घिटणीस, डॉ. डी.डी. शेंदारकर, सेतु माधवराव पगडी यांची नियुक्ती झाली होती.[१]

भूमीहिनांचा लढा :

आपण नादुरूस्त की दुरूस्त यापेक्षा जनतेचे प्रश्न घेऊन लढा उभारतो की नाही हे महत्त्वाचे. हा धागा घेऊन नारुरूस्तवाल्यांनी भूमीहिनांच्या प्रश्नावर लक्ष केंद्रित केले. दि.१४ व १५ मे,५९ रोजी पार पडलेल्या अधिवेशनात एक महत्त्वाचा ठराव पास करण्यात आला होता, तो असा - "सर्व जमिनीची मालकी सरकारने घ्यावी व त्या जमिनीवर काम करू इच्छिनाऱ्यांना काम करू द्यावे. खर्च वजा जाता उत्पादनाची वाटणी समप्रमाणात करावी."[२]

बौद्धांना सवलती :

१९५६ पासूनचा एक महत्त्वाचा प्रश्न म्हणजे बौद्धांना सवलती देण्याचा. बाबासाहेबांनी धम्मदिक्षा १४ ऑक्टोबर,५६ ला घेतल्यानंतर महाराष्ट्र (मुंबई) सरकारने विपरीत अहवाल पाठविला असणार, कारण 'सर्व भारत बौद्धमय करेन' ही बाबासाहेबांची घोषणा पंचशीलाचा आग्रह धरणाऱ्या पं. नेहरू यांना सुद्धा पेलवता येण्यासारखी नव्हती आणि म्हणून सरकारने तातडीने दि.०२.१०.५६ रोजी ६३ वी घटना दुरूस्ती

ISBN NO. 978-93-83401-27-7

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTI DISCIPLINARY RESEARCH (IJMR)

ISSN 2277-9302
Vol. VI, Issue 5 (II), September 2016

Refereed Journal

ISSN: 2277-9302

श्री क्षेत्र विज्ञानेश्वर, आपेगाव : एक दृष्टीक्षेप

डॉ. राजेंद्र साहेबराव घावटे
सहयोगी प्राध्यापक व
इतिहास विभागप्रमुख,
संत रामदास महाविद्यालय,
घनसावंगी जि. जालना.

सामाजिक शास्त्रे, विज्ञान, तंत्रज्ञान अशा सर्व क्षेत्रामध्ये संशोधनाच्या माध्यमातून माहितीचा प्रवाह वाढत आहे. बौद्धिक आणि व्यावहारिक समस्यांची उत्तरे शोधून काढणे हा संशोधनाचा प्रयत्न असतो. आरंभीपासूनच मानवाला आपल्या सभोवतालच्या घटकाबद्दल कमालीची उत्सुकता वाटत आली आहे. यामुळे मानवाने भोवतालच्या परिसराविषयी सतत चिंतन केलेले दिसते. म्हणूनच एखाद्या ऐतिहासिक समृद्ध परंपरा लाभलेल्या मंदीराविषयी संशोधन होऊन त्यावर प्रकाश पडणे गरजेचे ठरते. मानवाची सामाजिक प्रतिबद्धता, अध्यात्मिक अनुभूतीची क्रियात्मक अभिव्यक्तीशी संबंधित परंपरा, विश्वासाला व श्रद्धेच्या समष्टीला मंदीर संस्कृती म्हणतात. कोणत्याही देवस्थानाला जो दर्जा मिळतो तो श्रद्धेवर अवलंबून असतो. म्हणूनच एखादी इमारत, स्थान, ओटा, दगड वा आसन यांनाही हा दर्जा मिळू शकतो. यासाठी देवस्थान मोठे वा प्रसिद्धच असावे असे काही आवश्यक नसते. भारतात धार्मिक भावना प्राचीन कालखंड ते आजतागायत प्रबळ राहिलेली आहे. म्हणून विविध मंदीर भारतीयांनी निर्माण केली. ती जोपासली व वाढवली आहेत. काळाच्या ओघात या मंदीरांच्या विविध स्थापत्य शैली उदयास आल्या. या शैली मंदीराच्या रचनेवरून पडल्या आहेत. एकाच देवाची मंदीरही भारतात सारखी नाहीत. त्याचे एकमेव हेच कारण आहे. मंदीर स्थापत्याच्या बाबतीत विविधता असली तरी भारतीयांची श्रद्धा व भावना नेहमीच धर्मनिरपेक्ष राहिलेली आहे. देवांच्या मूर्तीची घडणही वेगवेगळी आहे. काष्ठकला, शिल्पकला, चित्रकला व कोरीव काम ही मंदीराची अविभाज्य अंग राहिलेली आहेत. प्राचीन काळापासून मंदीरांना सजावट करणे हे नित्याचेच होते. मंदीराच्या काही नव्या भागांचा विकासही नवीन दृष्टीने झालेला दिसतो. काही मंदीरात मूर्ती प्राचीन पण मंदीर आधुनिक काळाचे प्रतिक अशीही रचना आपणास पाहावयास मिळते.[1] सर्व प्रकारच्या धार्मिक वास्तूंच्या निर्मितीमागे एक तत्वज्ञानात्मक विचारधारा होती. त्यानुसार इमारतीचा विकास केला जाई. मंदीराची इमारत ही केवळ त्या देवतेचे निवासस्थान नव्हे तर त्या देवाचे ते शारीरिक स्वरूप होय, अशी दृढ भावना होती. म्हणून आजही अनेक भाविक देवालयात प्रवेश करताना प्रवेशद्वाराच्या पायरीला हात लावून वंदन करतात. देवालय व त्याचे शिखर उंच-उंच बांधण्यामागे वास्तुशास्त्रविषयक गरजेचा किंवा सौंदर्याचा विशेष भाग नाही. तर स्वर्ग व पृथ्वी यांना विभागणाऱ्या मेरू पर्वताची ती प्रतिकृती आहे, अशी श्रद्धा आहे. या शास्त्र ग्रंथात मंदीराच्या विविध भागांच्या प्रमाणांचे निश्चित नियम सांगीतलेले आहेत. गर्भगृहाच्या भिंतीची रुंदी ही मूलभूत प्रमाण घटक मानली जाते. गर्भगृह हे नेहमी घनाकारच असले पाहिले असा नियम घालून दिलेला आहे. त्याची उंची भिंतीच्या रुंदी इतकीच असली पाहिजे. त्यावरील शिखराची उंची भिंतीच्या उंचीच्या दुप्पट असावी. त्याप्रमाणेच मंदीराच्या विविध भागांची मोजमाप तपशिलवार दण्यात आली आहेत.[2] ..... मूळ भारतीय धर्मात, म्हणजेच वैदिक संस्कृतीत देवांना अग्निमध्ये आहुती दिल्या जात आणि आहुती अग्नी देवांना पोचवतो अशी धारणा होती. त्यामुळे यज्ञाविधी हाच पूजेचा एकमेव प्रकार प्रचलित होता. मूर्तिपूजेचे उल्लेख वेदांमध्ये आढळत नाहीत. त्यामुळे देवांच्या मूर्ती बनवणे आणि या मूर्तीकरीता वास्तू किंवा मंदीर बांधणे ही संकल्पनाच वेदविधींना अज्ञात किंवा परकी होती. त्यामुळे आपल्या आचार्यांचे प्रतिनिधित्व करणाऱ्या प्रतिकांची किंवा त्यांच अवशेषांनी युक्त असलेल्या स्तूपासारख्या वास्तूची पूजा करणाऱ्या बौद्धांना आणि जैनांनाही ती नवीन होती असे युरोपीय विद्वानांच्या एका गटाचे ठाम मत होते.....[3]

भारतीय जीवनप्रणालीचा व विशेषत: महाराष्ट्राच्या सांस्कृतिक वारशाचा विचार करता शिवाला समर्पित असलेली मोठी परंपरा रूढ आहे. बारा ज्योतिर्लिंग किंवा चारधाम यांविषयीचे आकर्षण भारतीय मनाला कायम राहत आले आहे. या पार्श्वभूमीवर विज्ञानेश्वराचे आपेगाव या शिवस्थानाला विविध पैलू असून अनेक अंगांनी त्याचा विचार करावा लागतो. आज रुढ असलेल्या गोदावरीच्या प्रवाहापासून या स्थानाची उंची साधारणत: २४ ते २५ मीटर आहे. पात्रात दत्तात्रेयांचे एक स्थान दाखवले जाते. समोरच दक्षिण तटावर पांचाळेश्वर हे महानुभावांचे स्थान आहे.[4] अंबड तालुक्यातील गोदावरीच्या उत्तर काठावर वसलेले हे गाव विज्ञानेश्वराचे आपेगाव म्हणून ओळखले जाते. शहागड, पैठण या उपमार्गावर हे स्थान आहे. मराठवाड्याने महाराष्ट्राला दोन ज्ञानेश्वर दिले. एक आपेगावचे संत ज्ञानेश्वर तर दुसरे आपेगावचे विज्ञानेश्वर. या दोन पैकी एक आपेगाव औरंगाबाद तर दुसरे जालना जिल्ह्यात आहे. या विज्ञानेश्वराच्या आपेगावची माहिती महानुभावांच्या स्थान पोथीत आहे. याच आपेगावी श्री क्षेत्र विज्ञानेश्वर यांचे एक भव्य मंदीर आहे. मंदीराच्या चारही बाजूला भव्य अशी तटबंदी आहे. गर्भगृहाच्या मुख्य प्रवेशद्वाराच्या आतील बाजूस एक शिलालेख असून तो प्रकाशित आहे.

श्री वंकनाथ देवाचे चरण ओल-गाओ। सें
नन्मज ..... त्प का.....
यस्ख धारुपंडीत अन्वय पदमण पंडीतु सुतु
पेईदेओ पंडितु जी।

असा शिलालेख असून या लेखाचे वाचन डॉ. शं.गो. तुळपुळे यांनी केले आहे. लेखास दोन बाजू असून मध्ये एक मुर्ती आहे. त्यात चार ओळी असून वंकनाथ म्हणजे शिव, त्यालाच विज्ञानेश्वर असे अक्षरशत्रीका यादवकालीन आहे. तो १२ व्या शतकापूर्वीचा असावा, असे डॉ. तुळपुळे म्हणतात. वंकनाथ म्हणजे शिव, त्यालाच विज्ञानेश्वर असे म्हणतात. तसेच विज्ञानेश्वराचे मूळ नाव वंकनाथ आहे, हेही यावरून कळते. कोणीतरी विज्ञानेश्वर उपासकाने हा शिलालेख कोरून ठेवला आहे. हा उपासक पेईदेव पंडीत या पदमन पंडीत नामक कायस्थाचा पुत्र होता. त्याने या विज्ञानेश्वराची मनोभावे सेवा केली असा उल्लेख लेखात मिळतो. शक्यता आहे की, यानेच या शिवमंदीराची उभारणी केली असावी. या मंदीराची उपासना पुढे चालू राहावी ही अपेक्षा तो व्यक्त करतो. मात्र त्याने मंदीराला काय दिले हे कळत नाही. शिलालेखाच्या शेवटी शापवचन व आशीर्वचन आहे.[5] या स्थानाच्या संदर्भात लिला चरित्र व गोदावरी महात्म्यात अनेक संदर्भ आलेले आहेत. स्वत: चक्रधर स्वामींनी पूजा करून या लिंगास विडा वाहिला, असे उल्लेख मिळतात. गोविंद प्रभु यांनीही या स्थानास भेटी दिल्याचे उल्लेख मिळतात.

श्री प्रभु गोसावी। आत्मतीर्थपासी ।।२४।।
विज्ञानेश्वरासी। विजे केले।

Administration Of Shivaji Present Perspectives

NATIONAL CONFERENCE

Feb. 12 & 13-2016

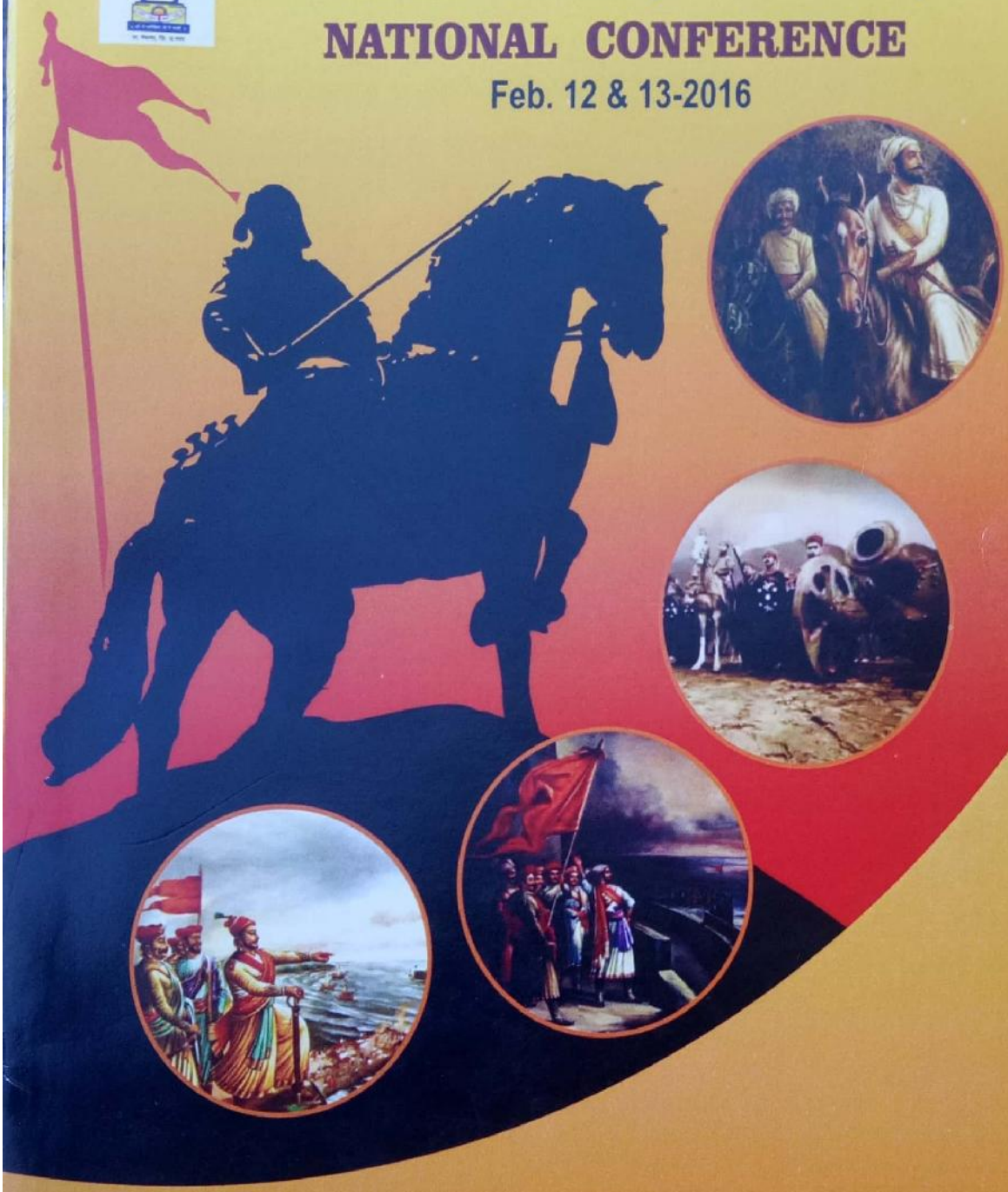

Associate Editor
Dr. Darade S.S.
Assit. Professor Dept. of History

Guest Publisher
Dr. Kalhapure G.B.
Principal

Chief Editor
Dr. Sonawane D.J.
Head & Assit. Professor Dept. of History

छत्रपती शिवाजी महाराजांची चलन व्यवस्था

- डॉ. राजेंद्र धाये
'सहयोगी प्राध्यापक' व इतिहास विभागप्रमुख संत रामदास महाविद्यालय, घनसावंगी, जि. जालना.

छत्रपती शिवाजी महाराजांचे आयुष्य हे स्वातंत्र्यरक्षणाच्या ध्येयाने प्रेरित होऊन अविश्रांत झगडणाऱ्या, पण तरीही विचार आणि विवेकाची कास न सोडणाऱ्या मानवश्रेष्ठाचे चरित्र आहे. महाराजांची ध्येये, त्यांचे रणांगणातील कौशल्य, लष्करी डावपेच, वेळप्रसंगी माघार तर संधी पाहून आक्रमण, आपण स्थापित असलेले राज्य हे खऱ्या अर्थाने कल्याणकारी ठरावे, आपल्या जनतेचा सर्वांगीण विकास व्हावा, आपले सांस्कृतिक जीवन समृद्ध व्हावे आणि सर्वात महत्त्वाची गोष्ट म्हणजे राष्ट्राची अस्मिता जागृत व्हावी यासाठी महाराजांनी केलेली प्रयत्नांची पराकाष्ठा हे सर्व पाहता त्यांचे आयुष्य म्हणजे समकालीनांना एक चमत्कार तर वाटलाच, पण आजतागायत भारतातील पिढ्या त्यांच्या चरित्राने भारावून गेल्या आहेत.[१] प्रत्येक स्वतंत्र राज्याची कायम अशी काही धोरणे असतात. ती सोडून त्यास आपले स्वतंत्र अस्तित्वच टिकवता येणार नाही. तसेच प्रत्येक चिरकाल टिकणाऱ्या राज्यास काहीतरी नैतिक पाया की, जो राज्याच्या अस्तित्वाचेच नैतिक आदिकारण जे प्रजारंजन त्याला कायम पोषक होईल असा असावा लागतो. मोगल बादशाही एका दृष्टीने परकी ना, पण तिचेही एक नैतिक कारण व तेच तिचे धोरण होते. आखिल भारत वर्षात सतराशे छपन्न लहानमोठे संस्थानिक जिवंत राहून त्यांनी सतत आपसांत झगडत राहावे, प्रजेची सारखी पायमल्ली करावी, अनेक करांनी प्रजेस नाडावे, सर्वच व्यवहार अडचणीचा करावा, सार्वत्रिक हिताची कामे हातात घेण्यास दौर्बल्यामूळे नेहमीच असमर्थ राहावे, सांस्कृतिक वाढीस अवसरच न ठेवावा, अशा स्थितीपेक्षा एकच राज्य-आसेतु-हिमाचल असावे; त्यातील राज्यपद्धती एकसारखी असावी; राज्याची भाषा, कालमापन, नाणी, वजने, एक असावीत; बऱ्याच प्रजाविभागाने सतत परचक्राच्या भयात रहाण्यापेक्षा कायम शांतता अंतस्ततः तरी नांदावी हे इष्ट नव्हते काय?[२] छत्रपती शिवाजी महाराजांनी स्थापण केलेले राज्य आसेतू हिमाचल नसले तरी स्वराज्यातील प्रत्येक व्यक्तीला ते आपले वाटत होते. राज्यात सुव्यवस्था होती, रयतेच्या भाजीच्या देठालाही हात लावण्याची कोणाची हिम्मत नव्हती. प्रशासकीय कारभार नियंत्रित व चोख होता. चलन व्यवस्थेविषयी सुद्धा शिवाजी महाराज अत्यंत जागरुक होते. त्यांचीही एक स्वतःची चलन व्यवस्था होती. त्यांनी चलनाचे महत्व ओळखले होते. म्हणूनच त्यांनी इंग्रजांना आपल्या राज्यात त्यांच्या नाण्याला सतत विरोधच दाखवला. इंग्रजांना त्यांनी आपल्या राज्यात नाणे (इंग्रजांचे) चलनात आणण्यास सतत विरोधच केला. ही त्यांच्या चलन व्यवस्थेची दूरदृष्टीता होती.

सतराव्या शतकात दख्खन देशात-ज्यात महाराष्ट्र, आंध्र, कर्नाटक प्रांत मोडतात- विविध प्रकारची नाणी प्रचलित होती असे उपलब्ध ऐतिहासीक साहित्यावरुन दिसून येते. महाराष्ट्रापुरते बोलायचे झाले तर ऐतिहासीक दस्तऐवज आणि बखरीतून शिवराई, होन, फनम, चक्रम, पादशाही होन, निशाणी होन आणि होनांचे इतर प्रकार यांचा उल्लेख आढळतो. होन हा कानडी शब्द असून त्याचा अर्थ सुवर्ण असा आहे. याखेरीज लारी, रुपये, अश्रफी, टका ही चांदीची आणि छत्रपती अथवा शिवराई, सजगणी, तिरुका, रुका, पैसा, दाम, अडका, चवल, जित्तल, दुवल, पाल, ब्याल अशी तांब्याची नाणी आर्थिक व्यवहारासाठी वापरली जात होती. अगदी छोट्या देव-घेवीसाठी कवड्यांचा देखील वापर केला जाई.[३] शिवकालीन महाराष्ट्रात सोन्याची, चांदीची आणि तांब्याची नाणी प्रचलित होती, ही सर्वच नाणी महाराष्ट्रात पाडलेली नव्हती. मुघल, मुसलमान

Kamaladevi Educational Trust's

NATIONAL SEMINAR ON

"DR. BABASAHEB AMBEDKAR : A TRUE BUILDER OF NATION AND GLOBAL LEADER"

Organized by
Department of Social Science

Kamaladevi College of Arts and Commerce

(Affiliated to University of Mumbai)
Established in 2009-2010

Opposite Vitthalwadi Railway Station,
Behind S T Bus Depot,
Vitthalwadi (East), Kalyan -421305
Phone No. 0251-2360084/ 2360023

Email: ketkdcollege555@rediffmail.com
Website: kamaladevicollege.org

27th February, 2016

BA -61

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे शैक्षणिक विचार

डॉ. राजेंद्र धाये,
'सहयोगी प्राध्यापक' इतिहास विभागप्रमुख
संत रामदास महाविद्यालय,
घनसावंगी, जि. जालना.

==========

गोषवारा :

शिक्षण ही व्यक्ती व राष्ट्राच्या जीवनातील एक मौलीक व मूलभूत प्रक्रिया आहे. जीवन व्यवस्थीत जगण्यासाठी, ते सुखी व यशस्वी करण्यासाठी शिक्षण आवश्यक आहे. शिक्षण मानवी जीवनाचा अविभाज्य भाग आहे. शिक्षणामुळे व्यक्ती व समाज बाह्य आणि आंतरिक अंगाने बदलतात. शिक्षण व्यक्तीच्या भावना आणि सहजप्रवृत्ती संस्कारीत करते, व्यक्तींना सुसंस्कृत, संवेदनशील आणि विवेकशील बनविते. तिच्यामध्ये स्वतंत्र, चिकित्सक व सर्जनशील विचार करण्याची कुवत निर्माण करते. शिक्षणामुळे व्यक्तीला तिच्या अवती–भोवती कोणत्या घटना घडत आहेत, त्यामागची कारणे कोणती असावीत आणि त्यासंदर्भात स्वतःला काय करणे शक्य आहे? याचे भान येते. शिक्षण व्यक्तीमध्ये अन्याय, शोषण, गुलामगिरी याविरुद्ध संघर्ष करण्याची चेतना निर्माण करते. शिक्षण व्यक्तीमध्ये नवीन विचार आणि मूल्यांचे स्फुलिंग टाकते. व्यक्तींना भोळ्या समजूती आणि अंधश्रद्धांतून मुक्त करते. व्यक्तीला शिक्षणातून विधायक दृष्टी प्राप्त होते. [1] जागतिक मानवी समूह हे ढोबळ मानाने प्राचीन दासप्रथा, मध्ययुगीन सरंजामशाही व आधुनिक भांडवली व्यवस्था अशा टप्प्यांमधून विकसित झाले. दुसऱ्या शब्दांत हे मानवी समुद दासप्रथेवर आधारलेली गुलामगिरी, त्यानंतर भूदासांच्या शोषणावर आधारलेली सरंजामशाही व नंतरच्या काळात कामगारांच्या शोषणावर अधिष्ठीत असलेली औद्योगिक भांडवलशाही अशा अवस्थांमधून सातत्याने सापेक्षतः अधिक प्रगत समाजव्यवस्थेच्या दिशेने संक्रमित झाले. या समाजव्यवस्थांमध्ये शिक्षण व्यवस्थेचे स्वरुप वैशिष्ट्येपूर्ण राहिले आहे. या प्रत्येक कालखंडातील शिक्षणव्यवस्था ही त्या काळातील सत्ताधारी वर्गाने स्वतःच्या नियंत्रणात ठेवली व तिचे स्वरुपदेखील स्ववर्ग हितास पोषक राहील असेच ठेवले.[2] अशी मांडणी कार्ल मार्क्स या तत्वज्ञाने केलेली आहे. ब्रिटीशांनी भारतात सुरु केलेली शिक्षणपद्धती ही भारतातील ब्रिटीशपूर्व शिक्षणपद्धतीपेक्षा आमुलाग्रपणे भिन्न होती. ही शिक्षणपद्धती भारतात जरी ब्रिटीशांच्या वासाहतिक गरजेतून विकास पावली असली व तिचे स्वरुप हे वसाहतवादाला पोषक असे जरी राहीलेले असले तरी ती भारतीय जातपिडीत शिक्षणपद्धतीपेक्षा गुणात्मकदृष्ट्या भिन्न होती, अधिक प्रागतिक होती.[3] ब्रिटीशांच्या शिक्षणपद्धतीने भारतीयांना नव्या वैश्विक व वैज्ञानिक दृष्टीकोनाची ओळख करुन दिली. आणि हीच घटना भारतीयांच्या दृष्टीने महत्त्वाची ठरली.

ISBN No. 978-93-83342-25-9

46.

महात्मा गांधी आणि लोकशाही राज्य

डॉ. राजेंद्र साहेबराव धाये
'सहयोगी प्राध्यापक' व इतिहास विभागप्रमुख,
संत रामदास महाविद्यालय, घनसावंगी, जि. जालना.

जगात आज तंत्रज्ञानाचा स्फोट झालेला आहे. मानवाने विज्ञानात अत्युच्च शोध लावले आणि जगाला जवळ आणण्याचे महान कार्य साधले. आज जगाने विज्ञानात प्रगती साधली असली तरी त्याच प्रमाणात मोठ्या समस्याही आज जगासमोर येऊन ठेपल्या आहेत. या सर्व समस्यांचा शोध आम्हाला, विचारवंतांना आणि वैज्ञानिकांना गांधी विचारातच आहे हे स्पष्ट होते.

लोकशाहीत लोकमताची सत्ता चालली पाहिजे. जर सरकारच प्रत्येक गोष्ट करु लागले आणि लोक काहीच करीनासे झाले किंवा सरकारला मोडता घालू लागले तर तो लोकशाहीचा अभाव होईल.[५] लोकांचे सरकार हे कधीही लोकमताच्या पुढे जाऊन काम करणार नाही. ते जर लोकमताच्या विरुद्ध गेले तर त्याचा नाश होईल. लोकशाही शिस्तबद्ध व सुबुद्ध असणे ही जगात पहिली महत्त्वाची गोष्ट आहे. जी लोकशाही पूर्वग्रहांनी दूषित, अज्ञानी, खोट्या समजूती बाळगणारी असेल ती अंधाधुंदीत सापडेल आणि आपोआपच नष्ट होऊन जाईल.[६] जेंव्हा लोक एखादी विशिष्ट गोष्ट मानतात आणि मागतात अशा वेळी लोकशाहीत घाबरटपणा मुळीच चालणार नाही. लोकांच्या प्रतिनिधींनी या मागणीला फक्त आकार देणे आणि ती सुलभ करणे एवढेच त्यांचे काम आहे.[७] लोकांच्या हाती सत्ता केंद्रित झाली म्हणजे त्याच्या स्वातंत्र्यात होणाऱ्या हस्तक्षेपाचे प्रमाण कमी-कमी होत जाते. जे राष्ट्र सरकारच्या हस्तक्षेपाशिवाय आपले कार्य शांततापूर्वक व परिणामकारकरित्या करुन दाखविते त्यालाच खऱ्या अर्थाने 'लोकशाहीप्रधान राज्य म्हणता येईल. जेथे अशी परिस्थिती नसेल तेथे सरकारचे बाह्य स्वरुप कितीही लोकशाहीचे असले तरी ती केवळ नाममात्र लोकशाही ठरेल. दहा-वीस व्यक्ती एखाद्या केंद्रस्थानी बसून खरी लोकशाही चालवू शकत नाहीत. तिला खालपासून गावोगावीच्या लोकांमार्फत चालविता येईल.'[८] गांधीजी असेही म्हणतात की, खरीखुरी लोकशाही प्रस्थापित होऊन लोकांच्या हाती सत्ता आल्यास प्रजेच्या स्वातंत्र्यात होणाऱ्या हस्तक्षेपाचे प्रमाण कमी होत जाईल. निराळ्या रितीने असे म्हणात येईल की, राजसत्तेच्या हस्तक्षेपाची गरज न पडता जे राष्ट्र आपले व्यवहार शांततामय आणि प्रभावी रीतीने करु शकेल, तेच खऱ्या अर्थाने लोकतंत्रात्मक ठरेल. जेथे अशी परिस्थिती नसेल तेथील राज्य बाह्यतः लोकशाही दिसले तरी खऱ्या अर्थाने ते लोकशाही असणार नाही.[९] गांधीजी लोकशाहीच्या संदर्भात आपली मते मांडतात ती स्पष्टपणे. ते स्पष्ट म्हणतात की,

Shahu Shikshan Sanstha Pandharpur, Sanchalit

VASUNDHARA KALA MAHAVIDYALAYA, JULE SOLAPUR

NAAC Accredited 'B' Grade

ON THE OCCASION OF 125TH BIRTH ANNIVERSARY OF
BHARAT RATNA DR. BABASAHEB AMBEDKAR

INTERDISCIPLINARY INTERNATIONAL

Conference on

DR. BABASAHEB AMBEDKAR'S CONTRIBUTION IN NATION BUILDING

10th April 2016

Universal Aurora

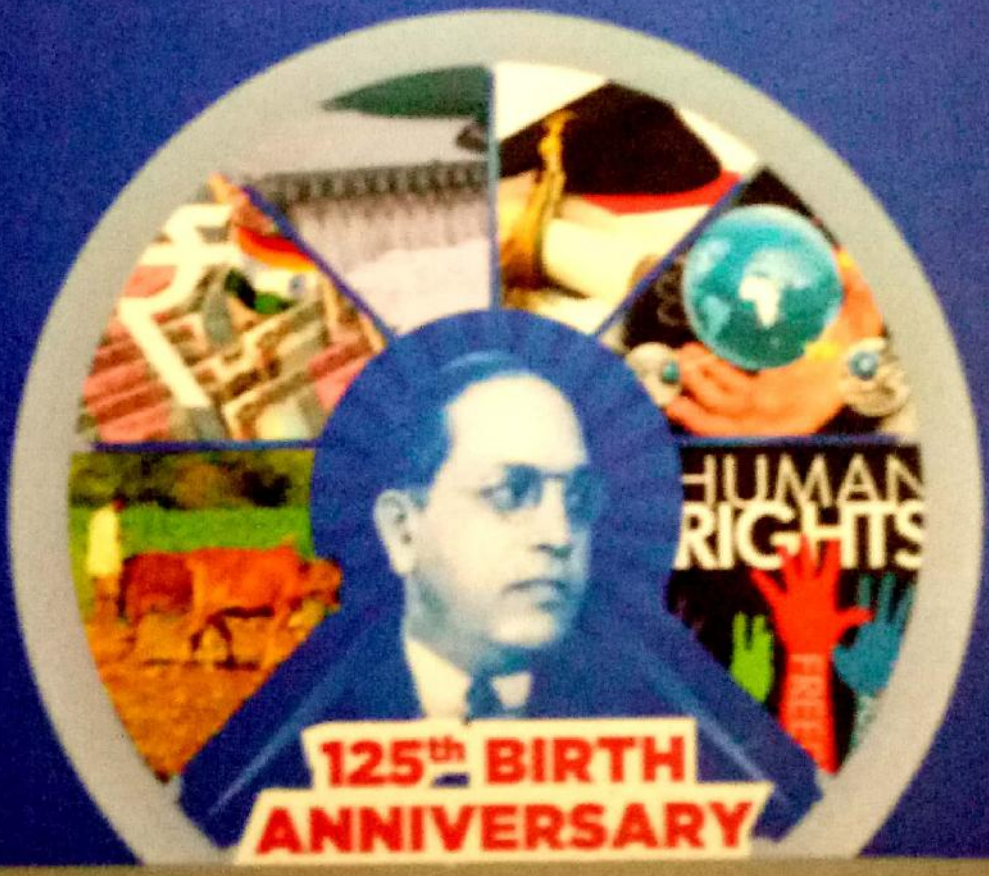

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे धार्मिक विचार

डॉ. राजेंद्र साहेबराव धाये
सहयोगी प्राध्यापक,इतिहास विभागप्रमुख,संत रामदास महाविद्यालय,घनसावंगी जि. जालना.

प्रस्तावना : -

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर हे विसाव्या शतकातील भारतामधील सामाजिक परिवर्तनाच्या चळवळीचे एक प्रमुख प्रणेते होत. शेकडो वर्षे धर्माच्या नावाने दडपल्या गेलेल्या तळागाळातील लोकांमध्ये स्वत:च्या हक्कांची जाणीव निर्माण करुन, ते मिळविण्यासाठी संघर्ष करण्यास त्यांनी त्यांना प्रवृत्त केले. इंग्रजी राजवटीत आपल्या सामाजिक जीवनात सुधारणा घडवून आणण्यासाठी ज्यांनी तळमळीने प्रयत्न केले ते न्या. रानडे, महात्मा जोतीराव फुले, शाहू छत्रपती, महात्मा गांधी इत्यादी सुधारकाग्रणी, वृत्तीने धार्मिक होते. सुधारणेच्या कार्यक्रमाला नैतिक अधिष्ठान मिळवून देण्यासाठी त्यांनी धर्माचा आधार घेतला. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर हे त्याच वातावरणात वाढले. त्यांचे वडील कबीरपंथी असून ते आपल्या मुलांना दररोज कबीराचे दोहे व संतांचे अभंग म्हणण्यास लावीत. डॉ. आंबेडकरांनी मराठी संत कवींच्या साहित्याचा सखोल अभ्यास केला होता. पुढे उच्च शिक्षणासाठी परदेशात गेल्यावर अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, मानववंशशास्त्र इत्यादी आधुनिक शास्त्रांचा त्यांनी पद्धतशीरपणे व्यासंग केला. साहजीकच आधुनिक शास्त्रीय दृष्टीकोनातून त्यांनी धर्माची चिकित्सा केली आहे.1 डॉ. आंबेडकरांच्या मते धर्म हा शब्द निश्चित अर्थ-दुर्लभ, व्याख्याविहीन शब्द आहे. कारण 'धर्म' या संकल्पनेची वेगवेगळी अवस्थांतरे झालेली आहेत. या प्रत्येक अवस्थेतील संकल्पनेला धार्मिक विचार असे संबोधण्यात आले होते. वस्तुत: एका अवस्थेतील संकल्पना ही पूर्वीच्या किंवा नंतर येणाज्या अवस्थेतील संकल्पनेशी सुसंगत कधीच नव्हती. तर कालमानानूसार तिच्यात बदल होत होता. निसर्गदत्त आपत्ती, उदा- विद्युत्पात, पर्जन्य महापूर घडण्यामागची कारण मिमांसा आद्य मानवास ज्ञात नव्हती. अशा घटनांचे शमन व दमन करण्यास्तव केलेल्या दैवी आचरणांना 'जादूटोणा' असे नाव पडले. त्यामूळे धर्म हा 'जादूटोणा' म्हणून ओळखला जाऊ लागला.2 तद्नंतर दुसज्या अवस्थेत धर्म ही संकल्पना उत्क्रांत झाली. या अवस्थेत 'धर्म' म्हणजे श्रद्धाभाव, पूजा-अर्चा, समारंभ, यज्ञविधी वगैरे अशी भावना रुजली गेली. वेद म्हणजे इंद्र, वरुण, अग्नी, सोम वगैरे देवतांना आवाहन करण्यासाठी म्हटलेल्या वेगवेगळ्या ऋचा व सूक्ते यांचा संग्रह होत. त्यांत उपरोक्त देवतांनी अर्ध्यदान स्वीकारावे व इष्टफळप्रदान करावे यास्तव करण्यात येणाज्या प्रार्थनेचा अंतर्भाव आहे.3 याच काळात काही ऋषींनी विश्वनिर्मिती व विश्वनिर्माता या विषयी आपापल्या अंदाजावरुन काही सिद्धांत मांडले असले तरी, त्यांचे अधिष्ठान, अंधश्रद्धा व अंधविश्वास यावरच होते. सर्व विश्व व्यापाराचे नियमन करणारी, तत्कालीन पुरातन मानवास अज्ञात, अशी कोणती तरी एक प्रचंड शक्ती असावी हे गृहीततत्व त्यात प्राणभूत होते. वैचारिक क्षमता वाढल्याने जादूटोण्याचा प्रभाव या अवस्थेत कमी झाला. जी वैश्वीक शक्ती पूर्वी भयप्रद समजली जात होती ती पूढे कल्याणप्रद समजली जाऊ लागली. या शक्तीला प्रसन्न करुन अंकीत करण्यासाठी किंवा तिचा क्रोध शमविण्यासाठी - तिचा अनुग्रह होण्यासाठी, पूजा-अर्चा यज्ञयाग या बाबी अनिवार्य बनल्या, हळूहळू याच वैश्विक शक्तीस परमेश्वर, परब्रम्ह अशी संज्ञा प्राप्त झाली. तिसज्या अवस्थेत या तथाकथित परमेश्वरानेच ब्रम्हांडाची तशीच सर्व प्राणीमात्राची निर्मिती केली, तसेच मानवी देहात आत्मा असतो, देह धारण करुनही तो देहातीत असतो, तो प्राप्त जन्मातील कार्याबद्दल परमेश्वरास (परमात्मा) उत्तरदायी असतो, ही भावना रुढ झाली.4 सारांशरुपाने बौध्दकाळात धर्म संकल्पना अशाप्रकारे उत्क्रांत झालेली होती, ईश्वर, आत्मा याविषयी आस्तिक्य बुद्धी असलेला, पूजा-अर्चा यज्ञविधी यांना प्राधान्य असलेला धर्म प्रचलित होता.

'जो समाजाची धारणा करतो तो धर्म' अशी धर्माची व्याख्या करण्यात आलेली आहे. ती सर्वमान्य होण्यासारखी आहे. परंतु ही व्याख्या कोण्या एका समाज-धर्माला डोळ्यापूढे ठेवून विशिष्ट धार्मिक हेतूने परिबद्ध झाली असेल, तर मात्र शंकेला जागा आहे. तेथे साहजिकच असा प्रश्न निर्माण होतो की, धर्म समाजाची धारणा करतो तो कोणत्या समाजाची? हिंदु-मुस्लिम समाजाची की, शीख, इसाई ख्रिस्ती समाजाची. यातून कोण्या एका विशिष्ट समाजाचीच धारणा धर्म करीत असेल, तर तो धर्म, धर्म नव्हे. तो अधर्म नसेल कदाचित, पण तो सम्यक, सर्व कुशल

|| तमसो मा ज्योतिर्गमय ||

Shahu Shikshan Sanstha Pandharpur, Sanchalit

VASUNDHARA KALA MAHAVIDYALAYA, JULE SOLAPUR

NAAC Accredited 'B' Grade

ON THE OCCASION OF 125TH BIRTH ANNIVERSARY OF
BHARAT RATNA DR. BABASAHEB AMBEDKAR

INTERDISCIPLINARY INTERNATIONAL

Conference on

DR. BABASAHEB AMBEDKAR'S CONTRIBUTION IN NATION BUILDING

10th April 2016

Universal Aurora

MI BOOK PUBLICATIONS • LAXMI BOOK PUBLICATIONS • LAXMI BOOK PUBLICATIONS • LAXMI BOOK PUBLICATIONS • LAXMI BOOK PUBLICATION

"डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची महाराष्ट्रातील कामगार वर्गासंबंधीची भूमिका"

कौतिक नामदेव दांडगे [१], डॉ. राजेंद्र धाये [२]

[१] संशोधक विद्यार्थी डॉ.बा.आ.म.विद्यापीठ औरंगाबाद, जि. औरंगाबाद

[२] मार्गदर्शकसहयोगी प्राध्यापक व इतिहास विभागप्रमुख संत रामदास महाविद्यालय,घनसावंगी जि. जालना

प्रस्तावना : -

एगणीसाव्या शतकात भारतात विविध चळवळींचा उदय झालेला आहे. त्यापैकी एक म्हणजे महाराष्ट्रातील कामगार चळवळ होय. कामगार चळवळ ही कामगारांचे भांडवलशाहीकडून व ब्राह्मणशाहीकडून होत असलेलल्या शोषणाविरुद्ध लढ्यातून उदय व विकास पावलेली आहे. या काळात विविध उद्योग धंद्यांचा उदय झाला व त्यातूनच त्याला लागणाऱ्या कामगार वर्गाची विविध जाती जमातीतून उदय झालेला आपणा दिसुन येतो.

महाराष्ट्रातली बलुतेदारी पद्धती शेतकरी वर्गाला आपले श्रम पुरवीत असे. यामध्ये प्रत्येक जातीचे व्यवसाय ठरलेले असायचे यात कुणालाही सुट नव्हती. साधारणपणे महार, सोनार, कुंभार, परीट, कोळी मल्हार, न्हावी या जाती सेवा देत असत. सुतार, चांभार, लोहार व मांतग या जाती शेतीसाठी लागणारे साधने पुरवीत असत तर ग्रामजोशी व गुरव या जाती धार्मिक विधीसाठी उपयोग पडत असत. हा श्रमीक वर्ग पिढ्यांपिढ्या राबतच राहिला, संघटीत झाला नाही. तरीही हा वर्ग आजच्या आंबेडकरी कामगार चळवळीला नुसता पूर्वज नसून शिल्कारही आहे असे म्हणणे वावगे ठरणार नाही. ब्रिटिश आगमनानंतर महात्मा फुलेंनी ही चौकट मोडण्याचा प्रयत्न केला. त्यांच्या प्रभावातूनच कामगार चळवळीचे जनक असलेले नारायण मेघाजी लोखंडे यांनी वृत्तपत्रे व कामगार चळवळ काढून कामगारांचे प्रश्न मांडण्याचा प्रयत्न केला व त्यांच्याच परंपरेतले डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी नंतरच्या काळात कामगारांच्या समस्यांना वाचा फोडली. त्यासाठी त्यांनी कामगार चळवळ उभारली.[1]

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर हे कामगारांच्या प्रश्नाबाबत अत्यंत जागृत होते. कामगारांना अनुकुल स्थितीतच ते कामगारांन संप व हरताळ करण्यास प्रवृत करत असत. अस्पृश्य कामगारांना कापड खात्यात काम मिळावे यासाठी त्यांनी आग्रही भूमिका घेतली होती. 1934 पासून त्यांनी म्यूनिसीपल कामगार संघाचे अध्यक्षपद स्विकारुन खऱ्या अर्थाने कामगार चळवळीला मूर्तस्वरुप बहाल केले. त्या काळात दलित कामगारांच्या प्रश्नांकडे इतर संघटना जातीने लक्ष देत नव्हत्या. त्यांना सर्व कामगारांच्या समस्या ह्या समान वाटत होत्या परंतु डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांना कामगारांमधील अस्पृश्यता व जातीयता दिसून आली आणि म्हणून त्यांनी सर्व कामगार वर्ग हा तात्विक पातळीवर एक समान असावा या उद्देशातून स्वतंत्र संघटना स्थापन करण्याचा निर्णय घेतला. ह्या पार्श्वभूमीवर त्यांनी स्वतंत्र मजूर पक्ष स्थापन केला व या पक्षामार्फत कामगारांच्या समस्या व प्रश्न सोडवण्याचा प्रयत्न केलेला दिसून येतो.[2]

महाराष्ट्रातील कम्युनिष्टांची कामगारविषयक भूमिका व डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची भूमिका यात फरक असल्याचे दिसून येते. कम्युनिष्टांच्या मते समाजात फक्त मालक व कामगार असे दोनच वर्ग असतात, कामगाराला स्वत:चे कौटुंबिक संबंध आणि भांडवलदाराचे कौटूंबिक संबंध यात साम्य नसते. म्हणून कामगार वर्गाला प्रथम राजकीय सत्ता काबीज करणे आवश्यक आहे. कामगार वर्गाच्या क्रांतीचा हेतू हा राजकीय सत्ता हस्तगत करणे असून अधिसत्ता स्थापन करणे हा आहे. म्हणजे कामगार वर्गाची अधिसत्ता (हूकुमशाही) स्थापन करणे हे मार्क्सवादी विचाराचे वैशिष्ट्य आहे. परंतु डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांना हे मान्य नाही. त्यांच्या मते कामगार वर्गाचे सर्वात मोठे दोन शत्रू म्हणजे भांडवलशाही ब्राह्मणशाही आहे.3 ब्राह्मणशाही जाती जातीत कामगारांना फोडते. ब्राह्मणशाही समता, ऐक्य, बंधुत्त्व या तत्वांना काळे फासणारे विचार होय.

भारतीय कामगार जातीजातीत लढतात. त्यांचे ऐक्य होऊ शकत नाही. एवढेच नव्हे तर कनिष्ठ जातीच्या कामगाराला उच्च जातीचा कामगार आपल्या जवळही बसू देत नाही. याचे कारण म्हणजे भारतात उदयाला येणारा भांडवलदार व कामगार वर्ग हा कोणत्या ना कोणत्या

Releavance of Mahatma Gandhi in 21st Century

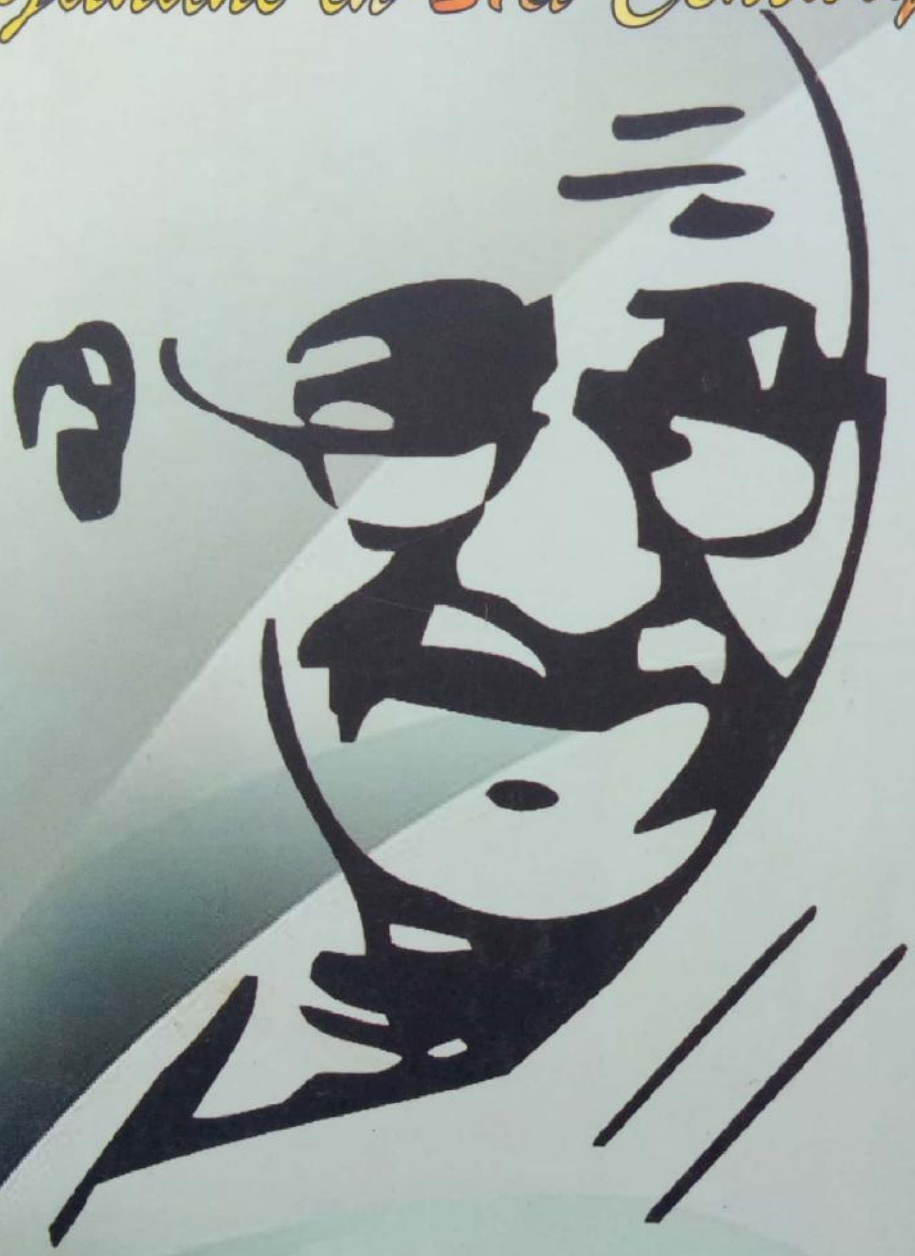

Mahatma Gandhi Study Centre, Gunjoti

Shri Krishna Mahavidhyalay
Gunjoti, Tq.Omerga,
Dist.Osmanabad

ISBN No.978-81-931569-9-5

महात्मा गांधीजीच्या 'पंचायत राज्य' विचारांची प्रासंगिकता

डॉ. राजेंद्र धाये
सहयोगी प्राध्यापक व इतिहास विभागप्रमुख,
संत रामदास महाविद्यालय,घनसावंगी जि.जालना.

आज जगात अशी एकही व्यक्ती सापडणार नाही की, त्यांना'म.गांधी'हे नाव माहित नाही.जगातील जवळ-जवळ सर्वच प्रमुख शहरात त्यांचा पुतळा एखाद्या तरी चौकात आढळेलच. त्यांच्या सर्वांगीन विचारांनी जगाला भुरळ घातलेली दिसते. इंग्लंडमध्ये औद्योगिक क्रांती होऊन तिने झपाट्याने जगाला कवेत घेतले.आज जगात औद्योगिकीकरणाचे, तंत्रज्ञानाचे वारे जोरात वाहत आहे.सध्याच्या तंत्रयुगाने जग प्रत्येकाच्या मुठीत आले असले तरी गांधी विचारांचा पगडा आजही जगावर कायम आहे.२१ व्या शतकातही गांधी विचारांची प्रासंगिकता जगाला गरजेचीच वाटते.

'महात्मा'मोहनदास करमचंद गांधी या माणसाला पुरतं जाणून घेण्याची जगाची तहान अजून शमलेली नाही. उलट दिवसेंदिवस ती वाढतच चालली आहे. पृथ्वीवरच्या पाचही खंडांमध्ये माणसासमोर उभ्या ठाकणाऱ्या नवनव्या समस्यांचा वेध घेताना, त्यांची उत्तरं शोधताना निरनिराळ्या 'शिस्ती'त वैचारिक वाढ झालेल्या शहाण्या माणसांना वाटेत 'गांधी'भेटतोच आहे.एकीकडं आजही गांधी ताजा, सुसंगत वाटणारी माणसं आहेत; तशी गांधी या'खलनायका'चे नवनवे पैलू समोर आणणारी,गांधींना पुनः पुन्हा आरोपीच्या पिंजऱ्यात उभी करणारी,त्यांचा'महात्मा'पण उसवून त्यांच्या चिंध्या करु पाहणारी माणसंही आहेत,भरपूर आहेत.तिसऱ्याही प्रकारची माणसं आहेत.ती गांधींच्या व्यक्तीमत्वाचा एकेक पैलू तपासतात.हा माणूस बाप म्हणून कसा होता;नवरा म्हणून कसा होता; 'ब्रह्मचारी'म्हणून कसा होता,'पुरोगामी' होता की 'प्रतिगामी' ..... अशा प्रश्नांची उत्तरं या मंडळींना जबर ताकदीचं भिंग लावून तपासायची असतात. हा उद्योगही सध्या तेजीत

मराठवाडा अर्थशास्त्र परिषदेचे ३३ वे अधिवेशन
दिनांक ५ व ६ फेब्रुवारी २०१६

अमोलक अर्थक्रांती

श्रीमती शांताबाई कांतीलाल गांधी कला, अमोलक विज्ञान व
पन्नालाल हिरालाल गांधी वाणिज्य महाविद्यालय
कडा ता.आष्टी जि.बीड

चिन्मय प्रकाशन, औरंगाबाद ९८२२८७५२१९

महाराष्ट्रातील जलसिंचनाचा अभ्यास

मार्गदर्शक
डॉ. राधेश्याम किसनराव राऊत
अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख संत रामदास कला,
वाणिज्य आणि विज्ञान महाविद्यालय,
घनसावंगी, जि. जालना.

संशोधक विद्यार्थी
जीवन भागवत सपकाळ

प्रस्तावना:

महाराष्ट्र हे भारतातील प्रमुख राज्यापैकी एक आग्रगण्य असे राज्य. परंतु अशा या महाराष्ट्र राज्यालाही एक गंभीर प्रश्न काही वर्षापासून भेडसावत आहे. तो म्हणजे दुष्काळ मानवी जीवनामध्ये हवेच्या नंतर पाणी हा महत्वाचा घटक आहे म्हणून पाण्याला आपण जीवन म्हणतो. पाण्याचा उपयोग मानवाला पिण्यासाठी व घरगुती वापरासाठी तर होतोच त्याशिवाय पशुपालन, जलसिंचन, उद्योगधंदे, जलवाहतूक व मासेमारी इ. कार्यासाठी देखील पाण्याचा उपयोग मानवाला होतो. या मुळेच पाण्याला जीवसृष्टीचा आत्मा म्हटले जाते.

पृथ्वीवर पाणी मुबलक प्रमाणात असले तरी त्याची वाटणी मात्र विषम झाली आहे. तसेच पृथ्वीवरील सर्वच पाणी मानवास उपयोगी नाही पृथ्वीवरील एकूण पाण्याच्या साठयापैकी ९७ टक्के पाणी महासागरात खाऱ्या पाण्याच्या स्वरूपात आहे व ०३ टक्के पाणी गोडया पाण्याच्या स्वरूपात आहे. परंतु या ०३ टक्के पाण्यापैकी २.१ टक्के पाणी घनस्वरूपात आहे. त्यामुळे त्याचा मानवास विशेष उपयोग होत नाही, तर फक्त राहिलेल्या ०.०९टक्के पाण्याचाच उपयोग होतो. जे पाणी नद्या, सरोवरे विहीरी तळी, इ. च्या स्वरूपात आहे. म्हणून जसजशी लोकसंख्या वाढली व कारखानदारिचा विकास होत गेला तसतसे गोडे पाणी मिळणे अवघड झाले. ही बाब लक्षात घेऊनच संयुक्त राष्ट्र सघाच्या सियियानी प्रतिनिधने अशी चेतावणी दिली की "तो दिवस दूर नाही की ज्या दिवशी एक थेंब पाणी, एक थेंब खनिज तेलापेक्षा महाग होईल." आणि आज आपण कमी अधिक प्रमाणात हे अनुभवत आहे.

संपूर्ण महाराष्ट्राचा विचार केला असता दुष्काळ परिस्थिती सर्व भागात सारख्या प्रमाणात नाही त्याला पर्जन्यमान हा नैसर्गिक घटक जवाबदार असला तरी काही राजकीय व प्रशासकिय धोरणेही जवाबदार आहे.आज महाराष्ट्रातील सहा प्रशासकीय विभागाचा विचार केला तर औरंगाबाद व अमरावती विभागातील जलसिंचन क्षमता कमी आहे. या विभागातील मोठया धरणांची संख्या व क्षमता कमी आहे. कालव्याचा विकास हवा तितक्या प्रमाणात झालेला नाही.

मराठवाडा
गती-प्रगती

संपादक

डॉ.बी. आर. गायकवाड

मराठवाडा विभागातील पंतप्रधान रोजगार योजना - एक अभ्यास

डॉ. राधेश्याम किसनराव राऊत,
सहयोगी प्राध्यापक तथा अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख,
संत रामदास महाविद्यालय, घनसांवगी, जि. जालना.

प्रस्तावना (Introduction)

भारताला १९४७ ला स्वांतत्र्य मिळाल्यापासून भारत हा विकसीत होण्याच्या दृष्टिने पाऊले उचलित असून, १९५१ पासून भारताने पंचवार्षिक योजनेच्या माध्यमातून सर्वांगीण विकास करण्यास सुरुवात केली. मात्र बेरोजगारीचे प्रमाण कमी होत नव्हते. यासाठी पंतप्रधान रोजगार योजना सुरु करण्यासाठी १९९० च्या दशकापासून हालचाली सुरु झाल्या १५ ऑगस्ट१९९३ च्या स्वांतत्र्यदिनी मा. पंतप्रधानांनी राष्ट्राला उददेशून केलेल्या अभिभाषणात, सुशिक्षित बेरोजगांराकरिता प्रभावी स्वंयरोजगार योजना लवकरच विहित करण्याचा मानस व्यक्त केला होता, या बाबीस अनूसरुन केद्र शासनाच्या उद्योग मंत्रालयाने "पंतप्रधान रोजगार योजना" विहित केली असून ती ०२ ऑक्टोबर १९९३ म्हणजेच राष्ट्रपिता महात्मा गांधी यांच्या जयंती दिनांकापासून कार्यान्वित झाली आहे. सदर योजना राज्य शासन भारतीय रिझर्व्ह बँक आणि अन्य वित्तीय संस्था यांच्या मदतीने अंमलात आली आहे.

उद्योग संचालनालयाने प्रस्तुतची योजना जिल्हा उद्योग केद्रांमार्फत राबवावी. तसेच मुंबई उपनगर जिल्हा या दोन जिल्ह्यासाठी ही योजना सहसंचालक (उद्योग)यांनी केद्र शासनाने विहित केलेल्या इष्टकांचे विविध जिल्ह्यासाठी

Special Issue 3rd
Feb. 2016

ISSN-2250-0383
IMACT FACTOR-0.421

SHODHANKAN

21ST CENTURY WORLD : PRESENT SCENARIO & CHALLENGES

EDITOR
Dr. Pandit Nalawade

Scanned by CamScanner

62. CLIMATE CHANGE AND IT'S IMPACT AND CHALLENGES

Dr. Raut Radheshyam Kisanrao, Head and Research Guide
Department of Economics, Sant Ramdas College, Ghansawangi, Dist Jalna.

Introduction

In the last twenty years, the issue of global warming and climate change has become the international political Issue. Changing climatic conditions can have the big effect on our life and environment. Climate change is affecting India in many ways like erratic monsoon, changes in agricultural zones, spread of tropical diseases, sea level rise, availability of fresh water, floods, droughts, hurricanes heat waves, storms, etc. Draughts and floods are destroying especially the crops and harvest of farmers in developing countries like India. Industrialization in the nineteenth and twentieth century stimulated the process of global warming due to excessive CO2-emissions, resulting from the use of fossil fuels like coal and oil. Changing climate is major challenge before the world to cope with the situation the present international political strategy concentrating to stabilize CO2 emissions and trying to balance the environment. This paper is an attempt to study the impact of climate change on poverty.

Climate change: Climate refers to a long-term variation in the atmospheric condition of a specific region or regions and climate change means a gradual change in the climate system both by natural and artificial causes. Climate change is caused by the change in each component of the climate system such as atmosphere, hydrosphere, biosphere, cryosphere and lithosphere

Natural causes: change in solar activity, volcanic eruption, sea water temperature, ice cap distribution, westerly waves and atmospheric waves.
Artificial causes: carbon dioxide emission from industry and agricultural production activities, deforestation, acid rain and the destruction of the ozone layer.

Climate change affects the hydrology including underground water level, water temperature, river flow, and water quality of lakes and marshes, by impacting precipitation, evaporation, and soil moisture content as well as northward movement of plant habitats, changes in animal habitats, rise of ocean temperature, shortened winter and early arrival of spring. It also affecting food production include reduced crop quantity and quality due to the reduced growth period following high levels of temperature rise; reduced sugar content, reduced land fertility, and reduced storage stability in fruits, increase of weeds, and harmful insects in agricultural crops.

The industrial countries are mainly responsible for climate change the poor in the developing countries are most strongly affected by its dangerous impacts. Climate change and poverty are linked by the issue of vulnerability. Poor people are disproportionately Affected not only because they are often more exposed and invariably more vulnerable to climate-related shocks but also because they have fewer resources and receive less support from family, community, the financial system, and even social safety nets to prevent, cope, and adapt.(World Bank report 2015). Poverty is understood as the lack of material plenty, usually equated with lack of income; the inability to satisfy insatiably escalating expectations of access to material goods and services.

A majority of the world's population officially living in poverty depends

Scanned by CamScanner

Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad.
In Association with

Chetan Shikshan Prasark Mandal's Vaijapur,
Arts Senior College, Aurangabad.
and
KATHA U. K. (BRITAN)

कथा (यूके)
Katha (UK)

ONE DAY INTERNATIONAL CONFERENCE
On

GLOBAL ENVIRONMENT : ISSUES, CHALLENGES AND SOLUTIONS
(An Interdisciplinary Approach)

29 FEBRUARY 2016

Editor
Dr. Vinod Bairagi

ENGLISH Part - II

Ajanta Prakashan

 ISBN : 978-93-83587-35-3

46 Impact of Climate Change on Agricultural Development in India

Dr. Raut Radheshyam Kisanrao

Head and Research Guide Department of Economics, Sant Ramdas College, Ghansawangi, Dist Jalna.

Introduction

Climate change is not a new phenomenon in the world. The rise in temperature of the earth surface and in atmosphere, fluctuation in rainfall, declining ground water, flooding due to high rainfall, drought, soil erosion, heavy wind, rising sea level due to melting of glacier, cyclone, wind speed, hail storm, fog, earthquake and landslide etc., are all the clear evidence of climate change phenomenon. Though, it is a natural process but in some cases human activities are also responsible for this. There are many examples across countries where increase in the possibilities of climate change due to growing population, rapid urbanization, higher industrialization, use of modern technology, innovation, higher economic development, transport, building construction, reduction in forest area etc. are observed (Ahmad et al., 2011). In mid, high latitude and higher income countries climate change has positive impact on agricultural production or crop yield, and on the other hand, lower-latitude and lower income countries experience a negative effect on agricultural production. On the other hand, developing countries are most vulnerable compared to developed countries.

Meaning And Nature Of Climate Change

Climate change is a change in the statistical distribution of weather patterns when that change lasts for an extended period of time (i.e., decades to millions of years). Climate change may refer to a change in average weather conditions, or in the time variation of weather around longer-term average conditions (i.e., more or fewer extreme weather events). Climate change is caused by factors such as biotic processes, variations in solar radiation received by Earth, plate tectonics, and volcanic eruptions. Certain human activities have also been identified as significant causes of recent climate change, often referred to as "global warming".

Climate change is newcomer to the international political and environmental agenda, having emerged as a major policy issue only in the late 1980s and thereafter. It has emerged since the 19th century that the CO_2 in the atmosphere is a 'greenhouse gas', that is, its presence in the atmosphere helps to retain the incoming heat energy from the sun, thereby increasing the earth's surface temperature. Of course, CO2 is only one of several such greenhouse gases in the atmosphere. Others include methane, nitrous oxide and water vapour. However, CO2 is the most important greenhouse gas that is being affected by human activities. CO2 is generated by a multitude of processes. Since the Industrial Revolution, when our usage of fossil fuels increased dramatically, the contribution of CO2 from human activities has grown large enough to constitute a significant perturbation of the natural carbon cycle.

Jai Bhagwan Sevabhavi Sanstha's

Late Shankarrao Gutte Gramin Arts, Commerce & Science College, Dharmapuri, Dist. Beed (M.S.)

On the occasion of Dr. Babasaheb Ambedkar's 125th Birth Anniversary organizes

National Conference

On

" Dalit Literature and Contemporary Society "

(22 April, 2016)

Chief Editor

Prof. Shrimant T. Kawale

Organized by

Dept. of Economics,
Late Shankarrao Gutte Gramin
Arts, Commerce and Science College,
Dharmapuri, Dist. Beed - 431519 (M.S.)

7

Dr. Babasaheb Ambedkar and the Dalit Movement

Dr. Radheshyam K. Raut
Head, Dept. of Economics,
Sant Ramdas College,
Ghansawangi, Dist. Jalna (M.S.)

Introduction

Some people are born brilliant, some have brilliantness thrust upon them and some achieve brilliantness. To the last division, Dr. B. R. Ambedkar belongs. Dr. Ambedkar was a great patriot, social thinker, political reformer, philosophical writer with progressive ideas. He stood for all political, social and cultural activities which increased the cause of human progress and happiness. He was the soul for the constitution of India. He crusaded for the betterment of the oppressed and depressed classes. And in this struggle, he stood rare crusading spirit, carving out in this process plays significant role for himself among the leading architects of modern India.

Formulating a dignified social and political identity for dalits is always valued as one of the essential tasks of modern social movements in India. Among all such movements, one can witness a conflicting relationship between "the given" identities and the identities carved by the "dalit self". The non-dalit identities of the self in general imagine or construct a meta-narrative of cultural identity based upon highly parochial and xenophobic ideas.

The dalit political discourse has produced a concrete alternative to the mainstream nationalist formulations in all the realms of public reason. The discourse legitimises the thirst for political power, as it is one of the prime instruments in bringing a radical change in social relationships [Sudha Pai 1998: 40]. On the one hand, rejection of political dominance by the "manuvadis" became the mantra of the new dalit political ideology. On the other hand, the Ambedkarite Buddhist identity challenges the "immoral", unscientific and regressive modern social system and is hopeful of building a modern social order based on human values.

Ambedkar formulated and conceptualised the meaning and political philosophy of both these domains with certain prerequisite modern ethical norms. The contemporary dalit movements have followed divergent routes to achieve social transformation without any dialogical relationship between them. This paper will focus on the reasons of an imaginary distance between the two recent transformations: the social upsurge of dalit castes who embrace Buddhism to bring social change and the assertion of BSP as a political party under the

Dept. of Economics, Late Shankarrao Gutte Gramin ACS College, Dharmapuri, Dist. Beed (M.S.)

2016-17

S.No 80

RAIN WATER HARVESTING

पावसाच्या पाण्याचे संधारण

संपादक: डॉ. सर्जेराव व्ही. ताठे

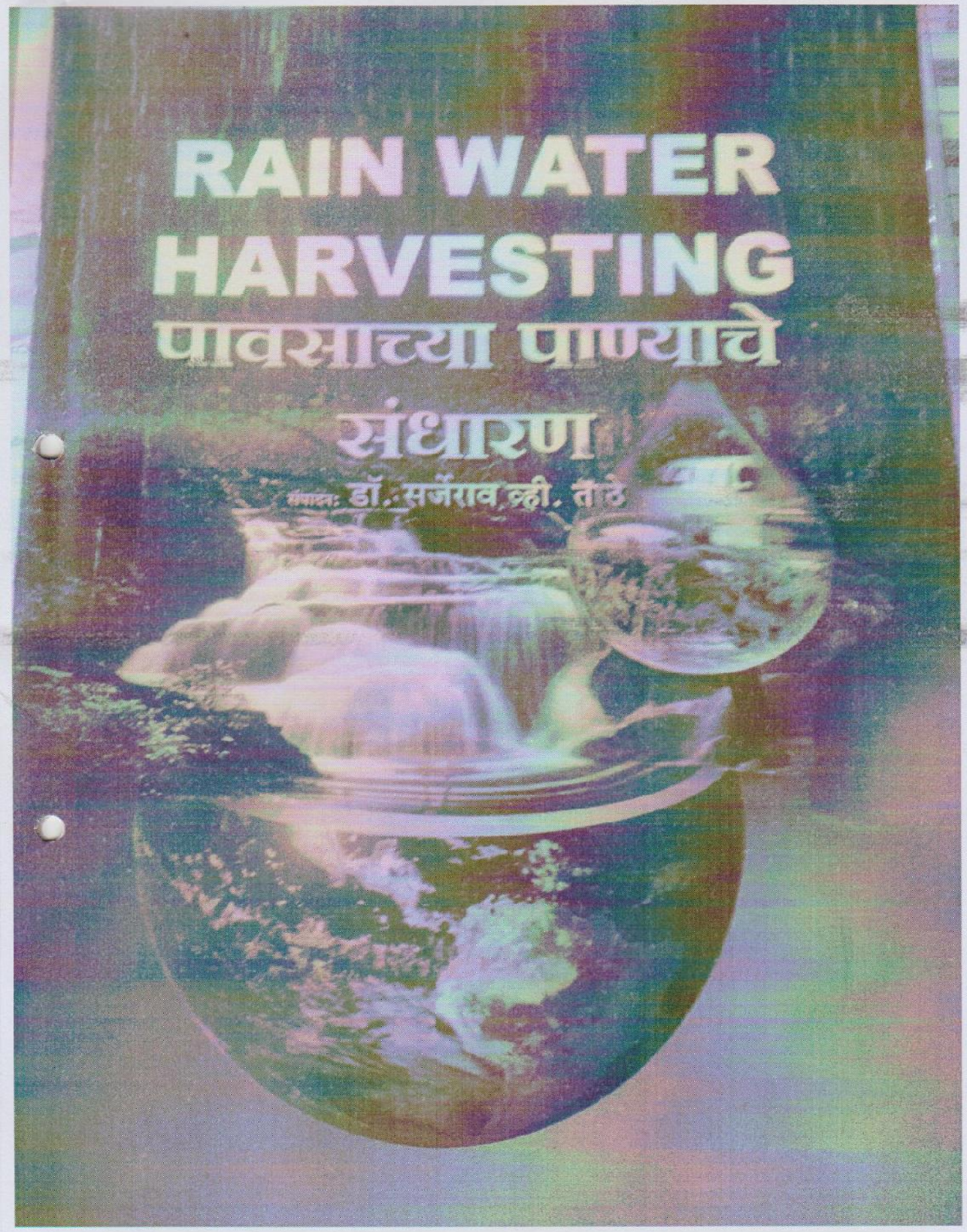

ISBN : 978-93-81948-90-3

जलयुक्त शिवार : महाराष्ट्र राज्याचा शाश्वत विकास

सौ. छाया भगवान बोर्डे
संशोधक विद्यार्थिनी
डॉ.बा.आं.म.विद्यापीठ, औरंगाबाद

प्रा.डॉ. ताठे एस.व्ही.
विभागप्रमुख- भुगोल
संत रामदास कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, घनसावंगी

सारांश:

महाराष्ट्राच्या शेती समस्यांचे वर्णन करताना शेतीच्या समस्या म्हणजे शंभर तोंडी रावण असे केले जाते. प्रतिकूल अशा भौगोलिक परिस्थितीमुळे महाराष्ट्राला सतत दुष्काळी संकटांना सामोरे जावे लागते. प्रतिकुलतेतून अनुकूलता निर्माण करणे हा या राज्याच्या मातीचा गुणधर्म आहे.

राज्याच्या काही भागात दर दोन वर्षांनी या ना त्या कारणांनी निर्माण होणाऱ्या पाणी टंचाईवर मात करण्यासाठी महाराष्ट्राचे नवे भाजपा सरकारने जलयुक्त शिवारअभियान ही योजना राबविण्याच्या निर्णय घेतला आहे या नाविण्यपूर्ण योजनेनुसार जलसंधारणांतर्गत सर्वसमावेशक उपाययोजनद्वारे एकात्मिक पध्दतीने शाश्वत शेतीसाठी पाणी आणि पिण्याचे पाणी उपलब्ध करुन देण्यास प्राधान्य दिले आहे या योजनेद्वारे २०१९ पर्यंत संपूर्ण महाराष्ट्र टंचाईयुक्त करण्याचा केलेल्या निर्धार खऱ्या अर्थाने क्रांतीकारीच योजना म्हणावी लागेल.

प्रस्तावना :

१९७२ च्या दुष्काळी परिस्थितीच्या झळा महाराष्ट्राला खूप मोठया प्रमाणावर सोसाव्या लागल्या आहे. तसेच २००५ ते २०१५ या सात -आठ वर्षापासून सतत दुष्काळाच्या झळा महाराष्ट्रातील खूप गावांना सोसाव्या लागला आहे. तसेच गतवर्षी म्हणजे २०१४-१५ मध्ये दुष्काळ भयावह होता त्याचबरोबर दुष्काळात तेरावा महिना या म्हणी प्रमाणे गारपीट आणि अवकाळी पावसामुळे शेतकऱ्याचे खूपच हाल झाले परिणामी कर्जबाजारी, आत्महत्या या संकटांना शेतकरी समोर गेला. तेव्हा दुष्काळावर मात करण्यासाठी महाराष्ट्राचे नवे मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस यांनी जलयुक्त शिवार योजना आणून महाराष्ट्र राज्याला समृध्द करण्याचा विडा उचलला आहे. कारण काही वर्षामध्ये महाराष्ट्र राज्याला लहरी हवामानाचा फटका सतत बसत आहे. राज्याचा काही भागात भरपूर पाऊस तर बऱ्याच भागात भीषण टंचाईला सामोरे जावे लागत होते हे चित्र सुधारण्यासाठी व कायमस्वरुपी पाणी टंचाईवर मात करण्यासाठी जलयुक्त शिवार योजना ही शाश्वत व समृध्द जीवन साध्य करण्यासाठी कशी उपयुक्त ठरते यासाठी ही योजना राबविली आहे.

महाराष्ट्राला दुष्काळापासून समृध्दीकडे नेण्यासाठी शाश्वत पाण्याचा साठा निर्माण व्हावा यासाठी जलयुक्त शिवार ही महत्वाकांक्षी योजना राबविण्यात आली. त्यामुळे शेतीसाठी, पिण्यासाठी पाण्याची टंचाई उद्‌भवणार नाही. या योजनेअंतर्गत दरवर्षी ५ हजार गावे जलयुक्त केली जाणार आहे.

या योजनेअंतर्गत महाराष्ट्र राज्याला दुष्काळ नावाच्या राक्षसापासून वाचविण्यासाठी ही जलयुक्त शिवार योजना कशी शाश्वत व समृध्द विकासाकडे नेते हया हेतुने प्रस्तुत विषय प्रतिपादन केला आहे.

Athletics a Core of All Sports

Track Athletics

Dr. Bappasaheb Maske

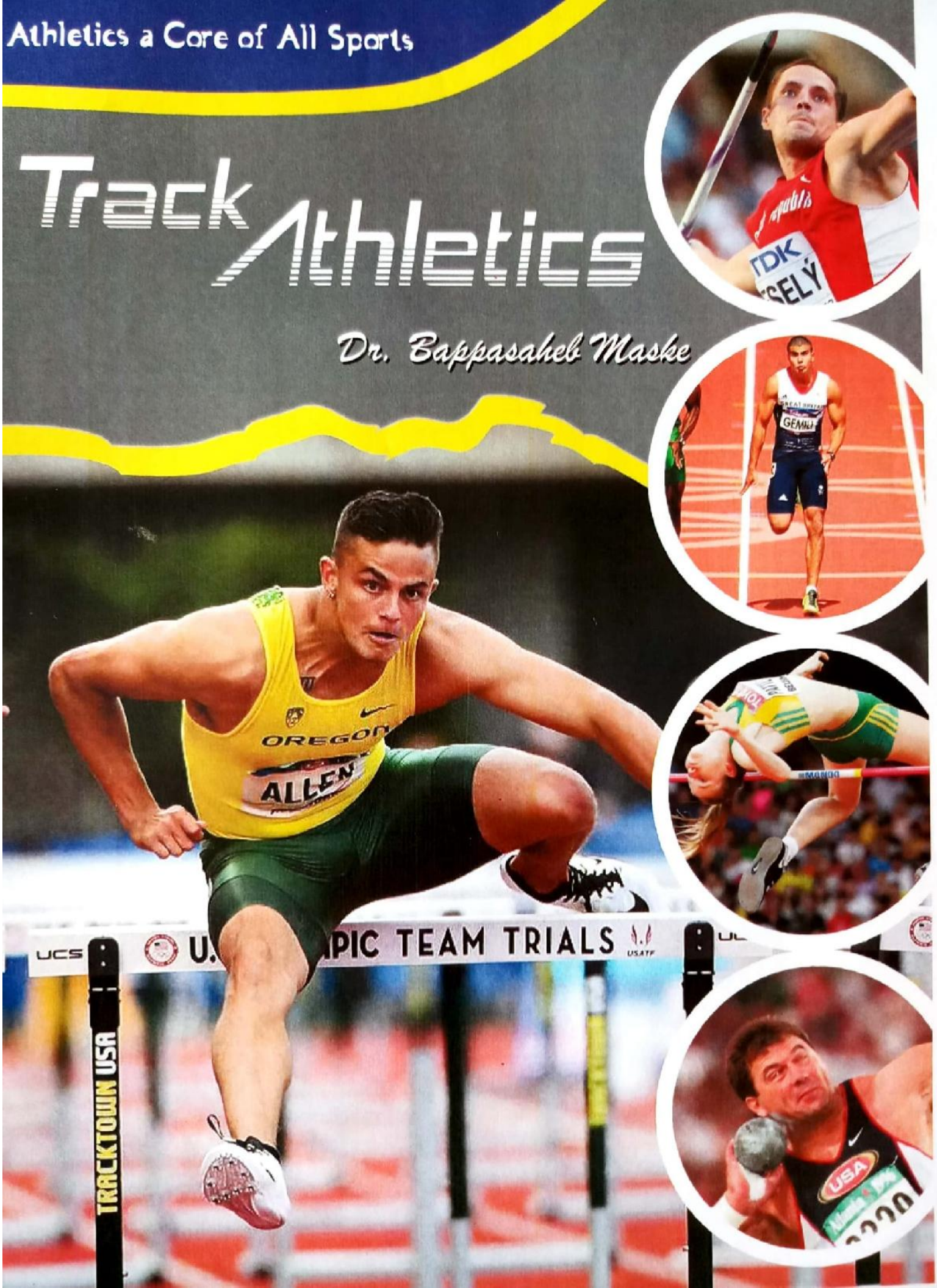

Pro Kabaddi

Dr. Bappasaheb H. Maske
Director & Head
Dept. of Physical Education
Sant Ramdas Arts, Comm. & Science College,
Ghansavangi, District Jalna

KRIDA PUBLICATION
AURANGABAD

EFFECT OF SPECTATORS ON SPORT PERFORMANCE

* Prof. Bapusaheb Mhaske. ** Prof. Pradeep Khandre. *** Sandeep Jagtap and Dr. Subhas Kale

*Sant Ramdas Sets Comm. And Science College, Ghosawnagi. Dist. Jalna (M.S.) India.
** Asst. Prof. PES College of Phy. Education, Aurangabad (M.S.) India.
***TCH. School Aurangabad. (M.S.) India. MPS, College.

ABSTRACT

Effect of Spectators on sport performance is a sport that is characterized by the presence of spectators, or watchers, at its matches. For instance, American football, association football, baseball, basketball, Canadian football, cricket, field hockey, Formula One, ice hockey, rugby league, rugby union, team handball and volleyball are spectator sports, while hunting or underwater hockey typically are not. Spectator sports may be professional sports or amateur. They often are distinguished from participant sports, which are more recreational; golf and tennis can be either. Association football, also known as soccer, is by far the most watched sport on the planet. Spectator sports require venues or sometimes stadiums in which the fans may observe a game or event. The largest such facility on earth is the Indianapolis Motor Speedway and thus is host to the greatest spectacle in all of sports every year, the Indy 500, with a single day attendance at 400,000.

The increasing broadcasting of sports events, along with media reporting can affect the number of people attending sports due to the ability to experience the sport without the need to physically attend and sometimes an increasingly enhanced experience including highlights, replays, commentary, statistics and analysis. Some sports are particularly known as "armchair sports" or "lounge room sports" due to the quality of the broadcasting experience in comparison to the live experience. Spectator sports have built their own set of culture and traditions including, in the United States, cheerleading and pre-game and half time entertainment such as fireworks, particularly for big games such as competition decider events and international tests. The passion of some sports fans also means that there are occasionally spectator incidents.

Key words: Sports, Performance, Spectators

INTRODUCTION

Paradoxical performance effects (choking under pressure) are defined as the occurrence of inferior performance despite striving and incentives for superior performance. Experimental demonstrations of these effects on tasks analogous to athletic performance and the theories that may explain them are reviewed. At present, attention theories seem to offer the most complete explanation of the processes underlying paradoxical performance effects. In particular, choking may result from distraction or from the interference of self-focused attention with the execution of automatic responses. Experimental findings of paradoxical performance decrements are associated with four pressure variables: audience presence, competition, performance-contingent rewards and punishments, and ego relevance of the task. The mediating factors of task complexity, expectancies, and individual differences are discussed. Predicted on the basis of recent research on self-presentation and self-attention, that the presence of supportive audiences might be detrimental to performance in some circumstances specifically, the imminent opportunity to claim a desired identity in front of a supportive audience might engender a state of self-attention that could interfere with the execution of skilful responses. Archival data from championship series in 2 major league sports supported this reasoning. It was found that in baseball's World Series, home

 ISBN - 978-81-927686-5-6

EFFECT OF YOGA AND MEDITATION ON HEALTH RELATED PHYSICAL FITNESS AND PERFORMANCE OF STATE LEVEL BOXING PLAYERS

Abhijeet Deshmukh*, Ravindra Mali, Dr. Bappasaheb Maske*****

ABSTRACT

Boxing is one of the most popular games, especially in Europe and the Americas. Legends like Muhammad Ali, Jack Johnson, Joe Louis, Rocky Marciano, Benny Leonard, Mickey Walker along with many stars have brought worldwide fame and recognition to the sport. Boxing was earlier known by the name Pugilism, meaning sweet science. Historical evidence leads to the fact that boxing was prevalent in North Africa in 4000 BC. It was also popularly played in Greek and Rome. The rules were crude then and boxers often indulged into lethal boxing rounds with leather taped on to their bare hands. It is believed that In Ancient Rome, the boxing fighters were usually offenders and slaves. They played the game to win and gain independence. However, facts also point to free men fighting for competition and the spirit of sport. Eventually, Augustus is known to have banned fighting. It is also said that in 500 A.D. Theodoric banned the sport owing to its popularity and growing distraction caused in public life. The first signs of documented records take you to the year 1681 in Britain. It is a popular belief that the Duke of Albemarle held a boxing competition between his butcher and butler. The common reason for such matches is believed to be amusement and fun. Prior to 1866, Jack Boughtonis is credited with establishing a set of rules for boxing. It is said that Jack decided to publish the rules in 1743 after a grisly match with one of his opponents who died during the match. The legend was popularly known as the 'Father of boxing'. However, the more recognizable development occurred during a time known as modern era in boxing. In the year 1866, the Marquess of Queensberry consented to a new set of boxing rules. The rules were titled with his name. The new rules introduced limited number of 3-minute rounds. It also banned gouging and wrestling during the match and made gloves compulsory. It took a while for bare-knuckled fights to completely go out of fashion, but there was considerable decrease after the rule was passed. In 1892, James Corbett set this rule straight by defeating the bare-fisted boxer John Sullivan with the new established rules.

Keywards : Yoga & Meditation, Boxing

INTRODUCTION

Boxing is one of the most popular games, especially in Europe and the Americas. Legends like Muhammad Ali, Jack Johnson, Joe Louis, Rocky Marciano, Benny Leonard, Mickey Walker along with many stars have brought

* Research Scholar, Dr. BAM University, Aurangabad (MH)

** Research Scholar, Dr. BAM University, Aurangabad (MH)

*** Director & Head, Dept. of Phy. Edu. & Sports, Sant Ramdas College, Ghansawangi, Dist. Jalna (MH)

Indian Streams Research Journal
Volume 2, Issue.11,Dec. 2012
ISSN:-2230-7850

Available online at www.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

A COMPARATIVE STUDY ON COMPETITION ANXIETY OF JUNIORCOLLEGIATE RURAL AND URBAN KABADDI PLAYERS

BAPPA H. MASKE

Director Of Physical Education Sant Ramdas Arts, Commerce Science Mahavidayalay
Ghansawangi . Dist:jalna

Abstract:

The Purpose of the study was to compare the Anxiety of Kabaddi players in Rural and Urban For this 40 players (20 Rural and 20 Urban) were selected as a sample.A standard Scale developed by Dr. A.K.P Sinha and L.N.K Sinha ,Comprehensive Anxiety Test (SCAT) was used to measure the completion Anxiety of the players. To find out the singnificant differencre between Rural and Urban players ,'t' test was employed at 0.05 level of significant data revealed that there is a no significant difference in competition Anxiety . Moreover, from the mean values the Competition Anxiety of Urban Kabaddi players found more than the rural players.

KEY WORD:

Competition Anxiety.

INTRODUCATION:

Kabaddi is one of the oldest games in which strength plays a vital role. It was considered as the test of one's strength in the earlier times, In this sport event. Certain Specific physical structure with more physical strength, which is different from the athletes of other sports events, seems to play a important factor for success in high – level performance.

Kabaddi is a sport in which competitors attempt to lift heavy weights mounted on steel bas called barbells , the execution of which is a combinations of power , flexibility , technique, mental and physical strength. Anxiety plays a paramount role in sports . It is challenge in sports participation ,which produces anxiety. Anxiety determines how successful he would be . Anxiety may be positive motivating force or it may interfere with successful perfoemance in sport events . the degree of anxiety also varies with a number of different conditions. Anxiety is likely to be greater in higher competitive sports than in relatively non-competitive sports , because in the competitive sports,participants made upon them to succeed. The study of the effect of anxiety on sports performance has become a major topic of interest for sports psychologists, in recent years. The degree of perceived anxiety is an important variable to be concerned for the performance of an individual typically becomes in competitive tendency' to perceive competitive situation as threatening that is intense competition cerates varying levels of anxiety with in different performers.

Some react adversely to the competitive situation by reaching States of hyper anxiousness which often results in the inability to achieve optimum level of performance Competitive trait stress as the relatively stable disposition of an individual to perceive threat in competitive test (SCAT) in order to provide a reliable and valid instrument which is a situation specific anxiety. High on competitive situations with higher levels of anxiety than persons low on competitive train anxiety.

It is generally recognized that psychological factors are of crucial important in high level competitive sports. The relation between anxiety and performance has been the subject of many thorough

24 Indoor Air Polution : A Threat to Rural Women and Childern of Jalna District in Maharashtra

Mr. Jige S. B.

Head Department of Botany Sant Ramdas College Ghansawangi Dist- Jalna.

Introduction

Earth atmosphere is reservoir of oxygen needed to living organism and carbon dioxide essential for plants but superior intellect potential of man has made many alternations in the environment. In witch one of activities of human being is indoor pollution (IAP). In the world about one third i.e. about up to 90% rural householders in developing countries still depend on biomass fuels such as wood, dung, charcoal, crop residues like for cooking and heating purposes. About 37% smoke in our atmosphere is generated in people's homes and most of this form coal fires. As soon as man gets up in the morning he starts polluting the environment.

IAP causes highly in home and surrounding environment. In houses these biofuel burns openly in poor man's stove called as 'chullas' and its results increase high level IPA in house. In India 0.2 billion people used biofuel in which 49% fire wood, 8.9% cow dung cake, 1.5% coal, 2.9% kerosene, 28.6% LPG, 0.1% electricity, 0.4% biogas, and 0.5% other sources. IPA causes different diseases including respiratory infection, pneumonia, tuberculosis, chronic diseases, low birth weights, cardiovascular events and all causes mortality both in adult and children. According to world health organization 03 billion people cook and heat in open space about 04 million having premature deaths by 12% pneumonia, 26% heart diseases, 34% stroke,22% chronic, 06% lung cancer like diseases. Also WHO estimated 4000,000 children die due to IPA every year which is under five year age.

These biomass fuel is mostly plants wood for these purpose many plants cuts every year it also affect oxygen and carbon dioxide balance. Mostly IAP consist radon, asbestos, volatile organic compound, pesticide, heavy metals. Animal dung is another biomass fuel which consist mites and moulds.

Word having 7,469,394,904 populations our country contributes 128,829.405 populations. Maharashtra state shows 118,994,486. Jalna is one of district in Maharashtra state having 2.47% geographical area as compare to states total area. District cover 761259 km area and located on 19.1 to 20.3 latitude 75.4 to 76.4 east longitude consists nearly 19.58 lakh population in which 10.15 male and 9.43 female population with 255 per/km population density.

The Proceedings of National Seminar

on

ENVIRONMENT: POLLUTION AND PROTECTION

(18th December, 2015)

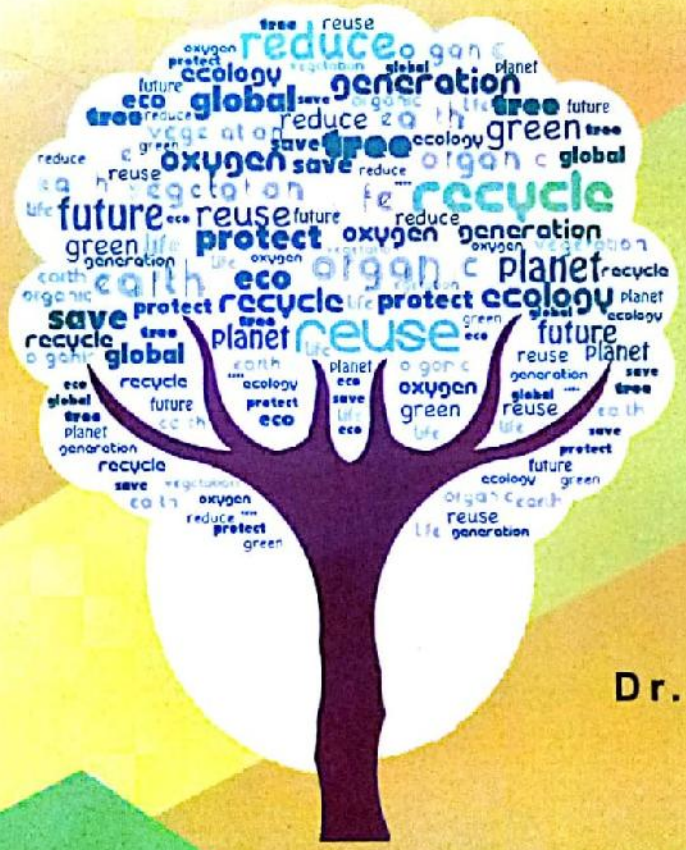

Chief Editor

Dr. T. L. Holambe

Editor

Dr. P. D. Deshmukh

Organized by

Department of Botany

Late Shankarrao Gutte Arts, Commerce & Science College,

Dharmapuri, Tq. Parli-V, Dist. Beed

www.guttecollege.in

16.
Clean Technology And Sustainability

Dr.D.R.Sapate
Assit. Prof. and Head Department of Physics,
Sant Ramdas Arts, Commerce and Science College Ghansawangi, Jalna

INTRODUCTION

Over the last decade, the topics of clean technology, energy and sustainability have moved from the periphery to the center of the global economy. Established and emerging companies, along with private equity and venture capital firms, are making sizable investments as they stake out their areas of the market. Governments have made sustainability and the technology needed to achieve it a key component of both environmental policy and economic development. The question no longer is whether this trend will take hold but rather when large markets will coalesce and which technologies and companies will prevail. Current global economic conditions and gyrating energy prices have made operating and investment conditions challenging in the short run, but industry players nonetheless are moving to capture mind share and press their speed-to-market advantage. The influence of clean tech, energy and sustainability extends beyond the diverse array of companies focused on this market space. Sustainability has become a strategic leadership issue in virtually every industry as enterprises rethink everything from product design to facilities strategies in the face of regulatory developments, increasing scarcity of resources and rising costs. Forward-thinking companies are appointing chief sustainability officers to proactively address these issues and turn them into opportunities for growth. Of course, while new developments can improve our quality of life and understanding of the world, scientists and policymakers may not always properly assess the potential risks or take full account of the public's concerns. Opportunities must be created for scientists and the general public to exchange views in a two-way dialogue of mutual respect and trust.

CLEAN TECHNOLOGY

It means a broad base of processes, practices and tools, in any industry that supports a sustainable business approach, including but not limited to pollution control, resource reduction and management end of life strategy, waste reduction, energy efficiency, carbon mitigation and profitability. When the cost of clean technology becomes competitive, everyone will benefit from advancements in solar and wind power, biofuel research, water filtration, grid management and transportation. There is a pressing need for cleaner fuels i.e. free or aromatics and of minimal sulfur content or ones that convert chemical energy directly to electricity, silently and without production of noxious oxides and particulates; chemical, petrochemical and pharmaceutical processes that may be conducted in a one-step, solvent-free manner and that use air as the preferred oxidant and industrial processes that minimize consumption of energy, production of waste or the use of corrosive, explosive, volatile, and nonbiodegradable materials. All these needs and other desiderata, such as the in situ production and containment of aggressive and hazardous reagents and the avoidance of use of ecologically harmful elements may be achieved by designing the appropriate heterogeneous inorganic catalyst which ideally should be cheap, readily preparable and fully characterizable preferably under in situ reaction conditions. A range of nanoporous and nanoparticle catalysts that meet most of the stringent demands of sustainable development and responsible clean technology is described. Specific examples that are highlighted include the production of adipic acid precursor of polyamides and urethanes without the use of concentrated nitric acid nor the production of greenhouse gases such as nitrous oxide; the production of caprolactam precursor of nylon without the use of oleum and hydroxylamine sulfate and the terminal oxyfunctionalization of linear alkanes in air. The topic of biocatalysis and sustainable development is also briefly discussed for the epoxidation of terpenes and fatty acid methyl esters for the generation of polymers, polylactides, and polyesters and for the production of 1,3-propanediol from corn.

SUSTAINABLE DEVELOPMENT

The concept of sustainable development, although had appeared in the 1970s, was widely disseminated in the early 1980s by the 'World Conservation Strategy' (IUCN, UNE'P and WWF, 1980), which called for the maintenance of essential ecological processes; the preservation of biodiversity and sustainable use of species and ecosystems. The Brundtland Report, Our Common Future (World

Vasantrao Kale Mahavidyalaya, Dhoki.

Tq. & Dist. Osmanabad

Affilated to Dr. Babasaheb Ambedkar Marathawada University, Aurangabad.

And

ICSSR Sponsored

National Level Seminar in Inter Disciplinary Subject.

on

WOMEN EMPOWERMENT ISSUES AND CHALLENGES

Chief Editor :

- **Dr. Haridas Fere**
  Principal

Editor :

- **Dr. Jyoti Nade**
  Convenor

ROLE OF WOMEN IN SCIENCE AND TECHNOLOGY

Abstract :

From the last couple of years, women are still under-represented in science and technology, both in the academic and private sector. This is due to a variety of reasons, mostly related to the role allocated to women in modern society. It is also however, a result of information or lack of, which places young women in difficult position of making a career choice, with little knowledge of available possibilities. Parents, teachers, and career guidance counselors all have a significant role in assisting or hindering the way young women chose their career paths and that choice begins early on from school, all the way through to higher education. Choice, essentially, and factors that determine it as well - as ways of encouraging female participation in science and technology - are the focus of the present article, Parents, teachers, and career guidance counselors all have a significant role in assisting or hindering the way young women chose their career paths and that choice begins early on from school, all the way through to higher education. Choice, essentially, and factors that determine it as well as ways of encouraging female participation in science and technology are the focus of the present article, As this article will show, the promotion through the usage of new technologies, of role models, is crucial in breaking the existing stereotype of women in science, engineering and technology. Science is often rejected as a career choice due to limited information available and positive role models to encourage young girls in participating. Career orientation offered at school through the usage of new technologies is an important step in that direction;

Keywords : Science and technology, Role models, Stereotypes, Transferability

1. INTRODUCTION :

Women have made tremendous progress in education and the workplace during the past 50 years. Even in historically male fields such as business, law, and medicine, women have made impressive gains. In scientific areas, however, women's educational gains have been less dramatic, and their progress in the workplace still slower. In an era when women are increasingly prominent in medicine, law, and business, why are so few women becoming scientists and engineers? This study tackles this puzzling question and presents a picture of what we know and what is still to be understood about girls and women in scientific fields. The report focuses on practical ways that families, schools, and communities can create an environment of encouragement that can disrupt negative stereotypes about women's capacity in these demanding fields. By supporting the development of girls' confidence in their ability to learn math and science, we help motivate interest in these fields. Women's educational progress should be celebrated, yet more work is needed to ensure that women and girls have full access to educational and employment opportunities in science, technology, engineering, and mathematics.

The number of women in science and engineering is growing, yet men continue to outnumber women, especially at the upper levels of these professions. In elementary, middle, and high school, girls and boys take math and science courses in roughly equal numbers, and about as many girls as boys leave high school prepared tc pursue science and engineering majors in college. Yet fewer women than men pursue these majors. Among first-year college students, women are much less likely than men tc say that they intend to major in science, technology. engineering, or math. By graduation, men outnumber women in nearly every science and engineering field, and in some, such as physics, engineering, and computer science. the difference is dramatic, with women earning only 2(percent of bachelor's degrees. Women's representation ir science and engineering declines further at the graduate level and yet again in the transition to the workplace Drawing on a large and diverse body of research, this repor presents eight recent research findings that provide evidence that social and environmental factors contribute to the underrepresentation of women in science anc engineering. The rapid increase in the number of girls achieving very high scores on mathematics tests once thought to measure innate ability suggests that cultura factors are at work. Thirty years ago there were 13 boys for every girl who scored above 700 on the SAT math exam at age 13; today that ratio has shrunk to about 3 :1.This increase in the number of girls identified as "mathematically gifted" suggests that education can and does make a difference at the highest levels of mathematica achievement. While biological gender differences, yet tc be well understood, may play a role, they clearly are no the whole story.

2. GIRLS' ACHIEVEMENTS AND INTEREST SCIENCE :

This report demonstrates the effects of societa beliefs and the learning environment on girls' achievement and interest in science and math. One finding shows tha when teachers and parents tell girls that their intelligence can expand with experience and learning, girls do better or math tests and are more likely to say they want to continue to study math in the future. That is, believing in the potentia for intellectual growth, in and of itself, improves outcomes This is true for all students, but it is particularly helpful fo girls in mathematics, where negative stereotypes persis

PROCEEDINGS

[ISBN: 978-93-84810-17-7]

National Conference on
Material Science and Renewable Energy Sources (NCMSRES-16)

11th and 12th March, 2016

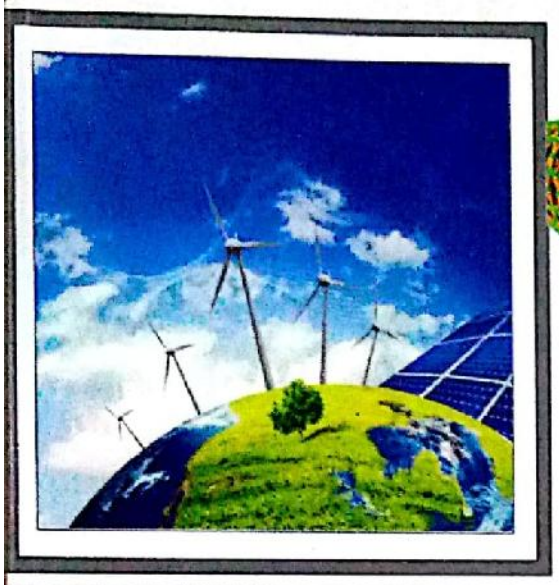

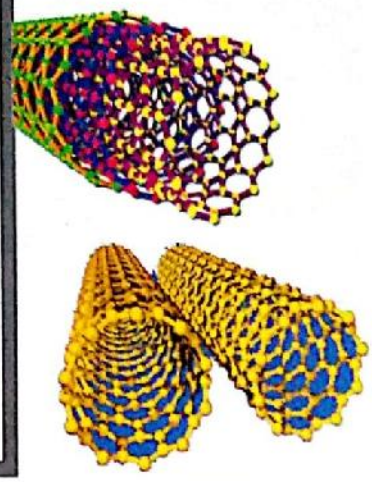

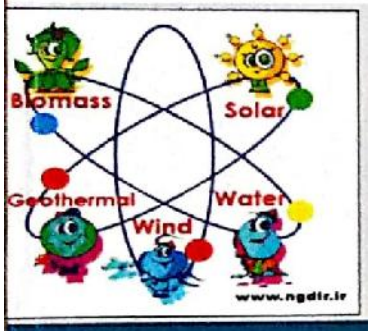

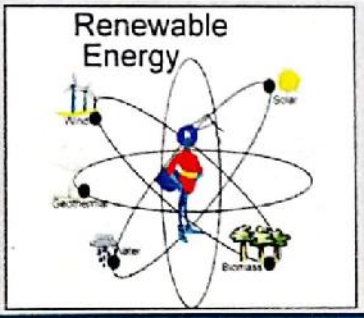

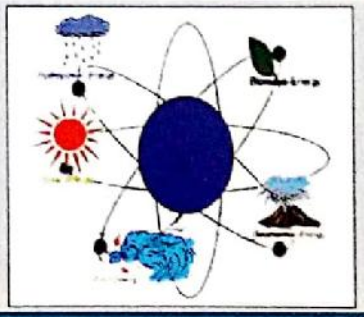

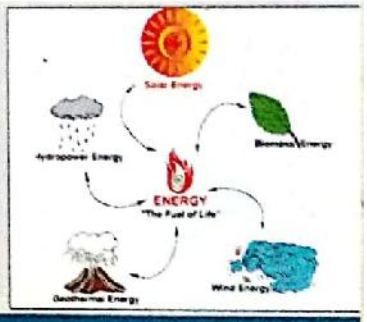

Principal and Chief Organiser
Dr. S.D. Salunke
Chief Editor
Dr. A.A. Yadav
Editor
Prof. R.N. Kendre

Organised By

Department of Physics, Electronics and Photonics
Shiv Chhatrapati Shikshan Sanstha's
Rajarshi Shahu Mahavidyalaya, Latur (Autonomous)
(NAAC Re-Accredited 'A' Grade With CGPA 3.38, UGC-CPE Status, FIST Support by DST)
Ph.No. 02383-245933, Fax . 02382-253645
Website : www.shahucollegelatur.org.in

Synthesis and Structural Properties of CFO+BST Magnetoelectric Composite Materials

[1]D.R.Sapate, [2]K.M.Jadhav

[1]Department of Physics, Sant Ramdas Arts, Commerce and Science College, Ghansawangi (MS).

[2]Department of Physics, Dr.Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad. (MS).

Corresponding Author:diliprsapate@rediffmail.com

Abstract

Ferrites ($CoFe_2O_4$) (CFO) and Ferroelectrics ($Ba_{0.9}Sr_{0.1}TiO_3$) (BST)were prepared by a conventional standard double sintering ceramic method. The structural properties of composite material were investigated. Composite materials with two distinct phases have received considerable attention in recent years because of their applications in several fields such as sensors, data storage and transducers, The X-ray diffraction analysis was carried out to find the planes and calculate the lattice parameters, X-ray density, bulk density and porosity of the ferrite - ferroelectric composite material.

Key words: X-ray diffraction, lattice parameters, X-ray density, composite material, bulk density and porosity

1 Introduction

In the recent years composite materials with ferrite and ferroelectric constituents have attracted scientists, from the point of view of their application and academic interest. Composites of ferrite and ferroelectrics exhibit important product property known as magneto-electric effect (ME effect) [1].The composite material is the product property of piezoelectric and magneto-electric phases which is mediated by the mechanical stress [2]. Ferroelectric materials are polar materials characterized by a transition to a paraelectric, nonpolar phase at a temperature at which their dielectric permittivity presents a maximum. Ferroelectrics are also a group of materials whose crystalline structure possesses crystallographic axis in the direction of which there is a spontaneous polarization in the polar phase, arising from a displacement of positive and negative centers of charge of the ions in the structure, whose sign can be reversed by a sufficiently high electric field [3].Some of the literature was written by protagonists of the facts here related. Ferroelectric, from the German "ferroelecktrisch" was a term coined in 1912 by Erwin Schrodinger. Ferroelectric materials exhibit spontaneous polarization, the direction of which can be switched by applying an external electric field. In fact, ferroelectric materials are a subclass of

Piezoelectricity was demonstrated in 1880 by P. J. and P. Curie [4] in Rochelle salt crystals (sodium potassium tartrite tetra hydrate). The first application was seen in SONAR technology during World War I.A few years after the introduction of piezoelectricity [5], who studied the dielectric properties in Rochelle salt in analogy with

Proceedings ISBN- 978-93-84810-17-7

अहिराणी लोकसाहित्याचा अभ्यास

कृष्णा पाटील यांचा विशेष संदर्भ

डॉ. शशिकांत पाटील

साहित्य, सामाजिक, आणि सांस्कृतिक अंगाने खानदेश परिसर आणि या परिसराच्या अहिराणी बोलीचे सामर्थ्य आणि वाङ्मयीन स्थान स्पष्ट झाले आहे. अहिराणीचा सवसार, सोनाना खजिना अहिराणी भाषाना गाना, ओवीदर्शन, प्रतिमा आणि सौंदर्य, लोकरामायण, आन्हे, म्हणी, वाक्प्रचार, उखाणे यातून अहिराणी बोलीचे योगदान स्पष्ट केले आहे. या सर्व लेखनासंदर्भात स्वतःची संशोधकीय भूमिका आणि अहिराणी बोलीचे श्रेष्ठत्व कृष्णा पाटील यांच्या लोकसाहित्याभ्यासाने जतन केलेले आहे. शोध अहिराणीचा, बोली म्हणून अहिराणीचा विचार, खानदेश या शब्दाची व्युत्पत्ती, खानदेशचे साहित्यिक महत्त्व, कृष्णा पाटील यांचे वेगळेपण आणि मर्यादा, 'नाती-गोती' या खंडातून येणारी कुटुंबव्यवस्था, 'नाती-गोती'विषयक ओव्यांचे संकलन आणि विवेचन, 'नाती-गोती'विषयक ओव्यांच्या संकलनातील वेगळेपण, माय, आयबा, बहीण, भाऊ, लेक, जावई, सासू, सईबहीण या मुद्यांच्या आधारे केलेली आहे. कृष्णा पाटील यांनी संकलित केलेल्या ओव्यांचा आणि गीतांचा अभ्यासच केलेला नसून, अहिराणी बोली आणि त्यामागे असणाऱ्या संकल्पनांची उकलही केलेली आहे.लोकसाहित्यातील लोकसंस्कृती, अहिराणी लोकसाहित्यातील [illegible]त, अहिराणी लोकसाहित्यातील सण-उत्सव, गुढी पाडवा, आखाजी, [illegible]षाढी एकादशी, कानबाईना रोट, पोळा, गुलाबाई, दसरा, दिवाळी, तुळशी विवाह, संक्रांत, होळी, सण-उत्सवांमागील लोकधर्म, सण-उत्सवांची प्रादेशिक वैशिष्ट्ये या ग्रंथाच्या रूपाने अभ्यासलेली आहे.

मौखिक परंपरेने संक्रमित झालेले ओवीवाङ्मय हे प्रयोग आणि श्राव्य रूपाने पुढे आलेले आहे. यातूनच लोकधर्माची निर्मिती होते आणि या लोकांकडून पाळल्या गेलेल्या परंपरा लोकधर्मी परंपरा म्हणून ओळखल्या जातात. लौकिक जीवनाला जोडल्या गेलेल्या या परंपरा स्त्रीमनातून निर्माण झालेल्या आहेत. या परंपरांचा उल्लेख आणि जतन करण्याचे उत्तम माध्यम

चिन्मय
प्रकाशन, औरंगाबाद
९८२२८७५२१९

ISBN 938194881-X
9 789381 948811

खानदेशचे
मराठी साहित्यरूप
डॉ.शशिकांत पाटील

- **भाषांतरमीमांसा**
  संपा.-डॉ. कल्याण काळे, डॉ. अंजली सोमण
- **माध्यमांची भाषा आणि लेखन कौशल्य**
  डॉ. केशव तुपे
- **मराठी भाषा वाणिज्य आणि व्यवहार**
  डॉ. भारत हंडिबाग, प्रा. गौतम गायकवाड
- **मुद्रित माध्यम लेखन तंत्र व कौशल्य**
  डॉ. भारत हंडिबाग, राजकुमार येल्लावाड
- **संदेशन प्रक्रिया : मराठी भाषा आणि विकास**
  डॉ. सुभाष बागल
- **पत्रकारिता स्वरूप आणि कार्य**
  डॉ. निशिगंधा व्यवहारे
- **जागतिकीकरणातील बदलती पत्रकारिता**
  डॉ. शोभना नेरलीकर
- **महाराष्ट्रातील विविध धर्म-भक्ती संप्रदाय**
  ''तत्त्वज्ञान आणि साहित्य'' (पद्मश्री यू.म. पठाण गौरवग्रंथ)
  डॉ. यशवंत सोनुने, डॉ. कैलास इंगळे
- **डॉ. यू. म. पठाण यांचे संतसाहित्य चिंतन**
  डॉ. यशवंत सोनुने
- **उच्च शिक्षणापुढील आव्हाने**
  डॉ. नारायण तु. कांबळे
- **साहित्य (आस्वाद अध्यापन आणि समीक्षा)**
  संपा. सतीश बडवे
- **स्त्री अधिकार** (कौटिलीय अर्थशास्त्र, मनुस्मृती व महाभारत यातील संकल्पना)
  डॉ. आशा लालसरे
- **घोषवाक्य स्वरूप आणि प्रयोजन**
  डॉ. मधुकर क्षीरसागर

चिन्मय
प्रकाशन, औरंगाबाद
९८२२८७५२१९

ISBN 938194864-X
9789381948644

ISBN No : 978-81-931444-1-1

सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ, पुणे
(बी.सी.यु.डी.) अंतर्गत व

25 YEARS

महर्षी कर्वे स्त्री शिक्षण संस्थेचे

श्री सिद्धीविनायक महिला महाविद्यालय

कर्वेनगर, पुणे - ४११ ०५२.

मराठी विभाग आयोजित

राष्ट्रीय चर्चासत्र

शुक्रवार, दि. २२ जानेवारी २०१६ व शनिवार, दि. २३ जानेवारी २०१६

समाजसुधारकांचे मराठी साहित्याला योगदान

संपादक
प्राचार्या, डॉ. पुष्पा रानडे
कार्यकारी संपादक
प्रा. डॉ. शैलेश त्रिभुवन

सावित्रीबाई फुले यांच्या कवितेतून येणारे ग्रामीण जीवन

प्रा. डॉ. मारोती घुगे
संत रामदास कला, वाणिज्य व
विज्ञान महाविद्यालय, घनसावंगी, जि. जालना
भ्रमणध्वनी : ९८५०८०७६१८

प्रस्तावना : सावित्रीबाई फुले यांचा जन्म ३ जानेवारी १८३१ ला नायगाव, ता. खंडाळा, जि. सातारा येथे खंडोजी पाटील व लक्ष्मीबाई यांच्या घरी झाला. वयाच्या नवव्या वर्षी म्हणजेच १९४० रोजी त्यांचा विवाह जोतिराव फुले यांच्याशी झाला. क्रांतिज्योती सावित्रीबाई आणि महात्मा फुले हे दाम्पत्य महाराष्ट्रातील अग्रगण्य समाजसुधारक म्हणून ओळखले जाते. दीन-दलित, गोर-गरीब, दुबळ्यांचा आवाज म्हणून फुले दाम्पत्याचे साहित्य उदयास आलेले दिसते. महात्मा जोतिराव फुल्यांनी पुकारलेल्या सामाजिक जागृतीच्या एल्गारात सावित्रीबाईंनी हिरीरीने भाग घेऊन समाजजागृतीची चळवळ फुल्यांनंतरही सुरू ठेवली. स्त्रीदास्य, जातिभेद, अज्ञान पळवून लावून एक सक्षम समाजाचे स्वप्न सावित्रीबाई पाहत होत्या, यासाठी त्यांना भयंकर सामाजिक छळास सामोरे जावे लागले. जोतिराव फुले व सावित्रीबाईंना गोविंदराव फुल्यांनी आपल्या घरातून बाहेर काढून दिले, तरीही आपल्या उद्देशापासून ते थोडेसेही डगमगले नाहीत. महात्मा फुले यांनी १९४८ ला पुण्यात सुरू केलेल्या शाळेच्या सावित्रीबाई पहिल्या महिला शिक्षिका, मुख्याध्यापक होत्या. १८४९ ला उस्मान शेख यांच्या वाड्यात प्रौढांसाठी शाळेची स्थापना तर याच वर्षी बुधवार पेठेत चिपळूणकर यांच्या वाड्यात मुलींची शाळा काढली. १८५२ मध्ये गंज पेठ व विश्रामबाग वाड्यातील शाळेत अध्यापनाचे कार्य केले. १८५५ मध्ये शेतकरी व शेतमजुरांसाठी महात्मा फुले व सावित्रीबाईंनी रात्रशाळा काढली. त्यांच्या या शाळा स्थापनेचा विचार केल्यास दीन-दलित-पददलितांसाठी चाललेली ज्ञानदानाची प्रक्रिया अतिशय महत्त्वाची वाटते. 'बुडती हे जन, न देखवे डोळा । म्हणुनी कळवळा येतसे' या संत तुकारामांच्या उक्तीप्रमाणे आयुष्यभर फुले दाम्पत्य स्त्री शिक्षणासाठी, शेतकऱ्यांच्या न्यायासाठी व सामाजिक सुधारणेसाठी प्रयत्नात राहिले. त्यांनी नुसत्या सामाजिक सुधारणा सुचविल्या नाहीत तर आदी कृतीत आणल्या आणि मगच समाजाला सांगितल्या म्हणूनच महात्मा फुले व सावित्रीबाई फुले यांना 'कर्ते सुधारक' म्हटले जाते. सावित्रीबाई फुले यांचा काव्यसंसार त्यांच्या समाजचिंतनाची उत्कृष्ट अभिव्यक्ती होय.

सावित्रीबाई फुले यांचे साहित्य : महात्मा फुले यांनी ज्याप्रमाणे साहित्य लिहिले त्याचप्रमाणे सावित्रीबाई फुले यांनीही साहित्यनिर्मिती केलेली दिसते. सावित्रीबाई फुले यांनी आपल्या मनातील विचार प्रकटीकरणासाठी 'काव्यफुले' व 'सुबोधरत्नाकर' असे दोन कवितासंग्रह लिहिले. त्यांचा 'काव्यफुले' हा कवितासंग्रह १८५४ मध्ये प्रकाशित झाला. या कवितासंग्रहात एकूण ४१ कविता आहेत. कवितेतून निसर्गाचे येणारे विलोभनीय चित्रण त्यांच्या भावावस्थेची ओळख करून देते. यातीलच सामाजिक भान व्यक्त करणाऱ्या 'ब्रह्मवंती शेती', 'बळीचे स्तोत्र' यांसारख्या कवितांमधून शेतकऱ्यांच्या जीवनजाणिवांचे

Vivekanand Shikshan Sanstha's

Vivekanand Arts, Sardar Dalipsingh Commerce & Science College

Reaccredited by NAAC with 'A' Grade (3.36 point)
A College with Potential for Excellence
An ISO 9001-2008 Certified Institution

योगः कर्मसु कौशलम्

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

Proceedings of

UGC SPONSORED
National level Seminar on

Emerging Trends in Commerce & Management

Dr. B. S. Solunke
Chief Editor

Dr. K. B. Laghane
Associate Editor

 ISBN : 978-93-82504-64-1

Foreign Direct Investment in Indian Retail Sector: Challenges and opportunities

Abstract

The Government as a part of its liberalization policy now proposes to open –up the retail space of foreign investment by allowing FDI up to 51% in multi-brand retail and 100% in single brand retail. The move will allow global retail chain like Wal-Mart (USA), Tesco (UK) Carrefour (France) etc. To own up to 51% or retail along with the Indian partners and allow foreign companies to fully own single brand retail operation. However, the Indian government and state government have also put several conditions, as expected; there is widespread opposition, to the move from the political parties. However, the business community and the media welcome the move by highlighting the benefits we get from it,

Looking at the merit and demerits of the above arguments, one can obliviously say that in view of the benefits, employment opportunities and progress that are predicated by industry, trade and experts in economics, FDI in retail sector would be more beneficial than harmful to Indian economy. However, no one can still envisage the future course of events with absolute certainty at the same time the authorities cannot brush away the apprehensions of the opponents.

Introduction:

Globalization of Indian economy paved way for increase FDI. It is being one of the foundational resources for the balanced growth, expansion and development of economy. The Government announced a number of reforms designed to encourage FDI and presents a favorable scenario for investors. FDI generates ample opportunities for employment generation, new industrial set ups and technological innovations but for a growing economy like ours FDI has twin face i.e. it has its own costs. FDI creates currency drain, reduction in opportunities for local entrepreneurs and increase competition from global organization, looking at the picture of today's economic situation, it becomes necessary to find that FDI is essential but to what extent and in which sectors?

The Government as a part of its liberalization policy now proposes to open –up the retail space of foreign investment by allowing FDI up to 51% in multi-brand retail and 100% in single brand retail. The move will allow global retail chain like Wal-Mart (USA), Tesco (UK) Carrefour (France) etc. To own up to 51% or retail along with the Indian partners and allow foreign companies to fully own single brand retail operation. However, the Indian government and state government have also put several conditions, as expected; there is widespread opposition, to the move from the political parties. However, the business community and the media welcome the move by highlighting the benefits we get from it,

Definition of Retail:

Retailing can be said to be the interface between the producer and the individual consumer buying for personal consumption. This excludes direct interface between the manufacturer and institutional buyers such as the government and other bulk customers. Retailing is the last link that connects the individual consumer with the manufacturing and distribution chain. A retailer is involved in the act of selling goods to the individual consumer at a margin of profit.

Objectives:

1) To identify current trends in FDI.
2) To analyze the impact of FDI.
3) To study and analyze the role of FDI in Indian economy.
4) To discuss the theoretical base of FDI

FDI Policy in India:

FDI as defined in Dictionary of Economics (Graham Bannock et.al) is investment in a foreign country through the acquisition of a local company or the establishment there of an operation on a new (Greenfield) site. To put in simple words, FDI refers to capital inflows from abroad that is invested in or to enhance the production capacity of the economy. Foreign Investment in India is governed by the FDI policy announced by the Government of India and the provision of the Foreign Exchange Management Act (FEMA) 1999. The Reserve Bank of India ('RBI') in this regard had issued a notification, which contains the Foreign Exchange Management (Transfer or issue of security by a person resident outside India) Regulations, 2000. This notification has been amended from time to time.

VISHWABHARATI

FRONTIERS IN PLANT DISEASES AND ITS CONTROL FOR AGRICULTURAL DEVELOPMENT

Dr. D.P. Garud
Chief Editor

Dr. U.T. Kesare
Editor

32

SURVEY OF FOLIAR FUNGAL DISEASE OF ONION IN MAHARASHTRA

Subhash B. Pawar & Ashok M. Chavan

Abstracts:

In the present research work investigation of the foliar fungal diseases in the fields is studied. Onions suffer from many fungal diseases, such as white rot, southern blight; Purple blotch and Stemphylium blight are the major foliar fungal diseases. A complete causes the number of onion fields every year. In these diseases are management through use of chemicals, like fungicides and biological control. In this study symptoms of plants, and there control foliar fungal diseases of onion, most important foliar fungal diseases of onions are purple blotch caused by *Alternaria porri* and Stemphylium blight by *Stemphylium vasicarium* of onions.

Key word: Onion, Purple blotch, blight.

Introduction:

Onion (*Allium cepa L.)* is the important commercial vegetable crops grown in all worlds. India is the second largest producer of onion after the china, and leader in production. In India occupies an area of 1.05 million hectare with the production of 16.81million

Subhash B. Pawar & Ashok M. Chavan: Seed Health and Fungal Biotechnology Laboratory, Dept. of Botany, Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad (MS) India.

मराठवाडा अर्थशास्त्र परिषदेचे ३३ वे अधिवेशन
दिनांक ५ व ६ फेब्रुवारी २०१६

अमोलक अर्थक्रांती

श्रीमती शांताबाई कांतीलाल गांधी कला, अमोलक विज्ञान व
पन्नालाल हिरालाल गांधी वाणिज्य महाविद्यालय
कडा ता.आष्टी जि.बीड

चिन्मय प्रकाशन, औरंगाबाद ९८२२८७५२१९

महाराष्ट्रातील जलसिंचनाचा अभ्यास

मार्गदर्शक
डॉ. राधेश्याम किसनराव राऊत
अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख संत रामदास कला,
वाणिज्य आणि विज्ञान महाविद्यालय,
घनसावंगी, जि. जालना.

संशोधक विद्यार्थी
जीवन भागवत सपकाळ

प्रस्तावना:

महाराष्ट्र हे भारतातील प्रमुख राज्यापैकी एक आग्रगण्य असे राज्य. परंतु अशा या महाराष्ट्र राज्यालाही एक गंभीर प्रश्न काही वर्षापासून भेडसावत आहे. तो म्हणजे दुष्काळ मानवी जीवनामध्ये हवेच्या नंतर पाणी हा महत्वाचा घटक आहे म्हणून पाण्याला आपण जीवन म्हणतो. पाण्याचा उपयोग मानवाला पिण्यासाठी व घरगुती वापरासाठी तर होतोच त्याशिवाय पशुपालन, जलसिंचन, उद्योगधंदे, जलवाहतूक व मासेमारी इ. कार्यासाठी देखील पाण्याचा उपयोग मानवाला होतो. या मुळेच पाण्याला जीवसृष्टीचा आत्मा म्हटले जाते.

पृथ्वीवर पाणी मुबलक प्रमाणात असले तरी त्याची वाटणी मात्र विषम झाली आहे. तसेच पृथ्वीवरील सर्वच पाणी मानवास उपयोगी नाही पृथ्वीवरील एकूण पाण्याच्या साठयापैकी ९७ टक्के पाणी महासागरात खाऱ्या पाण्याच्या स्वरूपात आहे व ०३ टक्के पाणी गोडया पाण्याच्या स्वरूपात आहे. परंतु या ०३ टक्के पाण्यापैकी २.१ टक्के पाणी घनस्वरूपात आहे. त्यामुळे त्याचा मानवास विशेष उपयोग होत नाही, तर फक्त राहिलेल्या ०.०९टक्के पाण्याचाच उपयोग होतो. जे पाणी नद्या, सरोवरे विहीरी तळ्यी, इ. च्या स्वरूपात आहे. म्हणून जसजशी लोकसंख्या वाढली व कारखानदारिचा विकास होत गेला तसतसे गोडे पाणी मिळणे अवघड झाले. ही बाब लक्षात घेऊनच संयुक्त राष्ट्र सघाच्या सियियानी प्रतिनिधने अशी चेतावणी दिली की "तो दिवस दूर नाही की ज्या दिवशी एक थेंब पाणी, एक थेंब खनिज तेलापेक्षा महाग होईल." आणि आज आपण कमी अधिक प्रमाणात हे अनुभवत आहे.

संपूर्ण महाराष्ट्राचा विचार केला असता दुष्काळ परिस्थिती सर्व भागात सारख्या प्रमाणात नाही त्याला पर्जन्यमान हा नैसर्गिक घटक जवाबदार असला तरी काही राजकीय व प्रशासकिय धोरणेही जवाबदार आहे.आज महाराष्ट्रातील सहा प्रशासकीय विभागाचा विचार केला तर औरंगाबाद व अमरावती विभागातील जलसिंचन क्षमता कमी आहे. या विभागातील मोठया धरणांची संख्या व क्षमता कमी आहे. कालव्याचा विकास हवा तितक्या प्रमाणात झालेला नाही.

मराठवाडा
गती-प्रगती

संपादक

डॉ.बी. आर. गायकवाड

मराठवाडा विभागातील पंतप्रधान रोजगार योजना - एक अभ्यास

डॉ. राधेश्याम किसनराव राऊत,
सहयोगी प्राध्यापक तथा अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख,
संत रामदास महाविद्यालय, घनसांवगी, जि. जालना.

प्रस्तावना (Introduction)

भारताला १९४७ ला स्वांतत्र्य मिळाल्यापासून भारत हा विकसीत होण्याच्या दृष्टिने पाऊले उचलित असून, १९५१ पासून भारताने पंचवार्षिक योजनेच्या माध्यमातून सर्वांगीण विकास करण्यास सुरुवात केली. मात्र बेरोजगारीचे प्रमाण कमी होत नव्हते. यासाठी पंतप्रधान रोजगार योजना सुरु करण्यासाठी १९९० च्या दशकापासून हालचाली सुरु झाल्या १५ ऑगस्ट१९९३ च्या स्वांतत्र्यदिनी मा. पंतप्रधानांनी राष्ट्राला उददेशून केलेल्या अभिभाषणात, सुशिक्षित बेरोजगांराकरिता प्रभावी स्वंयरोजगार योजना लवकरच विहित करण्याचा मानस व्यक्त केला होता, या बाबीस अनूसरुन केद्र शासनाच्या उद्योग मंत्रालयाने "पंतप्रधान रोजगार योजना" विहित केली असून ती ०२ ऑक्टोबर १९९३ म्हणजेच राष्ट्रपिता महात्मा गांधी यांच्या जयंती दिनांकापासून कार्यान्वित झाली आहे. सदर योजना राज्य शासन भारतीय रिझर्व्ह बँक आणि अन्य वित्तीय संस्था यांच्या मदतीने अंमलात आली आहे.

उद्योग संचालनालयाने प्रस्तुतची योजना जिल्हा उद्योग केद्रांमार्फत राबवावी. तसेच मुंबई उपनगर जिल्हा या दोन जिल्ह्यासाठी ही योजना सहसंचालक (उद्योग)यांनी केद्र शासनाने विहित केलेल्या इष्टकांचे विविध जिल्ह्यासाठी

Special Issue 3rd
Feb. 2016

ISSN-2250-0383
IMACT FACTOR-0.421

SHODHANKAN

21ST CENTURY WORLD : PRESENT SCENARIO & CHALLENGES

EDITOR
Dr. Pandit Nalawade

Scanned by CamScanner

62. CLIMATE CHANGE AND IT'S IMPACT AND CHALLENGES

Dr. Raut Radheshyam Kisanrao, Head and Research Guide
Department of Economics, Sant Ramdas College, Ghansawangi, Dist Jalna.

Introduction

In the last twenty years, the issue of global warming and climate change has become the international political Issue. Changing climatic conditions can have the big effect on our life and environment. Climate change is affecting India in many ways like erratic monsoon, changes in agricultural zones, spread of tropical diseases, sea level rise, availability of fresh water, floods, droughts, hurricanes heat waves, storms, etc. Draughts and floods are destroying especially the crops and harvest of farmers in developing countries like India. Industrialization in the nineteenth and twentieth century stimulated the process of global warming due to excessive CO2-emissions, resulting from the use of fossil fuels like coal and oil. Changing climate is major challenge before the world to cope with the situation the present international political strategy concentrating to stabilize CO2 emissions and trying to balance the environment. This paper is an attempt to study the impact of climate change on poverty.

Climate change: Climate refers to a long-term variation in the atmospheric condition of a specific region or regions and climate change means a gradual change in the climate system both by natural and artificial causes. Climate change is caused by the change in each component of the climate system such as atmosphere, hydrosphere, biosphere, cryosphere and lithosphere

Natural causes: change in solar activity, volcanic eruption, sea water temperature, ice cap distribution, westerly waves and atmospheric waves.
Artificial causes: carbon dioxide emission from industry and agricultural production activities, deforestation, acid rain and the destruction of the ozone layer.

Climate change affects the hydrology including underground water level, water temperature, river flow, and water quality of lakes and marshes, by impacting precipitation, evaporation, and soil moisture content as well as northward movement of plant habitats, changes in animal habitats, rise of ocean temperature, shortened winter and early arrival of spring. It also affecting food production include reduced crop quantity and quality due to the reduced growth period following high levels of temperature rise; reduced sugar content, reduced land fertility, and reduced storage stability in fruits, increase of weeds, and harmful insects in agricultural crops.

The industrial countries are mainly responsible for climate change the poor in the developing countries are most strongly affected by its dangerous impacts. Climate change and poverty are linked by the issue of vulnerability. Poor people are disproportionately Affected not only because they are often more exposed and invariably more vulnerable to climate-related shocks but also because they have fewer resources and receive less support from family, community, the financial system, and even social safety nets to prevent, cope, and adapt.(World Bank report 2015). Poverty is understood as the lack of material plenty, usually equated with lack of income; the inability to satisfy insatiably escalating expectations of access to material goods and services.

A majority of the world's population officially living in poverty depends

Scanned by CamScanner

Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad.
In Association with

Chetan Shikshan Prasark Mandal's Vaijapur,
Arts Senior College, Aurangabad.
and
KATHA U. K. (BRITAN)

कथा (यूके)
Katha (UK)

ONE DAY INTERNATIONAL CONFERENCE
On

GLOBAL ENVIRONMENT : ISSUES, CHALLENGES AND SOLUTIONS
(An Interdisciplinary Approach)

29 FEBRUARY 2016

Editor
Dr. Vinod Bairagi

ENGLISH Part - II

Ajanta Prakashan

 ISBN : 978-93-83587-35-3

46 Impact of Climate Change on Agricultural Development in India

Dr. Raut Radheshyam Kisanrao

Head and Research Guide Department of Economics, Sant Ramdas College, Ghansawangi, Dist Jalna.

Introduction

Climate change is not a new phenomenon in the world. The rise in temperature of the earth surface and in atmosphere, fluctuation in rainfall, declining ground water, flooding due to high rainfall, drought, soil erosion, heavy wind, rising sea level due to melting of glacier, cyclone, wind speed, hail storm, fog, earthquake and landslide etc., are all the clear evidence of climate change phenomenon. Though, it is a natural process but in some cases human activities are also responsible for this. There are many examples across countries where increase in the possibilities of climate change due to growing population, rapid urbanization, higher industrialization, use of modern technology, innovation, higher economic development, transport, building construction, reduction in forest area etc. are observed (Ahmad et al., 2011). In mid, high latitude and higher income countries climate change has positive impact on agricultural production or crop yield, and on the other hand, lower-latitude and lower income countries experience a negative effect on agricultural production. On the other hand, developing countries are most vulnerable compared to developed countries.

Meaning And Nature Of Climate Change

Climate change is a change in the statistical distribution of weather patterns when that change lasts for an extended period of time (i.e., decades to millions of years). Climate change may refer to a change in average weather conditions, or in the time variation of weather around longer-term average conditions (i.e., more or fewer extreme weather events). Climate change is caused by factors such as biotic processes, variations in solar radiation received by Earth, plate tectonics, and volcanic eruptions. Certain human activities have also been identified as significant causes of recent climate change, often referred to as "global warming".

Climate change is newcomer to the international political and environmental agenda, having emerged as a major policy issue only in the late 1980s and thereafter. It has emerged since the 19th century that the CO_2 in the atmosphere is a 'greenhouse gas', that is, its presence in the atmosphere helps to retain the incoming heat energy from the sun, thereby increasing the earth's surface temperature. Of course, CO2 is only one of several such greenhouse gases in the atmosphere. Others include methane, nitrous oxide and water vapour. However, CO2 is the most important greenhouse gas that is being affected by human activities. CO2 is generated by a multitude of processes. Since the Industrial Revolution, when our usage of fossil fuels increased dramatically, the contribution of CO2 from human activities has grown large enough to constitute a significant perturbation of the natural carbon cycle.

Jai Bhagwan Sevabhavi Sanstha's

Late Shankarrao Gutte Gramin Arts, Commerce & Science College, Dharmapuri, Dist. Beed (M.S.)

On the occasion of Dr. Babasaheb Ambedkar's 125th Birth Anniversary organizes

National Conference

On

" Dalit Literature and Contemporary Society "

(22 April, 2016)

Chief Editor

Prof. Shrimant T. Kawale

Organized by

Dept. of Economics,
Late Shankarrao Gutte Gramin
Arts, Commerce and Science College,
Dharmapuri, Dist. Beed - 431519 (M.S.)

7

Dr. Babasaheb Ambedkar and the Dalit Movement

Dr. Radheshyam K. Raut
Head, Dept. of Economics,
Sant Ramdas College,
Ghansawangi, Dist. Jalna (M.S.)

Introduction

Some people are born brilliant, some have brilliantness thrust upon them and some achieve brilliantness. To the last division, Dr. B. R. Ambedkar belongs. Dr. Ambedkar was a great patriot, social thinker, political reformer, philosophical writer with progressive ideas. He stood for all political, social and cultural activities which increased the cause of human progress and happiness. He was the soul for the constitution of India. He crusaded for the betterment of the oppressed and depressed classes. And in this struggle, he stood rare crusading spirit, carving out in this process plays significant role for himself among the leading architects of modern India.

Formulating a dignified social and political identity for dalits is always valued as one of the essential tasks of modern social movements in India. Among all such movements, one can witness a conflicting relationship between "the given" identities and the identities carved by the "dalit self". The non-dalit identities of the self in general imagine or construct a meta-narrative of cultural identity based upon highly parochial and xenophobic ideas.

The dalit political discourse has produced a concrete alternative to the mainstream nationalist formulations in all the realms of public reason. The discourse legitimises the thirst for political power, as it is one of the prime instruments in bringing a radical change in social relationships [Sudha Pai 1998: 40]. On the one hand, rejection of political dominance by the "manuvadis" became the mantra of the new dalit political ideology. On the other hand, the Ambedkarite Buddhist identity challenges the "immoral", unscientific and regressive modern social system and is hopeful of building a modern social order based on human values.

Ambedkar formulated and conceptualised the meaning and political philosophy of both these domains with certain prerequisite modern ethical norms. The contemporary dalit movements have followed divergent routes to achieve social transformation without any dialogical relationship between them. This paper will focus on the reasons of an imaginary distance between the two recent transformations: the social upsurge of dalit castes who embrace Buddhism to bring social change and the assertion of BSP as a political party under the

Dept. of Economics, Late Shankarrao Gutte Gramin ACS College, Dharmapuri, Dist. Beed (M.S.)

2016-17

S.No 80

RAIN WATER HARVESTING

पावसाच्या पाण्याचे संधारण

संपादक: डॉ. सर्जेराव व्ही. ताठे

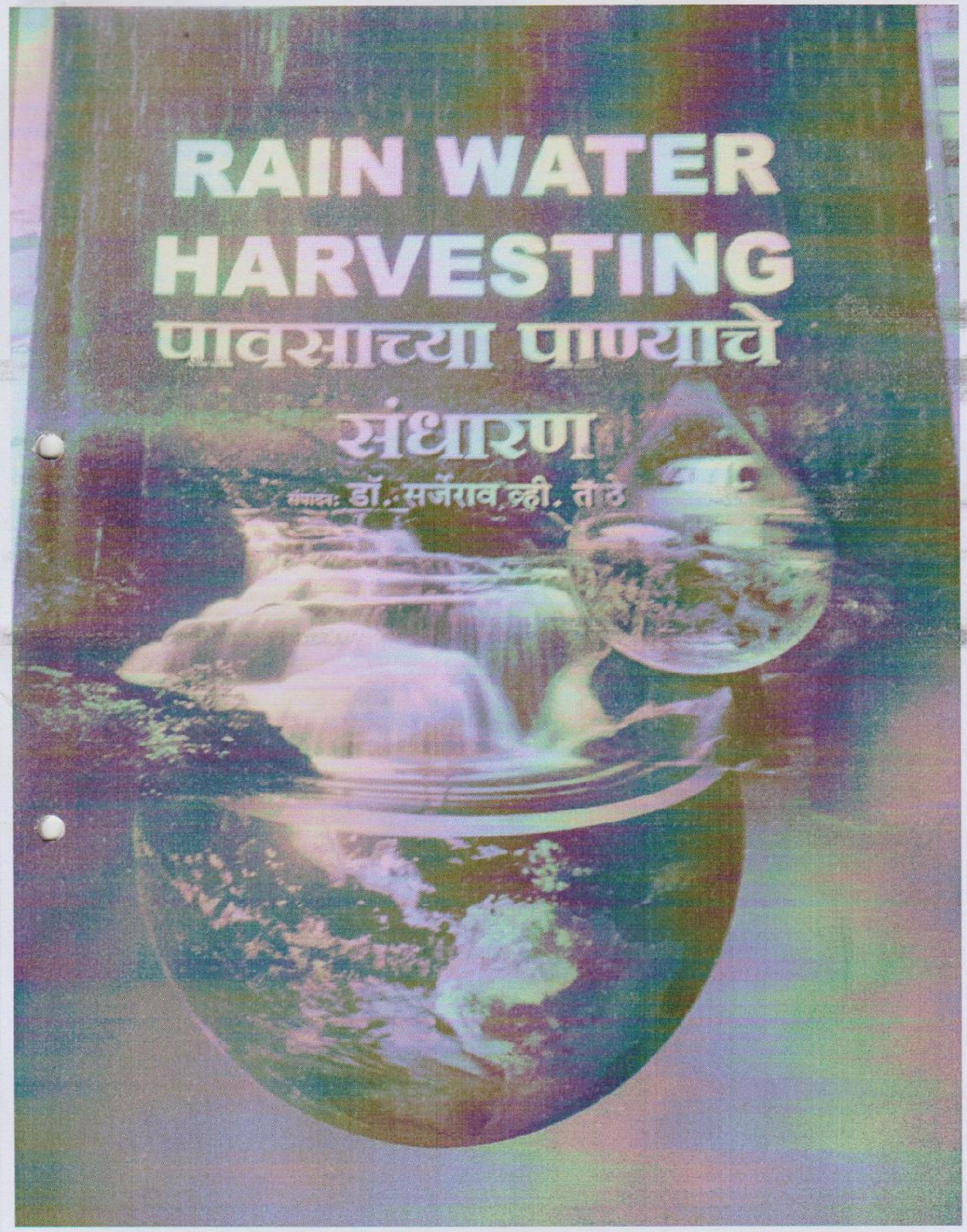

ISBN : 978-93-81948-90-3

जलयुक्त शिवार : महाराष्ट्र राज्याचा शाश्वत विकास

सौ. छाया भगवान बोर्डे
संशोधक विद्यार्थिनी
डॉ.बा.आं.म.विद्यापीठ, औरंगाबाद

प्रा.डॉ. ताठे एस.व्ही.
विभागप्रमुख- भुगोल
संत रामदास कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, घनसावंगी

सारांश:

महाराष्ट्राच्या शेती समस्यांचे वर्णन करताना शेतीच्या समस्या म्हणजे शंभर तोंडी रावण असे केले जाते. प्रतिकूल अशा भौगोलिक परिस्थितीमुळे महाराष्ट्राला सतत दुष्काळी संकटांना सामोरे जावे लागते. प्रतिकुलतेतून अनुकूलता निर्माण करणे हा या राज्याच्या मातीचा गुणधर्म आहे.

राज्याच्या काही भागात दर दोन वर्षांनी या ना त्या कारणांनी निर्माण होणाऱ्या पाणी टंचाईवर मात करण्यासाठी महाराष्ट्राचे नवे भाजपा सरकारने जलयुक्त शिवारअभियान ही योजना राबविण्याच्या निर्णय घेतला आहे या नाविण्यपूर्ण योजनेनुसार जलसंधारणांतर्गत सर्वसमावेशक उपाययोजनद्वारे एकात्मिक पध्दतीने शाश्वत शेतीसाठी पाणी आणि पिण्याचे पाणी उपलब्ध करुन देण्यास प्राधान्य दिले आहे या योजनेद्वारे २०१९ पर्यंत संपूर्ण महाराष्ट्र टंचाईयुक्त करण्याचा केलेल्या निर्धार खऱ्या अर्थाने क्रांतीकारीच योजना म्हणावी लागेल.

प्रस्तावना :

१९७२ च्या दुष्काळी परिस्थितीच्या झळा महाराष्ट्राला खूप मोठया प्रमाणावर सोसाव्या लागल्या आहे. तसेच २००५ ते २०१५ या सात -आठ वर्षापासून सतत दुष्काळाच्या झळा महाराष्ट्रातील खूप गावांना सोसाव्या लागला आहे. तसेच गतवर्षी म्हणजे २०१४-१५ मध्ये दुष्काळ भयावह होता त्याचबरोबर दुष्काळात तेरावा महिना या म्हणी प्रमाणे गारपीट आणि अवकाळी पावसामुळे शेतकऱ्याचे खूपच हाल झाले परिणामी कर्जबाजारी, आत्महत्या या संकटांना शेतकरी समोर गेला. तेव्हा दुष्काळावर मात करण्यासाठी महाराष्ट्राचे नवे मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस यांनी जलयुक्त शिवार योजना आणून महाराष्ट्र राज्याला समृध्द करण्याचा विडा उचलला आहे. कारण काही वर्षामध्ये महाराष्ट्र राज्याला लहरी हवामानाचा फटका सतत बसत आहे. राज्याचा काही भागात भरपूर पाऊस तर बऱ्याच भागात भीषण टंचाईला सामोरे जावे लागत होते हे चित्र सुधारण्यासाठी व कायमस्वरुपी पाणी टंचाईवर मात करण्यासाठी जलयुक्त शिवार योजना ही शाश्वत व समृध्द जीवन साध्य करण्यासाठी कशी उपयुक्त ठरते यासाठी ही योजना राबविली आहे.

महाराष्ट्राला दुष्काळापासून समृध्दीकडे नेण्यासाठी शाश्वत पाण्याचा साठा निर्माण व्हावा यासाठी जलयुक्त शिवार ही महत्वाकांक्षी योजना राबविण्यात आली. त्यामुळे शेतीसाठी, पिण्यासाठी पाण्याची टंचाई उद्‌भवणार नाही. या योजनेअंतर्गत दरवर्षी ५ हजार गावे जलयुक्त केली जाणार आहे.

या योजनेअंतर्गत महाराष्ट्र राज्याला दुष्काळ नावाच्या राक्षसापासून वाचविण्यासाठी ही जलयुक्त शिवार योजना कशी शाश्वत व समृध्द विकासाकडे नेते हया हेतुने प्रस्तुत विषय प्रतिपादन केला आहे.

Athletics a Core of All Sports

Track Athletics

Dr. Bappasaheb Maske

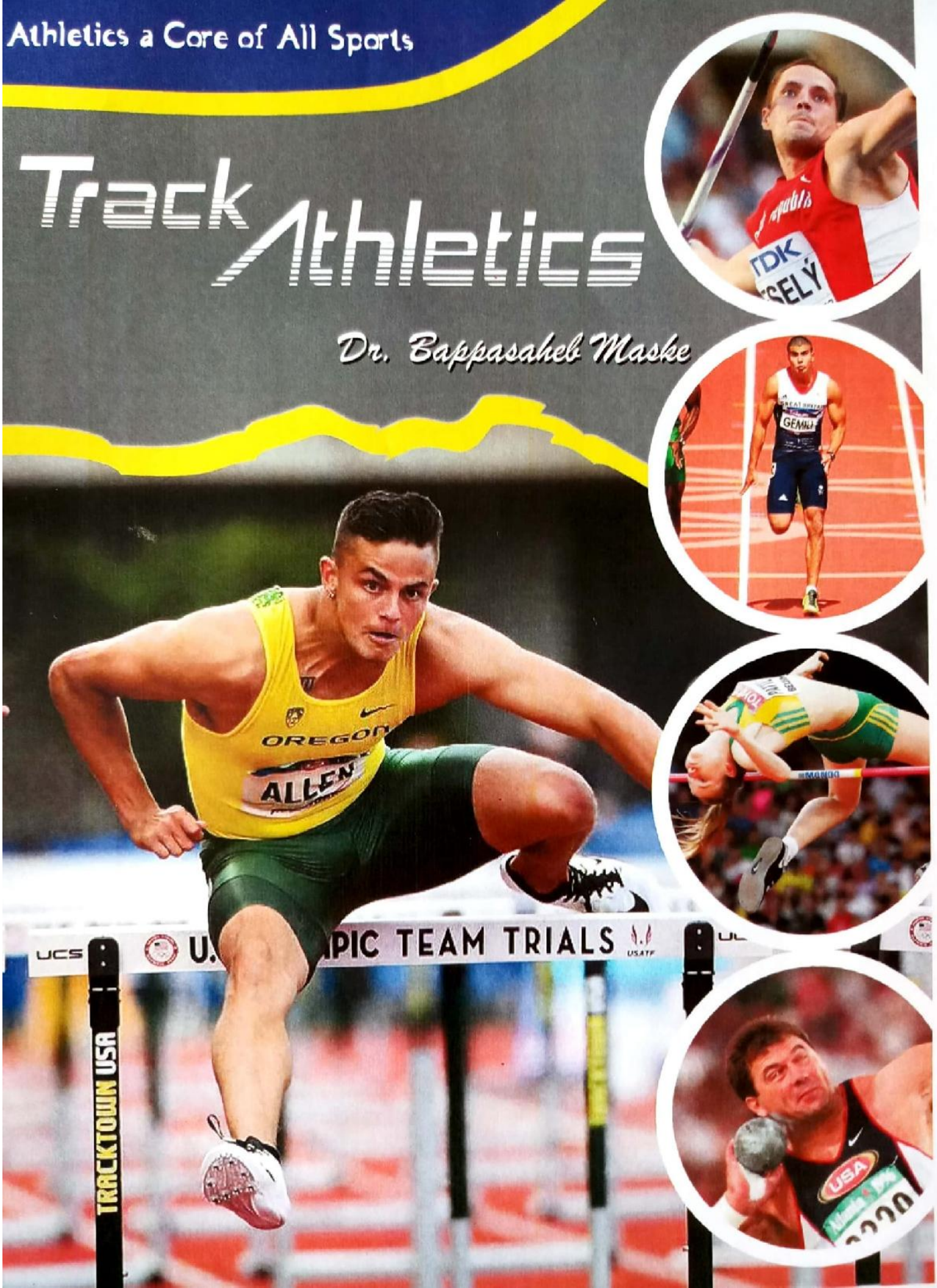

Pro Kabaddi

Dr. Bappasaheb H. Maske
Director & Head
Dept. of Physical Education
Sant Ramdas Arts, Comm. & Science College,
Ghansavangi, District Jalna

KRIDA PUBLICATION
AURANGABAD

EFFECT OF SPECTATORS ON SPORT PERFORMANCE

* Prof. Bapusaheb Mhaske. ** Prof. Pradeep Khandre. *** Sandeep Jagtap and Dr. Subhas Kale

*Sant Ramdas Sets Comm. And Science College, Ghosawnagi. Dist. Jalna (M.S.) India.
** Asst. Prof. PES College of Phy. Education, Aurangabad (M.S.) India.
***TCH. School Aurangabad. (M.S.) India. MPS, College.

ABSTRACT

Effect of Spectators on sport performance is a sport that is characterized by the presence of spectators, or watchers, at its matches. For instance, American football, association football, baseball, basketball, Canadian football, cricket, field hockey, Formula One, ice hockey, rugby league, rugby union, team handball and volleyball are spectator sports, while hunting or underwater hockey typically are not. Spectator sports may be professional sports or amateur. They often are distinguished from participant sports, which are more recreational; golf and tennis can be either. Association football, also known as soccer, is by far the most watched sport on the planet. Spectator sports require venues or sometimes stadiums in which the fans may observe a game or event. The largest such facility on earth is the Indianapolis Motor Speedway and thus is host to the greatest spectacle in all of sports every year, the Indy 500, with a single day attendance at 400,000.

The increasing broadcasting of sports events, along with media reporting can affect the number of people attending sports due to the ability to experience the sport without the need to physically attend and sometimes an increasingly enhanced experience including highlights, replays, commentary, statistics and analysis. Some sports are particularly known as "armchair sports" or "lounge room sports" due to the quality of the broadcasting experience in comparison to the live experience. Spectator sports have built their own set of culture and traditions including, in the United States, cheerleading and pre-game and half time entertainment such as fireworks, particularly for big games such as competition decider events and international tests. The passion of some sports fans also means that there are occasionally spectator incidents.

Key words: Sports, Performance, Spectators

INTRODUCTION

Paradoxical performance effects (choking under pressure) are defined as the occurrence of inferior performance despite striving and incentives for superior performance. Experimental demonstrations of these effects on tasks analogous to athletic performance and the theories that may explain them are reviewed. At present, attention theories seem to offer the most complete explanation of the processes underlying paradoxical performance effects. In particular, choking may result from distraction or from the interference of self-focused attention with the execution of automatic responses. Experimental findings of paradoxical performance decrements are associated with four pressure variables: audience presence, competition, performance-contingent rewards and punishments, and ego relevance of the task. The mediating factors of task complexity, expectancies, and individual differences are discussed. Predicted on the basis of recent research on self-presentation and self-attention, that the presence of supportive audiences might be detrimental to performance in some circumstances specifically, the imminent opportunity to claim a desired identity in front of a supportive audience might engender a state of self-attention that could interfere with the execution of skilful responses. Archival data from championship series in 2 major league sports supported this reasoning. It was found that in baseball's World Series, home

 ISBN - 978-81-927686-5-6

EFFECT OF YOGA AND MEDITATION ON HEALTH RELATED PHYSICAL FITNESS AND PERFORMANCE OF STATE LEVEL BOXING PLAYERS

Abhijeet Deshmukh*, Ravindra Mali, Dr. Bappasaheb Maske*****

ABSTRACT

Boxing is one of the most popular games, especially in Europe and the Americas. Legends like Muhammad Ali, Jack Johnson, Joe Louis, Rocky Marciano, Benny Leonard, Mickey Walker along with many stars have brought worldwide fame and recognition to the sport. Boxing was earlier known by the name Pugilism, meaning sweet science. Historical evidence leads to the fact that boxing was prevalent in North Africa in 4000 BC. It was also popularly played in Greek and Rome. The rules were crude then and boxers often indulged into lethal boxing rounds with leather taped on to their bare hands. It is believed that In Ancient Rome, the boxing fighters were usually offenders and slaves. They played the game to win and gain independence. However, facts also point to free men fighting for competition and the spirit of sport. Eventually, Augustus is known to have banned fighting. It is also said that in 500 A.D. Theodoric banned the sport owing to its popularity and growing distraction caused in public life. The first signs of documented records take you to the year 1681 in Britain. It is a popular belief that the Duke of Albemarle held a boxing competition between his butcher and butler. The common reason for such matches is believed to be amusement and fun. Prior to 1866, Jack Boughtonis is credited with establishing a set of rules for boxing. It is said that Jack decided to publish the rules in 1743 after a grisly match with one of his opponents who died during the match. The legend was popularly known as the 'Father of boxing'. However, the more recognizable development occurred during a time known as modern era in boxing. In the year 1866, the Marquess of Queensberry consented to a new set of boxing rules. The rules were titled with his name. The new rules introduced limited number of 3-minute rounds. It also banned gouging and wrestling during the match and made gloves compulsory. It took a while for bare-knuckled fights to completely go out of fashion, but there was considerable decrease after the rule was passed. In 1892, James Corbett set this rule straight by defeating the bare-fisted boxer John Sullivan with the new established rules.

Keywards : Yoga & Meditation, Boxing

INTRODUCTION

Boxing is one of the most popular games, especially in Europe and the Americas. Legends like Muhammad Ali, Jack Johnson, Joe Louis, Rocky Marciano, Benny Leonard, Mickey Walker along with many stars have brought

* Research Scholar, Dr. BAM University, Aurangabad (MH)

** Research Scholar, Dr. BAM University, Aurangabad (MH)

*** Director & Head, Dept. of Phy. Edu. & Sports, Sant Ramdas College, Ghansawangi, Dist. Jalna (MH)

Indian Streams Research Journal
Volume 2, Issue.11,Dec. 2012
ISSN:-2230-7850

Available online at www.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

A COMPARATIVE STUDY ON COMPETITION ANXIETY OF JUNIORCOLLEGIATE RURAL AND URBAN KABADDI PLAYERS

BAPPA H. MASKE

Director Of Physical Education Sant Ramdas Arts, Commerce Science Mahavidayalay
Ghansawangi . Dist:jalna

Abstract:

The Purpose of the study was to compare the Anxiety of Kabaddi players in Rural and Urban For this 40 players (20 Rural and 20 Urban) were selected as a sample.A standard Scale developed by Dr. A.K.P Sinha and L.N.K Sinha ,Comprehensive Anxiety Test (SCAT) was used to measure the completion Anxiety of the players. To find out the singnificant differencre between Rural and Urban players ,'t' test was employed at 0.05 level of significant data revealed that there is a no significant difference in competition Anxiety . Moreover, from the mean values the Competition Anxiety of Urban Kabaddi players found more than the rural players.

KEY WORD:

Competition Anxiety.

INTRODUCATION:

Kabaddi is one of the oldest games in which strength plays a vital role. It was considered as the test of one's strength in the earlier times, In this sport event. Certain Specific physical structure with more physical strength, which is different from the athletes of other sports events, seems to play a important factor for success in high – level performance.

Kabaddi is a sport in which competitors attempt to lift heavy weights mounted on steel bas called barbells , the execution of which is a combinations of power , flexibility , technique, mental and physical strength. Anxiety plays a paramount role in sports . It is challenge in sports participation ,which produces anxiety. Anxiety determines how successful he would be . Anxiety may be positive motivating force or it may interfere with successful perfoemance in sport events . the degree of anxiety also varies with a number of different conditions. Anxiety is likely to be greater in higher competitive sports than in relatively non-competitive sports , because in the competitive sports,participants made upon them to succeed. The study of the effect of anxiety on sports performance has become a major topic of interest for sports psychologists, in recent years. The degree of perceived anxiety is an important variable to be concerned for the performance of an individual typically becomes in competitive tendency' to perceive competitive situation as threatening that is intense competition cerates varying levels of anxiety with in different performers.

Some react adversely to the competitive situation by reaching States of hyper anxiousness which often results in the inability to achieve optimum level of performance Competitive trait stress as the relatively stable disposition of an individual to perceive threat in competitive test (SCAT) in order to provide a reliable and valid instrument which is a situation specific anxiety. High on competitive situations with higher levels of anxiety than persons low on competitive train anxiety.

It is generally recognized that psychological factors are of crucial important in high level competitive sports. The relation between anxiety and performance has been the subject of many thorough

24 Indoor Air Polution : A Threat to Rural Women and Childern of Jalna District in Maharashtra

Mr. Jige S. B.

Head Department of Botany Sant Ramdas College Ghansawangi Dist- Jalna.

Introduction

Earth atmosphere is reservoir of oxygen needed to living organism and carbon dioxide essential for plants but superior intellect potential of man has made many alternations in the environment. In witch one of activities of human being is indoor pollution (IAP). In the world about one third i.e. about up to 90% rural householders in developing countries still depend on biomass fuels such as wood, dung, charcoal, crop residues like for cooking and heating purposes. About 37% smoke in our atmosphere is generated in people's homes and most of this form coal fires. As soon as man gets up in the morning he starts polluting the environment.

IAP causes highly in home and surrounding environment. In houses these biofuel burns openly in poor man's stove called as 'chullas' and its results increase high level IPA in house. In India 0.2 billion people used biofuel in which 49% fire wood, 8.9% cow dung cake, 1.5% coal, 2.9% kerosene, 28.6% LPG, 0.1% electricity, 0.4% biogas, and 0.5% other sources. IPA causes different diseases including respiratory infection, pneumonia, tuberculosis, chronic diseases, low birth weights, cardiovascular events and all causes mortality both in adult and children. According to world health organization 03 billion people cook and heat in open space about 04 million having premature deaths by 12% pneumonia, 26% heart diseases, 34% stroke,22% chronic, 06% lung cancer like diseases. Also WHO estimated 4000,000 children die due to IPA every year which is under five year age.

These biomass fuel is mostly plants wood for these purpose many plants cuts every year it also affect oxygen and carbon dioxide balance. Mostly IAP consist radon, asbestos, volatile organic compound, pesticide, heavy metals. Animal dung is another biomass fuel which consist mites and moulds.

Word having 7,469,394,904 populations our country contributes 128,829.405 populations. Maharashtra state shows 118,994,486. Jalna is one of district in Maharashtra state having 2.47% geographical area as compare to states total area. District cover 761259 km area and located on 19.1 to 20.3 latitude 75.4 to 76.4 east longitude consists nearly 19.58 lakh population in which 10.15 male and 9.43 female population with 255 per/km population density.

The Proceedings of National Seminar

on

ENVIRONMENT: POLLUTION AND PROTECTION

(18th December, 2015)

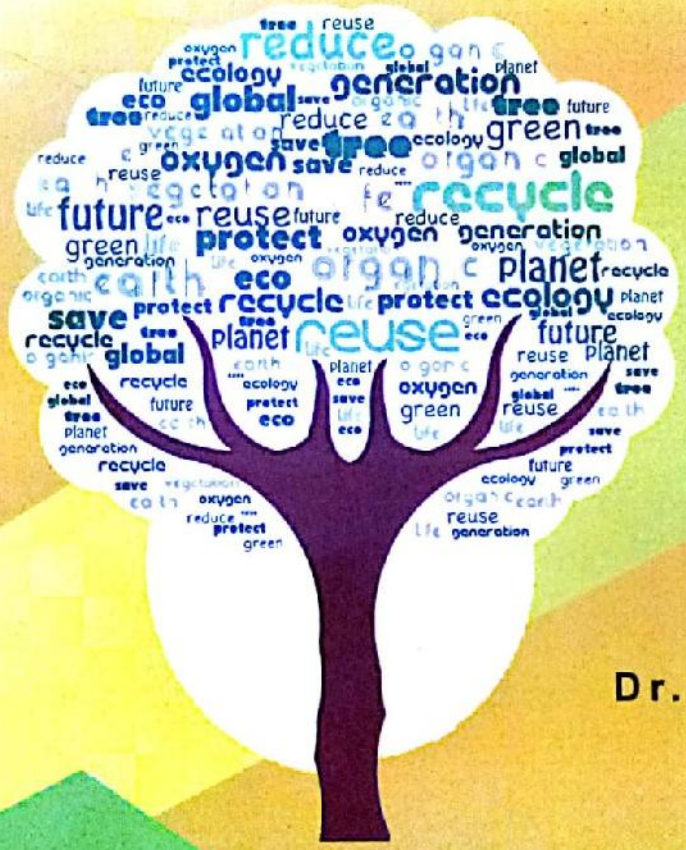

Chief Editor

Dr. T. L. Holambe

Editor

Dr. P. D. Deshmukh

Organized by

Department of Botany

Late Shankarrao Gutte Arts, Commerce & Science College,

Dharmapuri, Tq. Parli-V, Dist. Beed

www.guttecollege.in

16.
Clean Technology And Sustainability

Dr.D.R.Sapate
Assit. Prof. and Head Department of Physics,
Sant Ramdas Arts, Commerce and Science College Ghansawangi, Jalna

INTRODUCTION

Over the last decade, the topics of clean technology, energy and sustainability have moved from the periphery to the center of the global economy. Established and emerging companies, along with private equity and venture capital firms, are making sizable investments as they stake out their areas of the market. Governments have made sustainability and the technology needed to achieve it a key component of both environmental policy and economic development. The question no longer is whether this trend will take hold but rather when large markets will coalesce and which technologies and companies will prevail. Current global economic conditions and gyrating energy prices have made operating and investment conditions challenging in the short run, but industry players nonetheless are moving to capture mind share and press their speed-to-market advantage. The influence of clean tech, energy and sustainability extends beyond the diverse array of companies focused on this market space. Sustainability has become a strategic leadership issue in virtually every industry as enterprises rethink everything from product design to facilities strategies in the face of regulatory developments, increasing scarcity of resources and rising costs. Forward-thinking companies are appointing chief sustainability officers to proactively address these issues and turn them into opportunities for growth. Of course, while new developments can improve our quality of life and understanding of the world, scientists and policymakers may not always properly assess the potential risks or take full account of the public's concerns. Opportunities must be created for scientists and the general public to exchange views in a two-way dialogue of mutual respect and trust.

CLEAN TECHNOLOGY

It means a broad base of processes, practices and tools, in any industry that supports a sustainable business approach, including but not limited to pollution control, resource reduction and management end of life strategy, waste reduction, energy efficiency, carbon mitigation and profitability. When the cost of clean technology becomes competitive, everyone will benefit from advancements in solar and wind power, biofuel research, water filtration, grid management and transportation. There is a pressing need for cleaner fuels i.e. free or aromatics and of minimal sulfur content or ones that convert chemical energy directly to electricity, silently and without production of noxious oxides and particulates; chemical, petrochemical and pharmaceutical processes that may be conducted in a one-step, solvent-free manner and that use air as the preferred oxidant and industrial processes that minimize consumption of energy, production of waste or the use of corrosive, explosive, volatile, and nonbiodegradable materials. All these needs and other desiderata, such as the in situ production and containment of aggressive and hazardous reagents and the avoidance of use of ecologically harmful elements may be achieved by designing the appropriate heterogeneous inorganic catalyst which ideally should be cheap, readily preparable and fully characterizable preferably under in situ reaction conditions. A range of nanoporous and nanoparticle catalysts that meet most of the stringent demands of sustainable development and responsible clean technology is described. Specific examples that are highlighted include the production of adipic acid precursor of polyamides and urethanes without the use of concentrated nitric acid nor the production of greenhouse gases such as nitrous oxide; the production of caprolactam precursor of nylon without the use of oleum and hydroxylamine sulfate and the terminal oxyfunctionalization of linear alkanes in air. The topic of biocatalysis and sustainable development is also briefly discussed for the epoxidation of terpenes and fatty acid methyl esters for the generation of polymers, polylactides, and polyesters and for the production of 1,3-propanediol from corn.

SUSTAINABLE DEVELOPMENT

The concept of sustainable development, although had appeared in the 1970s, was widely disseminated in the early 1980s by the 'World Conservation Strategy' (IUCN, UNE'P and WWF, 1980), which called for the maintenance of essential ecological processes; the preservation of biodiversity and sustainable use of species and ecosystems. The Brundtland Report, Our Common Future (World

Vasantrao Kale Mahavidyalaya, Dhoki.

Tq. & Dist. Osmanabad

Affilated to Dr. Babasaheb Ambedkar Marathawada University, Aurangabad.

And

ICSSR Sponsored

National Level Seminar in Inter Disciplinary Subject.

on

WOMEN EMPOWERMENT ISSUES AND CHALLENGES

Chief Editor :

- **Dr. Haridas Fere**
  Principal

Editor :

- **Dr. Jyoti Nade**
  Convenor

ROLE OF WOMEN IN SCIENCE AND TECHNOLOGY

Abstract :

From the last couple of years, women are still under-represented in science and technology, both in the academic and private sector. This is due to a variety of reasons, mostly related to the role allocated to women in modern society. It is also however, a result of information or lack of, which places young women in difficult position of making a career choice, with little knowledge of available possibilities. Parents, teachers, and career guidance counselors all have a significant role in assisting or hindering the way young women chose their career paths and that choice begins early on from school, all the way through to higher education. Choice, essentially, and factors that determine it as well - as ways of encouraging female participation in science and technology - are the focus of the present article, Parents, teachers, and career guidance counselors all have a significant role in assisting or hindering the way young women chose their career paths and that choice begins early on from school, all the way through to higher education. Choice, essentially, and factors that determine it as well as ways of encouraging female participation in science and technology are the focus of the present article, As this article will show, the promotion through the usage of new technologies, of role models, is crucial in breaking the existing stereotype of women in science, engineering and technology. Science is often rejected as a career choice due to limited information available and positive role models to encourage young girls in participating. Career orientation offered at school through the usage of new technologies is an important step in that direction;

Keywords : Science and technology, Role models, Stereotypes, Transferability

1. INTRODUCTION :

Women have made tremendous progress in education and the workplace during the past 50 years. Even in historically male fields such as business, law, and medicine, women have made impressive gains. In scientific areas, however, women's educational gains have been less dramatic, and their progress in the workplace still slower. In an era when women are increasingly prominent in medicine, law, and business, why are so few women becoming scientists and engineers? This study tackles this puzzling question and presents a picture of what we know and what is still to be understood about girls and women in scientific fields. The report focuses on practical ways that families, schools, and communities can create an environment of encouragement that can disrupt negative stereotypes about women's capacity in these demanding fields. By supporting the development of girls' confidence in their ability to learn math and science, we help motivate interest in these fields. Women's educational progress should be celebrated, yet more work is needed to ensure that women and girls have full access to educational and employment opportunities in science, technology, engineering, and mathematics.

The number of women in science and engineering is growing, yet men continue to outnumber women, especially at the upper levels of these professions. In elementary, middle, and high school, girls and boys take math and science courses in roughly equal numbers, and about as many girls as boys leave high school prepared tc pursue science and engineering majors in college. Yet fewer women than men pursue these majors. Among first-year college students, women are much less likely than men tc say that they intend to major in science, technology. engineering, or math. By graduation, men outnumber women in nearly every science and engineering field, and in some, such as physics, engineering, and computer science. the difference is dramatic, with women earning only 2(percent of bachelor's degrees. Women's representation ir science and engineering declines further at the graduate level and yet again in the transition to the workplace Drawing on a large and diverse body of research, this repor presents eight recent research findings that provide evidence that social and environmental factors contribute to the underrepresentation of women in science anc engineering. The rapid increase in the number of girls achieving very high scores on mathematics tests once thought to measure innate ability suggests that cultura factors are at work. Thirty years ago there were 13 boys for every girl who scored above 700 on the SAT math exam at age 13; today that ratio has shrunk to about 3 :1.This increase in the number of girls identified as "mathematically gifted" suggests that education can and does make a difference at the highest levels of mathematica achievement. While biological gender differences, yet tc be well understood, may play a role, they clearly are no the whole story.

2. GIRLS' ACHIEVEMENTS AND INTEREST SCIENCE :

This report demonstrates the effects of societa beliefs and the learning environment on girls' achievement and interest in science and math. One finding shows tha when teachers and parents tell girls that their intelligence can expand with experience and learning, girls do better or math tests and are more likely to say they want to continue to study math in the future. That is, believing in the potentia for intellectual growth, in and of itself, improves outcomes This is true for all students, but it is particularly helpful fo girls in mathematics, where negative stereotypes persis

PROCEEDINGS

[ISBN: 978-93-84810-17-7]

National Conference on
Material Science and Renewable Energy Sources (NCMSRES-16)

11th and 12th March, 2016

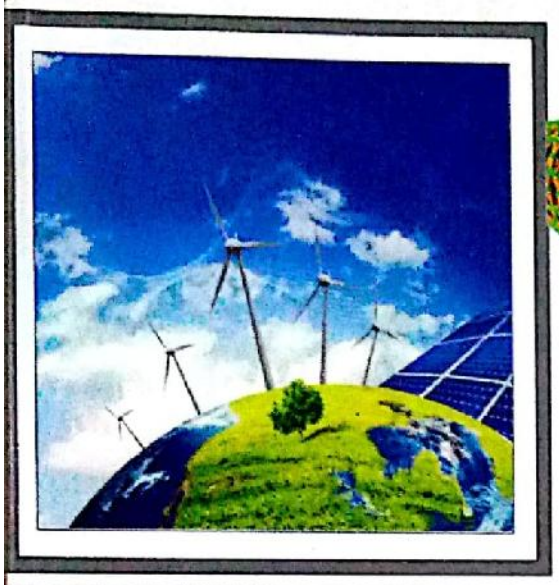

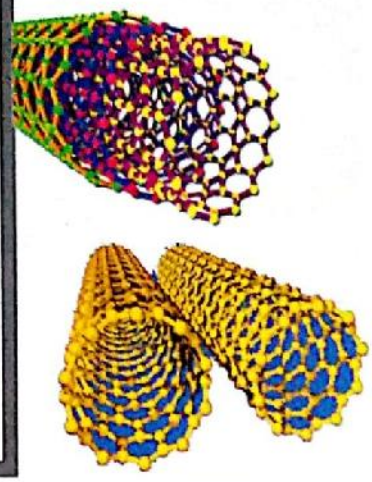

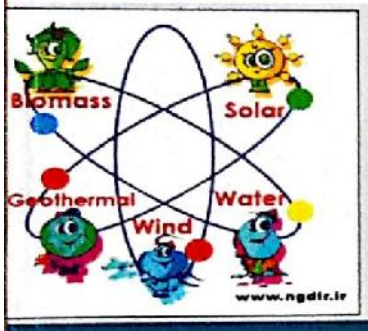

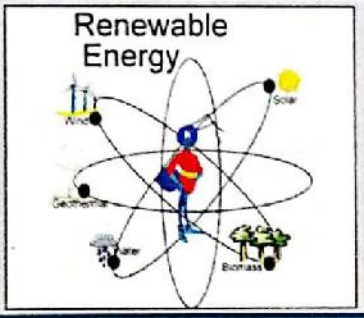

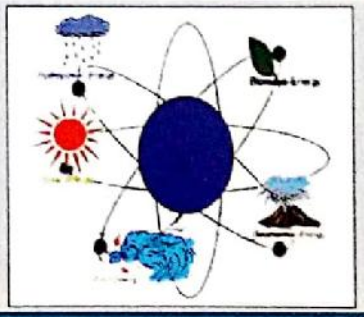

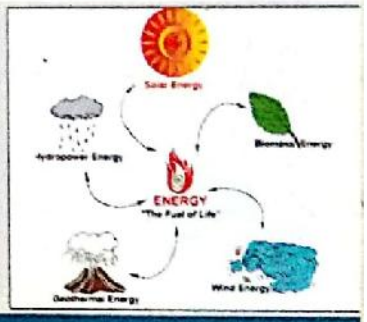

Principal and Chief Organiser
Dr. S.D. Salunke
Chief Editor
Dr. A.A. Yadav
Editor
Prof. R.N. Kendre

Organised By

Department of Physics, Electronics and Photonics
Shiv Chhatrapati Shikshan Sanstha's
Rajarshi Shahu Mahavidyalaya, Latur (Autonomous)
(NAAC Re-Accredited 'A' Grade With CGPA 3.38, UGC-CPE Status, FIST Support by DST)
Ph.No. 02383-245933, Fax . 02382-253645
Website : www.shahucollegelatur.org.in

Synthesis and Structural Properties of CFO+BST Magnetoelectric Composite Materials

[1]D.R.Sapate, [2]K.M.Jadhav

[1]Department of Physics, Sant Ramdas Arts, Commerce and Science College, Ghansawangi (MS).

[2]Department of Physics, Dr.Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad. (MS).

Corresponding Author:diliprsapate@rediffmail.com

Abstract

Ferrites ($CoFe_2O_4$) (CFO) and Ferroelectrics ($Ba_{0.9}Sr_{0.1}TiO_3$) (BST)were prepared by a conventional standard double sintering ceramic method. The structural properties of composite material were investigated. Composite materials with two distinct phases have received considerable attention in recent years because of their applications in several fields such as sensors, data storage and transducers, The X-ray diffraction analysis was carried out to find the planes and calculate the lattice parameters, X-ray density, bulk density and porosity of the ferrite - ferroelectric composite material.

Key words: X-ray diffraction, lattice parameters, X-ray density, composite material, bulk density and porosity

1 Introduction

In the recent years composite materials with ferrite and ferroelectric constituents have attracted scientists, from the point of view of their application and academic interest. Composites of ferrite and ferroelectrics exhibit important product property known as magneto-electric effect (ME effect) [1].The composite material is the product property of piezoelectric and magneto-electric phases which is mediated by the mechanical stress [2]. Ferroelectric materials are polar materials characterized by a transition to a paraelectric, nonpolar phase at a temperature at which their dielectric permittivity presents a maximum. Ferroelectrics are also a group of materials whose crystalline structure possesses crystallographic axis in the direction of which there is a spontaneous polarization in the polar phase, arising from a displacement of positive and negative centers of charge of the ions in the structure, whose sign can be reversed by a sufficiently high electric field [3].Some of the literature was written by protagonists of the facts here related. Ferroelectric, from the German "ferroelecktrisch" was a term coined in 1912 by Erwin Schrodinger. Ferroelectric materials exhibit spontaneous polarization, the direction of which can be switched by applying an external electric field. In fact, ferroelectric materials are a subclass of

Piezoelectricity was demonstrated in 1880 by P. J. and P. Curie [4] in Rochelle salt crystals (sodium potassium tartrite tetra hydrate). The first application was seen in SONAR technology during World War I.A few years after the introduction of piezoelectricity [5], who studied the dielectric properties in Rochelle salt in analogy with

Proceedings ISBN- 978-93-84810-17-7

अहिराणी लोकसाहित्याचा अभ्यास

कृष्णा पाटील यांचा विशेष संदर्भ

डॉ. शशिकांत पाटील

साहित्य, सामाजिक, आणि सांस्कृतिक अंगाने खानदेश परिसर आणि या परिसराच्या अहिराणी बोलीचे सामर्थ्य आणि वाङ्मयीन स्थान स्पष्ट झाले आहे. अहिराणीचा सवसार, सोनाना खजिना अहिराणी भाषाना गाना, ओवीदर्शन, प्रतिमा आणि सौंदर्य, लोकरामायण, आन्हे, म्हणी, वाक्प्रचार, उखाणे यातून अहिराणी बोलीचे योगदान स्पष्ट केले आहे. या सर्व लेखनासंदर्भात स्वतःची संशोधकीय भूमिका आणि अहिराणी बोलीचे श्रेष्ठत्व कृष्णा पाटील यांच्या लोकसाहित्याभ्यासाने जतन केलेले आहे. शोध अहिराणीचा, बोली म्हणून अहिराणीचा विचार, खानदेश या शब्दाची व्युत्पत्ती, खानदेशचे साहित्यिक महत्त्व, कृष्णा पाटील यांचे वेगळेपण आणि मर्यादा, 'नाती-गोती' या खंडातून येणारी कुटुंबव्यवस्था, 'नाती-गोती'विषयक ओव्यांचे संकलन आणि विवेचन, 'नाती-गोती'विषयक ओव्यांच्या संकलनातील वेगळेपण, माय, आयबा, बहीण, भाऊ, लेक, जावई, सासू, सईबहीण या मुद्यांच्या आधारे केलेली आहे. कृष्णा पाटील यांनी संकलित केलेल्या ओव्यांचा आणि गीतांचा अभ्यासच केलेला नसून, अहिराणी बोली आणि त्यामागे असणाऱ्या संकल्पनांची उकलही केलेली आहे.लोकसाहित्यातील लोकसंस्कृती, अहिराणी लोकसाहित्यातील [illegible]त, अहिराणी लोकसाहित्यातील सण-उत्सव, गुढी पाडवा, आखाजी, [illegible]षाढी एकादशी, कानबाईना रोट, पोळा, गुलाबाई, दसरा, दिवाळी, तुळशी विवाह, संक्रांत, होळी, सण-उत्सवांमागील लोकधर्म, सण-उत्सवांची प्रादेशिक वैशिष्ट्ये या ग्रंथाच्या रूपाने अभ्यासलेली आहे.

मौखिक परंपरेने संक्रमित झालेले ओवीवाङ्मय हे प्रयोग आणि श्राव्य रूपाने पुढे आलेले आहे. यातूनच लोकधर्माची निर्मिती होते आणि या लोकांकडून पाळल्या गेलेल्या परंपरा लोकधर्मी परंपरा म्हणून ओळखल्या जातात. लौकिक जीवनाला जोडल्या गेलेल्या या परंपरा स्त्रीमनातून निर्माण झालेल्या आहेत. या परंपरांचा उल्लेख आणि जतन करण्याचे उत्तम माध्यम

चिन्मय
प्रकाशन, औरंगाबाद
९८२२८७५२१९

ISBN 938194881-X
9 789381 948811

खानदेशचे
मराठी साहित्यरूप
डॉ.शशिकांत पाटील

- **भाषांतरमीमांसा**
  संपा.-डॉ. कल्याण काळे, डॉ. अंजली सोमण
- **माध्यमांची भाषा आणि लेखन कौशल्य**
  डॉ. केशव तुपे
- **मराठी भाषा वाणिज्य आणि व्यवहार**
  डॉ. भारत हंडिबाग, प्रा. गौतम गायकवाड
- **मुद्रित माध्यम लेखन तंत्र व कौशल्य**
  डॉ. भारत हंडिबाग, राजकुमार येल्लावाड
- **संदेशन प्रक्रिया : मराठी भाषा आणि विकास**
  डॉ. सुभाष बागल
- **पत्रकारिता स्वरूप आणि कार्य**
  डॉ. निशिगंधा व्यवहारे
- **जागतिकीकरणातील बदलती पत्रकारिता**
  डॉ. शोभना नेरलीकर
- **महाराष्ट्रातील विविध धर्म-भक्ती संप्रदाय**
  ''तत्त्वज्ञान आणि साहित्य'' (पद्मश्री यू.म. पठाण गौरवग्रंथ)
  डॉ. यशवंत सोनुने, डॉ. कैलास इंगळे
- **डॉ. यू. म. पठाण यांचे संतसाहित्य चिंतन**
  डॉ. यशवंत सोनुने
- **उच्च शिक्षणापुढील आव्हाने**
  डॉ. नारायण तु. कांबळे
- **साहित्य (आस्वाद अध्यापन आणि समीक्षा)**
  संपा. सतीश बडवे
- **स्त्री अधिकार** (कौटिलीय अर्थशास्त्र, मनुस्मृती व महाभारत यातील संकल्पना)
  डॉ. आशा लालसरे
- **घोषवाक्य स्वरूप आणि प्रयोजन**
  डॉ. मधुकर क्षीरसागर

चिन्मय
प्रकाशन, औरंगाबाद
९८२२८७५२१९

ISBN 938194864-X
9789381948644

ISBN No : 978-81-931444-1-1

सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ, पुणे
(बी.सी.यु.डी.) अंतर्गत व

25 YEARS

महर्षी कर्वे स्त्री शिक्षण संस्थेचे

श्री सिद्धीविनायक महिला महाविद्यालय

कर्वेनगर, पुणे - ४११ ०५२.

मराठी विभाग आयोजित

राष्ट्रीय चर्चासत्र

शुक्रवार, दि. २२ जानेवारी २०१६ व शनिवार, दि. २३ जानेवारी २०१६

समाजसुधारकांचे मराठी साहित्याला योगदान

संपादक
प्राचार्या, डॉ. पुष्पा रानडे
कार्यकारी संपादक
प्रा. डॉ. शैलेश त्रिभुवन

सावित्रीबाई फुले यांच्या कवितेतून येणारे ग्रामीण जीवन

प्रा. डॉ. मारोती घुगे
संत रामदास कला, वाणिज्य व
विज्ञान महाविद्यालय, घनसावंगी, जि. जालना
भ्रमणध्वनी : ९८५०८०७६१८

प्रस्तावना : सावित्रीबाई फुले यांचा जन्म ३ जानेवारी १८३१ ला नायगाव, ता. खंडाळा, जि. सातारा येथे खंडोजी पाटील व लक्ष्मीबाई यांच्या घरी झाला. वयाच्या नवव्या वर्षी म्हणजेच १९४० रोजी त्यांचा विवाह जोतिराव फुले यांच्याशी झाला. क्रांतिज्योती सावित्रीबाई आणि महात्मा फुले हे दाम्पत्य महाराष्ट्रातील अग्रगण्य समाजसुधारक म्हणून ओळखले जाते. दीन-दलित, गोर-गरीब, दुबळ्यांचा आवाज म्हणून फुले दाम्पत्याचे साहित्य उदयास आलेले दिसते. महात्मा जोतिराव फुल्यांनी पुकारलेल्या सामाजिक जागृतीच्या एल्गारात सावित्रीबाईंनी हिरीरीने भाग घेऊन समाजजागृतीची चळवळ फुल्यांनंतरही सुरू ठेवली. स्त्रीदास्य, जातिभेद, अज्ञान पळवून लावून एक सक्षम समाजाचे स्वप्न सावित्रीबाई पाहत होत्या, यासाठी त्यांना भयंकर सामाजिक छळास सामोरे जावे लागले. जोतिराव फुले व सावित्रीबाईंना गोविंदराव फुल्यांनी आपल्या घरातून बाहेर काढून दिले, तरीही आपल्या उद्देशापासून ते थोडेसेही डगमगले नाहीत. महात्मा फुले यांनी १९४८ ला पुण्यात सुरू केलेल्या शाळेच्या सावित्रीबाई पहिल्या महिला शिक्षिका, मुख्याध्यापक होत्या. १८४९ ला उस्मान शेख यांच्या वाड्यात प्रौढांसाठी शाळेची स्थापना तर याच वर्षी बुधवार पेठेत चिपळूणकर यांच्या वाड्यात मुलींची शाळा काढली. १८५२ मध्ये गंज पेठ व विश्रामबाग वाड्यातील शाळेत अध्यापनाचे कार्य केले. १८५५ मध्ये शेतकरी व शेतमजुरांसाठी महात्मा फुले व सावित्रीबाईंनी रात्रशाळा काढली. त्यांच्या या शाळा स्थापनेचा विचार केल्यास दीन-दलित-पददलितांसाठी चाललेली ज्ञानदानाची प्रक्रिया अतिशय महत्त्वाची वाटते. 'बुडती हे जन, न देखवे डोळा । म्हणुनी कळवळा येतसे' या संत तुकारामांच्या उक्तीप्रमाणे आयुष्यभर फुले दाम्पत्य स्त्री शिक्षणासाठी, शेतकऱ्यांच्या न्यायासाठी व सामाजिक सुधारणेसाठी प्रयत्नात राहिले. त्यांनी नुसत्या सामाजिक सुधारणा सुचविल्या नाहीत तर आदी कृतीत आणल्या आणि मगच समाजाला सांगितल्या म्हणूनच महात्मा फुले व सावित्रीबाई फुले यांना 'कर्ते सुधारक' म्हटले जाते. सावित्रीबाई फुले यांचा काव्यसंसार त्यांच्या समाजचिंतनाची उत्कृष्ट अभिव्यक्ती होय.

सावित्रीबाई फुले यांचे साहित्य : महात्मा फुले यांनी ज्याप्रमाणे साहित्य लिहिले त्याचप्रमाणे सावित्रीबाई फुले यांनीही साहित्यनिर्मिती केलेली दिसते. सावित्रीबाई फुले यांनी आपल्या मनातील विचार प्रकटीकरणासाठी 'काव्यफुले' व 'सुबोधरत्नाकर' असे दोन कवितासंग्रह लिहिले. त्यांचा 'काव्यफुले' हा कवितासंग्रह १८५४ मध्ये प्रकाशित झाला. या कवितासंग्रहात एकूण ४१ कविता आहेत. कवितेतून निसर्गाचे येणारे विलोभनीय चित्रण त्यांच्या भावावस्थेची ओळख करून देते. यातीलच सामाजिक भान व्यक्त करणाऱ्या 'ब्रह्मवंती शेती', 'बळीचे स्तोत्र' यांसारख्या कवितांमधून शेतकऱ्यांच्या जीवनजाणिवांचे

Vivekanand Shikshan Sanstha's

Vivekanand Arts, Sardar Dalipsingh Commerce & Science College

Reaccredited by NAAC with 'A' Grade (3.36 point)
A College with Potential for Excellence
An ISO 9001-2008 Certified Institution

योगः कर्मसु कौशलम्

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

Proceedings of

UGC SPONSORED
National level Seminar on

Emerging Trends in Commerce & Management

Dr. B. S. Solunke
Chief Editor

Dr. K. B. Laghane
Associate Editor

 ISBN : 978-93-82504-64-1

Foreign Direct Investment in Indian Retail Sector: Challenges and opportunities

Abstract

The Government as a part of its liberalization policy now proposes to open –up the retail space of foreign investment by allowing FDI up to 51% in multi-brand retail and 100% in single brand retail. The move will allow global retail chain like Wal-Mart (USA), Tesco (UK) Carrefour (France) etc. To own up to 51% or retail along with the Indian partners and allow foreign companies to fully own single brand retail operation. However, the Indian government and state government have also put several conditions, as expected; there is widespread opposition, to the move from the political parties. However, the business community and the media welcome the move by highlighting the benefits we get from it,

Looking at the merit and demerits of the above arguments, one can obliviously say that in view of the benefits, employment opportunities and progress that are predicated by industry, trade and experts in economics, FDI in retail sector would be more beneficial than harmful to Indian economy. However, no one can still envisage the future course of events with absolute certainty at the same time the authorities cannot brush away the apprehensions of the opponents.

Introduction:

Globalization of Indian economy paved way for increase FDI. It is being one of the foundational resources for the balanced growth, expansion and development of economy. The Government announced a number of reforms designed to encourage FDI and presents a favorable scenario for investors. FDI generates ample opportunities for employment generation, new industrial set ups and technological innovations but for a growing economy like ours FDI has twin face i.e. it has its own costs. FDI creates currency drain, reduction in opportunities for local entrepreneurs and increase competition from global organization, looking at the picture of today's economic situation, it becomes necessary to find that FDI is essential but to what extent and in which sectors?

The Government as a part of its liberalization policy now proposes to open –up the retail space of foreign investment by allowing FDI up to 51% in multi-brand retail and 100% in single brand retail. The move will allow global retail chain like Wal-Mart (USA), Tesco (UK) Carrefour (France) etc. To own up to 51% or retail along with the Indian partners and allow foreign companies to fully own single brand retail operation. However, the Indian government and state government have also put several conditions, as expected; there is widespread opposition, to the move from the political parties. However, the business community and the media welcome the move by highlighting the benefits we get from it,

Definition of Retail:

Retailing can be said to be the interface between the producer and the individual consumer buying for personal consumption. This excludes direct interface between the manufacturer and institutional buyers such as the government and other bulk customers. Retailing is the last link that connects the individual consumer with the manufacturing and distribution chain. A retailer is involved in the act of selling goods to the individual consumer at a margin of profit.

Objectives:

1) To identify current trends in FDI.
2) To analyze the impact of FDI.
3) To study and analyze the role of FDI in Indian economy.
4) To discuss the theoretical base of FDI

FDI Policy in India:

FDI as defined in Dictionary of Economics (Graham Bannock et.al) is investment in a foreign country through the acquisition of a local company or the establishment there of an operation on a new (Greenfield) site. To put in simple words, FDI refers to capital inflows from abroad that is invested in or to enhance the production capacity of the economy. Foreign Investment in India is governed by the FDI policy announced by the Government of India and the provision of the Foreign Exchange Management Act (FEMA) 1999. The Reserve Bank of India ('RBI') in this regard had issued a notification, which contains the Foreign Exchange Management (Transfer or issue of security by a person resident outside India) Regulations, 2000. This notification has been amended from time to time.

VISHWABHARATI

FRONTIERS IN PLANT DISEASES AND ITS CONTROL FOR AGRICULTURAL DEVELOPMENT

Dr. D.P. Garud
Chief Editor

Dr. U.T. Kesare
Editor

32

SURVEY OF FOLIAR FUNGAL DISEASE OF ONION IN MAHARASHTRA

Subhash B. Pawar & Ashok M. Chavan

Abstracts:

In the present research work investigation of the foliar fungal diseases in the fields is studied. Onions suffer from many fungal diseases, such as white rot, southern blight; Purple blotch and Stemphylium blight are the major foliar fungal diseases. A complete causes the number of onion fields every year. In these diseases are management through use of chemicals, like fungicides and biological control. In this study symptoms of plants, and there control foliar fungal diseases of onion, most important foliar fungal diseases of onions are purple blotch caused by *Alternaria porri* and Stemphylium blight by *Stemphylium vasicarium* of onions.

Key word: Onion, Purple blotch, blight.

Introduction:

Onion (*Allium cepa L.)* is the important commercial vegetable crops grown in all worlds. India is the second largest producer of onion after the china, and leader in production. In India occupies an area of 1.05 million hectare with the production of 16.81million

Subhash B. Pawar & Ashok M. Chavan: Seed Health and Fungal Biotechnology Laboratory, Dept. of Botany, Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad (MS) India.

The Proceedings of National Seminar

on

ENVIRONMENT: POLLUTION AND PROTECTION

(18th December, 2015)

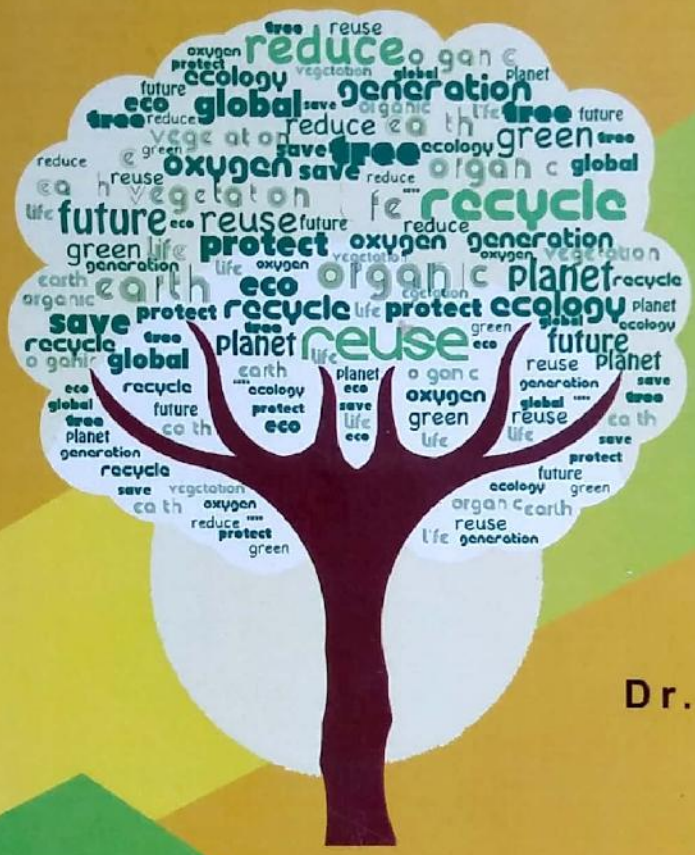

Chief Editor

Dr. T. L. Holambe

Editor

Dr. P. D. Deshmukh

Organized by

Department of Botany

Late Shankarrao Gutte Arts, Commerce & Science College,

Dharmapuri, Tq. Parli-V, Dist. Beed

www.guttecollege.in

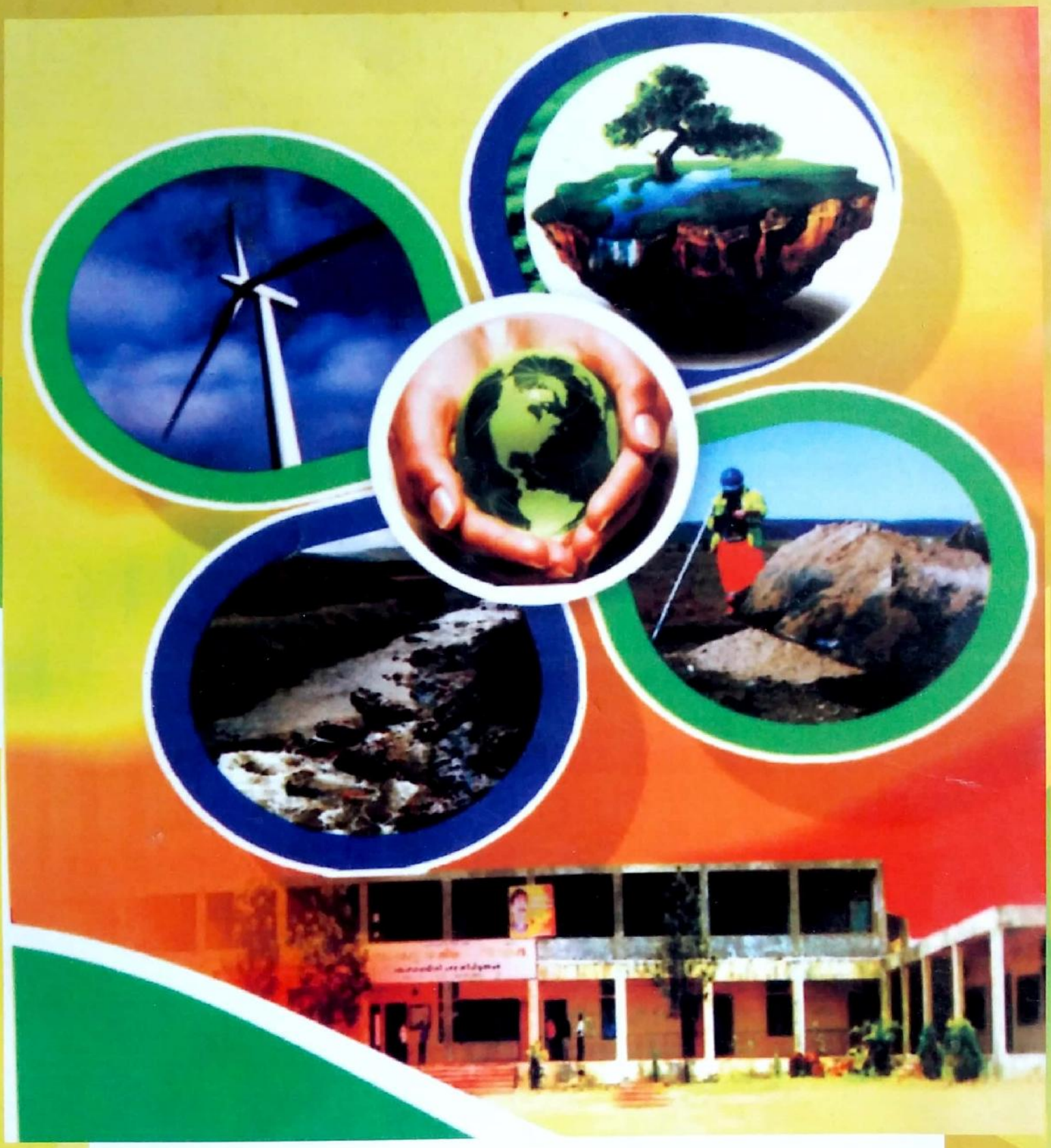

NEW MAN
PUBLICATION
www.newmanpublication.com
PARBAHNI / AURANGABAD / MUMBAI

ISBN 978-93-83871-91-9
9 789383 871919

Print ISSN 0974-0678, Online : 2320-9593

BIONANO FRONTIER

Vol. 8 Issue - 3

December 2015

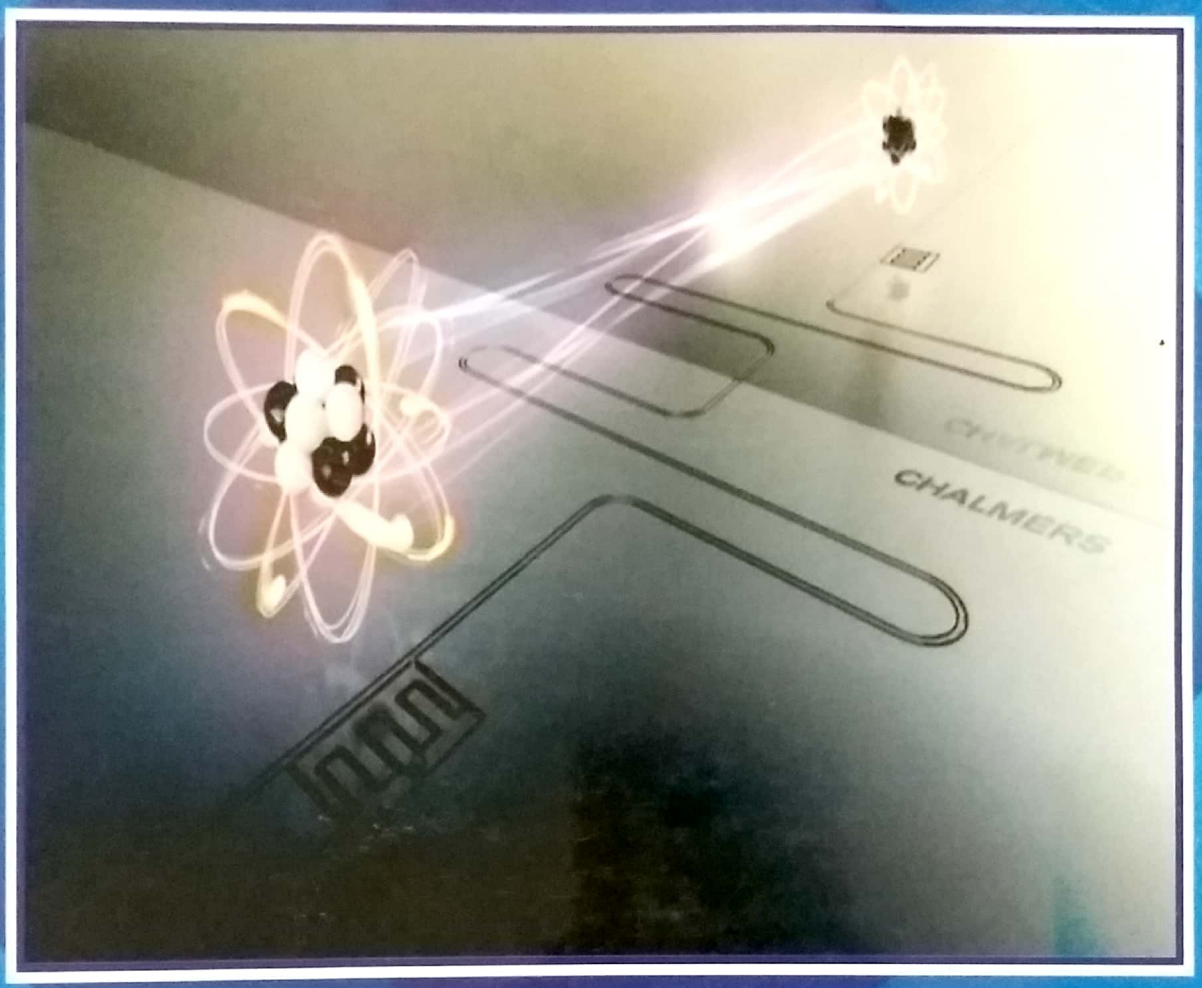

A Peer Reviewed / Referred / Index Journal of Science & Technology

Published From : Mumbai
www.bionanofrontier.org

Scanned by CamScanner

Phyhsicochemical Characterization of Polar Liquids by Using LCR Meter Technique

P.T.Sonwane[a],P D.Gaikwad[b]
[a] Department of Physics
Sants Ramdas l Arts, Science &Commerece College Ghansawangi, Dist Jalna (M.S) 431209, India
[b]R.B.Attal Arts, Science &Commerece College Georai, Dist Beed (M.S) 431127, India

Abstract— Study of Physicocgemical Properties like Viscosity, Density and Refrative Index for Binary Mixture of Ethanol and Methanol over entires Concentration range are measured at 303 K the experimental data further use to determine the excess properties Viz. Excess molar volume,Excess viscosity and excess molar refraction .The values of excess Properties further Fitted with Redlich- Kister equation to calculate the binary Coefficients. The resulting Excess Paramenters are used to indicate the presence of intermolecular interactions and strength of intermolecular interactions between the molecules in the binary mixtures.

Key Words— Dielectric Constant,Density, Visosity, Refrative Index, LCR meter.

INTRODUCTION

THE study of binary liquid mixtures provides sensitive tool for detecting molecular interactions. In order to study the effect of increase of molecular size on solute-solvent interaction the series of alcohols and alkoxyalkanols are selected because no attempts have been made to study this binary system. Alcohols play an important role in many chemical reactions [1-3] due to their ability to undergo self-association with manifold internal structure and are in wide use in industry and science as reagent, solvent and fuels. Monoalkyl ethers of [4] ethylene glycol may exist in dynamic equilibrium existing in Gauche as well as open chain form. In this case monoalkyl ethers of dimethylene glycol intramolecular hydrogen bonding decreases with the increase in the size of the alkyl group. These molecules are also found to exist in both intramolecular hydrogen bonded form in equilibrium with open chain form in dilute solutions. The intermolecular association is found to be absent in dilute solutions, whereas in pure liquid state the molecule existing in open chain may form multimers. Because of such interesting facts it is decided to carry out dielectric relaxation study of Alcohols with Alkoxyalkanols

EXPERIMENTAL DETAILS

The setup consists of Digitizing oscilloscope Autocompute LCR Q-METER et Model 4910

Density Measurement: The Density measurement were Carried out by Portable Digital Density Meter (Anton Paar-35) for pure liquids and binary mixture.

Viscosity Measurements: Viscosity of the sample in the present study were measured by usinf Brookfield Viscometer Model LV DV-II+ Pro, Cone plate Model with CPE-40 Splindle

Refractive Index Measurement: Refractive Index Measurement are Sutdied using Abbeys Refractometer.

LCR Meter Technique: Dielectric Constant were measured in the Present Study by using Autocompute LCR Q-METER et Model 4910

RESULTS AND DISCUSSIONS:

Table 1. Excess Molar Volume of Ethanol+Methanol at 303K.

Volume Fractional of Ethnol	Density	Viscosity	Refractive Index	Dielectric Constant
0	0.7735	0.511	1.328	15.5
0.1	0.7735	0.515	1.329	16.8
0.2	0.7734	0.567	1.33	18.7
0.3	0.7733	0.615	1.331	19.5
0.4	0.7732	0.656	1.333	21.7
0.5	0.7732	0.679	1.336	23.8
0.6	0.7727	0.745	1.341	24.8
0.7	0.7722	0.814	1.346	26.7
0.8	0.7715	0.884	1.351	28.2
0.9	0.7705	0.964	1.355	29.3
1	0.7693	1.044	1.359	30.5

The existence of an intermolecular interaction through hydrogen bounded structures between Binary Mixtures. Dielectric relaxation study of liquids generally carried out on dilute solution of polar and non-polar liquids or binary mixture in dilute solutions of non-polar liquids and on mixtures of polar-polar liquids or simply binary mixtures.A large amount of work has been done on dilute solutions. Difficulty arises in measuring the dielectric bsorption data in pure liquids because of its viscosity, bipolar interactions and internal field. Therefore, dielectric properties are usually carried out in dilute solutions of non-polar solvents. In

Scanned by CamScanner

SYNO (100) 2015-16

ELECTROCHEMICAL METHOD

Pradeep Gaikwad*, Prashant Sonwane, Siddharth Kamble

*Department of Physics, R.B.Attal Arts Science Commerce College Georai Dist. Beed 431127 India
Department of Physics, Sant Rameer Arts, Science Commerce College Ghansawangvi Dist. Jalna India
Department of Physics, C.T. Bora College, (Shirshadi) Shirur, Dist-Pune India

Abstract — We have electrochemically synthesized polyaniline nano fibers with optimized process parameters (viz. concentration of monomer and dopant, applied current density, deposition time, etc.) on ITO coated glass substrate. The nano fibers of polyaniline were subjected to UV-Visible. UV-Vis spectra show two prominent peaks at 320 and 631 nm, which confirm the presence of polyaniline. Confirm the formation of polyaniline nano fibers.

Keywords: Aniline, Electrochemical Method, nanofibers, UV-visible.

I. Introduction

Conducting polymers synthesized in the form of nano materials extensively of particular concern since their properties differ from the properties of corresponding macroscopic materials. Recently, different forms of polyaniline including nano wires, nano tubes, nano fiber,etc have been investigated due to their interesting applications [1-9]. Electrochemical synthesis has been widely used for the preparation of polyaniline nanostructure films. The nano structure and morphology of conducting polymers play important roles in determining material properties and the high surface to volume ratio of the nanostructures make them potential candidates in a variety of applications [10-11]. Polyaniline is compatible can be easily synthesized from aniline monomer in aqueous solution, the polyaniline is more suitable for biosensor applications. Because it provides stable and porous matrix for the immobilization of biocomposed and it also facilitate the electron transfer process. The widely used conducting polymers for immobilization of enzyme are polyaniline,polypyrrole, polythiophene etc [12-16]. The remarkable switching capability of these electroactive materials between the conducting oxidized (doped) and the insulating reduced (undoped) state is the basis of many applications. The poly-conjugated conducting polymers have recently been prepared because of a number of useful features such as (1) direct and easy deposition on the sensor electrode by electrochemical oxidation of monomer, (2) control of thickness and (3) redox conductivity and polyelectrolyte characteristics of the polymer useful for sensor application. [11].Recently, various authors fabricated polyaniline nano fibers for gas sensing applications [17-20]. In the present investigation, electrochemical approach for the synthesis of polyaniline nanofiber.

2.Experimental Details

PANI $(HSO_4)_0.5H_2O$ fibers was synthesized from an aqueous solution of distilled using electrochemical deposition method (Galvanostatic). The ITO glass substrate used by working and counter electrode and Ag/AgCl was used as a reference electrode.

Corresponding Author: Pradeep Gaikwad *Tel No.9924644278 Fax (02447) 261220 Email: pdgaikwad11@gmail.com*

Table 1. Optimization of process parameters.

Monomer Conc.(M)	Supporting electrolyte Conc.(M)	Deposistion time(Sec)	Current Density (mA/cm^2)
0.2	0.5	300	0.5

3.Results and Discussions:

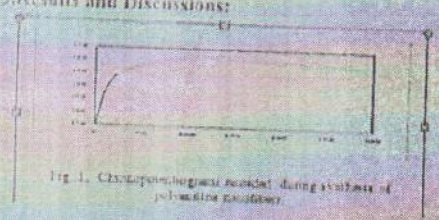

Fig. 1. Chronopotentiogram recorded during synthesis of polyaniline nanofiber.

The behavior of the potentiometric synthesis overshoot during first few second probably indicates difficult formation of dimmers and oligomers. After this, potentials remain constant suggesting that building up of the film proceeds according to the same reaction along the full thickness of the polymer.

UV-Visible spectroscopy

UV-Visible spectra of polyaniline nano fiber deposited on ITO recorded in the wavelength range of 300-900 nm is shown in Fig. 2.

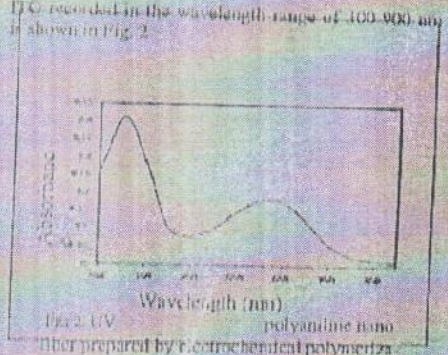

Fig.2 UV polyaniline nano fiber prepared by electrochemical polymerization UV-visible spectra of polyaniline nano fiber prepared by Electrochemical

1. लोकसंख्या वाढ व शहरीकरणामुळे निर्माण झालेल्या पर्यावरणीय समस्या - एक भौगोलिक अभ्यास

प्रा.डॉ.देवकर भाऊसाहेब सोनाजी , *संत रामदास महाविद्यालय घनसावंगी (भूगोल विभाग) ता.घनसावंगी जि.जालना*

प्रस्तावना : भारतासारख्या विकसनशील देशामध्ये लोकसंख्या वाढीमुळे अनेक प्रकारच्या प्रदुषणामध्ये मोठया प्रमाणात वाढ झाली आहे. यामध्ये प्रामुख्याने जलप्रदुषण, वायुप्रदुषण, ध्वनीप्रदुषण, घनकचरा प्रदुषण, इत्यादी महत्वाचे प्रदुषण आहे. वाढते आद्योगीकीकरण व नागरिकरणामुळे मानवी जीवनावर तसेच प्राणी, वनस्पती व जमीन या घटकावरही विपरीत परिणाम घडत आहे. मानवाने आपल्या हव्यासा पोटी जंगलतोड करुन तसेच शेतीमध्ये निरनिराळे रासायनिक खते, जंतु नाशकाचा वापर करुन वरील सर्व प्रदुषणामध्ये अनोखी भर घातली आहे. मागील शंभर सव्वाशे वर्षापासुन मानवाने निसर्ग चक्रात ढवळाढवळी करुन निर्सगाचा संतुलन बिघडवला आहे. वाढत्या लोकसंख्येबरोबर कारखान्याच्या माध्यामातुन आद्योगिक विकासही वाढला. देशाचे उत्पन्नही वाढले , कुशल अकुशल हाताना कामही मिळाले, परंतु त्याच बरोबर औद्योगीक सांडपाण्यामुळे निकेल, कोबाल्ट, अंटीमणी, अर्सेनिक ॲसिड, शिसे , पारा, सोडीयम, तांबे, क्रोमियम, डिटर्जेन, या सारखे घातक रसायनिक पदार्थ सांडपाण्याबरोबर बाहेर पडुन पिण्याच्या पाण्यात , जलसाठयात, नदीत,तलावात तसेच जमीनीत मिसळली गेली. मनुष्याला बहुतांशी रोग पिण्याच्या पाण्यामुळे होतात, पिण्याच्या पाण्या बरोबर काही यातील रासयनिक घटक मानवाच्या शरीर क्रियेत अडथळा निर्माण करुन कावीळ, विषमज्वर, अतीसार, त्वचा रोग, कॅन्सर आदी रोग पसरवु शकतात. कारखान्यातील दुषित सांडपाण्याबरोबर येणाऱ्या शिसे या धातुमुळे हाडे, रक्त, पाचक रस, जीव रसायने (DNA/RNA)यांच्यावर अनिष्ट परिणाम होतात. मेथील पाऱ्यामुळे मेंदुतील मज्जा रज्जुवर वाईट परिणाम होतो. कॅडमीयचा श्वसन व रुधीराभिसरण संस्थेवर तर नायट्रेड चा हिमोग्लोबीनच्या प्राणवायु शोषण क्षमतेवर विपरीत परिणाम होतो. फल्युओराईड चा परिणाम दात हाडे व स्नायु वर होतो. तसेच पृष्ठभागावरील दुषित पाणी जमीनीत झिरपुन पिण्याच्या पाणी साठयाना दुषित करुन रंग चव बदलते. हे दुषित पाणी मनुष्यास , प्राण्यास व शेती साठी सुध्दा धोकादायक बनले आहे. औदयोगीक सांडपाण्यात सोडीयम व डिटर्जन मोठया प्रमाणात आढळते. हे दुषित पाणी नदी तलावात मिसळते. तेथील पाण्यातील प्राण वायु ऑक्सीजन चे प्रमाण कमी होते. परिणामी मासे, जलचर प्राणी, पानवनस्पती मरतात. परिणामी अनेक नदी तलावाना गटाराचे स्वरुप प्राप्त झाले आहे. यामुळे अनेक प्राणी प्रक्षी संकटात सापडले आहेत. निसर्गाचा सफाई कामगार मानला जाणारा माळढोक पक्षी भारतात 316 व महाराष्ट्रात 16 यसा अत्यंत कमी संख्येच्या आसपास येऊन ठेपला आहे.

उद्दिष्टये

1. शहरीकरणाच्या व औद्योगिकीकरणाच्या वाढत्या प्रक्रियांचा अभ्यास करणे.
2. वाढती लोकसंख्या व उपलब्ध साधनसंपदा यांचा सहसंबंध अभ्यासने.

 ISBN : 978-93-83587-35-3

३२ बदलते पर्यावरण व कृषी समस्या यांचा एक - भौगोलीक अभ्यास

प्रा. डॉ. देवकर भाऊसाहेब सोनाजी

संत रामदास महाविद्यालय (भूगोल विभाग), घनसावंगी जि. जालना.

प्रस्तावना

भारत हा कृषी प्रधान देश होता असे आता म्हटले तर वावगे ठरणार नाही. परंतू कृषी प्रधान ऐवजी आता भारत हा कृषी प्रक्रिया आधारित उद्योगाचा देश बनत चालला आहे. परंतू आजही शेतमालाला भाव नाही, वाढणारी नेहमीची महागाई, शेतकरी आत्महत्या, आवकाळी पाऊस, तर कधी भयानक दुष्काळ अशा असंख्य समस्यांना शेतकरी तोंड देत आहे. फार पुर्वीपासून अल्पमुल्यात होणारी मशागत म्हणजे निदंणे, खुरपणे, कापणी, मळणी, हे सुरुवातीला कठीण जात होते. परंतू आता तंत्रज्ञानाच्या प्रगतीमूळे विविध शेतीसाठी आवश्यक शेती साधने निर्माण केल्यामुळे मशागत सोपी झाली परंतू आर्थिक दृष्ट्या महागाईचे आहे. शेतीला आवश्यक असणारे बि - बियाणे, खते, किटकनाशके यांचा उपयोग अधिक होत आहे. तसेच सेंद्रीय शेती करणारे शेतकरी शेणखत व काडी कचरा व्यवस्थापनातून शेतीची सुपिकता वाढविण्यासाठी प्रयत्न करित आहे. सध्यस्थितीत बि.टी. बियाणे व अत्याधुनिक किटकनाशके व रासायनीक खतांमुळे पिकाची वाढ उत्तमरित्या होते. परंतू अचाणक पिकाचे आरोग्य बिघडते तेव्हा शेतकऱ्यांसमोर पिकांचे आरोग्य सांभाळणे, जणावरांचे आरोग्य सांभाळणे, जलजीव व जलसंपत्तीचे व्यवस्थापन करणे व शेतीसाठी महत्वाच्या सुक्ष्म जीवांचे संवर्धन करणे या गोष्टी शेतकऱ्यांसमोर उभ्या राहतात. देशाच्या एकुण भौगोलीक क्षेत्राच्या सुमारे 51% क्षेत्र लागवडी खाली आहे. यामध्ये परत जिरायती शेती, बागायती शेती, यांच्यात खरीप हंगाम व रब्बी हंगाम विविध शेती प्रकार, विविध पिक पध्दती व संमिश्र हवामान या सर्वांना सोबत घेवून आज शेती क्षेत्रात भारत प्रगतीपथावर चालण्याचा प्रयत्न करित असतांना बदलणारे पर्यावरणीय वातावरण व त्यामुळे उद्भवणाऱ्या समस्या या विषयी कृषी क्षेत्रात संशोधन करणे गरजेचे आहे.

उद्दिष्ट्ये

1) कृषीक्षेत्राची सध्यस्थिती व भविष्यातील अव्हाणे यांचा अभ्यास करणे.

2) पर्यावरणीय बदलामुळे दुष्काळ व अतिवृष्टी यांच्यापासून शेतीक्षेत्रात निर्माण झालेल्या समस्यांचा अभ्यास करणे.

हेतू

1) कृषी व ग्रामोद्योग आधारीत जिवनशैलीचा प्रसार होणे.

2) नैसर्गीक, तांत्रीक, सामाजीक व आर्थिक समस्यांवर मात करणे.

विषय मांडणी

शेती हा मानवाचा मुळ व्यवसाय असून जगातील बहुसंख्य लोकांचा प्राथमिक स्वरुपाचा प्रमुख व्यवसाय आहे. भुमी उपयोजनामध्ये पृथ्वीवरील बराच भाग शेतीखाली आहे. शेतीपासूनच अन्न, वस्त्र, निवारा या मुलभूत गरजा पूर्ण होत असून आता कृषी प्रक्रियेवर आधारीत असंख्य नवनविन उद्योग वाढत आहेत. "शेती म्हणजे उपलब्ध जमिनीचा मनुष्यबळ, यंत्र व तंत्र यांच्या साहाय्याने शक्य तेवढा उपयोग करुन पिकांचे उत्पादन काढण्याची कला व शास्त्र आहे." पर्यावरणीय बदलांमूळे वारंवार उद्भवणाऱ्या समस्यांचा अभ्यास करता असे जाणवते की, महाराष्ट्राच्या 308 लक्ष हेक्टर भौगोलीक क्षेत्रावर सरासरी हेक्टरी एक कोटी लिटर पाणी पडते. महाराष्ट्रात याची वाटणी विसम आहे. राज्यातील 355 तालुक्यात सरासरी पर्जन्यमान 300 मि.मि. पासून ते 5000 मि. मि. पर्यंत आहे. महाराष्ट्राचा जवळपास एकतृतीयांश भाग पर्जन्य छायेच्या टप्प्यात येतो. स्थुलमानाने या अवर्षणप्रवण भागात 300 ते 700 मि.मि. पर्जन्यमान आहे. यामध्ये 300 मि.मि. एवढया निम्न सरासरी पर्जन्यमानाचा आधार

UGC, Pune & S.R.T.M. University, Nanded Sponsored

Three Days International Interdisciplinary Conference in Hindi, Marathi, Urdu & English on

लोक साहित्य : वैश्विक परिदृश्य

लोक साहित्य : जागतिक परिप्रेक्ष्य

لوک ادب : عالمی تناظر

Folk Literature : Global Perspective (FLGP-2016)

28, 29, 30 January, 2016

अ लोक साहित्य (FLGP-2016)

Marathi :Volume :2

Edited By :
Dr. G.N. Shinde
Dr. S.W. Jagtap
Dr. V.R. Deshmukh

ISBN-978-81-923487-2-8

१०८. डॉ. अशोक भानुदासराव केंद्रे - ३७९
१०९. डॉ. दिगंबर वाघमारे लहू - ३८१
११०. श्री.अनिल हनमनलु मुनगेलवार - ३८५
१११. डॉ.अनिरुध्द मोरे - ३८८
डॉ.सत्वशीला जाधव - ३८८
११२. डॉ. शशिकांत पाटील - ३९१
११३. डॉ. अनुराधा रा. राऊत - ३९६
११४. डॉ.वैजयंता नागोराव पाटील. - ३९८
११५. प्रा. अनुराधा वसंत गुजर - ४०२
११६. डॉ भाऊसाहेब दा. गव्हाणे - ४०४
११७. प्रा.पंजाब लक्ष्मणराव शेरे - ४०८
११८. प्रा. ज्योती उद्धवराव मामडगे - ४१०
११९. डॉ.हंसराज जाधव - ४१३
१२०. अंगद भोसले - ४१९
१२१. डॉ. शारदा कदम - ४२१
१२२. डॉ. बी. बी. खंदारे - ४२३
१२३. डॉ. सर्जेराव जिगे - ४२६
प्रा. मधुकर बैकरे - ४२६
१२४. श्री रामदास सोनाजी ठोके - ४३१
१२५. प्रा.विद्या सुर्वे बोरसे - ४३२
१२६. आर.एस. मोतेराव - ४३६
१२७. सरस्वती ल. अंदेलवार - ४३९
डॉ. शारदा कदम - ४३९
१२८. डॉ. उमेश चांगदेव मुंढे - ४४२
१२९. संगीता चाटी - ४४६
१३०. डॉ. मारोती माधवराव घुगे - ४५०
१३१. प्रा. पंडित मोरे - ४५४
१३२. प्रा. सुभाष अडावतकर - ४५७
१३३. डॉ. ज्ञानदेव राऊत - ४६१
१३४. डॉ. शिवानंद गिरी - ४६३
१३५. गणेश शिवाजी मारेवाड - ४६६
१३६. प्रा. केशव श्रीरंग कातकडे - ४६८
१३७. डॉ.सौ.वनमाला लोंढे - ४७१
१३८. डॉ. प्रकाश दुकळे - ४७४
१३९. केशव गोपीनाथराव सारंग - ४७७
१४०. प्रा.गजानन आनंता देवकर - ४७९
१४१. डॉ. डी. पी. डुंबरे - ४८२
१४२. डॉ. ममता जानराव इंगोले - ४८५

ISBN : 978-81-923487-2-8

अहिराणी लोकसाहित्यातील 'लगीन' लोकविधी परंपरा

प्रा. डॉ. शशिकांत पाटील
मराठी विभाग,
संत रामदास महाविद्यालय, घनसावंगी, जि. जालना, ४३१२०९

एक समूहवाचक शब्द म्हणून 'लोक' हा शब्द प्रचलित आहे; मात्र लोकसाहित्य आणि लोकसंस्कृती या संज्ञेमध्ये येणारा 'लोक' या शब्दाचा अर्थ काहीसा वेगळा आहे. अनेक अभ्यासकांनी 'लोक' या संज्ञेची उकल केलेली आहे. त्या अनुषंगाने 'लोकजीवन' या शब्दातील 'लोक' या संज्ञेला अर्थ प्राप्त झालेला आहे. अशिक्षित, असंस्कृत, अज्ञान, आदिम या संकल्पनेसोबत 'लोक' म्हणजे ग्रामीण समाज असाही 'लोक' या शब्दाचा अर्थ घेतला जातो. या लोकांनी सांभाळलेल्या संस्कृतीतून लोकजीवन जसेच्या तसे प्रकट झालेले असते. यासंदर्भात डॉ. ना. गो. कालेलकर म्हणतात, ''लोक म्हणजे एका वेगळ्या संस्कृतीचे दर्शन, या व्यवस्थेचे प्रकटीकरण, मिथके, दंतकथा, लोकगीते यातून प्रकट झालेले असतात. ही रूढी विशेषत्वाने ग्रामीण भागात जास्त प्रमाणात जोपासली जाते. या रूढींना सांभाळून हा समूह राहत असतो. प्राचीन काळापासून चालत आलेल्या परंपरांमध्ये थोडाफार बदल करून प्रथा आणि रूढी आजही सांभाळली जाते.'' अहिराणी बोली प्रदेशात परंपरागत पद्धतीने चालत आलेल्या काही चालीरीती आणि संस्कार-सोहळे लोकसाहित्य संकलन आणि अभ्यासरूपाने जतन करून ठेवलेले आहे. लगीन, आंधन, जलमदिन, पाची, बारस, जाऊळ, आसरा, बोणे यातून येणारे विधिपूर्ण लोकजीवन ओव्यांच्या माध्यमातून प्रकट केलेले आहे. या लोकसाहित्याचा विकास आणि जपणूक अशाच लोकजीवनातून झालेली असते. काही परंपरा आणि रूढी आज सुशिक्षित असणाऱ्या आणि नागरी संस्कृतीत वाढलेल्या समाजात हे परंपरागत लोकजीवन लुप्त झालेले आहे. खानदेशात बोलल्या जाणाऱ्या अहिराणी बोलीच्या लोकसाहितयातील ओव्यांतून या जीवनाचे बदलते रूप आणि प्रासंगिक घटना आलेल्या आहेत. यातून लोकजीवनातील बदलत्या परंपरांचा परिचय आपल्याला होत असतो.

लगीन

'अहिराणी लोकगीतातील लगीन' हा लोकसाहित्याचे विवेचन करणारा लेख आहे. हा लेख खानदेशातील विवाहसंस्थेची मूळ मांडणी म्हणून आलेला आहे. या पूर्वी या विषयावर या प्रकारचे विवेचनात्मक कृष्णा पाटील दा. गो. बोरसे, रमेश सूर्यवंशी, म. सु. पगारे यांनी यासंदर्भात लेखन केलेले आहे. कृष्णा पाटील यांच्या या संकलनात स्त्रियांच्या मनातील लग्नप्रसंगाचा आनंद प्रकट झालेला आहे. यासंदर्भात कृष्णा पाटील म्हणतात, ''विवाह या आवडत्या विषयावर अनेक मान्यवर व मातब्बर लेखकांनी आपआपल्या भाषेत विवेचन केलेले आढळते. विवाह म्हटला, की आनंदीआनंद, शिगोशीग ओसंडायला लागला, की त्यातून गीतांची निर्मिती होत असते.

अहिराणी भाषक प्रदेशातदेखील लग्नाच्या वेळी अनेक प्रकारची गीते गायिली जातात. तो अहिराणी स्त्रियांच्या मनाचा भावफुलोरा असतो.'' आनंदी मनाचे लक्षण म्हणून या गीतांकडे पाहिले जाते परंतु अहिराणी बोली प्रदेशात या प्रसंगी येणारी गीते ही विधिगीत म्हणून गायिली जातात. लग्न हा एक संस्कार आहे आणि यामध्ये येणारे विविध प्रसंग एक विधी म्हणून सांभाळले जातात. या विधींचा योग्य क्रम आणि काही ओव्यांचा क्रम लक्षात घेता वर-वधू संशोधन, साखरपुडा, बस्ता, रासपूजन, खंत्या-खंतीन यांनी हळद फोडणे, बेमाथनी मांडणे, मांडो टाकणे, देवदेवतं मिरवणे, काकण बांधणे, अष्टवर जेवू घालणे, हळद लावणे, पोयतं टाकणे, तेलन पाडणे, फुणकं मिरवणे, शीव ओलांडणे, शेवंती पोचवणे, सुक्या मिरवणे, आहेर बजावणे, नवरदेव घोड्यावरून मंडपात घेऊन जाणे, आखणे, व्याहीभेट घेणे, टाळी लागणे, कन्यादान, चवरी-भवरी, दातनचिरी, झेल उडविणे, वधूचा गृहप्रवेश, बीद मिरवणे, वधू-वरांनी शिवेला जाणे, हळद फिटणे, आंघोळ प्रसंगी गुळणा-गुळणीचा कार्यक्रम, सुपारी जिंकणे, सोभा गायन, सत्यनारायण, परत आहेर, चुल्ह्याला पाय लावणे आणि मांडो फेडणे या अनेक संस्कारांतून खानदेशातील अहिराणी बोलीप्रदेशातील विवाह पार पडत असतो. या तीन दिवसाच्या विधीप्रसंगी आणि या विधींना अनुसरून घटना घडत असताना काही विधिगीते आणि काही आनंद निर्माण करणारी लग्नगीते म्हटली जातात. तसेच या प्रसंगासंदर्भात इतर वेळेस स्त्रियां काही ओव्या म्हणत असतात. या प्रत्येक प्रसंगाशी काही संस्कार आणि परंपरा जुळलेल्या आहेत. यासदर्भात डॉ. रमेश सूर्यवंशी म्हणतात, ''खानदेशात बहिणीच्या मुलाला भाऊ आपली मुलगी देण्याला प्राधान्य देतो. म्हणजे मामेबहिणीशी विवाह करण्याची पद्धत रूढ आहे. अविवाहित मुला-मुलींना कुंवारा-कुंवारी म्हणून संबोधले जाते.

स्त्रीने दुसरे लग्न करणे या विवाहाला 'पाट लावने', तर पुरुषाने दुसरे लग्न करणे यास 'मवथीर' असे म्हणतात. खानदेशात कानबाईचा उत्सव साजरा होतो. या कानबाईसमोर लागणाऱ्या लग्नाला 'जागर लगीन' तर तीर्थक्षेत्रावर लागणाऱ्या

ISBN : 978-81-923487-2-8

RAIN WATER HARVESTING

पावसाच्या पाण्याचे संधारण

संपादन: डॉ. सर्जेराव व्ही. ताठे

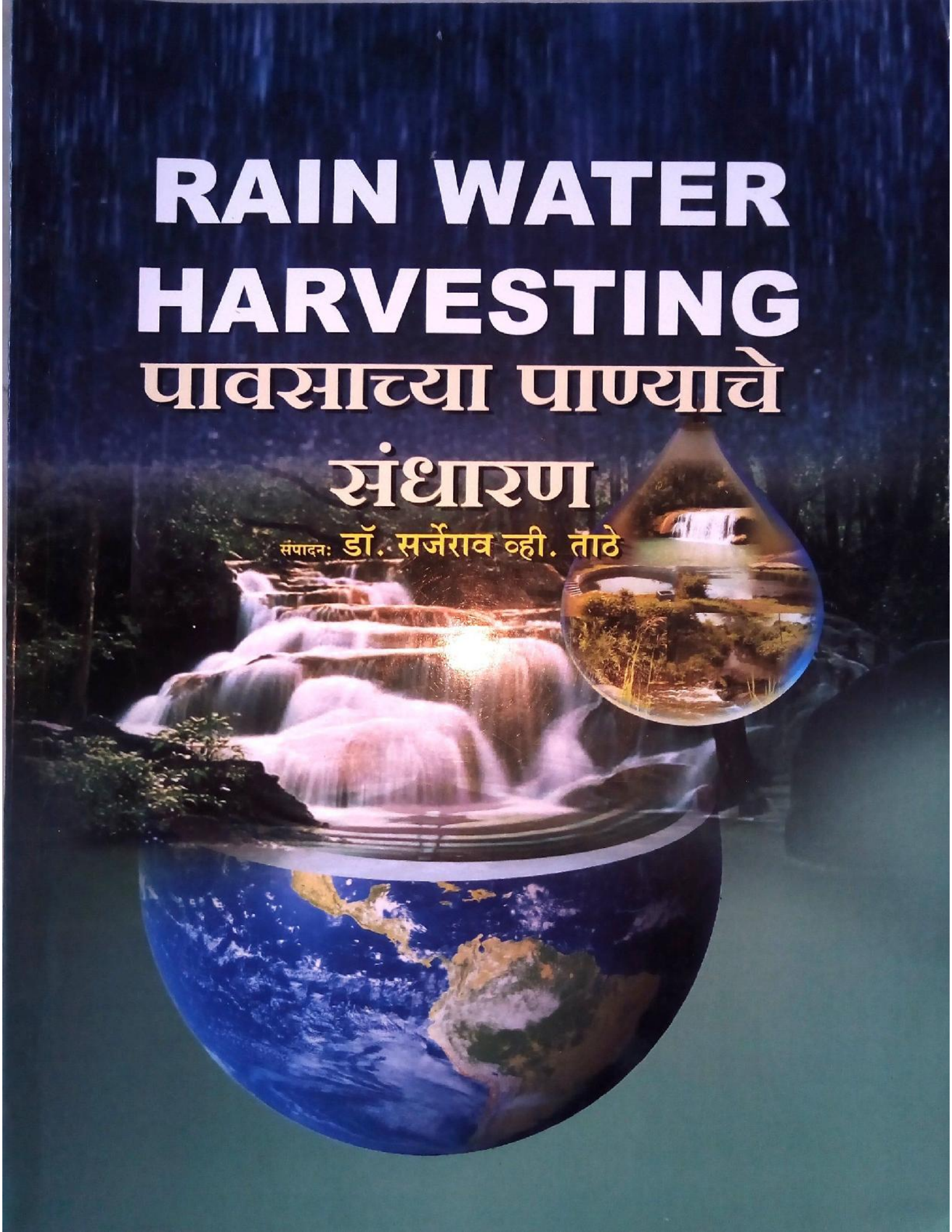

ISBN : 978-93-81948-90-3

जल व्यवस्थापन अर्थात जीवन संवर्धन

प्रा. डॉ. शशिकांत रामदास पाटील,
मराठी विभाग, संत रामदास महाविद्यालय, घनसावंगी, ता. घनसावंगी, जि. जालना

* **प्रस्तावना :-** आपला भारत देश नद्या, समुद्र, तलाव यांनी पूर्वापार संपन्न असलेला देश. एंक दोन प्रांत सोडले पावसाचे प्रमाणही समाधानकारक आहे. केरळ, आसाम, कोकण, गोवा, या प्रांतात तर घनघोर पाऊस जिथे पावसाचे पाणी अत्यल्प तिथे पावसाचे पाणी साठविण्याचे अनेक उपाय कल्पतेने मानवाने शोधून काढलेले आहे. राजस्थान, गुजरात, थरचे वाळवंट,इथे पाऊस अत्यंत कमी तिथे मग गच्ची वरचे पाणी साठविण्याचे हौद, तळघरातील हौद, कुंड व जोहड ह्यासारखे, तलाव बांधलेले आहेत. कुंडात पावसाचे पाणी शुद्ध ह्रपाने साङ्गते. सरोवर, तलाव , तळे, तालाब, जोहड, जोहडी, पोखर, डिग्गी, चोपरा, हे तलावाचेच प्रकार, प्रांत व आकाराप्रमाणे, ही वेगवेगळी नावे आहेत.

महाराष्ट्रात दर दोन ते तिन वर्षाने अनावृष्टीमुळे कधी दुष्काळ तर कधी अतिवृष्टीमुळे अतिशय नुकसान होतेच आहे. पावसावाचून जनजीवन, शेती, गुरे, सारे काही होरपळून निघते आहे. अशी दाहक नैराश्यजन्य स्पोटक परिस्थिती दिसत असली तरी आशादायक परिस्थिती आणि वास्तव बदलण्याची क्षमता दिसून येते. महाराष्ट्रात पाण्यासाठी काम करणाऱ्या सेवाभावी संस्था, उद्‌बोधन करणारी महाविद्यालये, शासनाच्या स्वजलधारा योजना, पानलोटक्षेत्र योजना, हरीयाली यासारख्या योजना, कार्यक्षम व जीव ओतणारे अधिकारी, राळेगण सिद्धी व त्यासोबत संपूर्ण महाराष्ट्राचा कायापालट करणारे अण्णा हजारे, यांच्यामुळे त्या त्या भागाचे उद्बोधन झालेले आहे. लोकसहभागातून त्या त्या गावात विभागात, जलसंधारणाचे कार्य करतात. दिशा देतात आणि प्रत्यक्ष कार्य उभे करतात. जलसंकटातून परिसराला आणि दुष्काळी भागाला मदत करण्याचे कार्य करतात. बांध बांधारे, तलाव, शेततळी या ह्रपाने पावसाचे, नदी नाल्याचे पाणी साठवून जलसंधारण केल्यावर शेतांना पाणी, जनावरांना पाणी, माणसांना पाणी आणि भूजलपातळीत वाढ होण्यास मदतच होते.

पाणी प्रश्न व त्यावरचे उपाय, साठवण, काटकसर याबद्दलची जागरूकता महाराष्ट्रात मोठ्याप्रमाणात होऊ लागलेली दिसते आहे. तळमळीचे कार्यकर्ते, संशोधक, जलतज्ञ व सुजान शेतकरी, यांच्या परस्पर सहकार्यामुळे व कार्यामुळे ही जलक्रांती येऊ घातलीय. शिवाय पाण्याचा स्त्रोत एकच पण त्यातही अनेक क्षेत्रातून त्यांचा अपव्यय होतो. एखाद्या जलाशयात पाण्याचा एक थेंब पडतो ती प्रत्येक थेंब स्वतंत्रच असतात. परंतु ते थेंब जलाशयात पडताच त्याचे स्वतंत्र अस्तित्व विह्रन जाते.

बांध-बंधारे, पाझर तलाव, शेततळी, वनराई बंधारे, पाणलोट क्षेत्र, समतल चर वृक्षारोपण, पिण्याचे पाणी, समन्यायी पाणी वाटप, धरणग्रस्तांचे पुनरवसन, धरणसीमेतील लोकांना समान पाणीवाटप, तलावातील गाळ काढणे, थिबक सिंचन, शिवकालीन पाणीपुरवठा योजना, सांडपाण्यावर प्रक्रिया करून त्याचा पुनरवापर, शेतीतील पावसाचे पाणी आडविणे, शेततळ्याच्य तळाशी प्लास्टीकच्या कागदाचे आवरण घालून पाण्याचा

26 The Concept of *Negritude in* African Literature 93
Dr. Santosh Koti

27 Daisporic Experience in Jhumpa Lahiri's *Interpreter of Maladies* 99
Dr.Jagdale Anuradha and Mr.Misal Raman Shahaji

28 Diaspora and Women's Contribution to Diasporic Literature 102
Adate Suryakant Shamrao

29 Family in Crisis: Dramatizing Domestic Violence in Edward Bond's *Saved* 105
Amer Hamed Suliman

30 Ecocritical Appoarch in Kiran Desai's *Hullabaloo in the Guava Orchard* 115
Ashok Jagannath Jadhav

31 Postmodern Woman and Her Strive for Identity Reflected in The Select Writings of Shashi Deshpande' S *'That Long Silence'* 119
Prof. Diksha B Kadam

32 Victimisation of Woman in Buchi Emecheta's Novels 122
Dhangade Kakasaheb D.

33 Demythification of Myth and Remythification of Reality in *The Thousand Faces of Night* 126
Gadekar Manoj Bhagwat

34 African Women's Quest for Self Identity in Bachi Emecheta's Novel The *"Slave Girl"* & *"Kehinde"* 130
Mahadik Sarika Vasant

35 A Study of the Supernatural & Cosmic Elements in Edmund Spenser's *Epithalamion* and Baalkavi's *Phulrani*: A Comparison 133
Manohar P. Joshi

36 Wole Syinka's *'Kongi's Harvest'* : A Post Colonial Play 138
More Suhas Suresh

37 Collectivism in Chinua Achebe'S Short Story *Uncle Ben'S Choice* 14
Mr. Bamane Amit Maruti

38 Depiction of Human Violence Against Nature in Dilip Chitre's Poem *The Felling of The Banyan Tree* 14
Mr. Chanabasappa Sidramappa Mulage

39 Gender, Ethnicity and Diasporic Consciousness in Shyam Selvadurai's *Funny Boy* 14
Mr. Chipade Tanaji Prabhakar

40 Multiculturalism in Education 14
Mr. Mate Mahadeo Vishnu

41 Female Characters in *"The Thousand Faces of Night"* 1
Mrs. Pol Anupama Prakash

42 *Thirty Days in September:* A Representative Postmodern Drama 1
Omprabha A. Lohakare

43 Communication Gap in Anita Desai, 'Cry; The Peacock' 1
Mr. Ashok B. Londhe

44 Issue of Marginality in the Mulk Raj Anand's Novel 'Un
Prof. Chavare Prashant Tanaji and Prof. Chavare Manisha Tan

45 The Element of Fantasy in Iris Murdoch's *'The Bell'*
Prof. D.G.Shahane

46 "Diasporic Literature"
Prof. Dudhal Parmeshwar Subhash

47 Diasporic Consciousness in Edwidge Danticat's Novel *The Farm*
Prof. Mahesh K. Mali and Mr. Satyawan T. Kolekar

48 Torment and Torture in Edna O'brien's Novel *Down* River
Sadashiv C Mane

49 Postcolonial Aspects in Chinua Achebe's Novels: A
Prof. Suryawanshi M. S.

50 Amitav Ghosh's Novel *the Circle of Reason:* A Diasporic
Raimule N. J.

The Proceedings of UGC and Dr B.A.M. University Sponsored National Conference

NEW TRENDS IN THE ASIAN LITERATURES IN ENGLISH

Vol. 2

Editors

Dr R. T. Bedre

Dr A. V. Jadhav

Mr. V. S. Dhanve

Department of English

Rameshwar Shikshan Prasarak Mandal, Sonpeth's

Shri Panditguru Pardikar Mahavidyalaya

Sirsala, Tq. Parli-V, Dist. Beed

CONTENTS

1. Theme Of Social Mobility In 'The White Tiger'
   - Dr. P. D. Shitole | 11
2. A Comprehensive Account Of *Azadi*: A Novel By Chaman Nahal
   - Dr. Solunke R.E. | 15
3. Influence Of Indian Literature On Western Literature
   - Dr S.A. Katole | 22
4. Marital Discord In Anita Desai's *Cry, The Peacock*
   - Dr. Mane M. S. |29
5. Indian Ethos And Social Portraits In Indian Writing In English
   - Smt. Sasane S. S. | 32
6. A Triology Of Innocence, Betrayal And New Beginning In Salman Rushdie's *Shalimar The Clown* - Suchita J. Mehra | 35
7. Voice Of Dalit In Rohinton Mistry's: *A Fine Balance* - Mr. R.S. Gore & Dr. V. D. Satpute | 44
8. Sadhna Amte's Autobiography *Samidha* : A Lighthouse To Social Scavenger - Meera M. Nakade | 53
9. Cultural Issues In *Wedding Album* - Dr. N.S.Padmavat | 56
10. Racial Conflict In The Works Of Mahatma Phule - Raut S.R.|58
11. Dr. A.P.J. Abdul Kalam's *Wings Of Fire*: An Inspiration Forever - Dr. Nawale A.M. & Mr.Jaybhaye V. K. | 61
12. Lack Of Compassion And Commitment In Manjula Padmanabhan's *Lights Out!* - Dhaygude Kakasaheb D. |65
13. K. S. Venkataramani's *Murugan The Tiller*: A Gandhian Dream Of Rural India- Dr.Dnyanoba B. Mundhe | 70
14. Dynamics Of Discord In Indo-Canadian Theatre: A Study Of Rana Bose's *Nobody Gets Laid* - Dr. Ramesh Chougule | 74
15. Jhumpa Lahiri's Denial Of Naxalism In *The Lowland*
    - Rekha Muktiram Vairale |76
16. Indianess In Chetan Bhagat's Writing
    -Ganesh Kharat & Vilas Gore | 79
17. Critical Perspective Of Anita Desai's 'Fire On The Mountain'
    - Dr. Aher Vaishali E |83
18. The Issue Of Gender Discrimintion In Arundhati Roy's *The God Of Small Things* - Mr.P. T.Chavare & Dr.M.T.Chavare |86
19. Alekar's *Begum Barve*: A Symbolical Play - Manish Gomase|91
20. Female's Psyche In Manju Kapoor's *Difficult Daughters*
    - Ms Badne Archana |97
21. Mahashweta Devi's Chotti Munda And His Arrow: A Study With Deep Ecological Perspective – V. N. Harkal |100

UGC, Pune & S.R.T.M. University, Nanded Sponsored

Three Days International Interdisciplinary Conference in

Hindi, Marathi, Urdu & English on

लोक साहित्य : वैश्विक परिदृश्य

लोक साहित्य : जागतिक परिप्रेक्ष्य

لوک ادب : عالمی تناظر

Folk Literature : Global Perspective *(FLGP-2016)*

28, 29, 30 January, 2016

(FLGP-2016)

English & Urdu :Volume :3

Edited by

Dr. G.N. Shinde

Dr. S.B. Mirza

Mr. V.B. Maske

ISBN-978-81-923487-3-5

	Folk Literature & Race	
46	Dr. Gangane A. S. & Mrs. Avchar Sangita -- The Last Wild Witch By Starhawk - Envisioning Ecofeminist Implications Through An Eco-Fable	
47	Dr. Kulkarni Prafull -- Folkloric Psyche of Feminine Liberation in Mesgun Zerai's Play: A Village Dream	
48	Mr. Meghraj N. Pawar-- Identity Crisis And Sexuality In Girish Karnad's Play Hayavadana	
49	Ms. Shilpa K. Athawale -- The Study of Alice walker's The Color Purple as A Feminist Folktale	
	Folk Literature in World Literature	
50	Ms. Sheetal Arsude -- Folk Literature In World Literature	
51	Dr. Syed Aleemuddin -- Role of Indian Folktales in world literature	
52	Faiz Ahmed Saleh AL-Gobaei -- Prevalent Forms of Folk Literature in Yemen	
53	Dr. Mubarak Altwaiji -- Folklore and Post 9/11 Narrative: a Study of Laila Halaby's Once in a Promised Land	
54	Ms. Elham Dahan Ali Al-Zain & Dr. Mirza M. B.-- The Folklore of Yemen A Key to National Identity	
55	Hatem Mohammed Hatem AL-Shamea -- Contemporizing the Past of Yemeni Folklore A critical study of Yemeni folklore in two selected novels of Wajdi AL-Ahdal and Nadia Al-Kawkabani	
56	Dr. Cherekar J. S.-- Interracial And Intercultural Marriages In African Novels	
57	Dhaygude Kakasaheb D.-- Chinua Achebe And Folklore	
58	Mr. Vijay More -- Paulo Coelho's Journey through a Tale to the Manual; A study of his Manual of the Warrior of Light	
	Other Forms of Folk Literature: Idioms, Proverbs, Phrases etc.	
59	Dr Rajkumar M Lakhadive -- The Representation of Oral Tradition Through the Proverbs	
60	Dr. Mirza S. B. & Dr. Mirza A.B. -- A Study of English and Urdu Equivalent Proverbs	
61	Parwaiz Khan & Dr. Baig Akhtar Mirza -- Proverbs and Idioms	
62	R. U. Barole-- Studying Proverbs In Cultural Context	
63	Dr. Subhash K. Shinde -- Pinjra : A Folkdance Musical Film	
	Indian Literary Folk Forms & Literature	
64	Dr. Mirza M. B. -- Street Theatre: A Theatre by the People and for the People	
65	Mr. Ashok N. Borude -- Tamasha as a folk art of Maharashtra	
66	Ms. Hiware Jyoti Suryabhan -- A Glance at Prominent Folk Drama forms Prevalent in India	
67	Mr. Panchal Dnyaneshwar Anantrao -- The Historical, Religious, Social Exhortation, Cultural And Identical Study Of Powada As Folk Literature	
68	Mrs. Panchal Pushpanjali A. The Study Of Bharud In The Light Of Folk Song	
69	Deshmukh Anuradha Digambarrao-- Utpal Dutt: Brings Politics Back To Jatra	

 ISBN : 978-81-923487-3

ISSN: 2229-4856

Abhisaran

VOL. XV SPECIAL ISSUE APRIL 2016

RELEVANCE OF GANDHIAN THOUGHTS

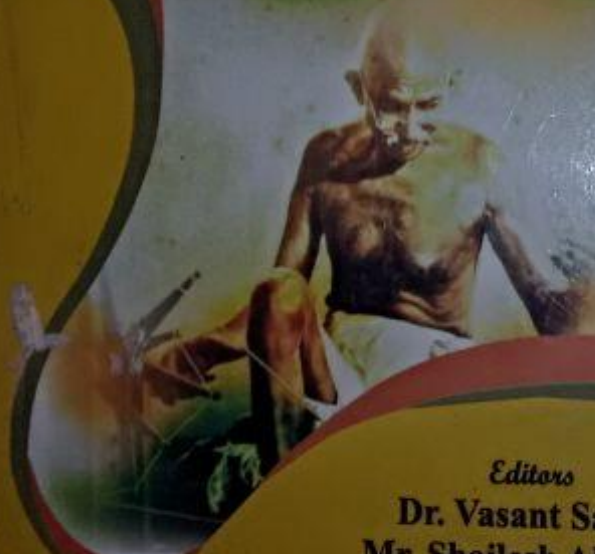

PART I

Editors

Dr. Vasant Sanap

Mr. Shailesh Akulwar

39. Gandhiji's Concept Of Social Welfare: A Comparative Study With Islam -Abdul Majid | 177
40. Gandhian Philosophy in Raja Rao's Kanthapura and Mulk Raj Anand's Untouchable-Ahilya Bharatrao Barure |188
41. Relevance Of Gandhi In Modern Times: A Critical Overview - Dr.Amol S. Vidyasagar | 192
42. Mahatma Gandhi – Gram Swaraj -Anil R. Kadu |199
43. Mahatma Gandhi's Educational Philosophy - Dr. Anjali Dashrath Kale | 202
44. Gandhian Thought: A Symbol Of Hope- Ms.Badne A.G | 206
45. Mahatma Gandhi And Social Justice - A Critical Analysis - Kautik N. Dandge | 208
46. Mahatma Gandhi and Global Peace- Dr. Brahmapurikar P.B. |211
47. Ideas of Mahatma Gandhiji on Gram Swaraj -Dr. Chinna Ashappa |215
48. Gandhi and National Integration -Choppara Sumanthraj |219
49. Gram Swaraj In The View Of Mahatma Gandhi - Mr. Mahamad Younus | 228
50. Gandhi's Economic Thoughts And Economic Development - Mr. Dahe Bharat Rawan |231
51. Mahatma Gandhi's Educational Philosophy - Dattatraya v Kharatmol |236
52. Mahatma Gandhi's Influence On Literature And Spirituality - Deshpande Madhuri Madhukar | 239
53. Education in the Vision of Mahatma Gandhi - Dr. Madhav Dhere & Mrs. Archana Dhere |242
54. Gandhiji And Panchayat Raj - Dhaygude Kakasaheb D. | 247
55. Gandhian Ideals In Mulk Raj Anand's Untouchable - Dr. Dnyanoba Mundhe & Dr. Girish Kousadikar | 251
56. In Relevance Of Gandhian Thoughts : Khadi And Village Industries In India - Kute vrushali B. & Dr. Sonwane B.B | 257
57. Mahatma Gandhi and Basic Education - Dr. Ajay B. Patil | 262
58. Mahatma Gandhi`s Views on Education - Dr.Kalpana H.Gharge | 268
59. Relevance of Mahatma Gandhi's Thoughts on Anti-Terrorism - Dr.P.H.Suryavanshi | 271
60. Mahatma Gandhi and National Integration - Dr. Abul Samad 274

29. Awakening Of Youth By Swami Vivekananda
- Sunita S.Bhosle & Shyama Lomate | 147
30. Education in the Vision of Swami Vivekananda
- Dattatray Bobade & Archana Dhere | 153
31. Educational Thoughts Of Swami Vivekananda - Dahe B. R. | 157
32. Swami Vivekanand's Views on Education and Empowerment of Women - Deshpande M. M. | 161
33. Vivekananda and Religion - Dhaygude K. D. | 165
34. Swami Vivekanand's Educational Philosophy- Patil.V.H. | 169
35. The Role and Relevance of Swami Vivekananda's Man Making Education in Present Scenario - J. R. Bhadane | 172
36. Swami Vivekananda's Thoughts On Education
- Gaikwad S.D. | 178
37. Need of Thoughts of Swami Vivekananda in Indian Education System - S.E.Ghumatkar & Mr. G. E.Ghumatkar | 183
38. "Educational Aim's And Vision Of Swami Vivekananda's Educational Philosophy" - Jadhav M. B. & Dr. Pathan P.Y | 187
39. Globally Contribution of Swami Vivekananda ....
- Jagtap H. S. | 191
40. Swami Vivekananda's Views On Science And Education
- V. M. Jaysingpure & K.E.Chaudhary | 195
41. Swami Vivekananda's Thoughts on Education - Jyoti B. Kale | 199
42. Swami Vivekananda's Thoughts on Religions- R. K. Kale | 202
43. Swami Vivekananda's Thoughts on Buddhism
- Korde Rajabhau C. & Pawale Navnath D. | 206
44. Great contribution of Swami Vivekananda towards Physics
- Rupali B. Kulkarni | 210
45. Swami Vivekananada's Thoughts on Education - Lahoti R.K. | 213
46. Thoughts On Religion Of Swami Vivekananda
- M.B.Gaikwad | 215
47. Literature of Power: Reflections on Swami Vivekananda
-M. S. Bhatane | 218
48. Educational Philosophy of Swami Vivekananda
- A.R. Maniyar | 223
49. Educational Philosophy Of Swami Vivekananda: Some Reflections On Present Era - T. V. Munde | 225
50. Swamiji's Reflection on Women Education
- G.B.Kadam & N. T. Pawar | 230
51. Swami Vivekananda's Ideologies: Perspectives from Literature
- Dr. Navle B.A. | 236
52. Swami Viveknands Thoughts On Religions - P. B. Kharat | 242
53. A True Teacher and Vivekananda- R. K.Pardeshi | 244
54. Rethinking Swami Vivekananda on Women Education
- K. P. Paralikar | 248
55. Swami Vivekanand's: Educational Approach.- Patil M. S. | 251

CROSS CULTURAL NUANCES

Chief Editor: Prof. (Dr.) Atima Sharma Dwivedi
Editors: Ms. Seema Jain, Dr. Madhumeet

The Heritage Institution
Kanya Maha Vidyalaya Jalandhar
Re-Accredited with A Grade by UGC NAAC
College with Potential for Excellence
Star College Status by DBT, Govt. of India

ABHISARAN

ISSN: 2229-4856

Relevance of Swami Vivekananda's Thoughts in 21st Century

Editors:
Prin. Dr.Vasant Sanap
Dr.Ganesh Mohite

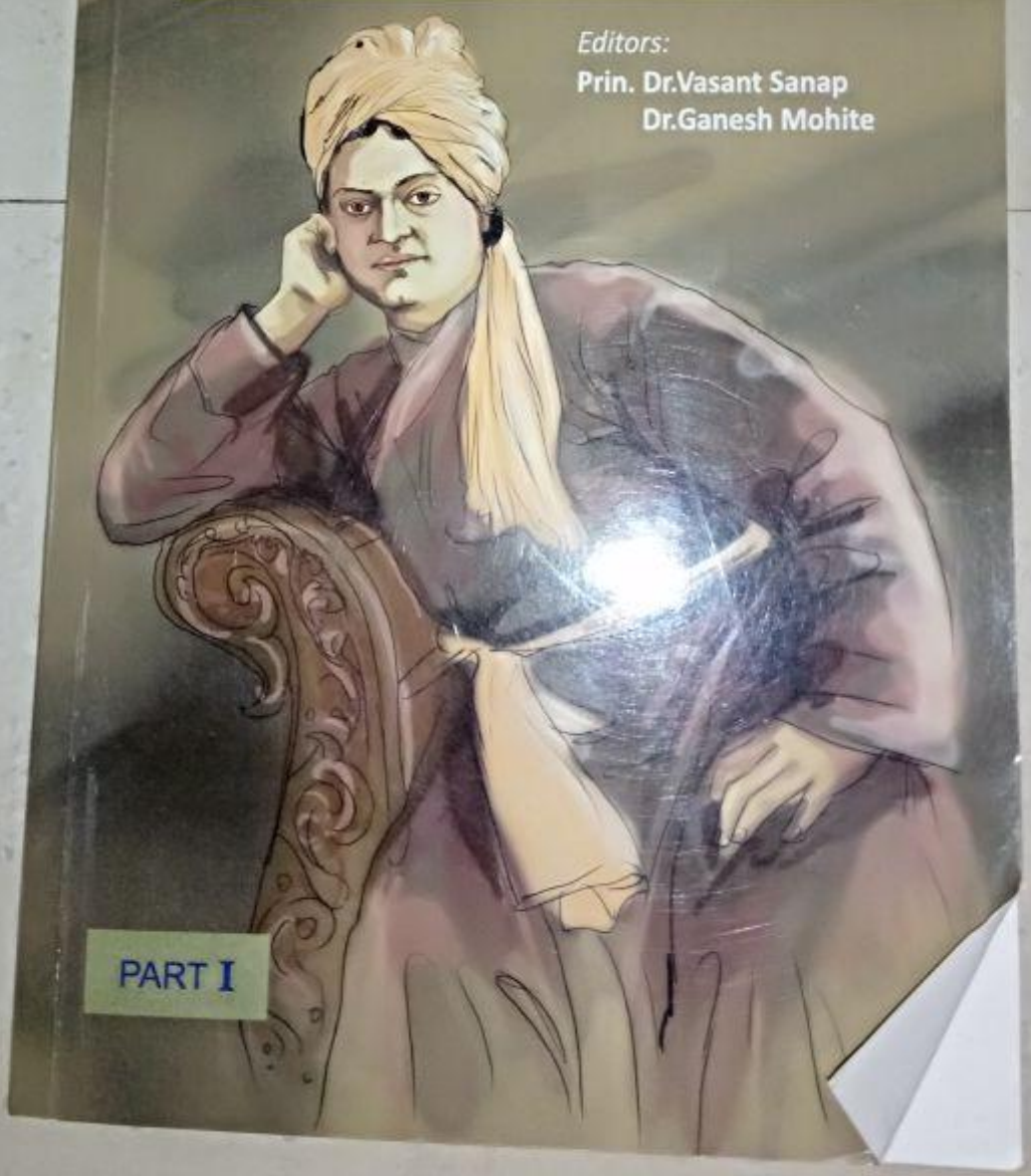

PART I

ABHISARAN

ISSN: 2229-4856

Relevance of Swami Vivekananda's Thoughts in 21st Century

Editors:

Prin. Dr.Vasant Sanap

Dr.Ganesh Mohite

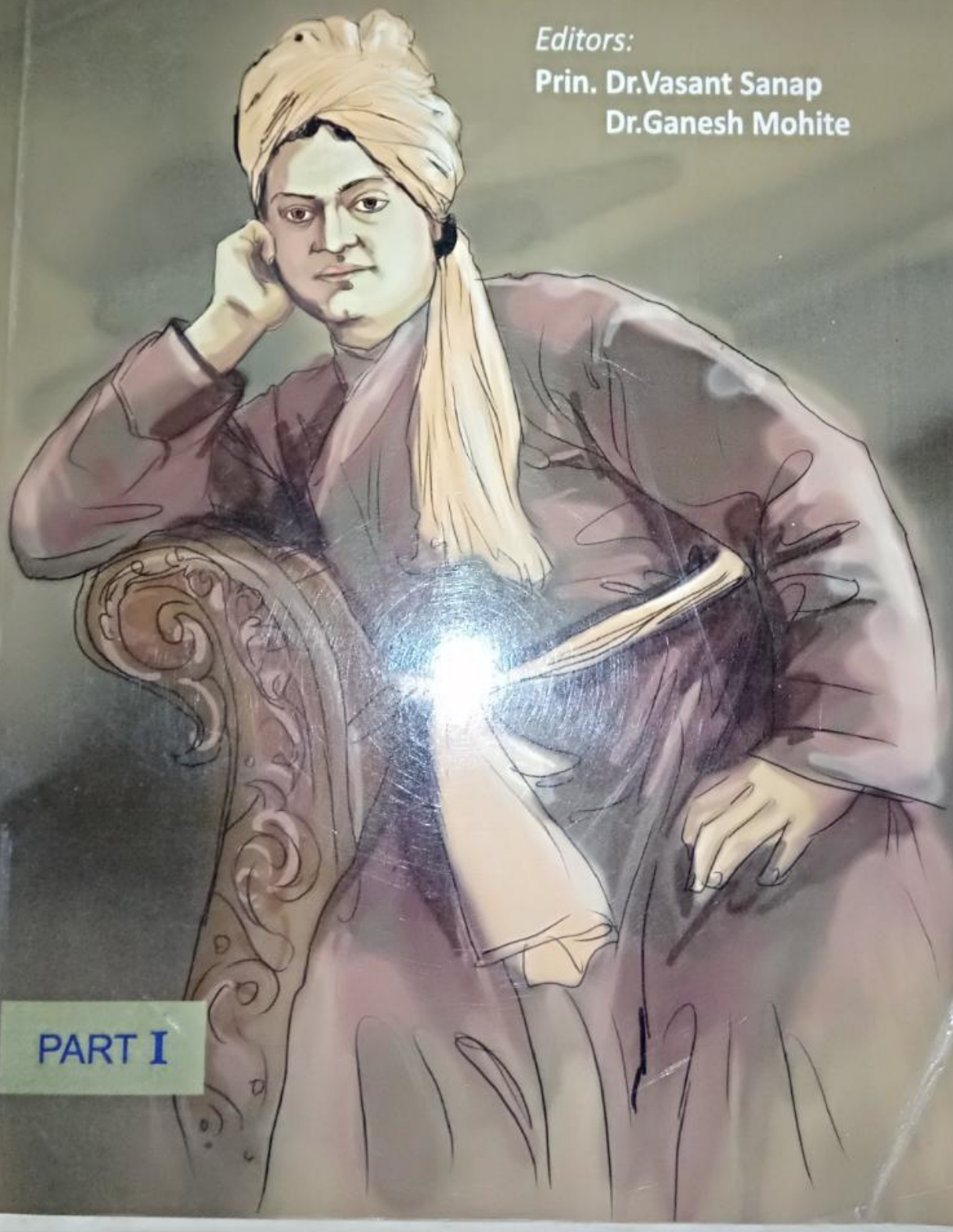

PART I

29. Awakening Of Youth By Swami Vivekananda
- Sunita S.Bhosle & Shyama Lomate | 147
30. Education in the Vision of Swami Vivekananda
- Dattatray Bobade & Archana Dhere | 153
31. Educational Thoughts Of Swami Vivekananda - Dahe B. R. | 157
32. Swami Vivekanand's Views on Education and Empowerment of Women - Deshpande M. M. | 161
33. Vivekananda and Religion - Dhaygude K. D. | 165
34. Swami Vivekanand's Educational Philosophy- Patil.V.H. | 169
35. The Role and Relevance of Swami Vivekananda's Man Making Education in Present Scenario - J. R. Bhadane | 172
36. Swami Vivekananda's Thoughts On Education
- Gaikwad S.D. | 178
37. Need of Thoughts of Swami Vivekananda in Indian Education System - S.E.Ghumatkar & Mr. G. E.Ghumatkar | 183
38. "Educational Aim's And Vision Of Swami Vivekananda's Educational Philosophy" - Jadhav M. B. & Dr. Pathan P.Y | 187
39. Globally Contribution of Swami Vivekananda ....
- Jagtap H. S. | 191
40. Swami Vivekananda's Views On Science And Education
- V. M. Jaysingpure & K.E.Chaudhary | 195
41. Swami Vivekananda's Thoughts on Education - Jyoti B. Kale | 199
42. Swami Vivekananda's Thoughts on Religions- R. K. Kale | 202
43. Swami Vivekananda's Thoughts on Buddhism
- Korde Rajabhau C. & Pawale Navnath D. | 206
44. Great contribution of Swami Vivekananda towards Physics
- Rupali B. Kulkarni | 210
45. Swami Vivekananada's Thoughts on Education - Lahoti R.K. | 213
46. Thoughts On Religion Of Swami Vivekananda
- M.B.Gaikwad | 215
47. Literature of Power: Reflections on Swami Vivekananda
-M. S. Bhatane | 218
48. Educational Philosophy of Swami Vivekananda
- A.R. Maniyar | 223
49. Educational Philosophy Of Swami Vivekananda: Some Reflections On Present Era - T. V. Munde | 225
50. Swamiji's Reflection on Women Education
- G.B.Kadam & N. T. Pawar | 230
51. Swami Vivekananda's Ideologies: Perspectives from Literature
- Dr. Navle B.A. | 236
52. Swami Viveknands Thoughts On Religions - P. B. Kharat | 242
53. A True Teacher and Vivekananda- R. K.Pardeshi | 244
54. Rethinking Swami Vivekananda on Women Education
- K. P. Paralikar | 248
55. Swami Vivekanand's: Educational Approach.- Patil M. S. | 251

३

अंबड परिसरातील यादवकालीन मंदिर व बारव स्थापत्य

डॉ. राजेंद्र साहेबराव धाये
संत रामदास महाविद्यालय,
घनसावंगी.

प्रा. राजाराम जगन्नाथ माने
मत्स्योदरी कला महाविद्यालय,
तिर्थपुरी ता. घनसावंगी.

प्रस्तावना

इतिहास म्हणजे इति + ह + आस म्हणजे असे निश्चित घडले. वास्तविक इतिहास हा मृत स्मृतीचे थडगे नसून वर्तमान वास्तवांशी संवाद साधणारा जिवंत अनुभव असतो. प्राचीन काळापासूनच मानवाला आपल्या सभोवतालच्या घटकाबद्दल कमालीची उत्सुकता वाटत आली आहे. एखादे मंदिर, मूर्ती, ओटा, बारव, समाध्या, किल्ले, राजवाडे यांची जडण-घडण, कला आणि स्थापत्य, चित्रकला याविषयी मानवाने सतत चिंतन केले आहे. अशा प्रादेशिक चिंतनातून राष्ट्रीय चिंतन होत असते. अनेक वेळा आपणास आपल्या भोवतालच्या परिसराची माहिती नसते. म्हणूनच समृध्द ऐतिहासिक परंपरा लाभलेली गावे, मंदिरे, मूर्ती, स्मारके यांचा इतिहास हा फक्त मौखिक अथवा मृत थडग्यातच पडून राहतो. अशा कलाकृतीवर संशोधन होणे यामुळेच गरजेचे ठरते.

मानवी सामाजिक प्रतिबध्दता, आध्यात्मिक अनुभूतीची अक्रियात्मक अभिव्यक्तीशी संबंधित परंपरेला, विश्वासाला व श्रध्देच्या समग्रतेला मंदिर संस्कृती म्हणतात. कोणत्याही देवस्थानाला जो दर्जा मिळतो तो श्रध्देवर अंवलंबून असतो. यासाठी देवस्थान मोठे वा प्रसिध्दच असावे असे काही आवश्यक नसते.[१] भारतात मंदिर स्थापत्याच्या अनेक शैली विकसित झाल्या. यामध्ये नागर, द्रविडी, वेसर शैली प्रामुख्याने प्रसिध्द आहेत तसेच काही प्रादेशिक शैलीही प्रसिध्द आहेत. यामध्ये हेमाडपंथी शैली मराठवाड्यात यादव काळापासून (इ. स. ९७५-१३१८) प्रसिध्द झाली. ही शैली महादेव यादव आणि रामदेवराय यादव यांचा मंत्री हेमाद्री किंवा हेमाडपंत यांच्या नावावरून रूढ झाली. त्याने अनेक नवीन मंदिरे बांधली तसेच प्राचीन मंदिरांचा जीर्णोध्दार केला.[२] हेमाडपंथी किंवा यादवकालीन शैली नागर व द्रविडी शैलीपेक्षा काहीशी भिन्न असून तिच्यात स्थानक वैशिष्टयांचाही समावेश झालेला दिसतो. मंदिर बांधण्यासाठी चतुरस्त्र आणि वृत्त असा आराखडा वापरतात. दगड सांधण्यासाठी चुना व माती अशा प्रकारचा कोणताही पदार्थ वापरलेला नाही. दगडांना खाचा पाडून एकावर एक दगड रचून भिंतीची बांधणी अशाप्रकारे केली आहे की, तिला भक्कमपणा प्राप्त झाला आहे. मंदिर वास्तूमध्ये स्तंभ, द्वारशाखा, अर्धमंडप, सभामंडप, वितान (छत) आणि शिखर

ISSN : 0976 – 5425

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे स्त्री-उद्धारक कार्ये

५१

डॉ. राजेंद्र साहेबराव धाये
सहयोगी प्राध्यापक, इतिहास विभागप्रमुख, संत रामदास महाविद्यालय, घनसावंगी, जि. जालना.

भारताच्या प्राचीन इतिहासात स्त्री आदिशक्ती, आदिमाया, आदिती इत्यादी रुपात आहे. या काळात स्त्री ही सर्जनाची देवता म्हणून ओळखल्या जात होती. 'स्त्री-उदरातून जन्म' ही बाब त्या काळातील मानवाला दैवी आणि पवित्र वाटत होती. त्यामुळे याकाळात स्त्री विषयी मानवाच्या मनात आदरयुक्त भावना होती. तिचा त्याने गौरव केला. 'जन्म देणारी' म्हणून त्याकाळातील मानवाला ती अत्यंत महत्त्वाची वाटत होती. या कालखंडात मातृसत्ताक पद्धती अस्तित्वात होती. स्त्रीचे समाजातील स्थान प्रतिष्ठेचे आणि निर्णायक होते. पण काळ हळूहळू त्याच्या पावलाने बदलत गेला. मातृसत्ताक व्यवस्थेची जागा पुरुषसत्ताक व्यवस्थेने केंव्हा घेतली हे कोणालाच कळले नाही. आणि येथेच स्त्रियांवरील अन्याय, अत्याचारानेही जन्म घेतला. पुरुषसत्ताक व्यवस्थेत स्त्रियांना दुय्यम स्थान देऊन त्यांच्यावर बंधने लादण्यात आली. अस्पृश्य, दलित आणि सर्व जातींमधील स्त्रियांची स्थिती गुलामांपेक्षाही वाईट बनली. माणूस जसजसा प्रगत झाला तसतशी स्त्रियांवरील बंधने वाढतच गेली. स्त्रियांचे आर्थिक अधिकार संपवून तिला परावलंबी करण्यात आले. नीतिमत्तेची आणि चारित्र्याची बंधने स्त्रियांसाठी अधिकच कठोर करण्यात आली. रक्तसंकर आणि वर्णसंकर टाळण्यासाठी स्त्रियांना नीतिमत्ता, संस्कार, योनिशूचितेच्या नावाखाली कडक बंधनात ठेवण्यात आले. थोडक्यात स्त्रियांचे 'माणूस असणे' हे सुद्धा नाकारण्यात आले. योनिशूचित्वामुळे बालविवाह, सतीची चाल, पुनर्विवाह बंदी, जरठकुमारी विवाह, विधवा पुनर्विवाह, केशवपन इत्यादी अनिष्ट प्रथांचा समाजात उगम झाला. या सर्व प्रथांना धर्माचा आधार देवून गौरविण्यात आले...

या पुरुषसत्ताक कालखंडात स्त्रीला 'भोगवस्तू' चे स्वरुप आले. तिच्या प्रत्येक पावलासाठी धर्माचा आधार घेण्यात आला. 'केशवपणाने' तिचे सौंदर्य खुडून टाकले. चारित्र्याचा आधार घेऊन तिच्यावरील अन्याय, अत्याचार वाढला. तिला समाजात, कुटुंबात 'गौण' स्थान आले. तिचे सर्वस्व हिरावण्यात आले. तिला समता आणि स्वातंत्र्यापासून बेदखल करण्यात आले. स्त्रीला समता आणि स्वातंत्र्याची गरज होती. मनुस्मृतिसारख्या 'अमानवी' ग्रंथाने लादलेली तिच्यावरील बंधने नाकारण्याची गरज होती. तिला प्रतिष्ठा देण्याची गरज होती. 'स्त्रीचे समाजातील स्थान' हे त्या समाजाच्या संस्कृतीची श्रेष्ठता मापण्याचे एक गमक असते. समाजात स्त्रीला मानाचे स्थान, पुरुषाबरोबरचे हक्क असतील तर तो समाज प्रगत आहे असे आपण मानतो. पण याच्या उलट परिस्थिती असेल तर त्या समाजाची गणना आपण रानटी अथवा मागासलेल्या वर्गात करतो. स्त्रीचा दर्जा हा तिचे शिक्षण, आर्थिक स्वातंत्र्य, मतस्वातंत्र्य आणि सामाजिक जीवनात पुरुषाच्या बरोबरीचे स्थान इत्यादीवर अवलंबून असते.[१] मनुस्मृतिने स्त्रियांचे समानतेचे, स्वातंत्र्याचे आणि 'माणूस म्हणून' जगण्याचे सर्व हक्क हिरावून घेतले होते. भारतीय स्त्रियांच्या या स्थितीसंबंधी डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी 'हिंदू स्त्रियांची उन्नती आणि अवनती : जबाबदार कोण?' असा प्रदीर्घ लेख लिहिला. मनुस्मृतिने स्त्रियांवर कशी बंधने लादली, स्त्रीवर्गाबद्दल हीन विचार ठेवताना मनू म्हणतो-

२.२१३ : पुरुषांना मोहित करणे हा स्त्रियांचा मूळ स्वभाव आहे आणि म्हणून बुद्धिवान माणसे स्त्रियांच्या सहवासात राहू शकत नाहीत.

२.२१४ : कारण या जगात स्त्रिया केवळ मूर्खांनाच वाईट मार्गाला लावत नाही तर विद्वान माणसालाही वासनेचा आणि क्रोधाचा गुलाम बनवितात.

२.२१५ : पुरुषाने आई, बहिण किंवा मुलगी यांच्याबरोबर एकांतात बसू नये. कारण इंद्रिये ही शक्तिमान असतात आणि ती विद्वान माणसांनाही आपल्या प्रभुत्वाखाली आणतात.

९.१४ : स्त्रियांना सौंदर्याची पर्वा नसते किंवा त्यांचे वयाकडेही लक्ष नसते. तो पुरुष असला म्हणजे त्यांना पुरेसे आहे. त्या स्वतःला सुंदर माणसांच्या आणि कुरुप माणसांच्या हवाली करतात.

Multi Disciplinary Research Journal
New Vision

ISSN No.2394-9996

संत तुकारामांनी जाणलेले शब्दांचे सामर्थ्य

प्रा. बबनराव झांजे
नवगण महाविद्यालय,
परळी (वै.) जि. बीड.

डॉ. राजेंद्र धाये
संत रामदास महाविद्यालय,
घनसांगवी जि. जालना.

संत तुकाराम हे भारतीय संत परंपरेतील एक महान संत म्हणून तुकाराम महाराजांचा उल्लेख केला जातो. भारतीय प्रस्थापित व्यवस्थेला आपल्या शब्द सामर्थ्याच्या माध्यमातून प्रभावी विरोध करण्याचा प्रयत्न त्यांनी आपल्या अभंग नावाच्या साहित्यातून केलेला दिसतो.

तुकारामांची गाथा या ग्रंथातून अतिशय प्रभावीपणे तळपणारा अभंग म्हणजे-

आम्हा घरी धन शब्दाचीच रत्ने । शब्दाचीच शस्त्रे यत्न करू ॥१॥
शब्दचि आमुच्या जीवाचे जीवन । शब्दें वाटू धन जनलोकां ॥२॥
तुका म्हणजे पाहा शब्दचि हा देव । शब्देंचि गौरव पूजा करू ॥३॥
धर्माचे पाळण । करणे पाषांड खंडण ॥१॥
हेचि आम्हा करणे काम । बीज वाढवावे नाम ॥२॥
तीक्ष्ण उत्तरे। हाती घेऊनि बाण फिरे ॥३॥
नाही भीड भार । तुका म्हणे साना थोर ॥४॥१

उपरोक्त अभंगातून संत तुकाराम म्हणतात की, आमच्या घरी शब्दांचीच रत्ने हेच धन आहे. आम्ही शब्दाच्या शस्त्रांनीच (युध्द जिंकण्याचा) प्रयत्न करू शब्द हे आमच्या जीवाचे जीवन आहे. शब्दाच्या माध्यमातून आम्ही लोकांना संपत्तीचे वाटप करू. शब्द हाच देव आहे आणि त्या देवाची पूजा व गौरव करण्यासाठी आम्ही शब्दाचेच साधन वापरू.

संत तुकारामांचे शब्दाचे चिंतन :

तुकारामांनी शब्दांच्या बाबतीत केलेले चिंतन मानवी संस्कृतीच्या दृष्टीने फार मुलगामी आहे. कारण जे शब्दाचे स्वामी बनतात, ते इतिहासाचे स्वामी बनतात, ते संस्कृतीचे मालक बनतात, समाजाचे नेते बनतात, असा मानवी आणि विशेषतः भारतीय संस्कृतीचा इतिहास आहे. याउलट जे शब्दांच्या बाबतीत बेपर्वा राहतात ते जीवनातील असंख्य युध्दे जिंकून देखील प्रत्यक्ष व्यवहारात पराभूत होतात.२

ते इतिहास घडविणारे असले तरी, इतिहास लिहिणारांचे गुलाम होतात. सर्वस्व जिंकून देखील सर्वस्व गमावून बसतात. मानवी संस्कृतीमध्ये शब्दांचे हे महत्त्व नीट स्पष्ट होण्यासाठी माणसांचे इतर प्राण्यांपेक्षा जे

महाराष्ट्रातील आदिवासी जमातीचे सण-उत्सव

(पारधी, भिल, कोळी महादेव, कोळा मल्हार, ठाकूर)

संशोधक विद्यार्थी
कौतिक नामदेव दांडगे
डॉ. बा. आ. म. विद्यापीठ
औरंगाबाद, जि. औरंगाबाद
मो. ९४०४९८२३०५

मार्गदर्शक
डॉ. राजेंद्र यावे
सहयोगी प्राध्यापक व इतिहास विभागप्रमुख
संत रामदास महाविद्यालय घनसावंगी
जि. जालना

प्रस्तावना :-

क सण उत्सवा देव देवता वाघदेव, पांढरदेव, हिरन्या देव, नारायण देव, इत्यादी व सविस्तर माहिती पुढील प्रमाणे आहे. ची माहीती संक्षेपाने देण्याचा प्रयत्न यथ केला आहे.

आदिवासीच महाराष्ट्रातील आदिवासी जमातीची संख्या ४७ आहे. त्या सर्वांच्या सण उत्सवाची माहीती द्यावयाची म्हटले तर एक ग्रंथ लिहीण होईल. म्हणून महाराष्ट्रातील काही प्रमुख जमातीच्या (पारधी, भिल, कोळी महादेव, कोळा मल्हार, ठाकूर) याच्या निवड

पारधी जमातीचे सण उत्सव

पारधी जमातीत 'दसरा' सणाला विशेष महत्व आहे. गुढीपाडवा, अक्षय्य तृतीया, पोळा, नवरात्र, दिवाळी व शिमगा यासारखे हिंदूचे सणही ते पाळतात. सर्व हिंदू देवता - विशेषत: कालिका, खेतदेवी, खांडेरायाता, पिपळदेवी, रखादेवी, यासारख्या देवींना ते मानतात. त्यांचे नृत्य, हा जसा एक विधी आहे, तसा तो श्रमपरिहारासाचाही प्रकार आहे. लग्नप्रसंगी व इतर उत्सवप्रसंगी ते नृत्ये करतात. पारध्यांना हिंदू मंदिरांमध्ये प्रवेश आहे. त्यांना सामुदायिक विहिरीवर पाणी भरण्याची मोकळीक आहे. भटब्राम्हण त्यांची लग्ने लावतो व त्यांची उत्तरक्रियाकर्मही करतो.[2]

परंपरेने ते कोणत्याही जातीची सेवा करत नाही त्यांची एक परंपरागत पंचायत आहे व तिच्यावर जमातीतील प्रतिष्ठीत व्यक्ती निवडल्या जातात.[3]

भिल्ल जमातीचे सण उत्सव

भिल्लाचे सण हे होळी, गांडी दिवाळी, भगोरिया, पोळा, नवरात्र, हाय.

होळी

होळीच्या उत्सवात भिल्ल तनतनधनाने तल्लीन होऊन जातात. आगदी रंगुन जातात.[4] होळीच्या दोन आठवडे आगोदर येणाऱ्या आठवड्याच्या बाजाराला गुलाल्या बाजारात तरूण - मुले मुली एक दुसऱ्याला गुलाल लावतात. त्यात काही गैर नसते. त्याचा तो उत्सव असतो. हा आदिवासी संस्कृतीचा एक भाग आहे.[5] भिल्ल स्त्री - पुरुषांच्या मनात होळी संचारते. एक महीना अगोदर पहाडात जातात आणि होळी तोडून गावात बाणून ठेवतात.

गांडी दिवाळी

भिल्लात दुसरा उत्सव म्हणजे 'गांडी दिवाळी' आदिवासींची दिवाळी म्हणजे दारात पणती लावुण रात्री फटाके उडवुन रोषणाई करायची दिवाळी नाही. तर गांडी दिवाळी म्हणजे राजापनळा गांडा ठाकूर आणि राणी कानळ या देवी देवतांच्या नावाने ही दिवाळी असते. भगोरिया

Research Process ISSN-2321-211X
IIC-DESW 2017 Special Issue: Volume No. II, pp. 186-190
© Social Research Foundation

Mahatma Jotirao Phule and Indian Farmer

Rajendra Dhaye
Associate Professor,
Sant Ramdas College ,
Ghansavangi, Dist. Jalna.

Phules thoughts on the problems of farmer are so valuable. He proposed the sorrow of farmer through his work. Shetkaryancha aasud, (whip of farmer/scourge of farmer) Religious activities like pooja of Satyanarayna does help to make beggar to farmer, Phule says in his above book.

A review will made the thoughts explained here in this book by phule. In his time farmer were exploited by the private money holder, accouterments. British imperialists made necked to the Indian farmer. Indian farmer was trapped by the huge economic problems. Exploitation was going on the bass of religious norms. In this situation Phule was the first person who was thinking to stop farmers exploitation and how farmer can be stand on his own feet. How farmer can become strong on the ground of economic point of view. Phule says that farmer should get back his dignity, farmer should do the farming at his best. Phule gives coverage to the farmer and his problems, sorrows. He put his thoughts on the sorrow of farmer, their previous condition present condition, their exploitation, their unawareness etc.

Phule says that farmer was not only exploited by the government policies or drought but also by all angels those are on the basis of religion ,caste ,culture etc. he says that this exploitation can only take place due to the lack of knowledge. It we want to rescue the farmer from this slavery there is a need of total change. Religious, cultural, political, caste, education, farming all these problems are mixed into one another. There is a need of fundamental change in all sectors to rescue the farmer from the slavery. We all should accept this thought of enlightens of farmers' life from phule.
***[Key Words:** Mahatma Phule, Farmer, Indian Farmers, Agriculture]*

India is known as and of farmers. Farming is the main profession of majority Indians. Most of the population used to farming and supporting to the farming profession as their backbone of nurture. While doing the study of present situation we can see how tradesman becomes rich by using the production from agricultural sector. Our farmer who Hahn, one-sided does his work into the land has been trapped by so many economic problems. He is unable to nurture his family that's why he is committed for suicide. This is the fact of Indian farmers in present situation. Horticulturist nature, ignorance by the government, Un attachment towards the farming.These are the causes of economic problems of Indian farmers.

ISBN : 978-93-81948-90-3

Climate Change : Impact and Water Disputes

29

Dr. Raut Radheshyam Kisanrao,
Associate Professor in Economics,
Sant Ramdas College,
Ghansawangi, Dist Jalna

Ashok S. Jadhav
Assistant Professor in Economics,
Madhoji College,Phaltan,
Ta.Phaltan,Dist. SAtara.

Prof Kawale Shrimant T.
LS S.R. College Dharmapuri

Introduction:

Copenhagen, Kyoto and recent Paris conventions discussed on the climate change. Climate change is a "significant and persistent change in the mean state of the climate or its variability," caused by changes in the environment, including "anthropogenic modification of the atmos-phere." Climate change, according to the Stern Review, "threatens the basic elements of life for people around the world- access to water, food production, health, and use of land and the envi-ronment" (Grossman 2010: 224). The greenhouse effect is a natural atmospheric process caused by the presence of certain gases in the atmosphere that prevent the infrared radiation emitted from escaping from the earth's sur-face to space. The gases that absorb outgoing infrared radiation are called greenhouse gases (GHGs). The serious nature of climate change and its consequences were widely recognised in 1988, and the Intergovernmental Panel on Climate Change (IPCC) was set up in the same year (Dutt 2007: 4239). Greenhouses gases (GHGs) are a major cause of climate change. Eleven years (1995--2006) are recorded as the warmest in the past 100 years, global average temperatures in-creased approximately 1°C (Wallis 2008: 71).

Impacts of Climate Change on Water Resources:

IPCC WG 2 reviewed the impact of climate change. Only those are where impacts could be determined with a "very high" level of confidence is listed fresh water resources. According to Stern Report, climate change will threaten the water resources and there will be sudden shift in regional weather patterns such as the monsoon rains in south Asia (Dutt 2007: 4240-41). Climate change is expected to lead to reductions in water supply in most regions in the United States. Scientists predict significant loss of snowpack in the western mountains, a criti-cally important source of natural water storage for California and other western states. As sea levels rise, salt water will intrude on surface freshwater supplies and aquifers on the Pacific, Atlantic, and Gulf coasts. Even the Great Lakes

3

Effects of Globalisationon on India: An Economic Analysis.

P. S. Subhash

By Research Student, BAMU, Aurangabad

Dr. Raut Radheshyam Kisanrao

Research Guide, Head and Associate Prof., Department of Eco., Sant Ramdas College, Ghansawangi

Introduction

Globalization describes a process by which regional economies, societies, and cultures have become integrated through a global network of communication, transportation, and trade. The term is sometimes used to refer specifically to economic globalization: the integration of national economies into the international economy through trade, foreign direct investment, capital flows, migration and the spread of technology. Globalization generally means integrating economy of our nation with the world economy. The economic changes initiated have had a dramatic effect on the overall growth of the economy. It also heralded the integration of the Indian economy into the global economy. The Indian economy was in major crisis when foreign currency reserves went down to $1 million. Globalization had its impact on various sectors including Agricultural, Industrial, Financial, Health sector and many others. It was only after the LPG i.e. Liberalization, Privatization and Globalization that India saw its development in various sectors.

Objectives of the Study

1) To study the concept of Globalization in Indian Economy.
2) To identify the Economic Impact of Globalization in the selected sectors in India.

Methodology of the Study

The secondary data is collected from various reference books related to Globalization and its impact on Indian Economy system for said research study secondary data is also collected from national and international Research Journals which are related to this topic. Overall the study is based on secondary data.

The Concept of Globalisation

Globalisationis the outcome of the policies of liberalisation and privatisation. Although globalisation is generally understood to mean integration of the economy of the country with the world economy, it is a complex phenomenon. It is an outcome of the set of various policies that are aimed at transforming the world towards greater interdependence and integration. It involves creation of networks and activities transcending economic, social and geographical boundaries. Globalisation attempts to establish links in such a way that happenings in India can be influenced by events happening miles away. It is turning the world into one w

 ISBN : 978-93-83587-68-1

9 Indian Women: Past, Present and Future - An Economic Analysis

P. S. Subhash

Research Student, Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad.

Dr. Raut Radheshyam Kisanrao

Research Guide, Head and Associate Professor, Department of Economics, Sant Ramdas College Ghansawangi, Dist Jalna.

Introduction

In India, as no doubt in most countries, the problems related to women, both social and economic, are peculiar to the country. The major problem is how to first frame a picture of the average Indian woman. The assessment of their problem comes later. Distortions are many. The images are colourful, varied and perhaps a little confused. The colours are bold, so bold that they are built around certain stereotypes. Indian women: exotic princesses, [illegible] chaste, militant undergraduates, [illegible] educated politicians; emancipated professionals, [illegible] activist students. To these, a thousand more can be added and even then the picture is not complete. There are women in certain rural parts of India who are far more independent and sexually liberated than their urban counterparts. There seem to be pockets where Hindu cultural culture and recently developed Hindu orthodox sections have not reached the women. History books are full of incidents about women going to fight wars and administering state affairs. What happened in between that liberal era and the present time to create the Indian woman of today? Are Indian women economically interdependent? This paper focuses on women and on economic development, rather than on the wider issue of gender and development. However, before looking at the evidence base, constraints and interventions, it will provide a brief context of the evolution of thinking around women and development.

Objectives

The objective of the paper is:

1) To understand the problems of women: social and economic.
2) To check the evolution of women force in India.
3) To tackle the problem of economic empowerment among women.

Methodology

The study is mainly based on available secondary data. Different sources were analysed like government journals, data collected by different government agencies, articles, magazines, News papers and related Department data. A careful study and analysis was done based on the above data and materials.

ISBN No. 978-1-945563-49-2

लोकशाहीतील विरोधी पक्षाची भूमिका

58

डॉ.प्रल्हाद नि.होंडे
मराठी विभाग प्रमुख
संत रामदास महाविद्यालय,
घनसावंगी जि.जालना

डॉ.किशोर एम.सूर्यवंशी
आय.सी.एस.एस.आर.
राजशास्त्र विभाग
डी.बी.ओ.ए.वि.औरंगाबाद

प्रा.डॉ.टी.बी.एरी
राजशास्त्र विभाग प्रमुख
श्री रिद्धेश्वर महाविद्यालय माजलगाव
ता.माजलगाव जि.बीड

प्रास्ताविना :-

लोकशाही शासनपद्धतीत राजकीय पक्षाला अतिशय महत्व प्राप्त झालेले आसते. राजकिय पक्ष आणि लोकशाही एकच नाण्याच्या दोन बाजू असून राजकीय पक्षाशिवाय लोकशाहीची कल्पना करणे निरर्थक आहे. लोकशाहीला गतीमान करण्याचे कार्य पक्षा करत असतात. मानवेंद्रनाथ रॉय व जयप्रकाश विरहीत लोकशाहीची कल्पना मांडली परंतु यातून लोकशाही राज्याचे स्वप्न साकार होण्याची कोणतीही समद्रावर लाटा जितक्या नैसर्गीक तितकेच राजकीय पक्ष लोशाहीत आवश्यक असल्याने जगातील प्रत्येक देशात राजकीय पक्षपद्धती असल्याचे दिसून येते.

साम्यवादी व सर्ववंश व्यवस्थेत एकाच राजकीय पक्षाचे आस्तित्व असते. त्याला पर्याय व प्रतिस्पर्धी नसतो. राज्यकर्त्यांच्या मर्जीनुसार पक्ष कार्य करतो. त्यामुळे लाकांच्या इच्छा,आकांक्षा,विचार,विकास यांचे प्रतिनिधीत्व नसल्याने एका पक्षाची हुकूमशाही प्रस्थपीत होते. परंतु लोकशाहीत एकापेक्षा अधिक पक्ष मान्य असतात. सत्ताधरी व विरोधी पक्ष अस्तित्वात आसतात. लोकशाहीला गतीमान व परीपक्व करण्यासाठी विरोधी पक्ष आणि विरोधीपक्ष संसदीय लोकशाही रथाची दोन चाके आहेत. सत्ताधारी पक्षावर संसदीप आयुधाच्या माध्यमातून विरोधी पक्ष नियंत्रण ठेउन भूमिका पार पाडत आतो. डॉ. आंबेडकर यांनी लोकशाहीच्या यशासाठी राजकीय पक्षाची पूर्व अट सांगितली आहे.

राजकीय पक्ष निवडणूकीच्या वेळी आपल्या पक्षाचे विचार, ध्येयधोरणे, कार्यक्रम लोकांसमोर मांडतात. ज्या पक्षाला बहुमत प्राप्त होते तो पक्ष सत्ता स्थापन करतो व आल्प मतातील पक्ष विरोधी पक्षाची भूमिका पार पाडतो.

विरोधी पक्षाची भूमिका:-

बहुमत प्राप्त पक्षास विरोध करणारे व त्यांचयाशी स्पर्धा करणारे अत्या॰ामता मुळे सत्तास्थानी न येणारे पक्षास विरोधी पक्ष म्हणतात.लोकशाही शासन पद्धतीत सत्ताधारी पक्षावर टिका करणे,सत्ताधार्यांच्या त्रुटी सांगणे, विचारातील विसंगती दाखविणे,सत्ताधार्यांच्या ध्येय-धोरणावर टिका करणे, धोरणात बदल करण्यास भाव पाडणे, पर्यायी सरकार म्हणून कार्यरत राहाणे, विरोधी पक्ष संसदेत व संसदेबाहेर सत्ताधार्यांच्या विरोधात कार्यकरत असतो.

विरोधी पक्ष सत्ताधारी पक्षावर केवळ टिकाच करत राहून सत्ताधाऱ्यांना जबाबदारीची जाणीव करून देण्याची भुमिका पार पाडत असतो. जनतेचे प्रश्न सरकारसमोर मांडण्यामध्येही महत्वाचे कार्य विरोधी पक्ष करत असतो. लोकशाहीत विरोधी पक्ष संसदीय आयूगाच्या माध्यमातून प्रश्नोत्तराचा तास, स्थगित प्रस्ताव, अर्धातास चर्चा, अविश्वासाचा ठराव, बहिष्कार या माध्यमातून कार्य करत असतो. जनतेचे प्रश्न, समस्या, तक्रारी सरकार, प्रसार माध्यमांसमोर मांडणे,

21

A Geographical Study of Crop Combination

of Aurangabad District, Maharashtra.

Dr. S.V. Tathe
Research Guide,
Sant Ramdas Arts, Comm & Science College
Ghansawangi, Tq. Ghansawangi Dist. Jalna

Rajesh Indal Gusinge
Research Student, Dr. B.A.M.U. Aurangabad

Abstract:-

India is agricultural country more than 70% people are involved in this primary sector. Geographical as well as socio-economical factor make effect upon agricultural sector hence we see lots of variation in agricultural filed, mostly geographical sectors make lots of impact upon agricultural in this sector cropping pattern is studied or computed by weaver such method is know as crop combination. The crop combination method identify how much crop shares particular areas as filed.

Study Area:-

Aurangabad is one of the district of Maharashtra states. District covers an area of 10100 sq.km. Out of which 141.1sq.km. is urban area and 9.958 sq.km. is rural area. Aurangabad district is approximately situated at the central part of the Maharashtra republic of India and northern direction of marathwada region. Especially district lies between 19°53'47" North latitude and 75°23'54" East longitude. District has a great historical as well as cultural heritage. According to 2011 census total population of district is 3701282 and population density is 365sq.km. Aurangabad district is divided in nine Tahsil for administration these are- Aurangabad, Kannad, Paithan, Phulambri, Khultabad, Gangapur, Vaijapur, Sillod, Soygaon.

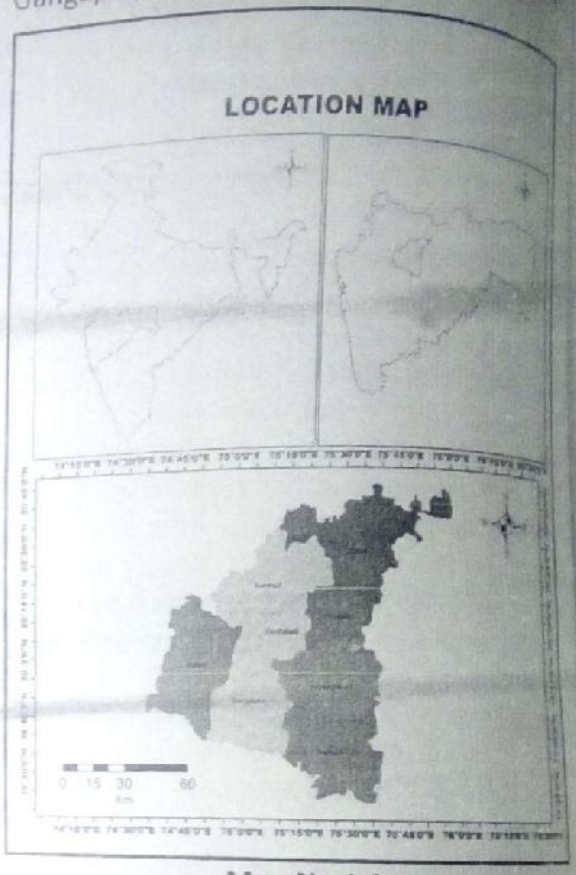

Map No.1.1

Objective:-

1. To study the socio-economical situation of the study region.
2. To calculate the crop combination of study region.
3. To analyze various aspects of cropping pattern in the study region.

Database and Methodology:-

For Present study secondary data has been used in the study region nine tahsil are hence and information about Net soon area under various crop has been collected from socio-economical abstract of Aurangabad District. The Net soon area of various crop of 2001-02 has been studied in present study. Calculated result of crop combination method has shown by coropleth map as well as GIS

Track Athletics
Dr. B.H. Maske

First Edition : March 2017

© **Dr. B.H. Maske**

Publisher :
Harshal Prakashan
Police Mitra Colony
Garkheda Parisar
Aurangabad – 431 001

Cover Page Designing
Dr. Sandeep Jagannath Jagtap
9923797349

Typesetting / Printed by
Nitin Tapse
dot Printers
Cannot Place, N-5
Aurangabad (Maharashtra).

Price : Rs. 325 /-

ISBN : 978-81-924306-6-9

Dr. Rafiq Zakaria College for Women

Ethanobotanical Study Of Ocimum Sanctum

Jige Sandipan Babasaheb (Head Department Of Botany)
Pawar Subash Bhama (Department Of Botany)
Sant Ramdas College Ghansawangi Dist- Jalna

ABSTRACT *Ethano words refer to people, culture, aesthetic, language, knowledge and practice. Botany refers for study of plants. These two words collectively known as ethanobotany. Herbal medicine being used by about 80% people of world population. In India 4, 86548 registered practitioners, 7843 incensed manufactures, 9380 pharmacies, 23028 dispensaries and 482 colleges supports the traditional system of medicine. In ancient India ayurveda, siddha, and unani physicians were also pharmacist. They prepared drugs from collecting plants forest and local area. Ayurveda systematically documented 700 species sidha 500 and unani 400 plant species.*

Ocimum sanctum plant commonly known as tulsi. It is most sacred plant in India. These plant used as medicine from ancient period Charak samhita, Rigveda record gives its medicinal values. Tulsi plant recommended for hundred of serious disorders. These plant considered highly sacred, worth, worshiping and hence it given name sacred tulsi or holy basil in India. It consist essential oil, phenolic constituent like eugeno, thymol. It used in fever, cold respiratory disorder, mouth infection, insect bite, tooth problem, headache, eye disorder and many other diseases.

Key words- ethano, ayurveda, siddha,unani, rigveda, charak samitha etc.

INTRODUCTION-

The term ethanobotany first coined by Harshberger in 1895. It defined as total natural or traditional relationship and interaction between man and his surrounding plant wealth. The history of development of ethanobotany is as old as human civilization but the scientific evaluation of the subject is very recent. Ethano refer to people, culture, aesthetic, language, knowledge and practice Botany refer to study of plants.

Herbal medicines being used by 805 people of world's population. The chemical constituent's presents in part of physiological function of living flora believed to better compatibility with human body. In Africa upto 805 population used traditional medicine, China 40%, Australia 70%, Canada 42% and USA 38%. In India over 4, 86548 registered practitioners, 7843 incensed manufactures, 9380 pharmacies, 23028 dispensaries and 482 colleges supports the traditional system of medicine. In ancient India ayurveda siddha, and unani physicians were also pharmacist. They prepared drugs from collecting plants forest and local area. Ayurveda systematically documented 700 species sidha 500 and unani 400 plant species.

Botanical data shows 45000 vascular plants in India about 90% plants used in medicine. We see tremendous development in the field of allopathy during 20th century still traditional plant medicine is one major source during modern as well as traditional system of medicine throughout the world. India has over 3000 year old medicinal heritage based on herbs. India is sitting on gold mine of recorded and traditionally well practiced. Knowledge of herbal medicine ayurveda literally means the science of life. In presumed that fundamental and applied principles of ayurveda got organized and enunciated around 1500B.C. Indian medicine the number of botanical named enlisted from each medicinal system is like as Ayurveda(2559), Siddha (2267),Unani(1049), Homeopathy(460),Folk(6403) and Sowa-Riga (671).

After India gained independence from the British rule in 1947 the movement for reveal of traditional system of medicine gained momentum and it got official recognition and become a part of nation health care network system. Tulsi is most sacred plant in India Hindus grows tulsi and have at least one living tulsi plant. Tulsi has long history of medicinal useoldest ancient ayurvedic text Charak samhita (6000 BC) and Rigveda (5000BC). Tulsi is Indian's greatest healing herb. It used hundreds of serious disorders and recommended as daily prophylactic to prevent diseases. It is also holy plant belong to labiateae family. Due to its many fold curative uses the plant is considered as highly sacred, worth, worshipping and hence it was known as sacred tulsi or hoily basil in India. Tulsi leaves contains eugenol, eugenal, methyl chavicol,

Journal of Medicinal Chemistry and Drug Discovery
ISSN: 2347-9027
International peer reviewed Journal
Special Issue
Analytical Chemistry Teacher and Researchers Association
National Convention/Seminar
Issue 03, Vol. 02, pp. 502-504, 8 January 2017
Available online at www.jmcdd.org

Study of Parameters of Binary Mixtures Using LCR Meter Technique

P.D.Gaikwad[a] ,P.T.Sonwane[b]
Sunderrao Solanke Mahavidhyala Majalgaon Dist. Beed
Sant Ramdas Arts, Science & Commerce College Ghansangvi Jalna
Email:pdgaikwad11@gmail.com.

Abstract

Study of Physicochemical Properties like Viscosity, Density and Refrative Index for Binary Mixture of Ethanol and aniline over entires Concentration range are measured at 303 K the experimental data further use to determine the excess properties Viz. Excess molar volume, Excess viscosity and excess molar refraction .The values of excess Properties further Fitted with Redlich-Kister equation to calculate the binary Coefficients. The resulting Excess Paramenters are used to indicate the presence of intermolecular interactions and strength of intermolecular interactions between the molecules in the binary mixtures.

Keywords: Dielectric Constant, Density, Visosity, Refractive Index, LCR meter.

Introduction:

THE study of binary liquid mixtures provides sensitive tool for detecting molecular interactions. In order to study the effect of increase of molecular size on solute-solvent interaction the series of alcohols and alkoxyalkanols are selected because no attempts have been made to study this binary system. Alcohols play an important role in many chemical reactions [1-3] due to their ability to undergo self-association with manifold internal structure and are in wide use in industry and science as reagent, solvent and fuels. Monoalkyl ethers of [4] ethylene glycol may exist in dynamic equilibrium existing in Gauche as well as open chain form. In this case monoalkyl ethers of dimethylene glycol intramolecular hydrogen bonding decreases with the increase in the size of the alkyl group. These molecules are also found to exist in both intramolecular hydrogen bonded form in

ISBN : 978-93-81948-90-3

घनसांवगी तालुक्यातील जलसंधारण प्रकल्प व जलयुक्त शिवार योजनेचा- एक भौगोलीक अभ्यास

८२

- प्रा. डॉ. भाऊसाहेब सोनाजी देबकर (संत रामधस महाविद्यालय, घनसावंगी)
- प्रा. रमेश भिमराव होसुरकर (संत रामधस महाविद्यालय, घनसावंगी)
- प्रा. संयज बाबुराव मिठे (संत रामधस महाविद्यालय, घनसावंगी)

प्रस्तावना :

घनसावंगी तालुक्यातील जलसिंचनाखाली शेजी क्षेत्र पाहता या जलसिंचन क्षेत्रावर आधारित शेतीचे प्रमाण कमी हात असून सध्या परिस्थितीत जलयुक्त शिवाराच्या माध्यमातून महाराष्ट्रातील दुष्काळी तालुक्यात जलसंवर्धनाची व्यापक चळवळ उभी राहीली आहे. घनसावंगी तालुक्यामध्ये जायकवाडी प्रकल्पातून वाहणाऱ्या डाव्या कालव्याच्या परिसरात पूर्वीच्या काळी बागायती कृषी क्षेत्र फार मोठ्या प्रमाणात उत्पादन घेत असल्याने अहवालावरून स्पष्ट होती परंतु २०१२-१३ च्या दुष्काळाणसून गोदावरी नदीवरील जोगलादेवी उच्च पातळी बंधारा, मंगरुळचा उच्च पातळी बंधारा, राजा टाकळी उच्च पातळी बंधारा या जलसिंचन प्रकल्पावर फार मोठ्या प्रमाणात बागायती क्षेत्र उत्पादीत होईल असे वाटत होते परंतु, वर्षानुवर्षे कमी होणाऱ्या पर्जन्य प्रमाणामुळे घनसावंगी तालुका दुष्काळग्रस्त झाल्याचे जाणवत आहे.

घनसावंगी तालुक्यातील शेती क्षेत्राचे अवलोकन केले असता असे जाणवते की, वर्षानुवर्षे पावसाचे प्रमाण कमी होत आहे. म्हणून पावसाच्या पाण्यावर घेतले जाणारे पिक आता खरीप हंगामातुरतेच मर्यादीत राहील काय ? असा प्रश्न निर्माण होत आहे. रब्बी हंगामाचा पिकाच्या दृष्टीने विचार केला असता असे दिसते की, घनसावंगी तालुक्यात ज्या गावांना लघुसिंचन प्रकल्प, मध्यम सिंचन प्रकल्प तसेच गोदावरी नदीवरील असणारे बंरेजेस व जायकवाडी प्रकल्पातून वाहणारा डावा कालवा यावर अवलंबून असणारी गावे रब्बी हंगामासाठी पिक घ्योण्यास पात्र ठरतात परंतु, पावसाचे प्रमाण जसजसे कमी होत गेले तसतसे जलसाठे व जलसिंचन प्रकल्प २०१२-१३ पासुन शुष्क बनत आहे. घनसावंगी तालुक्याचे अवलोकन केले असता जाणवतेकी अशीच परिस्थिती पावसाच्या परंपरेत राहिली तर घनसावंगी तालुक्यात असणारी जलसाठे व जलसिंचन प्रकल्प बाळवंटातील शोभेची वास्तू ठरतील. अशी मनात भिती निर्माण होत आहे.

संशोधनाचे अभ्यास क्षेत्र:

सदर संशोधन प्रकल्पासाठी घनसांवगी तालुक्यातील लघुसिंचन प्रकल्प, गोदावरी नदीवरील बधारे (बंरेजेस) व जायकवाडी प्रकल्पातून वाहणाऱ्या डाव्या कालव्या खालील सिंचन क्षेत्रात येणाऱ्या गावांचा अभ्यास करुन त्यावर आधारीत नमुना निवड पध्दतीने घनसावंगी तालुक्याचे जलसिंचन कृषी क्षेत्र अभ्यासले आहे.

अभ्यासाची ध्येव व उद्दीष्टे:

१. पावसाचे जास्तीत जास्त पाणी गावातील शिवारातच अडविणे व भूगर्भातील पाण्या च्या पातळीत वाढ करणे.
२. पाणलोट क्षेत्र विकासाच्या सर्वसामान्य उद्दिष्टासोबत पाणलोट विकाराच्या माध्यमातून होणाऱ्या कृषी आधारित स्वयंरोजगाराच्या संधीद्वारे समाज घटकाची आर्थिक उन्नती करणे.

ISBN : 978-93-81948-90-3

३. दीर्घकालीन शाश्वत देखभाल-दुरुस्ती कायमस्वरुपी सहभागी पध्दतीने करुन सर्व क्षेत्र सिंचनाखाली आणण्याचा प्रयत्न करणे.
४. जलसिंचन विभागामार्फत सलग समतलचर, खोल समतलचर, लहान माती नाला बांध, शेततळे, दगडाचे बांध, गॅबीयन बंधारे, सिमेंट नाला बांध, नदीतील गाळ उपसणे यासारखे प्रकल्प प्रत्येक गावांमध्ये राबविणे,

संशोधन पध्दती :

प्राथमिक स्रोतामध्ये प्रश्नावली तसेच गाव सर्वे केला आहे व दुय्यम स्रोतावरुन माहिती मिळविलेली आहे. यामध्ये तालुका कृषी कार्यालय, तालुका लघुसिंचन पाटबंधारे कार्यालय, तहसील कार्यालय, पंचायत समिती कार्यालय, तलाठी सज्जा, ग्रामपंचायत येथील अप्रकाशीत साहित्य तसेच वर्तमानपत्रे व इंटरनेटवरील माहिती पाहिजे त्या प्रमाणात घेतली आहे.

संशोधनाची व्याप्ती:

प्रस्तुत संशोधन हे केवळ घनसांवगी तालुक्यातील काही थोड्या गावाचे नसून या मागील उद्देश असा आहे. की, प्रत्येक गावामध्ये उत्तम प्रकारे जलसिंचानावरील शेतीचा विकास करणे व यासाठी मूलभूत गरजांची माहिती शेतकऱ्यापर्यंत पोहोचविणे तसेच संसाधनाचा शासकिय यंत्रणांकडून योग्य वेळी पुरवठा करणे तसेच प्रत्ये शेतकरी स्वावलंबी व कर्जमुक्त होणे सद्यस्थितीत २०१४-१५ व २०१५-१६ या कालवधीतील माहितीच्या आधारे घनसांवगी तालुकयातील माथा ते पायथा उंच डोंगरापासून मैदानापर्यंत व नदीच्या उगमापासून ते संगमापर्यंत पाणी आडवून शेती करणे.

संशोधनाचा हेतू :

१. C.C.T. (सलग सम पातळी चर) करणे अत्यावश्यक आहे.
२. पिकाची नियमावली करुन मराठवाड्यात ऊसाचे पिक घेऊ नये.
३. शेततळ्याची संकल्पना बदलावी म्हणजे शेतातील सर्व पाणी ज्या खोलगट भागांत येऊन नैसर्गिक रित्या साठवणूक होते, तेथेच शेत तळे असावेत. ते मध्यवर्ती भागात घेऊन त्यामध्ये बिहीरीचे पाणी भरण्यात येऊ नये.
४. शेंद्रीय शेतीसाठी शेणखत व काडी कचरा व्यवस्थापन करुन सुपीकता वाढविण्यासाठी प्रयत्न करावा व महाराष्ट्र शासनाने हवामान बदलाचा विभाग निहाय सखोल अभ्यास करुन शेतकऱ्यांना मार्गदर्शन करावे.
५. पारंपरिक उत्पादन पध्दतीची आधुनिक शास्त्रीय ज्ञानाशी सांगड घालून तंत्रज्ञानाचा विकास व प्रसार आणि प्रचार करणे,
६. कुशल आणि अकुशल विशेषत: बेरोजगार तरुणांकरिता रोजगारांच्या संधी उपलब्ध करुन देणे.

संशोधकाची गृहितके:

१. जलयुक्त शिवार अभियानाच्या माध्यमातून महाराष्ट्राच्या दुष्काळी तालुक्यात जलसंवर्धन व्यापक चळवळ उभी राहीली. कृषी विभाग, जिल्हा परिषदेचा लघु सिंचन विभाग तसेच भूजल सर्वेक्षण विभाग तसेच भूजल सर्वेक्षण यंत्रणा यांच्या संयुक्त प्रयत्नांमधून झालेल्या जल व मृदू संवर्धनाच्या कामातून भूजलपातळी वाढविण्यासोबत पिकासाठी संरक्षित सिंचनाचा सक्षम पर्यायही उपलब्ध झाला आहे.
२. चालू वर्षी या शासकीय यंत्रणेमध्ये समन्वय चन होता, पण त्याबरोबर अशासकीय सेवाभावी संस्था या कार्यात यशाशक्ती मदत करीत आहेत. मुख्य यशाचे गमक म्हणजे त्यासाठी लाभधारकांचा/ शेतकऱ्यांचा वर्गणी गोळा करुन अल्पसा का होईना, पण सहभाग अतिमोलाचा होता.
३. शेतकऱ्यांच्या सहभागामुळे कामाच्या गुणवत्तेवर चांगला परिणाम झाला. ज्या-ज्या गावात जलयुक्त शिवार अभियानामुळे आर्थिक प्रगतीचा मार्ग मोकळा झाला, त्या-त्या गावांमध्ये संपन्नता नांदण्यास मदत झाली.

घनसावंगी तालुक्यातील जलसंधारण प्रकल्प व जलयुक्त शिवार योजना विषय मांडणी :

गोदावरी प्रकल्पाअंतर्गत जिल्ह्यातील पैठण तालुक्यातील जायकवाडी प्रकल्पापासून विष्णुपुरी प्रकल्पाअंतर्गत गोदावरी नदीवर ११ बंधारे विष्णुपुरी प्रकल्पाचाच एक भाग आहे. ११ पैकी ४ बंधारे जालना जिल्ह्यात आहेत. त्याचा तपशील पुढील प्रमाणे आहे.

१. जोगलादेवी उच्च पातळी बंधरा, ता. घनसावंगी : या योजनेच्या डाव्या बाजूच्या अल्पधारा व दशक भितीचे काम गतीने सुरु आहे. प्रकल्पात १० द.ल.घ.मि. पाणी साठविण्याचे प्रस्तावीत असून गेवराई (जि.बीड) तालुक्यातील ७ व घनसावंगी

33

भारतातील औद्योगिक व कृषी क्षेत्रातील जलसाधन संपत्तीचे महत्व- एक भौगोलिक अभ्यास

प्रा. डॉ. देवकर भाऊसाहेब सोनाजी
रामदास महाविद्यालय,घनसावंगी, जिल्हा जालना (भूगोल विभाग)

प्रस्तावना :

जलसंधारण, जलसंवर्धन, जलप्रदुषण आणि आजची भारतातील वाढती लोकसंख्या यांच्या सहित भारतातील औद्योगिक व कृषी क्षेत्रातील वाढत्या पाणी वापराबाबतचा विचार केला असता भारत हा जगातील दुसऱ्या क्रमांकाचा पर्जन्य पडणारा देश असून जगात दरवर्षी १२५०० ते १४००० घन किलोमिटर पाणी मानवी वापरासाठी उपलब्ध होते. या पाण्यापैकी १८६९ घन किलोमिटर म्हणजेच वापरण्या योग्य एकूण पाण्याच्या पैकी १.५ टक्के पाणी भारतात उपलब्ध होते. याबरोबरच महाराष्ट्रात दरवर्षी १६३.८२ घन किलोमिटर भूपृष्ठ जल तर २०.५ घन किलोमिटर भूजल उपलब्ध होते. भारतातील एकूण जलसंपदा ४०० दशलक्ष हेक्टर मिटर असून त्यांचे विभाजन पुढील प्रमाणे आहे.

जसे की, ७० दशलक्ष हेक्टर मिटर पाणी बाष्पीभवन प्रक्रियेत नष्ट होते. तर २५० दशलक्ष हेक्टर मीटर पाणी भूगर्भात अथवा जमीनीत मुरते. यालाच भूमीगत जल असे म्हणतात. व ११५ दशलक्ष हेक्टर मीटर पाणी नद्या, नाले, ओढे, प्रवाह यांच्या मार्फत समुद्रास जाऊन मिळते. यालाच भूपृष्ठीय साधन संपत्ती असे म्हणतात. भारता सारख्या विविधतेने नटलेल्या देशात ७० टक्के लोकसंख्या ही शेती व्यवसायावर उदर निर्वाह करते अथवा कार्यरत आहे. शेती व्यवसाय हाच उदर निर्वाहाचे साधन म्हणून भारतीय अर्थव्यवस्थेचा महत्वाचा भाग आहे. परंतु ही शेती पुर्णतः निसर्गावर म्हणजेच मान्सून हवामान व पर्जन्य आणि जलसिंचन तसेच राजकीय व प्रादेशिक नियोजन यांच्यातून मिळणाऱ्या भागभांडवला वरती अवलंबून आहे.

आपल्या देशात सरासरी १९००० कोटी घन मीटर पाणी वापरण्यासाठी उपलब्ध होते. यापैकी जवळपास ८६% पाणी नदी, सरोवरे इत्यादी रूपाने प्राप्त केले जाते. व बाकिचे भुमिगत जलाच्या रूपाने प्राप्त केले जाते. भारातात लोकसंख्या वाढी बरोबर तसेच उद्योगधंद्यांच्या वाढीबरोबर पाण्याचा वापरही मोठ्या प्रमाणात वाढला आहे. व या वाढत्या लोकसंख्येला स्वच्छ व शुध्द पिण्याच्या पाण्याचा पुरवठा करणे फार कठीण झाले आहे.

• संशोधनाचे अभ्यासक्षेत्र :-

प्रस्तुत शोध निबंधामध्ये भारतातील औद्योगीक क्षेत्रावर व कृषी क्षेत्रावर जलसाधनसंपत्तीचा पडणारा प्रभाव किती प्रमाणात आहे याविषयावर प्रकाश टाकलेला असून भारत देश हा नैसर्गीक दृष्ट्या विविध हवामान विभागात विभागलेला असून, भारताचे क्षेत्रफळ विस्तीर्ण आहे. तसेच काही भागात अतिपर्जन्य तर काही भागात अवर्षण अशा सर्व प्रदेशात औद्योगीक विकासात व कृषि क्षेत्रात असणाऱ्या जल साधन संपत्तीचे महत्व इत्यादींचा यात सामावेश आहे.

भारताचे क्षेत्रफळ ३२,८७,२६३ चौरस मीटर व अक्षांशीय विस्तार ८०४' उत्तर ते ३७०६' उत्तर व रेखांश विस्तार ६८०७' पुर्व ते ९७०२५' पुर्व पर्यंत आहे. अशाप्रकारे अक्षांशीय व रेखांशीय विस्तार ३००० आहे. भारताचा उत्तर दक्षीण विस्तार ३२१४ कि.मी. व पुर्व पश्चिम विस्तार २९३३कि.मी. आहे. सदर शोध प्रबंधामध्ये भारतातील कृषि क्षेत्रास,औद्योगीक वसाहतींना व उद्योगदंध्यांना लागणाऱ्या पाण्याची उपलब्धता, वितरण, विनीयोग व पुर्नवापर इ. विषयी संशोधन अभ्यासक्षेत्र सामाविष्ट आहे.

• संशोधनाचे ध्येय व उद्दीष्ट्ये

१. भारतातील जलसंसाधनाची उपलब्धता जाणून घेणे.

२. भारतातील जलसंसाधनाची समस्या जाणून घेणे.

३. भारतातील वाढती लोकसंख्या, औद्योगीक क्षेत्रांना लागणारे पाणी, त्याचा विनीयोग व पुर्नवापर यावर उपाय शोधणे

४. भारतातील शहरीकरण, औद्योगीकीकरण, कारखानदारी व वाढत्या नागरी वसाहतींमुळे होत असलेली जंगलतोड थांबवून पडणाऱ्या कमी पर्जन्यावर उपाय शोधणे. व कृषि क्षेत्र जलयुक्त शिवार योजनेद्वारे सक्षम बनविणे.

• संशोधन पध्दती :

प्रस्तुत संशोधनासाठी द्वितीयक साधनसामग्रीचा उपयोग करण्यात आला. ज्यामध्ये कृषिविषयक माहिती मासिके, अहवाल, औद्योगीक क्षेत्राच्या प्रगतीचा अहवाल कृषि संदर्भ व जलसंधारण विषयी संदर्भ ग्रंथ, नियोजन मासिक, त्रैमासिके, वर्तमानपत्रे, व इंटरनेट इत्यादी साधनांचा उपयोग करण्यात आला.

• विषय विवेचन

भारतात शहरीकरण, औद्योगीकीकरण, कारखानदारी,